# VĀCAKA KAMALAŚEKHARA'S PRADYUMNAKUMĀRA CUPAĪ

L. D. SERIES 68

GENERAL EDITORS

DALSUKH MALVANIA

NAGIN J. SHAH

EDITED BY
MAHENDRA B. SHAH



L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD 9

# VĀCAKA KAMALAŚEKHARA'S

# PRADYUMNAKUMĀRA CUPAĪ

L. D. SERIES 68
GENERAL EDITORS
DALSUKH MALVANIA
NAGIN J. SHAH

EDITED BY
MAHENDRA B. SHAH
BOMBAY



L. D. INSTITUTE OF INDOLOGY AHMEDABAD-9.

#### Printed by

- (1) Text
  Shivlal Jesalpura
  Swati Printing Press
  Rajaji's Street, Shahpur
  Ahmedabad-380001
- (2) Bhūmikā

  Mahanth Tribhuvandasji Shastri
  Shree Ramanand Printing Press
  Kankarla Road,
  Ahmedabad-22.

Published by
Nagin J. Shah
Director
L. D. Institute of Indology
Ahmedabad-380009.

FIRST EDITION February 1978

"Printed with the financial assistance of the Government of Gujarat,"

PRICE RUPEES

#### वाचक कमलशेखरकृत

# प्रद्युम्नकुमार चुपई

संपादक महेन्द्र वा• शाह



### प्रधान संपादकीय

अंचलगच्छनी शेलरशालानी उपशाला पालोताणीय शालाना वाचक कमलशेलरे वीरमगाम पासे मांडलमां संवत १६२६मां छ सर्गमां रचेन्नी 'प्रद्युम्नकुमार चुनई' नुं सौ प्रथम वार प्रका- कान करतां आनंद थाय छे. डॉ. श्री महेन्द्रमाईए प्रस्तुत कृतिनुं संपादन उपलब्ध एक मात्र प्रति उपरथी कर्युं छे जे घणुं कठण काम छे. आ उपरांत तेमणे अभ्यासपूर्ण विस्तृत भूमिकामां (१) सांवप्रयुग्न कथा विषयक संस्कृत, प्राकृत, अवभ्रंश, हिंदी अने गुजराती भाषानी रचनाओ, (२) पौराणिक कथासाहित्यनी रूपरेखा, (३) कृष्णकथा अने तदन्तर्गत प्रद्युग्नकथानी लोकप्रियता (४) हिंदु अने बैन परंपरानी प्रद्युग्नकथानां विविध रूपान्तरों अने तेमनी तुलना — ए प्रकारना विषयविभाग अनुसार प्रद्युग्नकथानुं ऐतिहासिक अने तुलनात्मक दृष्टिए निरूपण कर्युं छे. तेमांय महत्त्वनां कथाधटकोनो तेमनो अभ्यास रोचक छे. कमलशेखरनी लघुकृतिआ 'नवतत्त्व चोपाई' अने 'सामायिके बत्रीस दोषनो भास' नुं परिशिष्टमां संपादन करीने तेम च 'प्रद्युग्नचुपई'गत महत्त्वना शब्दोनी सूचि आपीने प्रस्तुत प्रकाशनने तेमणे गुजराती भाषा-साहित्यना अभ्यासीओ माटे उपयोगी बनाव्युं छे. प्रस्तुत संशोधनकार्ये तेमने मुंबई बुनिवर्सिटीनी पीएच. दो. उपिष प्राप्त करावी आपी छे. डॉ. महेन्द्र शाहे डॉ. हरिवल्लभ भायाणीना मार्गदर्शन नीचे १९६७- मां आ शोध-निवंध तैयार करेलो. पोताना आवा अभ्यासपूर्ण अने अमसाध्य संशोधनकार्यने प्रकाशित करवानी मंजूरी आपवा बदल तेमनो हुं आभार मानुं छुं.

मु. डॉ. भायाणीए समग्र महानिबंधमांथी मुद्रण-प्रकाशन माटे योग्य भाग पसंद करी आप्यो छे तेम ज अनेक उपयोगी सूचनो कर्यो छे. ते बदल तेमनो हुं आभार मानुं छुं। प्रस्तुत पुस्तकना मुद्रण दरम्यान पुष्तवाचननुं कार्य डॉ. र. म. शाहे कर्युं छे ते बदल तेमने धन्यबाद.

आ कृतिना प्रकाशनमां आर्थिक सहाय करवा बदल गुजरात सरकारनो हुं हार्दिक आभार मानुं हुं. गुजरात राज्यना भाषानियामक श्री हसितभाई बुच अने नायब भाषानियामक श्री ई.शि. जोषीपुराए आ बाबतमां रस ढाई सहकार आप्यो छे, ते बदल तेमनो पण मारे आभार मानबो ज जोईए.

का. द. भा. बं. विद्यामंदिर अमदावाद-३८०००९ २६ जान्युआरी १९७८ नगीन जी. शाह अध्यक्ष

# **बनुक्रमणिका**

भूमिका	१-९०
२. प्रद्युम्नकुमार-चुपई नी हस्तप्रतनो परिचय	₹ <b>-</b> ४
२. वाचनाचार्यं कमलशेखर-तेमनुं जीवन अने कवन	<b>४-१</b> ६
३. प्रद्युम्नकुमार-चुपई नो सामान्य अभ्यास	१६-४०
४. नहत्त्वना कथाघटको नो अभ्यास	४०-८९
प्रद्युम्नकुमार-चुपई मूल	१-७६
१. प्रथम सर्गं -कृष्ण-इक्मिनी-विवाह	१-१२
२. द्वितीय सर्ग - जांबुवती-पाणिग्रहण	१३
३. तृतीय सर्ग -प्रद्युम्नकुमार-विद्याप्रहण, रुक्मिणी-मिलन	१४-8७
४. चतुर्थ सर्ग —प्रद्युम्नविवाह	<b>४८−६३</b>
५. पंचम सर्ग -सांब-प्रद्युम्न-पाणिप्रहण	<b>₹</b> ४−७०
६. षष्ठम सर्ग -नेमिकुनार-दोक्षा-केवलज्ञान, प्रद्युम्न-दीक्षा-ज्ञान-निर्वाण	30-70
परिशिष्ट	85-ee
र. त्रा. कमढरोखरकुत ' नव तस्व⊸चोपाई '	99-62
२. ,, ' सामायिके बत्रीश दोषनो भास '	۷٤-۷
शहलकोश	८५-९३

#### भूमिका

#### १. ''प्रयुम्नकुमार चुपई''नी हस्तप्रतनो परिचय

#### प्रत-उपलब्धि:

वा. कमलरोखर कृत " प्रद्युम्नकुमार चुपई '' नी आ एक मात्र हस्तप्रत मने श्री महावीर जैन विद्यालय, मुंबईना प्राचीन हस्तप्रतोना संग्रहमांथी उपलब्ध थई छे. त्यां आ हस्तप्रतोने कमांक ४९९ आपवामां आव्यो छे.

#### प्रत-परिचय

आ हस्तप्रतमां २४ पत्र छे. बन्ने बाजुओ मळीने कुल ४८ पानां छे. प्रत्येक पत्रनो संख्यांक, पत्रनी पाछली बाजुए डाबी तरफना नीचेना भागमां लखेलो छे. पत्रना कागळ जुना मेलाश पडता थई गयेला अने साधारण पातळा छे. हस्तप्रतमां पत्र नं ९-१०-११-१२-१३ नी जमणी तरफ मथाळा नजदीक नीचे हांसियानी बाजुमां थोडो कागळ खबाई गयो छे. तेथी केटलीक कडीओना केटलाक शब्दो खबाई गया छे. ते नीचे मुजब छे.

पत्र नं. ९-आगली बाजु कडी संख्यांक ै २७४: २७५: २७६: २७७: २७८

```
३०५: ३०६: ३०७: ३०८:
      ,,-पाछली बाजु
पत्र नं. १०-आगली बाजु
                                    ३११: ३१२:
                                    ३३८: ३३९:
        —पाछली बाजु
                       ,,
                                    ३४३: ३४४:
पत्र नं. ११–आगली बाजु
                                    ३७०: ३७१:
        –पाछली बाजु
                                    ३७४: ३७५:
पत्र नं. १२—आगली बाजु
                                    ४०१: ४०२:
        –पाछली बाजु–
                       ,,
                                    ४०६: ४०७:
पत्र नं. १३-आगली बाजु-
                                    ४३६: ४३७:
        –पाछली बाजु
```

पत्र नं. २०, २१, २२, २३ नी डाबी तरफना हांसियानी बाजुमां मथाळानी नजीक, नीचे, उपरनी माफक ज कागळ खवाई गयो छे. ते नीचे मुजब छे:

```
पत्र नं. २०-आगली बाजु-कडी संख्यांक-६४३: ६४४: ६४५: ६४६: ६४७:
```

```
६७४: ६७५: ६७६: ६७७:
        –पाछली बाजु
                                     ६७८: ६७९: ६८०:
पत्र नं. २१-आगली बाजु
                                     ७०४: ७०५: ७०६:
       —पाछली बाज्
                                     ७०९: ७१०: ७११:
पत्र मं. २२-आगली बाजु
                                     ७३८: ७३९: ७४०:
        –पाछली बाजु
                                     ७४२:
पात्र नं. २३—आगली बाजु
                                     ७७२:
        -पाछली
                वाजु
                       "
```

१. आ संख्यांक हस्तप्रतमां आपेला संख्यांक प्रमाणे ज लख्यो छे.

प्रथम पत्रनी जमणी बाजुए मध्यमां सहेज नीचे पत्रनो नानकडो कटको खरी पडवानी अणी उपर ज छे. तेथी तेनी आगली बाजुए कडी नं० १० तथा ११ अने पाछळनी बाजुए कडी नं० १० तथा ११ अने पाछळनी बाजुए कडी नं० २० ना एक वे शब्दो तेमां सपडायेला छे. पत्र नं० ९, कडी नं० २७३ मांना केटलाक अक्षरोनी शाही खरी गई होवाथी दुर्वांच्य बन्या छे. केटलाक पत्र उपर शाही फूटेली छे. शाही फूटी होई अने त्यां अक्षरों न लखाया होई ते पत्र अने कडीओ नीचे मुजब छे:

पत्र नं. १०—कडोनों संख्यांक ३३:

,, १२- ,, २४:

,, २४- ,, ७८८: ७८९: ७९०: ७९१: ७९२: ७९३:

पत्र नं. २४नी पाछडी बाजुए, पत्रना लगभग है भागमां चोपाई पूरी थई जवाथी बाकीनुं पानुं कोरूं राखी मूक्युं छे.

हस्तप्रतनुं मापः — हस्तप्रतनां पानांनी लंबाईनुं माप १०३ इंचनुं छे अने पहोळाईनुं माप लगभग ४ इंचनुं छे. पानानी अंदरना लखाणनी लंबाईनुं माप ८.३ थी ८.५ इंचनुं छे अने तेनी पहोळाईनुं माप ३ थी ३.३ इंच सुधीनुं छे. छेल्ला पाने ज्यां कृति पूरी थई जाय छे, त्यां लगभग अडघा पाना परना लखाणनुं माप २ इंचनुं छे. प्रत्येक पानानी डाबी अने जमणी बन्ने बाजुए, आगळ अने पाछळ बन्ने तरफ लगभग २ इंचनी त्रण ऊभी लाल लीटीओ वहें .८ इंचना मापनो हांसियो दोरवामां आब्यो छे.

कडी अने पंक्तिओ:—प्रत्येक पत्रमां कडी अने पंक्तिओनी संख्या एक सरखी रही नथी. कारण के पंक्तिमांना अक्षरों अने कडीमाना छंदों एक सरखा रह्या नथी. नाना, मोटा छूटा के गीचोगीच लखाता अक्षरों अने बदलाता जता छंदोने लीचे पत्रमां लगभग १४ थी १८ कडीओ अने १४ थी १७ पंक्तिओनो समावेश करवामां आव्यों छे. प्रत्येक कडीनो संख्यांक अने बदलाता जता छंदोना नामो पत्रमां जुदा तरी आवे ते माटे काळी शाहीथी ते लखीने तेनी ऊपर आछेरों लाल रंग चोपडी तेमने जुदा पाडवानो प्रयत्न करवामां आव्यों छे.

राब्दो अने अक्षरो:—अक्षरो एकंदरे सुवाच्य छे. परंतु स्वच्छ, शुद्ध के मरोडदार नथी. शब्दो के अक्षरोनु घोरण एक सरखुं रह्युं नथी. प्रत्येक पंक्तिमां आशरे १७ थी २१ शब्दो अने आशरे ४६ थी ६० अक्षरो लखेला छे. अक्षरो केटलेक ठेकाणे खीचोखीच लख्या छे, तो केटलेक ठेकाणे छूटा अने स्वष्ट लख्या छे. आखी हस्तप्रत एक च हस्ताक्षरमां निह, परंतु सरखा लागता वे हस्ताक्षरोथी कदाच लखाई होय एम लागे छे. शब्दआतथी १६१ कडीओ अने त्यार पछी १६२ थी २०२ कडीओ सुधीना अक्षरो जोतां आ मेद लगभग जणाई आवे छे. १ थी १६१ कडीमांना अक्षरो मध्यम कदना अने जाडा छे, ज्यारे १६२ थी २०२ कडी सुधीना अक्षरो जातां लखाणमां आ बन्ने प्रकारना अक्षरो अवारनवार जोवा मळ्या करे छे. तथी च जे पत्र पर मध्यम कदना अने जाडा अक्षरो छे, त्यां लगभग १४ पंक्तिओ समाई शकी छे. अने जे पत्र पर नाना अने पातळा अक्षरो छे त्यां १६ के १७ पंक्तिओ पण समाई शकी छे. बन्ने प्रकारना अक्षरो जे पत्र पर जीवा मळे छे त्यां सिक्ष छे त्यां अश्वरो जे पत्र पर पंक्तिओ पण समाई शकी छे. बन्ने प्रकारना अक्षरो जे पत्र पर वीवा मळे छे त्यां आशरे १५ पंक्तिओ जोवा मळे छे.

लखती वखते लहियानी शरतचूकथी पंक्तिमां ज्यां अक्षरो, शब्दो के कडीनो संख्यांक शखवानो रही गयो होय तो ते स्थळे चोकडी के एवुं कोई चिह्न मूकी ते ते खूटता अक्षरो, शब्दो के संख्यांको बाजुना हांसियामां, पत्रने मथाळे, अनुकूळता होय तो ज्यां ते खूटता होय त्यां ज अथवा तेनी सहेज आजुबाजुमां समावी लीधा छे.

प्रतनी स्रवावटः आखीय कृति जैन पद्धतिनी देवनागरी लिपिमां, पिडमात्रामां लखा-येली छे. लखावटनी दृष्टिए प्रतमां नीचेनी महत्त्वनी वस्तुओ ध्यान खेंचे छे

१. क. हस्तप्रतमां लगभग बघे ठेकाणे 'ख'' ने स्थाने "घ'' लखवामां आव्यो छे. उदाहरण तरीके—त्रिणिषंड १६ े, संघ ४५, घोडा पुरी षेइ उछली ६५, ५१३, दुष ११२, षरषसं १९७, षजुरी—षरणि ३९०, षंडगवन ४९७, आऊष् ६५२, मासषमण ७४९ इत्यादि.

ख. केटलेक ठेकाणे 'क्ष' नो ''ल' करी, ''ल' नी जग्याए ''घ'' लखवामां आव्यो छे. उदाहरण तरीके-भरहषित ३, कुसलषेम २४, द्राषइ ३९०, षित्री ४९०, दिषण ५१४ इ०

ग. केटलेक ठेकाणे "खं" नो 'खं" पण रह्यों छे. जेम के : कमलशेखर १०६ लाभशे-खर ७५८

घ. केटलेक ठेकाणे 'क्ष' नो 'क्ष' पण रह्यो छे. जेम के क्षत्री १५, लक्षण २८, अक्षोहणि ३३०, मिक्षाव्रतिं ४४१, दक्षण ६१४, वक्षस्थिल ६४७, सत्तरमक्ष ६९१.

२. क. केटलेक ठेकाणे अनुस्वारो रही गयां छे. जेम के, सेत्रुज ३, सारिगपाणि २१, भूडु ५२, ६६८ नारायणनुं रूप ५८, नही १४७ इडा १९०-१९१ कुडल २९१, अनगु ३५८, सदेह (संदेह) ३५७, माहोमाहि ४८२, शाबकुमर ६५४, आनद ६९६, संबंधि ७०३ इत्यादि.

ख. केटलेक ठेकाणे अनपेक्षित अनुस्वारो मूक्यां छे. जेमके सोरठ देंस । रीसं २९, कुमारं १४१, कुंरब (कोरव) १२१, कोंघां २१०, आंपणी ३०४, घंट ३४३, अंगनि ४३२, देषांडु ५२३ इत्यादि.

ग. लगभग सर्व ठेकाणे ''न'' 'ण' अने ''म'' नी पूर्वेना स्वर ऊपर अनुस्वार मूकवामां आव्यो छे. जेम के: विमांनि २०, स्वांमी ६७, कांणि १२०, आंणिंदि १४३, नांम १५८, रांणी १८३, मांणस ३२१, धूं मकेतु ४४४, बांण ५४९, मंन ७५९ इत्यादि .....

३. 'ह' स्वरसहित जुदो मळे छे. जेम के: तेहनई ३९, एहनु ५०, जेहवीतेहवी ११०, नहुंतरी १८२, नान्हडु २२९, छेहड २९५, चूल्हड ४३३, न्हासइ ५५७, उल्हाणी ५५९. पल्हाणाइ ६८२, केहना ७४५ इत्यादि.

४. ''ळ'' नो उपयोग क्यांय नथी कर्यो. जेम केः रिलयामणु १, थाल ५७, शीतल ७८, बालक १४२, बाल २७९, माली (माळी) ३९३, गर्लई (गळा उपर) ६८७ इत्यादि.

५. "ज्ञ" ने बदले "न्य" वापर्यो छे. जेम के: न्यान ५, आन्या ४१, न्यानी १७६ ६. स,श,ष, के अ नी बाबतमां मोटे भागे अराजकता प्रवर्ते छे. जेम के : सोभती ८, शिशुपाल ६९, स्वेत ९६, सूर (श्रूरा) २३३, जोस (ज्योतिष) ४९९, सूर्पणखा (शूर्पणखा)

**३२९**, जिनेस्वर ७२४ इत्यादि.

१. कडीओनो संख्यांक में संपादन करेला पाठ प्रमाणे मूकेलो छे.

फ. केटलाक शब्द अंतर्गत अर्ध रकारनी आगळनो व्यंजन बेवडाववामां आब्यो छे.
 जेम के:—दर्पण २७, धर्मपुत्र १६९, कर्म्म १३२ इत्यादि.

८. बहुधा जे शब्द बेवडाववानो होय तेनी पाछळ २ नी संख्या लखवामां आबी छे. जेम केः विमणा (२) नांखई तोर ७४, हण (२) करी हकारिउ १११, जय (२) सबद हुउ जेतलह २४१, पुन्य बलवंत (२) अछइ संसारि २८८, ठीगतु (२) बांमण गयु ४१४, धिग (२) ए राजुमती नारि ७०७ इत्यादि.

#### उपसंहार:

जोडणीनी अनियमितता, संख्यांकमां भूलो, शब्दोनुं बब्बेवार लखाई जबुं, विरामस्थानोनी केउलेक ठेकाणे भूलो, शब्दमांना अक्षरोनुं केटलेक ठेकाणे उल्टरमूलट लखाई जबुं, केटलीक जग्याए लखें हुं हरतालथी भूसी तेना पर फरीथी लखें हुं लखाण, स्वच्छतानी कंईक अंशे न्यूनता है. विगतो लिह्यानी बेदरकारी अने तेनी अविद्वत्ता दर्शावे छे. क्यांक शब्दमांनी अक्षर लखवो रही गयो छे. क्यांक हस्त्व के दीर्घ इ के उ लखवाना रही गया छे. क्यांक पंक्ति पूरी थये दंड मूकवाना रही गया छे. क्यांक 'चिंत'—आ प्रमाणे अक्षरने हस्त्व अने दीर्घ बन्नेना चिह्न लगाव्यां छे. क्यांक संख्याक्रम बब्बेवार लखाई गया छे, तो क्यांक लखवाना रही गया छे. शब्दमां क्यांक खोटा के वधाराना अक्षरो घूसी गया छे. शब्दमां क्यांक पंक्तिना पूर्वार्घ के उत्तरार्घ लखवाना रही गया छे. टूंकमां प्रतनुं लखाण सुवाच्य जरूर छे, परन्तु शुद्ध के स्वच्छ तो नथी.

संगदित प्रनथपाठमां जोडणी मूळ प्रत प्रमाणे नियम तरीके राखी छे. तेमां विसंगतता होय तो पण घणुंखरूं जेमनी तेम रहेवा दीधी छे. कोईक ठेकाणे स्पष्ट रीते ज कानो-मात्र के अनुस्वारनी शरतचूक थई लागती होय त्यां ते भूल सुधानी लेवामां आवी छे अने त्यां मूळ शब्द, नीचे पादटीपमां मूक्यो छे. प्रतमां कडीनी संख्यामां भूल छे, ते सुधारी लेवामां आवी छे. प्रतमां कर्ताए वच्चे वच्चे बीजा प्रन्थामांथी उद्धृत करेला श्लोको के गाथाओंने पण चाल कमांक ज आपेला छे. अहीं संपादित प्रन्थगठमां तेने जुदा क्रमांक आप्या छे, जेथी कर्ताए पोते लखेली कुल कडीनी संख्या केटली, अने बहारना आगन्तुक श्लोक—गाथाओंनी संख्या केटली ते मालूम पडे. संगदित पाठमां दरेक प्रसंगने पेटा-शीर्षको आपवामां अन्या छे.

#### २. वाचनाचार्य कमलहोखर तेमनुं जीवन अने कवन

संवत ११६९ मां आर्थरिक्षिते, अपरनाम विजयचन्द्र उपाध्याये, विधिपक्षगच्छनी स्थापना करो. "सूरि" पद प्राप्त थया पहेलां आ उपाध्यायजीए 'विणप' नगरमां कोडी (कोटी) व्यवहारीने प्रतिबोध्ये. तेनी पुत्री समयश्रीए दीक्षा लीधी. आ व्यवहारीने जेसिंगदेए (सिद्धराज जयसिंहे) णेतानो मंडारी कर्यो हतो कुमारपाळना समयमां प्रतिक्रमण करता हेमचन्द्राचार्यने पौताना वस्त्रनो छेडो रालीने ते वांदणा देवा लाग्यो. कुमारपाळ राजाए तेने, "वस्त्रांचछे केम वांदणा आपे छे १"एम प्रश्न करता हेमचन्द्राचार्ये कह्यं के 'ते प्रमाणे सिद्धांतनो मार्ग छे.' त्यारे कुमारपाळ राजाए "विधिपक्षगच्छ" एवं नाम सार्थक छे"-एम कही प्रशंशा करी, 'विधिपक्ष' नाम राखवाने उरसुक थई, 'अंचलगच्छ' नाम स्थाप्युं छे.' आ अंचलगच्छमां

१. 'जैन गूर्जर कविओ—भाग २ जो' पृ. ७६६.

शिखर", ''चन्द्र" ''प्रभ", ''रत्न", ''लाभ", ''मूर्ति" इत्यादि अनेक शाखाओ विस्तार पामी छे. तेमां ''शेखर" शाखानो इतिहास विशेष महत्त्वपूर्ण छे. मुनिशेखरसूरि, मिणक्यशेखरसूरि, धर्मशेखरसूरि इत्यादि अनेक आचार्योए साहित्यनुं विपुल सर्जन करी, आ शाखानी प्रतिष्ठा वधारी छे कवि चक्रवर्ति जयशेखरसूरि तो आ शाखाना के गच्छना ज नहि परन्तु गुज-राती साहित्यना उत्तम कोटिना कविओमांना एक हता. वा. कमलशेखर पण एक सारा प्रन्थकार तरीके आ शाखामां ख्यातनाम हता.

आ "शेखर" शाखामांथी तेनी पेटाशाखा तरीके पाळीताणीय शाखा अस्तित्वमां आवी छे. संवत १७३६ मां रचायेळ श्री नयनशेखर-कृत "योगरत्नाकर चोपाई" मां आ पाळीताणीय शाखानो निर्देश आ प्रमाणे छे.

श्री अंचलगच्छि गिरुआ गच्छपती, महामुनिसर मोटा यती श्री अमरसागर सूरिसर जांण, तप तेजइ करि जीपइ माण ९२ तास तणई पिष शाखा घणी, एक एक मांहि अधिकी भणी पंच महावत पालइ सार, इसा अछइ जेहना अणगार ९५ ते शाखामांहि अति मली, पालीताणीय शाखा गुणनिली पालिताचाय्ये कहीइ जेह, हुआ गछपति जे गुणगेह ९६

वा. कमलरोखर आ पालीताणीय शाखामां ज थई गया छे. एम वा. कमलरोखरना प्रशिष्य विवेकरोखरना शिष्य विजयरोखरे तेमनी संवत १६९४ मां रचेली "चंदराजा चोपाई" मां सूचित कर्युं छे.

श्री अंचलगछि राजीयउ, प्रतिष सूरिज तेजि री माइ श्री कल्याणसागरसूरीश्वर, वंदीजइ मनहेजि री माइ १२ तस आज्ञाकारी भला, पालीताणीया वंसि री माइ कमलसेखर वाचक पदइ, साधुमइ थया अवतंसरी माइ १३

श्री मोहनलाल दलीचंद देसाईए 'जैन गुर्जर किविओ-माग २ जो' पृ.७ ७६ उपर एवा निर्देश कर्यों छे के आ पालीताणीय शाखा अमरसागरस्रिथी नीकळी छे, अने तेनी पुष्टि अर्थे उपर्युक्त नयशेखर (नयनशेखर जोइए) कृत ''योगरत्नाकर चोपई'' नी प्रशस्ति जोवा स्च्च्युं छे. आ अमरसागरस्रिनी समयमर्यादा तेमणे पोते संवत १६९४ थी १७६२ सुधीनी नोंधी छे. (जुओ 'जैन गूर्जर किवओ, माग २ जो, पृ. ७७६). तेथी ए रीते जोतां आ पाली-ताणीय शाखा आ समयमर्यादानी पूर्वे तो अस्तित्वमां न ज होई शके. परन्तु प्रस्तुत बा. कमलहशेखरनी विद्यमानता संवत १५८० थी संवत १६४८ सुधीनी लगभग गणाय छे. अने तेओ आ ज पालीताणीय शाखामां थइ गया छे तेवो निर्देश आपणने प्राप्त थाय छे. तेथी आ पालीताणीय शाखामां थइ गया छे तेवो निर्देश आपणने प्राप्त थाय छे. तेथी आ पालीताणीय शाखा, श्री देसाई कहे छे तेम अमरसागरस्रिथी निह परन्तु वा. कमलशेखरनी पूर्वे लगभग सोळमी सदीना उत्तरार्धमां कोई आचार्यथी नीकळी हशे, एम अनुमान थई शके.

१. 'जैन गूर्जर कविओ'-भाग बीजो, पृ. ३५१-३५२.

नवर्मुं खंड कहिउ एणि परइ, राग धन्यासी अंग री माई विजयसेखर वाचक भणि, श्री संघ वडतइ रंगि री माइै ८८

आम विधिपक्ष-अंचलगच्छनी ''शेखर'' शाखामांथी पालीताणीय नामनी पेटाशाखामां वा. कमलशेखर थइ गया एवो निर्णय करी शकाय एम छे.

वा. कमलशेखरना जन्मस्थळ अने जन्मसमय विषे कोई माहिती प्राप्त थती नथी. तेमना माता पितानु नाम, ज्ञातिविशेष तथा कुढुंष इत्यादि अंगत जीवननी बाबतो विषे पण कोई माहिती मळती नथी. छतां तेमणे पोते रचेली कृतिओ, कोई अन्य कर्तानी तेमणे करेली प्रतिलिपिनी प्रशस्ति के पुष्पिकाओ, तेमना शिष्यशिष्योनी कृतिओनी प्रशस्तिओं के प्रत-पुष्पिकाओं वगेरे द्वारा तेमना जीवननी केटलीक बाबतो विषे कंईक अंशे अनुमानपूर्वकना निर्णयो तारवी शकाय एम छे.

आज सुधीमां वा. कमलरोखरनी नीचेनी चार नानी मोटी पद्यकृतिओ उपलब्ध थई छै.

१ ' नवतत्त्व चोपाई'' व संवत १६०९ मां, आसो महिनानी त्रीजने दिवसे, सुरत-मां' रहीने आ कृति रचेळी छे. आ कृतिना अंतमां आ प्रमाणे उल्लेख छे:

''अंतर महूरत समिकत घरइ, ते नर अरघु पुद्गल करइ वाचक कमलसेखर इम कहइ, गणिइ भिवइ सिद्धपदवी लहइ ६४ विधिपक्षि गिछ ए उदयु भाण, श्री धर्ममूर्तिसृरि सुजाण, तास पसाइं लहीया भेय, बिसइ छिहुत्तरि हुआ तेअ ६५ सेबत सोल नवोत्तर वरसि, सूरित आसू त्रितीया दिवसि रची चुपई सोहामणो, भणतां गणतां हुई बुद्धि धणी' ६६

२ "प्रद्यम्नकुमार चुपई" संवत १६२६ नां कार्तिक सुदी १३ ने दिवसे वीरमगम पासेना मांडलमां, चोमासु रह्यां हतां त्यारे, छ सर्गमां रचेली आ इतिना अंतमां आ प्रमाणे उल्लेख छे :

''विधिपक्षगिक धर्ममूर्तिसूरि विजयवंत ते गुण भरपूरि
कमलशेखर रहीया चउमासि मांडलि नगरइ घणइ उल्हासि ७५४
संवत सोल छवीसई करी दूहा चुर्ग्ड हीयडइ घरी
काती सुदी नइ दिन त्रयोदसी कीघी चुर्ग्ड मन उल्ह्सी ७५५
वणारीस वेजराज तणा सीस दोई तेहना गुंण घणा
श्री पुण्यलिध उवझायां ईस बीजा लाभशेखर वणारीस ७५६
तास सीसि रची चुर्ग्ड सुणियो भवीयां ईक मंन थई
चित्र प्रदिमनकुमारह तणू भणतां सुणतां सुख घणूं ७५७

१. 'जैन गूर्जर कविओ' भाग−३ जो, खण्ड पहेलो, पृ. १००८.

२. जुओ परिशिष्ट तथा 'जैन गूर्जर कविओ'-भाग त्रीजो, खण्ड १ लो, पृ. ६६०.

३. 'प्राचीन फागु संप्रह'' [सं. भोगीलाल सांडेसरा तथा सोमाभाई पारेख] मां आ कृतिनुं रचनास्थळ, तेना संगदकोए ''खंभात'' नोंध्युं छे. जुओ 'प्राचीन फागु संप्रह' ए. २३. ते बराबर नथी, 'सुरत'' ज जोईए.

४. आ संख्यांक में संपादन करेल पाठ प्रमाणे मूकेला छे.

रे 'धर्ममूर्ति गुरु फाग" आ कृतिमां तेनो रचनानो समय नोंध्यो नथी, पण 'कर्तानी उपर्युक्त वे गुजराती कृतिओनुं रचनानुं वर्ष जोतां आ काव्य पण विक्रमना १७ मा शतकना पूर्वार्षमां रचायु हरो एमां शंका नथी." रचना स्थळ खंभात छे. आ कृतिना अंतमां आ प्रमाणे उल्लेख छे:

''विमासागर गुर वंदु, नंदउ जां सिसभांण थभणपुरि गुर गाइइ पाईइ शिवपुर ठांण २२ श्री कमलशेखर कहइ वंदीइं वंदोइं गुरुना पाय जे नरनारी गावइ, पावइ सुखसयांइं'' २३

४ "सामायिके बत्रीश दोषनो भासः<sup>3</sup>

आ कृतिमां तेनुं रचनास्थल के रचनासमय कशानी उल्लेख नथी. मात्र कर्ताना पोताना नामनो च उल्लेख त्यां आम करेलो छे:

> ''कमलशेखर वाचक कहइ जी समता करउ रे सुजाण, दोष बत्रीसइ परिहरइ जी ते पामइ सिवटाण रे''। २०। जी. —इति श्री सामायिके बत्रीस दोष भास संपूर्ण।

१७ मा शतकना पूर्वार्धमां रचायेली उपर्युक्त कृतिओनां रचनास्थल अनुक्रमे सुग्त, मांडल, खंभात छे. आथी आ समय दरिमयान वा. कमलशेखरनो विशेष विहार गुजरात बाजु ज हशे. कदाच तेओ गुजरातमां ज जन्म्या होय.

संवत १६०० ना भादरवा सुदी १३ ने रिववारे पादशाह शाहआलमना राज्यकाळ दर-मियान अलवर महादुर्गमां, गुणनिधानसूरिनी विद्यमानतामां कमलशेखरे सुश्राविका जोषीना पठनार्थे 'लघुसंग्रहणी सूत्र'नी प्रत लीखी छे, जेनी पुष्पिकामां आ प्रमाणेनो उल्लेख छे:

'संवत १६०० वर्षे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे १३ रवौ पातिसाह श्री साहआलम राज्ये अलवर महादुर्गे श्री ५ गुगनिधानसूरि विद्यमाने वा. लाभशेखर गणि तत शिष्य कमलशेखरेण लिखित<sup>ं</sup> शुश्राविका जोषी पठनार्थं। शुभं भवतु ॥<sup>१४</sup>

उपलब्ध माहिती प्रमाणे कमलशेखरनो पहेलवहलो उल्लेख उपर्युक्त प्रत-पृष्पिकामांथी मळे छे. संवत १६०० मां थयेला कमलशेखरना आ नामोल्लेख साथे एम अनुमान करी शकाय के लगभग १५८० नी आसपासमां तेओ जन्म्या होय, अने त्यारबाद लगभग अढारेक वर्षनी युवानवये दीक्षा प्रहण करी होय. उपर्युक्त सं० १६०० मां "लघु-संग्रहणी-सूत्र" नी तेमणे करेली प्रतिलिपिमां तेमणे पोताना नाम साथे "वाचक" पदनो उल्लेख नथी कर्यो. ज्यारे सं० १५०९ मां रचेली तेमनी कृति ''नवतत्त्वचोपाई" मां "वाचक

र. आ फागुनुं संपादन डॉ॰ भोगीलाल सांडेसरा तथा सोमाभाई पारेखे, तेमना 'प्राचीन फागु संग्रह' मां करेंछुं छे. जुओ ''प्राचीन फागु संग्रह'', पृ. १२६–१२८.

२. 'प्राचीन फागु संग्रह", पृ २४.

३. आ कृतिनी हस्तप्रत मने भारतीय विद्या भवन, चोपाटी रोड, मुंबई-७, ना हस्त-प्रत-संग्रहमांथी उपलब्ध थई हती. त्यां तेनो कमांक २५२ छे. मूल माटे जुओ परिशिष्ट.

४. जुओ "श्री प्रशस्ति संप्रह", सं. अमृतलाल मगनलाल शाह, पृ. ९९.

कमल्हरोलर इम कहइ——''एम कही पोताना नाम साथे ''वाचक'' पदनो उल्लेख करेलो छे. आथी स्पष्ट थाय छे के संवत १६०० थी संवत १६०९ नो वच्चे तेमने ''वाचक'' पद प्राप्त थयुं हरो तेमणे प्राप्त करेली एवो बीजी पदवीओ विषे के तेमना निर्वाणसमय विषे कशो माहिती प्राप्त थई शकी नथी. अलबत्त, तेमना शिष्य-प्रशिष्योए विनम्रभावे पोतानी रचनाओमां पोताना आ पूजनीय गुरुनुं स्मरण करेलुं छे.

संवत १६४३ मां महा सुद ३ने रिववारे बंभणवाडामां वा. कमलशेखरना प्रशिष्य विनयशेखरे रचेली ''यशोभद्र चोपाई'' मां, तेमने पोताना गुरुमहना यशोगान गाता वाच-नाचार्य तरीके बिरदावेला छे':

> ''विश्विपत्व नायक मिहमिनिधान, तपते जिहां जिंग उद्युं भांण दिसन देखिइं परमाणंद, वंदउ धरममूरित सुरींद १३९ ८ ली वंदउ सिह गुरु आपणा, जेहनइ नांमिइं नही रिधिमणा श्री श्री कमल्होखर वणारीस, समरु नांम तेहनु निसिदीस १४०°

आ ज कविए पोते संवत १६४४ श्रावण सुदि १३ ने रविवारे आगरामां रचेछी ''शांति मृगसुन्दरी चोपाईं'' मां पोताना गुरुना गुरु वा० कमलरोखरना गुणगान आ प्रमाणे कर्या छे:

स्त्रीशंगार ध्यांन बिल वेदिई संवच्छर सुलहीजई जी श्रावण शुदि तेरिस रविवारह सतीयां सुगुण कहीजई जी ३२६ युगप्रधान जिंग अंचलगछपति गुणमणिरयणमंडार जी श्री श्री धर्ममूरितसूरीश्वर श्री संघकुं सुखकार जी ३२७ तास तणइ पक्षि गुणिरयणायर कमलशेखर वणारीस जी क्रियापात्र हुआ एणि कालिइ सघलइ किस्त विसेस जी ३२९

आथी स्पष्ट थाय छे के वाचनाचार्य कमलशेखर गुणोना भंडार तेम ज क्रियापात्र हता. चोगम तेमनी कीर्ति व्यास हती.

वा. कमल्हरोखरना आ प्रशिष्य विनयरोखर सिवाय, तेमना बीजा प्रशिष्यो श्री भाव-रोखर तथा विजयरोखरे पण पोताना गुरुना गुरुने पोतानी कृतिओमां भावभरी स्मरणांजलि आपी छे.

भावशेखरे संवत १६८१ मां रचेलो ''घना महामुनि चुपई'' मां वा. कमलशेखरतुं स्मरण आ प्रमाणे कर्यु छे :

> "संवत सोलसइं वरस एकासीइ रे अति भछ मास विइंसाख तेरसि दिन भोमवारिइं करीजी स्वाती नक्षत्र सुभ लाख ४ देखु०

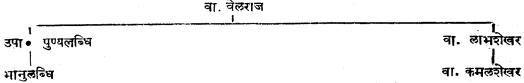
१. ''वाचक'' अने ''वाचनाचार्य'' मां छेल्लुं पद विशेष मानाई जणाय छे. शक्य छे के वडील गुरुजनो माटे ए पदवीनो उपयोग थतो होय.

२. ''जैन गूर्जर किवओ, भाग १ लो,'' पृ. २८५. भूलथो त्यां कर्तानुं नाम ''विज-यशेखर'' लख्युं छे ''जैन गूर्जर किवओ'' भाग ३, खंड- १ लानां पृ. ७७५ उपर सुधारायुं छे.

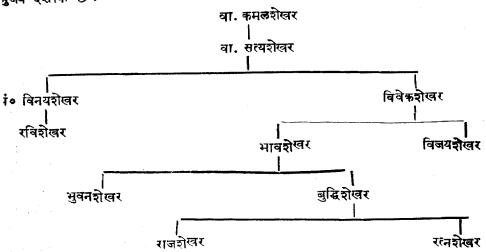
वीर-परंपर-पाटि सोभताजी कल्यांणसागरसूरिराय मधुरी देशनवांण वरसताजी सेवि सुरनर पाय। ६ । देखु॰ तास पक्ष वाचक अति दीपताजी कमल्हरोखर गणिचंद तास शिष्य वाचक सत्यरोखर भलाजी। ७ । देखु॰ अकबरपुरमां संघनि आदरिजी अति घणुं मन नि पुरि

भावशेखर कहि श्री संघ चरिजउजी आणद प्रेम पद्ध रि । १३। देखु॰ । अग उपरांत आपणे आगळ जोई गया ते संवत १६९४मां रचायेली ''चंदराजानी चौपई'' मां तेना कर्ता विजयशेखरे पण वा. कमलशेखरने ''कमलशेखर वाचक पदइ, साधुमइ थया अवतंस री माइ'' एम ''साधुओमां शणगाररूप'' कही तेमना प्रत्येनो पूज्यभाव व्यक्त क्यों छे. गुरु अने शिष्य-प्रशिष्टयोनी परंपरा

वा. कमलशेखरे 'प्रयुग्नकुमार चुपई' नामनी पोतानी कृतिनी प्रशस्तिमां पोताना गुरु तथा तेमना गुरुना नामनो उल्लेख कर्यो छे तेमां तेमणे वा. वेलराजथी शरूआत करी छे. तेमणे वा. वेलराजना शिष्य उपाध्याय पुण्यलब्धि तथा वा. लाभशेखरना नामनो उल्लेख करी, गेताने लाभशेखरना शिष्य तरीके निर्देश्या छे. आ रीते वा. कमलशेखरनी टूंकी गुरु- श्रंपरा आ प्रमाणे दर्शांची शकाय:



वा. कमलरोखरना शिष्यो पण सारा ग्रन्थकारो थई गया छे. तेमणे उग्रविहार करीने उत्तर भारतनां नगरोमां पण चर्डमांत कर्या हना अने अनेक भव्य जीवोने बोध पमाडयो हतो. इत्यादि बेरोनुं सप्रमाण वर्णन अहीं अप्रस्तुन छे. मात्र भिन्न भिन्न कृतिओमांथी प्राप्त थता उल्लेखो राथी अत्यार सुधी मळेले माहिती प्रमाणे वा. कमलरोखरनी शिष्य—प्रशिष्योनी परंपरा नीचे पुजब दर्शावी छे:



१. भारतीय विद्याभवन (मुंबई)ना हस्तप्रतना संग्रहमां आ भावशेखर कृत, संवत १६८१मां रचायेली 'धना महामुनी चुनई''नी, संवत १७०१मां लखेली एक हस्तप्रत छे यां तेनो नंबर ७९ छे, एमांथी प्रस्तुत प्रशस्ति प्राप्त थई छे. वा. कमलशेखरना प्रशिष्य विनयशेखर कृत ''यशोभद्र चोपई'' (सं. १६४३) नामनी कृतिनी पोते ज लखेली हस्तप्रतनी पुष्पिकामां आ प्रमाणेनो उल्लेख प्राप्त थाय छे:

"संवत १६४४ वर्षे वैशाख शुदि १३ सोमे श्री अंचलगच्छे श्री धर्ममूर्तिस्रीश्वर-राच्ये वाचनाचार्य वा. कमलशेखर गणि तत् शिष्य रिषि श्री ६ सत्यशेखर गणि तत् शिष्य ऋ विनय-शेखरेण लिखितं श्री आगरानगरे उत्वारे । तैलाद् रक्षेत् चलाद् रक्षेत् स्थलवंषनात् परहस्ते गताद् रक्षेत् एवं वदति पुस्तिका." ?

आम संवत १६४४ मां हखायेल उपर्युक्त प्रत-पुष्पिकामां वा. कमलशेखरना नामनो उल्लेख प्राप्त थाय छे. त्यार बाद आ ज विनयशेखरनी ''शांतिमृगसुंदरो चौपईं'' (सं०१६४४) नी प्रत-पुष्पिकामां पण आ प्रमाणेनो उल्लेख छे:

''संवत १६४८ पोस ग्रुदि ३ बुघे अंचलगच्छे वा. कमलशेखर रिषि सत्यशेखर गणि शि. रिषि विनयशेखर रिषि विवेकशेखर लि. साध्वी विमला सम्यणी साध्वी कुशललक्ष्मी वाचनार्थ'' र

आम संवत १६४८मां लखायेली उपर्युक्त प्रत-पुष्पिकामां पण वा. कमलहोलरनां नामनो उल्लेख प्राप्त थाय छे. ए पछी एमना नामनो उल्लेख कोई प्रत-पुष्पिकामां, उपलब्ध माहिती अनुसार क्यांय प्राप्त थतो नथी. आथी अनुमान करी शकाय के वा. कमलहोखर संवत १६४८ सुधीविद्यमान हरो. ए पछी पण तेओ थोडुं जीव्या हरो. आम उपर्युक्त सर्व प्रमाणोने आधारे वा. कमलहोखरनी विद्यमानता संवत १५८० थी संवत १६४८ सुधीनी गणावी शकाय एम छे.

वा. कमलशेखर परत्वे आथी विशेष माहिती उपलब्ध यई शकी नथी. एक ''घर्ममूर्ति—
गुद फाग' सिवाय एमनी बीजी कृतिओ आज दिवस सुधी अप्रकाशित होईने साहिरयकार तरीकेनी
एमनी प्रतिभा वणमूलवी ज रही छे. अहीं हवे पछी वा. कमलशेखरनी कवन-प्रतिभाने, तेमनी
उपलब्ध चरिचार कृतिने अनुलक्षीने, निरूपवानो प्रयत्न करेलो छे.
वा. कमलशेखरनं साहित्य-सजन

वा. कमलशेखरनी अत्यार मुधीमां, आपणे आगळ जोयुं तेम, चार कृतिओ उपलब्ध थई छे. ए चारे य कृतिओ तेमणे प्राचीन गुजराती भाषामां रचेली छे, अने साहित्यना त्रण भिन्न स्वरूपोनो ए कृतिओ परत्वे उपयोग करेलो छे-ते छे चोपाई, फागु अने भास. ''नवत्त्व चोपाई'' अने ''प्रद्युम्नकुमार चुपई '' ए वे कृतिओ साहित्य-स्वरूपे एक छतां विषयनी हिष्टए साव भिन्न छे. जैनपरंपरानी हिष्टए मोक्ष-मार्गमां उपयोगी एवा जीव, अजीव, आस्वा, संवर इत्यादि नव तत्त्वोनी समजण ''नवतत्त्व चौपाई''मां पद्यबद्ध करी सामान्यजनार्थे तेनुं अर्थवोधन सरळ बनाव्युं छे, तो 'प्रद्युम्नकुमार चुपई''मां, जैन परंपरा प्रमाणेना २४ कामदेवामांना एकवीसमा कामदेव अने नवमा वासुदेव श्रीकृष्णना पुत्र प्रद्युम्ननी जैन परंपरा प्रमाणेनी कथाने चोपाई-बद्ध करी छे, आम अनुक्रमे, प्रथम कृतिमां तात्त्विक चर्चा अने बीची कृतिमां पौराणिक कथाने विषय बनावी, ए बन्ने कृतिओना कलेकरो घडेलां छे. त्यारबाद

१. जैन गूर्जर कविओ-भाग १ लो. ए० २८५

२. जैम गूर्जर कविओ-भाग ३ जो-खंड १लो ए० ७७७

पोताना समकालीन अने अंचलगच्छनी विधिपक्ष शाखाना पष्टधर धर्ममूर्तिस्रिनी प्रशस्तिरूप "धर्ममूर्तिगुरु फाग"नी रचना करेली छे. 'फागु' काव्यस्वरूपना रुढ लक्षणोथी आ
'फागु' भिन्न तरी आवे छे. छतां तेने "फागु' कही तेमां, तेमना गुरुरूप धर्ममूर्तिस्रिना
जन्मस्थळ, माता—पिता, दीक्षागुरुनुं, नाम, आचार्थगद इत्यादिनी माहिती आपी, तेमना
गुणोनुं संकीर्तन करेलुं छे. "सामाथिक बत्रीस दोषनो मास" ए कृतिमां तेमणे जैनोना
सामायिकव्रतनां आचरणसमये जाण्ये अजाण्ये मन, वचन अने कायाथी लागता बत्रीश प्रकारना
दोषोनी समजण आपी, तेनो परिहार करवानो उपदेश आप्यो छे. आ रीते जोईए तो वा.
कमलरोखरे जैन फिलस्फी, पौराणिक कथानक तथा जैन संप्रदायना व्रत—आचारादिने पोताना
विषय तरीके लीधा छे अने तेनु जुदा जुदा पद्यस्वरूपमा निरूपण करेलुं छे. आम प्रथम
दृष्टिए ज तेमना मर्यादित साहित्यसर्जनना क्षेत्रमां विषय तथा काव्यस्वरूपोनुं वैविष्य तरत
ज नजरे पडे छे.
नवतत्त्व चोपाई

प्राचीन गुजराती अन्तर्गत रास-चोपाईमां रचाये हुँ साहित्य अढळक छे. रास, चोपाई के चिरत ए सर्वे लगभग एक ज प्रकारनां काव्य-स्वरूपो छे. आ काव्य-स्वरूपनुं विषय-वैविध्य पण विशाळ छे. लेकिक, धार्मिक के पर्व-व्रत-कथात्मक, ऐतिहासिक, पौराणिक, चिर-त्रात्मक; रूपकात्माक, बोधात्मक के प्रासंगिक इत्यादि अनेक प्रकारना विषयो आ काव्यस्वरूप-अंतर्गत आलेखाया छे. आ प्रकारनुं सर्जन बहुधा जैन कविओने हाथे थयेलुं होवाथी तेमां संप्रदायिक छाप सविशेष ऊपसी आवे छे. आ सांप्रदायिक रास-चोपाईमां तात्विक, धार्मिक, तीर्थ-वर्णन, चैत्यपरिपाटी, गुरुमहिमा, पष्टाभिषेक-वर्णन इत्यादि अनेक प्रकारना विषयनुं वर्णन करवामां आवेलुं छे. रास-चोपाईना सांप्रदायिक तात्विक विषयमां कर्मविवरण, कर्मविपाक, जीवविचार, नवतन्त्व, संग्रहणी इत्यादि अनेक विषयो चर्चाया छे. जेना विवरणार्थे कर्म-विवरणनो रास'—कर्ता छावण्यदेव -१६ मी सदी, 'जीवविचार—रास' कर्ता ऋषभदास ई. स. १६१९ इत्यादि अनेक प्रकारनी रास चोपाई स्वरूपनी कृतिओनी रचना थयेली छे.

प्रस्तुत "नवतत्त्व चोपाई" ए राससाहित्यने लगता ज चोपाई नामना काव्य-प्रकारमां अने लगभग संपूर्णतया ए ज बंधमां वा. कमलशेखरे संवत १६०९मां रचेली एक तात्त्विक कृति छे. जैनदर्शनमां अति महत्त्वना अने मोक्षमार्गमां उग्योगी एवा जीव, अजीव, पुण्य,पाप,आस्वव,संवर, निर्जरा, बंध अने मोक्ष—ए नामनां तत्त्वोने भाविको सरळ रीते समजी, याद राखी, बोध पामी शके अने आत्मानुं हित साधी शके ए माटे मूळ प्राकृत भाषामा ५९ गाथामां लखायेला आ नामना सूत्रनुं वा. कमलशेखरे सरळ प्रा. गुजराती भाषामां पद्यमां रूपान्तर करेखं छे.

रचनानो प्रारंभ सरस्वती देवी अने पाश्वंनाथनी वंदनाथी थाय छे. त्यारबाद तरत ज किव नव तस्वनो संक्षेपमां विचार रज् करे छे. तेमां प्रथम जीवना चौद, अजीवना चौद, पुण्यना बेंतालीश, पापना ब्याशी, आस्त्रवना बेंतालीश, संवरना रुत्तावन, निर्कराना बार, बंधना चार अने मोक्षना नव-एम नव तस्वना कुल बसो छोंतेर भेदने गणावे छे. क्यांक तेना गुणधर्मोंनुं

निरूपण करे छे, तो क्यांक तेनां उदाहरणो पण आपे छे. अंतमा कवि नवतस्वना प्रभावना महिमा गातां कहे छे के :

भावि करी सदिह नवतस्व अयाणनंई हुई समिकत्व— ६३ अंतर महूरत समिकत घरइ ते नर अरधु पुद्गल करइ बाच क कमलरोखर इम कहइ गणिइ भविइ सिद्ध पदवी लहइ-६४°

छेल्छे सद्गुह धर्ममूर्तिसूरिनुं स्मरण, कृतिनुं रचना-स्थळ अने तेनो रचना-समय तथा आ 'चोपाई" ना श्रोता-बाचक माटे आशीर्वचन इत्यादिनुं निरूपण करवामां आव्युं छे. कुछ ६६ कडीना आ काव्यमां ३०मी अने ३१मी कडी दोहरा-छंदमां, ज्यारे बाकीनी बधी कडीओ सळंग चोपाईमां लखेली छे. कर्तार जेवा सग्ळ छंदोवंध रच्या छे, तेवी करतेमनी कथनशैली पण सरळ छे. सीधी सादी रीते मात्र नव तत्त्वना भेद प्रभेदनुं निरूपण करेलुं छे. नथी क्यांय कशानां वर्णन के नथी कोई भमकभर्या अलंकारोनी शोभा. जो के तेने अहीं अवकाश पण नथी, छतां आखी य कृति कर्तानी लाधवशक्तिनो अने शब्दप्रभुत्वनो सारे परिचय करावे छे. एक उदाहरण आपुं : पुण्यतत्त्व अंतर्गत पुण्य भोगववानां बेंतालीस प्रकारमां, आत्माने जे पुण्यना उदयथी पर्यकासने बेसतां जेनी चारे बाजु सरखी होय एवा संस्थान (शारीराकृति)ना प्राप्ति तथा ग्रुभ वर्ण, ग्रुभ गंध, ग्रुभ रस अने ग्रुभ स्पर्शनी प्राप्ति थाय तेनुं कर्ताए संक्षेपमां सरळ रीते सुंदर शब्दोमां आम निरूपण कर्युं छे :

'पंचेंद्रीपणु लहह जे सार वरण सेत रत्त पीत उदार गंध अपूरव हुइ जेय, मधुर लह कृषाय रस—तेय१९ हल्लुड सुंहालु चीगढ़, ऊहुनु फरिस रुडु सामदु'

-तो कान्यनी प्रथम पंक्तिमां ज वर्णसगाई अने प्रास नुप्रास केवा अनायासे सघाया छे ते जुओ:

'सरसती सांमणि समर माय पास जिणेसर पणमु पाय'

कान्यनी प्रत्येक पंक्ति भासानुपासथी बंघायेली छे. तथा भाषा पण बहुषा संयुक्ताक्षररहित, सरळ छे. आथी सामान्य जन माटे आ कान्य याद राखवुं सरळ थई जाय तेम छे. अने आयी ज, प्राकृतभाषामां रचायेला अने समजवा अवरा एवा आ धार्मिक दृष्टिए महत्त्वना सूत्रनुं सरळ गुजराती पद्य रूपान्तर करी, सामान्य भिवक जीवो माटे तेनो अर्थबोध सरळ करी, तेमने एनु आचरण करवा प्रेरवानो कर्तानो मनोरथ अहीं सिद्ध थयेलो जणाय छे. टूकमां कर्तानी सरळ समजूती माटे समुचित शब्दनी पसंदगीनी सूझ तथा अनायास सिद्ध पद्यनिरूपण—मी रीतिनो आ कान्य द्वारा आपणने परिचय थाय छे. वळी वा. कमलशेखरे आवी तात्विक विवरण करती कृतिनुं सर्जन कर्युं तेना उपरथी एटलुं तो फलित थाय छे के तेमने जैन फिल्ल-स्पृतीनो सारो अभ्यास हरो अने तेमनुं आध्यात्मक चिंतन पण उच्च कोटीनुं हरो.

र. परिशिष्टमां ग्रंथस्थ करेली आ कृति मुजब आ संख्यांक लखेला छे.

प्रशुम्रकुमार-चुपई

आ कृतिनुं संपादन में प्रस्तुत ग्रंथमां करे छुं छे, तथा तेनी समग्र विवेचना, आगळ करेली छे. तेमां आ कृति परत्वे वा. कमलशेखरनी सर्जक-प्रतिभा विशे विस्तारथी माहिती आपेली छे.

#### धर्ममूर्तिगुरु फाग

महद् अंशे "फागु" काव्यस्वरूपनी उद्भव वसन्तना वर्णन निमित्ते श्रृङ्गारस्त्रनी निष्पत्ति अर्थे थयेलो छे. परंतु समयना वहेण साथे "फागु" ना आ मूळ स्वरूपमां सांप्रदायिकत्व आववा मांड्युं. जैनेतर कविओए कृष्ण-गोपि के कृष्ण-स्विमणीने नायक-नायिकरूपे लई तेमना वस-तांस्त्रव निमित्ते वनकीडा के प्रेमकेलिना शृङ्गारस्सम्पर फागुओनुं सर्जन कयुं छे. जेम के "नारायण फागु", "भ्रमरगीता", "हरिविलास फागु" इत्यादि. ज्यारे जैन कविओए आ काव्यस्वरूपने सिविशेष सांप्रदायिक रूप आपी ते द्वारा स्वधर्मना सिद्धान्तोने कथात्मक रीते उपदेश्या छे. आथी शृङ्गारस्त्रना वाहनरूप आ काव्यस्वरूप नेमिनाथ के पार्श्वनाथ जेवा तीर्थकरो. गौतम जेवा गण-धरो के जंबूस्वामी जेवा केवलीओना बोधदायक जोवनचरित्रने निरूपवा नुं साधन बन्युं छे. एटंखुं ज निहं परंतु समय जतां केटलाक आचार्यादि व्यक्तिविशेषो पण फागुना विषय बन्या. उदाहरण रूपे "हेमरत्नसूरि फाग", जिनहंसगुरु नवरंग फाग", "अमररत्नसूरि फागु" इत्यादि गणावी शकाय. श्रीभोगीलाल सांडेसरा जणावे छे ते प्रमाणे, 'आवी रचनाओमां आचार्योना मातापिता, बाल्यावस्था, दीक्षा- महोत्सव इत्यादिनी बृत्तान्त आपीने वसंतर्वणन, कामविजय, संयमनी दृदता, उपदेशनो प्रमाव वगेरे वर्णवेला होय छे अने ए रीते फाग' नामनी ओछेवत्ते अंशे सार्थकता साधवानो प्रयत्न थाय छे."

वा. कमल्होलरे २३ कडीनो प्रस्तुत फाग, अंचलगच्छनो विधिपक्ष शाखाना पट्ट्घर अने पोताना समकालीन आचार्य धर्ममूर्तिस्रिनी प्रशस्तिर लखेलो छे. आ. धर्ममूर्तिस्रिना जीवननी केटलीक हकीकतोनुं निरूपण करता कवि जणावे छे के धर्ममूर्तिस्रिनो जन्म खंभातमां थयो हतो. तेमना पितानुं नाम हंसराज हतुं अने मातानु नाम हांसलदे हतुं. तेमनुं सांसारिक नाम धर्म-दास हतुं. श्रीजिनेश्वर भगवंतनी वाणी सांभळी तेमने वैराग्य थयो अने अंते घरनो भार छोड़ीने श्रीगुणनिष्यतस्रि पासे दीक्षा लीधी. गुरुए त्यारवाद तेमने ध्यानथी विद्यावंत अने संघनुं भल्ले करनार जाणीने, अमदावादमां महोत्सवपूर्वक पोतानी पाटे स्थाप्या. देशविदेशमां तेमणे घणी कियाओ आदरी, पंच महात्रत धार्या, छ प्रकारना जीवनी रक्षा करी, सात प्रकारना भय निवायां, आठ प्रकारना मद वार्या, नवविष्व शील धारण करी, दसभेदे यतिधर्म शोभाव्यो; अगियार प्रतिमा कही अने बार भिक्षु—प्रतिमाथी एमणे पोतानुं काम पार पाड्युं; तेर काठिया निवारीने तेमणे धर्मनुं काम कर्युं. आम साधुओना छत्रीश गुणोथी युक्त आ. धर्ममूर्तिस्रिनुं जन्मस्थळ, माता-पिता तथा तेमनु नाम, दीक्षा, आचार्यपद इत्यादिनो परिचय करावा तेमना आध्यारिमक गुणोनी प्रशंसा करेली छे.

आ ट्का फागुकाव्यमा आम तो बीजा कशा वर्णनने अवकाश नथी, छता य ज्यां एवो कंइ अवकाश मळ्यो छे, त्यां कर्ता वा. कमल्डोखरे पोतानी वर्णनशक्तिनो परिचय

१ प्राचीन फागु संब्रह-पृ. २३-२४

कराव्यो छे. अमदावादमां धर्ममूर्तिस्रेरना 'सूरि'पदना महोत्सव प्रसंगे वागतां वाजित्रोना सूरोनुं शब्दविधान तेमणे आम कर्युं छे :

> ताल दमामा वाजइ, वाजइ तिवल निनाद रणत्र नफेरी भेरी य, संख सुहामणड साद.१२ घूंघर वाजइ घमघम, मादल दों दों कार पंचराबद घरि वाजइ, गाजइ गयण अपार. १३

रवानुसारी शब्द-प्रयोग अने वर्णसगाइथी उपर्युक्त वर्णन कर्णप्रिय अने मधुर लागे छे. ते उपरांत कर्तानी अर्थ लाघवनी शक्तिनो परिचय पण आपणने आ फागुकाव्यमां थाय छे. जैन संप्रदायनी दृष्टिए उर्ध्वगामी जीवनविकासार्थे चान्त्रिमय जीवनमां श्रेष्ठ आध्यात्मिक गुणो के जेना आचरणमां जीवनसाफ्ट्यनी चरम सीमा रहेली छें तेनी गणतरी अने तेनुं विवेचन विद्वानोए ग्रंथो भरी भरीने करेलुं छे. धर्ममूर्तिसूरिए पोताना जीवनमां करेलुं ते गुणोनुं प्रस्थापन वा. कमल्होल्हरे मात्र आठ पंक्तिमा ट्रंकमा सरळ अने सचोट रीते आम दर्शान्युं छे:

"आदरी क्रिया जिणि अति घिग, मइ सुणि देस विदेसि पंच महाव्रत पालइ, टालइ सयल किलेस. घटविध जीवह राखइ, दाखइ जिनवर वाणि सात भय निवारीइ, वारीय मद अठ जाणि. नवविध सील सदा धरइ, करइ यति दसविधि धर्म एकादस प्रतिमा कहइ, लहइ ते सूत्रह मर्म भिखूप्रतिमा बार ए, सारए आपणउं काज तेर काठिया निवारीय, कारीय धर्मह काज

लाक्षणिक रीते एक पछी एक पांचथी तेरनी संख्याना क्रममा जैनधर्म-प्रवोधित लगभग समस्त गुणोधी गुरुने नवाजी कर्ताए गुरु प्रत्येनी पोतानो पूज्यभाव विनम्राणे व्यक्त कर्यो छे.

सामान्य रीते आवा आचार्य विशेषादिनी उपर फागुओमां पण वसंतवर्णन अने सूरि द्वारा कामविजयनुं अने ते द्वारा तेमना संमयनी दृढ्तानु प्रतिपादन करवामां आवे छे. परंतु आ फागुमां वा. कमलशेखरे लाक्षणिक दृबे वसंतनुं के फाल्गुणनुं जराय वर्णन नथी कर्युं. फक्त '' फागुबंघ'' नी रचनाने लीधे तथा पुष्पिकामां एने ''फागु'' नाम आपेलुं छे, एने लीधे आ कृतिने ''फागु'' कही शकाय.

जेम कर्ताए आ कृतिमां अढैंड अने फाग जेवा सरळ छंदोनो उपयोग कर्यो छे, तेबी ज तेमनी आडंबररहित, सरळ अने लालिस्यसभर भाषा छे:

"हंसराज घरि घरणी तुरणी ओढणी घाट"

—जेवी पंक्तिमां "घ" अने "ण" वर्णना उचित विन्यासथी पदावही ललितमधुर लागे छे. वळी "फाग" स्वरूपमां, प्रतेष्ठ पंकितमां आंतरयमध्नी योजना पण कर्ताए शब्दार्थनी तोडफोड कर्या सिवाय अनायास सिद्ध करी छे

''संजमनं जंग मंडींड, छंडींड घरनंड भार'' के ''उदयकरण आणदह, बंदह गुरुना पाय'' जेवी पंक्तिओं तेना दृष्टांत लेखे आपी शकाय. भाम आ नानकडा कान्यमां पण वा. कमलशेखरनुं रचना-कौशल्य, भाषा-प्रभुत्व, वर्णन-प्रतिभा तथा लावव-शक्तिनो ठीक ठीक परिचय थाय छे. सामायिके बत्रीश दोषनो भास

जूनी गुजरातीमां जैनरासादिना कडवाने 'भाषा' अथवा 'भास' कहेवामां आवे छे. केटलीक वार अलग काव्योंने पण भास कहे छे. जेम के 'लक्ष्मीमहत्तरा भास''—आ 'भास' नामना काव्यप्रकारमां वा. कमलशेखरे उपर्युक्त नानकडी कृति रचेली छे.

'रागद्वेषरहित शान्त स्थितिमां ने घडी अर्थात् ४८ मिनिट सुधी एक आसने नेसी रहेतुं एतुं नाम 'सामायिक' छे. एटला वखतमां आत्मतत्त्वनी विचारणा, जीवनशोधनतुं पर्यालोचन, जीवनविकासक वैराग्यशास्त्रोतुं परिशीलन, आध्यात्मिक स्वाध्याय अथवा परमात्मातुं प्रणिधान करवानु छे'. <sup>२</sup>

आ व्रतना आचरण समये जाणे-अजाणे तेना व्रतीथी बवीस प्रकारना दोषो थई जवानो संभव छे. आ दोषोमां दश मनना दोष, दश वचनना दोष अने बार कायाना दोष लागता होय छे. ते आ प्रमाणे छे :

मनना दोष-१. शत्रुने जोई तेना प्रत्ये द्वेष करवो. २. अविवेक चिंतववो ३. तत्त्वनो विचार न करवो. ४. मनमां उद्देग धारण करवो ५. यशनी इच्छा करवी ६. विनय न करवो ७. भय चिंतववो ८. व्यापार चिंतववो ९. फळनो संदेह करवो १०. निदान-नियाणु करवुं- एटले फळनी इच्छा राखी धर्मिकिया करवी.

वचनना दोष—१. कुवचन बोटवुं २. हुंकारा करवा ३. पाप कर्मनो आदेश करवो ४. लवारो करवो ५. कलह करवो ६. क्षेमकुशळ पूछी आगता स्वागता करवी ७. गाळो देवी ८. बाळक रमाडवुं ९. विकथा करवी १०. हांसी करवी

कायाना दोष — १ आसन चपळ – अस्थिर करबुं २. चोतर्फ जोया करबुं ३. सावद्य कर्म करबुं ४. आळस मरडवी ५. भींत इत्यादिनी ओथ रुईने बेसबुं ६. अविनये बेसबुं ७. शरीर परनो मेल उतारवो ८. खरब खणवी ९. पग उपर पग चढ़ावशे १० काम— बासनाए अंग उघाडा राखवा ११. जंतुओना उपद्रवधी डरोने चोतरफथी शरीरने ढांकबुं १२. निद्रा लेवी.

प्रत्येक श्रावकने आचरवा योग्य उपर्युक्त सामायिक नामना व्रतनो महिमा गावा तथा तेना आचरण समये जाणे अजाणे तेना व्रतने लागता उपर्युक्त बत्रोश प्रकारना दोषोने परि-हरी शुद्ध रीते ते व्रतनुं पालन करवानो बोध आपवा माटे वा. कमलशेखरे आ नानकडा २० कडीना भास' नुं सर्जन कर्यु छे. कर्ताए प्रथम कायाना, पछी वचनना अने छेल्ले मनना दोषो गणाव्या छे. कृतिनो प्रारंभ तीर्थंकर, गुरु के देव-देवानी स्तुतिथी करवाने बदले कर्ता भविकजनोने संसारिक इतर प्रवृत्तिओ त्यजी, समता धारी, मननो दंभ दूर करी, तथा बत्रीश प्रकारना सामायिकना दोषने निवारी साररूप सामायिक करवानो बोध आपे छे अने पछी बत्रीश दोषा

१. महीराज कृत 'नल-दवदंतीरास(सं. डॉ. भोगीलाल सांडेसरा) पृ. १५८.

२. जैनदर्शन, कर्ता-पू. न्यायविजयजी, पृ. ७०

गणावे छे. अंतमां पोताना नामोल्लेख साथे किन कहे छे के 'बन्नीश दोषने परिहरी, समता धारी, जो सामायिक करवामां आवे तो ते मोक्षपदसाधक बनी रहे छे.' आखी कृति एक ज ढाळमां रचायेली छे. कर्जीनी प्रत्येक पंक्ति प्रास-अनुप्रास्थी बंधायेली छे. कर्जीनी कथन-शैली पण लोको समजी शके अने याद राखी शके एवी सरळ छे. कायाथी लागता "अस्थिर आसन" अने "चपळ दृष्टि" ए वे दोष केना सरळताथी कर्जाए वर्णव्या छे, ते जुओ :

''बीजउ दोष आसण तणउ रें, आघउ पाछउ थाई दृष्टि चपळ त्रीजउ सुणउ रें, एकइ ठामि न रहाइ रे जीवडा '' आ उपरांत उचित वर्णविन्यासथी पदाविल सुवाच्य पण बनी छे. जेम के :

'दसम दोष खाजि खणइ जी, वंछइ वीसामण अग्यारि.''

आम कर्तानी कथनशैली सरळ अने सुवाच्य छे. छतां मात्र समायिकना बत्रीश दोषोनुं कथन ज करी, ते दोषोने परिहरी, शुद्ध सामायिक करी, मोक्षपाष्टित करवानो सीधेसीघो उपदेश आपवानो होई, साहित्यनी दृष्टिए बीजां कोई नोंघपात्र तस्वो आ कृतिमां खास छे नहि.

## ३. "प्रद्युम्नकुमार चुपई " नो सामान्य अभ्यास

'प्रद्युम्नकुमार-चुपई'' ए रास प्रकारनी कृति छे. आ प्रकरणमां 'प्रद्युम्नकुमार चुपई '' नुं एक रासकृति तरीके अवलोकन करेलुं छे.

प्रथम 'प्रद्युम्नकुमार चुण्हें" ना उद्भवस्थाननी चर्चा करी छे अने त्यारबाद तेना ''रास'' तरीकेना स्वरूपनी विचारणा करी छे. मध्यकालीन गुजराती साहित्य अन्तर्गत घडायेला रासकाव्य स्वरूपना जे व्यावर्तक लक्षणो छे ते आ ''प्रद्युम्नकुमार चुण्हें'' मां केवी रीते प्रति-बिबित थया छे, तेनो अभ्यास करतां, साथे साथे प्रस्तुत कृतिना जुदां जुदां पासाओनुं पण विगते अध्ययन करेलः छे.

#### प्रद्युम्तकुमार चुपई तुं मूळ उद्भवस्थान :

हिन्दु परंपरा प्रमाणो आलेखायेला "महाभारत", "रामायण" भने "पुराणो" पैकीना अनेक पात्रोनी कथाने घणा प्राचीन समयथी जैन परंपराए पोताने अनुकूळ एवा फेरफारो साथे अपनावी तेनुं जैनीकरण करेलु छे. उपलब्ध माहिती प्रमाणे श्रीसंघदास गणि वाचक कृत 'वसु-देवहिंडो'',श्री जिनसेनाचार्य कृत "हरिवंशपुराण'', श्रीगुणभद्राचार्य कृत " उत्तरपुराण,"

१. जे इस्तप्रतमांथी वा. कमलशेखरनो आ " सामायिक बनीस दोषनो भास" कृति मळी छे, तेमां बीजी "पौषधनो भास" नामनो कृति पण मळे छे. जो के तेमां तेना कर्ताना नामनो उल्लेख नथी. परंतु काव्यस्वरूप, विषय, भाषा तथा आलेखननी दृष्टिथी जोतां ए कृति पण वा. कमलशेखरनी होवानो संभव छे. अनंतनाथजी जैन देरासर, भात बजार, मुंबई -मध्येनों हस्तप्रतना भंदारमां उपरोक्त बंने कृतिनी त्रण पत्रनी एक प्रत नं क २४०४ नी रहेली छे. तेमां प्रथम वे पानां मळतां नथी. छेल्ला त्रण नंबरना पाना उपर एक बाजुए 'सामायिक बनीस दोषनो भास" ए कृति तेनी छट्टी कडीथी शरू थई ते ज पत्र उगर २०भी कडीए पूरी थई जाय छे. तेनी पाछळनी बाजुए १३ कडीमां "पौषधनो भास" ए कृति लखेली छे. तेनी प्रतिलिपिनो समय संवत १६८३नो नोंधेलो छे.

श्री स्वयंभू कृत ''रिट्ठणेमिचरिड,'' श्री पुष्यदंत कृत ''महापुराण '' श्री हेमचन्द्राचार्य कृत ''त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र,'' के सोमप्रमाचार्य इत ''कुमारपाल प्रतिबोध'' इत्यादि ग्रन्थामां जैन परंपरा प्रमाणेनी पुराणकथाओनो संग्रह थयेलो छे ते पछी तेना उत्तरकालीन कवि-लेखकोए ज्यारे पण एमांना कोई पौराणिक पात्र उपर स्वतंत्र कृति सर्जत्रानो प्रयास कर्यो छे तारे तेना आधार तरीके उपर्युक्त जैनपरंपरानी पुराणकथाओना संग्रहनो उपयोग करेलो छे. अलब्त, ते पात्रनी कथाना निरूपणमां कवि के छेखकोए निजी कल्पना अने प्रतिभाशी केटलाक फेर्फारे। समयान्तरे करेला छे. छतां पण कथाना मूळ उद्भवस्थान तरीके तो उपर्युक्त जैन पुराण-ग्रन्थों ज रहेला छे. बीजुं एम पण बनवुं शक्य छे के कोई किव के लेख ह उपर्युक्त जैन पुराणग्रन्थाने नहि परंतु स्वभाषा के अन्य भाषामां कोई पात्र उपर स्वतंत्र रीते रचाये थी, पोताना समय पहेलानी कृतिने आधार तरीके लइ पछो ते पात्र उपर पोतानी नवी स्वतंत्र रचना करें. तो वळी ए पण बनवुं शक्य छे के कर्ता पोतानी, कोई पौराणिक पात्रना उपर रच।येलो, स्वतत्र कृतिना आधार तरीके कोई एक पुराणग्रंथमांनी ते पात्र उपरनी कथा के ते पात्र ऊपर पोताना पहेलां बीजा कोई लेखके के कविए लखेली स्वतंत्र कृतिने ज न लेता, ते कथानो समा-वेश करता अनेक ग्रंथो अने स्वतंत्र कृतिओनो आधार लई, ते दरेक ग्रंथ के स्वतंत्र कृतिओ• मांथी पोताने अनुकुळ ते कथाना प्रसंगो लई ते बधा प्रसंगोने साथ वणी लई पोतानी नवी स्वतंत्र रचनानुं सर्जन करे. आम कोई पण पौराणिक पात्र उपर रचायेली स्वतंत्र कृतिना उद्भवस्थानना अभ्यास माटे उपर्युक्त बाबतो ध्यानमां राखवी आवश्यक छे.

जैन परंपराना उपर गणावेला लगभग बधा ज पुराणग्रंथोमां प्रद्युम्नकुमारनी कथानुं आलेखन थयेलुं छे. ते उपरांत वा. कमलशेलरे आ प्रद्युम्ननी कथा उपर पोतानी कृति रची तें पहेलां अनेक भाषामां अनेक कविओए प्रद्युम्ननी जोवनकथा उपर पोतानी स्वतंत्र रचनाओं सर्जेली छे. आमांथी कया विशिष्ट ग्रंथ के ग्रंथोने आधारे पोते पोतानी कृतिनी रचना करी छे, तेनो कशो सीधो या आडकतरो उल्लेख कर्ताए पोतानी आ कृतिमां के अन्य क्यांय कर्यो नथी, तेथी वा. कमलशेलरे पोतानी आ कृतिमां निरूपेला प्रसंगो, तेनी रज्ञातनी पद्धित, पद्यरचना के इतर माहितीओना आधारे आ कृतिमां निरूपेला प्रसंगो, तेनी रज्ञातनी पद्धित, अने तेनी पद्य-सुमार चुपईं" मांना प्रसंगो, तेनो घटनाक्रम, घटनाओना आलेखननी पद्धित, अने तेनी पद्य-रचना, छंदोलय, तेना अलंकारो इत्यादिनुं अवलोकन करतां स्पष्ट जणाय छे के ते सर्वे अंशोनुं, संवत १४११मां, कवि सधार कृत प्राचीन हिन्दीभाषामां रचायेल "प्रद्युम्नचरित" नामनी कृतिमांना ते ते अंशोने आधारे ज निरूपण करवामां आव्युं छे. एटलुं ज नहि परंतु वा. कमलक्शेलरे केटलीय पंक्तिओ तो अक्षरशः सीधे सीधी कवि सधारनी कृतिमांथी ज उपाडी लीधी छे, अने ते उपरांत काव्यनो घणो मोटो भाग, कि सधारनी कृतिमांथी, मात्र प्राचीन हिन्दीमांथी

१. किव संघार कृत आ आदिकालिक हिन्दी काब्य, "प्रद्युम्नचरित" नुं संपादन पं० चैनसुखदास न्यायतीर्थ तथा कस्तूरचंद कासलीवाले कर्युं छे. दि. जैन अ. क्षेत्र श्री महावीरजी,
महावीर भवन, सर्वाई मोनसिंह-हाइ वे, जयपुर, प्रथमावृत्ति सन १९६०. आगळ उपर
ज्यां ज्यां आ कृतिना उदाहरणी आप्यां छे ते सर्वे उपर्युक्त पुस्तकने आधारे ज आपवामां आव्या छे. कडीओनी बाजुमां आपेला संख्यांक पण उपर्युक्त पुस्तकने आधारे ज
नेषिलो छे.

प्राचीन गुजरातीमां भाषान्तर करीने ज, पोतानी कृतिमां मूकी दीधो छे, जेनी में सोदाहरण चर्चा पाछळ करी छे. आम स्पष्ट रीते जोई शकाय छे के वा. कमलशेखरे पोतानी कृति माटे किव सधार नी ''प्रशुग्नचरित'' नामनी कृतिनो मात्र आधार लीधो छे एटलुं ज निह परंतु प्राचीन हिन्दीभाषामां रचाएली ए कृतिना घणा मोटा मागनुं प्राचीन गुजरातीभाषामां रूणन्तर कर्युं छे.

आ उपरांत वा. कमल्हरेखरे बीजा केटलाक एवा प्रसंगोनं आलेखन कर्युं छे के जेनुं किव सधाहए पोतानी कृतिमां निरूपण नथी कर्युं. ए प्रसंगोना अभ्यास करतां एम जणाय छे के वा. कमल्हरेखरे ए प्रसंगोना आधार तरीके हेमचन्द्राचार्य कृत ''त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र'' ने। उपयाग कर्यों हाय. कारण के तेमांना घणा प्रसंगा विशिष्ट रीते मात्र ''त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र'' मां ज आलेखाया छे, एटल ज निह परंतु वा. कमल्हरेखरे तेवा केटलाक प्रसंगानं आलेखन ''त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र'' मांना ते ते प्रसंगना संस्कृत इलाकाने ज सीधेसीधा पातानी कृतिमां उद्धत करीने, करेलुं छे. आनी पण विगतवार चर्चा पालल करेली छे.

आम 'प्रद्युम्नकुमार चुपई' ना उद्भव-स्थान तरीके कवि संधारकृत प्राचीन हिन्दी कृति 'प्रद्युम्नचरित' अने हेमचन्द्राचार्य कृत 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' ने गणावी शकाय. वळी हेम चन्द्राचार्य अने वा कमलशेखर वच्चे लगभग चारसा वर्षना गाळा रहेला छे. तथी एम पण बनवुं संभवित छे के वा. कमलशेखरे 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' ने। सीधेसीधा उपयोग न पण कर्यो हाय अने वच्चेना गाळा दरम्यान काई श्वेताम्बर जैनमुनिनी, आ 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' ना आधारे प्रद्युम्नकुमारनी कथा उपर रचायेली बीजी कोई कृतिमांथी ते ते प्रसंगना उद्भव थयेला संस्कृत श्लोको, पोतानी आ 'प्रद्युम्नकुमार चुपई'नी रचनामां लीधा होय. आम 'प्रद्युम्नकुमार चुपई'ना उद्गमस्थान विशेनी शक्यताओनो प्रस्ताविक विचार कर्या पछी हवे तेनो विगतवार विचार करीए. प्रथम कवि सधारुनी प्राचीन-हिन्दी कृति 'प्रद्युम्नचरित'नो 'प्रद्युम्नकुमार चुपई'ना आधारग्रंथ तरीके विचार करीए.

#### कवि सधारु कृत 'प्रशुम्तचरित'नो 'प्रशुम्नकुमार चुपई'ना आधारप्रंथ तरीके विचार

#### घटनाओ अने घटनाक्रमः

किव संघारण पोतानी कृतिने छ सर्गमां विभक्त करी छे. वा. कमल्हरोखरे पण पोतानी कृतिने छ सर्गमां विभक्त करी छे. 'प्रद्युम्नचरित'मां किव संघारण जे घटनाओनुं आलेखन करुं छे, ते ज सर्वे घटनाओनुं आलेखन वा. कमल्हरोखरे पोतानी कृतिमां करेखं छे. वळी आ सर्व प्रसंगोनो, काँव संघारण आलेखननी दृष्टिण जे क्रम राख्यों छे, ते ज क्रम लगभग वा. कमल्हरोखरे पण राख्यों छे. तेमां — स्तुति, द्वारिकावर्णन, रुक्निमणीहरण, रुक्मी-शिञ्चपाळ साथे कृष्णनुं युद्ध, रुक्मिणी-विवाह, रुक्मिणी-सत्यभामा स्पर्धा, प्रद्युम्न-जन्म-हरण, कालसंवर द्वारा प्रद्युम्नरक्षण अने तेने त्यां प्रद्युम्ननुं पोषण, रुक्मिणी-विश्वप, नारद द्वारा सीमंधरत्वामी पासे जइ प्रद्युम्न विषेना समाचार जाणी रुक्मिणीने तेनी खबर आग्वी, प्रद्युम्न अने सिंहरथराजा वच्चे युद्ध, प्रद्युम्न द्वारा विविध दिव्य वस्तुभो अने विद्याभोनी प्राप्ति, कनकमालानी प्रद्युम्न परत्वे आसिकत, प्रद्युम्न अने कालसंवर वच्चे युद्ध, प्रद्युम्न द्वारिकागपन, रस्तामां मीलवेषे दुर्योधननी उदिधमालानुं हरण, द्वारिकामां मायावी चमत्कारोथी भानुकुमार, सत्यमामा, बळभद्र,

वसुदेव इत्यादिने रंजाडवा, रुक्मिणी- प्रद्युम्न-मिलन: प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणीनुं हरण, यादवो अने प्रद्युम्न वच्चे युद्ध, प्रद्युम्न-इण्ण वच्चे युद्ध, प्रद्युम्न इण्ण मिलन, प्रद्युम्न-लग्नोरवव, सांबद्धुमारनो जन्म प्रसंग, सांब-सुभानु क्रीडाओ, सुमानुविवाह, रुक्मीपुत्री साथेना विवाहनो प्रसंग, नेमिनाथ द्वारा द्वारिकाना विनाशनुं कथन, प्रद्युम्न द्वारा जैनदीक्षा-प्रहण अने मोक्ष-प्राप्तिना सर्व प्रसंगोनो कम बराबर कि सध रु इत ''प्रद्युम्नवरित''नो माफक ज राखवामां आव्यो छे. एटलुं ज निह परंतु उपर्युक्त महत्त्वना प्रसंगोनी अंदर बनती इतर नानी नानी विगतो पण सधारनी कृतिनी जेवो ज आलेखवामां आवो छे. जेम के, श्रीकृष्ण अने रुक्मिणीनो वनमां विवाह थवो, रुक्मिणीना उगण्ल द्वारा सत्यमामानो उपहास, जे सोळ गुफाओमांथी प्रद्युम्न दिव्यवस्तुओ अने विद्याओ प्राप्त करी ते गुफाओ, वस्तुओ अने विद्याओनां नामो, रुक्मिणी सायेना प्रद्युम्न द्वारा पोतानुं बळस्वरूप बताववुं, प्रद्युम्न द्वारा एकिमणीना हरण वखते प्रद्युम्न, कृष्ण सहित यादववीगेनी वीरतानो जे रीते उपहास करे करे छे तेनी विगतो, युद्धप्रस्थान समये कृष्णने नडतां अपग्रुक्तो, प्रद्युम्न दीक्षा न लेवा माटे आग्रह करतां माता-पिताने प्रद्युम्नती समजावट इत्यादि सर्वप्रदनाओ, तेनी नानी नानी विगतो अने तेनो आलेखवनकम, वा. कमल्होत्वरे बराबर कि सधार कृत 'प्रयुम्न चरित'नी माफक ज राख्यो छे.

#### घटनाओ अने वर्णनोतुं आलेखन:

आलेखननी दृष्टिए जोइए तो वा. कमलशेखरे मोटा भागनी घटनाओ अने वर्णनोनुं आलेखन बरावर किव सधारनी माफक ज करेखं छे. जेमां केटलेक ठेकाणे वा. कमलशेखरे, किव सधारए प्राचीन हिन्दी कृतिमां करेला आलेखननुं मात्र प्राचीन गुजराती भाषान्तर ज मूकी देधुं छे. तो केटलेक ठेकाणे अक्षरशः पंक्तिनी पंक्तिओ उटावीने ज मूकी दीधी छे. प्रथम केटलीक घटनाओनुं आलेखन जोइए.

सत्यभामा द्वारा नारदना अनादरनी घटना किन संघार आम आलेखे छे:

"नारद हाथ व मंडल धरइ, काल रूप देखत फिरइ।
सो सतभामा पाछ: ठियउ, दर्पण माझ निरूप देखियउ।।३१॥
निपरित रूप रिषि दिठउ जाम, मन निसमादी सुंदरि ताम।
देखि क्डिया कीयउ कुतालु, साति करत आयउ नेतालु।।३२॥
नडी नार रिषि ठाढउ भयउ, दुइ कर जोड न निणसण कहिउ।
उपनो कोषु न सक्यउ सहारि, तउ नाना रिषि चल्याउ पयारि ॥३३॥

उनर्युवत वर्णननुं ज रूपान्तर करी वा. कमलशेखर ए ज घटनाने आम वर्णवे छे:

"नारद हाथि कमंडल करी, कलाचरित्र किल देखह फिरी,
सो सतभामा पीठ पेखोयु, द्र्पणमाहि रूप देखीयु— २७
विपरित रूप हरि दीठउ जाम, मिन विलखाणी सुंदिर ताम,
देखि कूड कपट कीयु राउ, ए लक्षण छइ यादवराउ— २८
वडी वारि रिख ऊभउ रहिउ, कर जोडी बइसु निव कहिउ,
तउ रीसे चांपी रे नारि, चालिउ सुंदिरनई प्यारि— २९

तो द्वारिकागमन प्रसंगे नास्द द्वारा बनावेला विमानने तोर्डाने प्रयुम्ने करेला तेमता उप-हासनो प्रसंग वा. कमलशेखरे, कवि संघारनी माफक ज लगभग अञ्चरशः भाषान्तर करीने ज वर्णन्यो छे. कवि संघार कहे छे:

"नारद खण विमाण रचि फरइ, कंद्रप तोडइ हासी करइ। वहुडि विम्वाणु धरइ मुनि जोडि, खण मलयद्भउ धारइ तोडि ।२९१। विलखवदन भो नारद जाम, करइ उपाउ मयणु हिस ताम । मिण माणिकमय उदक करंतु, रचि विमाण खण धरइ तुरंतु ।२९२। विद्यावल तह रच्याउ विमाणु, जिह उदोव लोपि सिस भाणु । धुजा घंट घाघरि सजुतु, कुणि तिह चढयो नारायणपूत ।२९३।

वा. कमलशेखरे उपर्युक्त वर्णननुं आलेखन नीचे मुजब कर्युं छे:

"नारद एक विमान करि धरइ, कुमर भांजि हासी ते करइ,
वली... वि[मान]......जोडि, क्षणइ कुमर ते नांखइ तोडि ३४१
विलखनदन थयु नारद जाम, करइ विमान कुमर हसि तांम,
विद्याबिल तिहि करिउ विमाणु, जिहि उद्योतिहि लोपिउ भाणु ३४२
ध्वजा घंट घूघरी संजुत्त, रिखिसिउं चडिउ नारायणपुत्त,

प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणीहरणना प्रसंगे प्रद्युम्न रुक्मिणीनो हाथ झाली, यादवसभामां आवी जे रीते यादवोने रिक्मिणीनी मुक्ति माटे पडकार फेंकी युद्ध माटे ललकारे छे, ते प्रसंगना वर्णनमां किन सधारुए जे आलेखन कर्युं छे तेमां अने वा. कमलशेखरना ते प्रसंगना आलेखनमां लगभग कशो ज फेर नथी. किन सधारुनुं वर्णन जुओ:

"कोपारूढ मयण जव भयउ, वाह पकिर माता लीए जाइउ सभा नारायणु वइठउ जहा, रूपिण सिरस सपतउ तहा ।४६३। दे.खे सभा बोलइ परदवणु, तुम सो विलयो खत्री कवणु हउ रूपिण ले चल्यो दिखाइ, जाहि वल्ल होइ सु लेहु लुडाई ।४६४। तू नारायण मथुराराउ, तइ कंस भान्यो भरिवाउ । जरासंघ तई वधी पचारि, मो पह रूपिण आइ उवारि ।४६५।

ए ज प्रमाणे वा. कमलशेखर उपर्युक्त प्रसंगने आलेखता कहे छे:

"कोपारूट पजनह थयु, बाह साही माता लेई गयु

सभा नारायण बइठउ जिहां, रूपणिसिंउं संपतउ तिहां-४९२
देखि सभा बोलिउ परदवण, तुम्ममाहि बलवंत क्षत्री कवण
हूं रूपणि लेई चालिउ दिखाइ, जिहि बल होइ सो लिउ छोडाई-४९३
तूं नारायण मथुराराय, तइ कंस मांजिउ भडवाइ,
जरानिधु तइ हणिउ पचारि, मुज कन्हइ रूपणि आवी ऊगारि-४९४

आवा तो अनेक उदाहरणा बीजां आपी शकाय एम छे, ज्यां किव संघारनी कृति "प्रशुम्न-चरित"मांथी अनेक घटनाओंने वा. कमलशेखरे सहेजसाज शाब्दिक फेरफार साथे प्राचीन गुज-रातीमां भाषान्तर करी पोतानी कृतिमां आलेखेली छे. घटनाओना समान आलेखन पछी जो वर्णनोने तपासीश्चं तो ते पण, वा. कमल्होखरे कवि सधारनां ज वर्णनोनुं रूपान्तर करी पोतानी कृतिमां आलेखेलां छे. कवि सधारण करेखं कृष्णनी समानुं वर्णन जुओ:

सभा पूरि वइठउ हरि राउ, चउवल सइन न सूझइ ठाउ । अगर सुगंध वास परिमल्ड, कनक दंड सिंर चामरि ढलइ ।२३। पंचसबदु तिह वाजई घणे, वहुत भाति पावन पेखणे । भरिहि भाइ नाचिण पड धरइ, तालविनोद कला अणुसरइ ।२४।

आ ज वर्णन वा. कमल्होखरे आम कर्युं छे:

परिगह पूरी बहठड राउ, दल सामंतन सुहह ठाउ अग्रर सुगंध वास परिमल्ड, सोवन दंडइ चामर ढलड्-१८ बाजां पंचराब्द वाजंति, घणी भाति पाउंला पेखंति भरह भावि नाचइ पग धरइ, ताल विनोद करी मन हरइ-१९

उपर्युक्त बन्ने वर्णनो वांचतां तरत ज जणाइ आवशे के मात्र वे चार ठेकाणे शाब्दिक फेरफार करी वा. कमलशेखरे, कवि सधारुए करेलुं ज वर्णन सीधुं पोतानी कृतिमां उतारी लीधुं छे. यादवसेना अने प्रदुष्त वच्चेना युद्धनुं वर्णन जुओ — कवि सधारु कहे छे:

> "दाउ दल सयउ मह भए, सुहडनु साजि धनुष कर लए । इनउ साजि लए करवाल, जाणिक जीभ पसारी काल ।४८९। मयगल सिउ मैगल रण भिरइ, हैवर स्यो हैवर आ भिरइ । रावत पाईक भिरे पचारि, पडइ उठइ जिमवर को सारि ।४९०। केउ हाकइ केंउ लरइ, केउ मार मार प्रभणई । केठ भीरहि स्मरि रण आजि, केउ कायर निकलइ भाजि ।४९१।

आ ज बर्णननुं वा. कमलशेखर लगभग प्राचीन गुजरातीमां भाषान्तर करीने पोतानी कृतिमां आ प्रमाणे आलेखन कर्युं छे:

'बेंडु दल साम्हां मेलीइ, सुभट साजि धनुष करि लीइ, कोइ वारू लिई करवाल, जाणे जीभ पसारी काल-५१९ मयगलिखें मयगल रिण भिडइ, रहवर स्यूं रहवर आथडइ, राउत पायक वढइ पचारि, पड्या ते ऊठी कइ पुकारि-५२० को हाकई कोइ हण्ड, कोई मारि मारि तिहां भाणइ, कोई भिडइ समरंगणि गाजि, कोई कायर नासइ भाजि-५२१ द्वारिकानगरीनुं वर्णन किव सधार आम आपे छे:

भणइ नारद निसुणि परदवण, यह तु चइ द्वारिकापुरी, वसइ माझ सायरहं णिच्चल । जंमिभूमिय अथि तुव, सुध्ध फटिक मणि जणित उज्जवल ॥ कुवा वाडिउ च वणवर, वहु धवलहर आवास । पहु प्याल जिणवर भुवण, पउलि कोट चोपास ॥३१४ वा. कमलरोखर ए ज वर्णन प्राचीन गुजरातीमाषामां आपे छे:

भणइ नारद नारद निसुणि परदवण,

ए कहीइ द्वारिकापुरी, वसइ पासमांहि मायर,

जनक तुम्ह हूयु इहां, निरमल फटिक मणि जडिउ सरोवर
कूया वावि वलि वन पवर, घणा धवलहरे आवास,
बहु पयार जिणवरमवण, पोलि गढ चिहुपासि ॥३६२

आम आवा वर्णनोना पण थोकबंध उदाहरणो आपी शकाय, ज्यां वा. कमलशेखरे किंबि संधाहनां ज वर्णनोने सीधेसीधा पोतानी कृतिमां भाषान्तर करी उतारी लीधां छे. आ उपरांत अनेक संधादो, धर्मोपदेश, के इंतर तत्त्वोना उदाहरणो आपी शकाय, ज्यां वा. कमलशेखरे, किंबि संधा-रुमांथी ज सीधेसीधा वाक्यखंडोने लईने पोतानी भाषामां निरूपी लीधां छे. नीचे, किंब संधारनी कृति "प्रद्युम्नचरित" मांथी अने वा. कमलशेखर कृत "प्रद्युम्नकुमार चुपई" मांथी, केटलीक पंक्तिओ सरखामणी करवा माटे रजू करी छे, ज्यां वा. कमलशेखरे ते ते पंक्तिओने कां तो सीधेसीधी अक्षरशः ज पोतानी कृतिमां टांकी दीधी छे, कां तो ते पंक्तिनुं प्राचीन गुजरातीमां भाषान्तर करीने ए ज रीते मुकी दीधी छे.

#### प्र**युम्न चरित**

सायर माहि द्वारिकापुरी, धणय जक्ष जो रचि करि धरी १६ नारद आवत जबु देखियड, नमस्कार सुरसंदरि कीयउ ४३ नंदणवण की करहु सहेट, तिहिठा आणि कराउ भेट ४९ सतिभामा हरि दीठउ नयणा, कवण दोस स्वामी परहरी ९६ कणयमाल तउ विसमउ धरइ, सिर कूटइ कुकुवारउ करइ । उर थणहर मह फारह सोइ केस छोडी विहलंघन होइ २५० जाइ जुही पाडल कचनार ववलसिरि वेलु तिहि सार । कूंजउ महकइ अरु कणवीर, राचंपउ केवरउ गहीर-३४५ छपन कोटि मुखमंडल सार यह कहिए वलिभद्र क्रवार ।

#### प्रद्युम्नकुमार चुपई

सायरमिश द्वारिकान्तर, रचीय धणवइ दीध-९ नारद आवत जव देखीयु. नमस्कार तव सुंदरि कीयु-३८ नंदनवनमाहि करु सहेट. तिहां आणी करांचु मेट-४४ सतिभामा हरि दीठड नयणि, कवण दोसि स्वामी परहरी-८७ कनकमाल ते विसम् घरइ, कूटइ सिरनइ क्कू करइ, उर-थणहर मुह फाडइ तेह. केस छोडि मोकला मेल्हेय. ३०७ जाइ जुही पाडल अपार, विउलसिरीनइ बेलि विचार-३८८ कुजउ मरुउ नइ कणबीर, रायचांपु केवडउ गंभीर छपन कोडि मुखमंडणसार, ए कहीइ बलिभद्रक्रमार-४७९

सिंधजूझ यो जाणइ घणउ,
यह पीतियउ आहि तुमि तणउ। -४४८
तुहि नारायण हलहर भए,
छल करि फूणि कुंडलपुर गये।
तबहि बात जाणी तुम्होतणी,
चोरी हरी आणी रुक्मिणी ४७२
गीम्ब गहे तक करिह पुकार,
डोम डोम हुइ रहे अपार।
हाथ अलावणि सिंगा लए,
हाट चोहटे सब परिरहे। ६४४
मात तणउ वयण निसुणेइ,
तब प्रतिउत्तर कंद्रपु देइ।
छावणरूप सरीरह सार
जम रूठे सो होइ हैं छारू ६८४

सिधल जूझ ओ जाणह घणड, ए छइ पीतरीउ तुम्ह तण उ, तुम्हि नारायण हलधर ह्या, छल करि कुंडनपुरि गया, सयल बात जाणी तुम्हतणी, चोरी हरी आणी रुलमिणी—५०१ ग्रीव ग्रही तब करइ पुकार, ह्रब हुंब अम्हे रह्या अपार, हाथ आलबणि सींगा लीयां, हाथ चहुंटा सबि भिर गयां-६८२ मायतणा वयण निसुणेय, कुमर प्रदिमन ऊतर देय—७४४ लावन्य रूप शरीरह सार, जिम रूठइ तु हृह सह छार,

आम तो अहीं दगलाबंध उदाहरणे। आपी शकाय एम छे. पण ए रीते घणो ज विस्तार थइ जाय, तेथी नीचे में शब्द अने अर्थनी दृष्टिए सरखो लागती कडीओना मात्र संख्यांको ज नोध्या छे. प्रथम संख्यांक कवि सधारनी कृतिनो समजवो अने तेनी साथेनो बीजो संख्यांक वा. कमल- शेखरनी कृतिनो समजवो.

१६-९: २०-१५; २२-१७; २३ थी २४-१८ थी १९; २६ थी २९-२१ थी २४ : ३१ थी ३३-२७ थी २९ ; ३५ थी ५०-३० थी ४५ ; ५३-४७ : ५५ थी ५६-४९ थी ५०; ५९-५६; ६१-५७; ६९ थी ७१- ६३ थी ६५; ७६ थी ७८ : ७० थी ७२ ; ८४ थी ८८-७६ थी ८० ; ८९ थी ९१-८१ थी ८३ ; ९२ अते ९३-८४; ९४ थी ९९-८५ थी ९०; १०१-९५; १०६ थी १११-१०१ थी १०५ : ११२-११९ : ११३-१२० : १२०-१२६ : १२९-१३७ : १३१-१३८ : १३२-१३९; १३६-१४१ अने १४२; १३८ अने १३९-१४४ अने १४५; १४२-१४९; १४८-१६१; १५० अने १५१-१६३ अने १६४; १५३-१६६; १५४-१६६; १६७; १६३-२२२; १६४-२२४; १८२-२४१; १८५ अने १८६-२४४ थी २४६; १८८-२४८; १८९-२५०; १९०-२५१ थी २५२: १९१-२५३; १९२-२५४; १९३-२५४; १९३-२५४ अने २५५: १९४-२५५: १९८-२५८; १९९-२६०; २०१-२६१; २०४-२६६; २०८-२६७: २०९-२६८: २१०--२६९; २११-२७०; २१५थो २२३-२७२ थी २७९; २३३ थी २३५-२८९ थी २९१; २३८-२९२; २४१-२९६; २४४-२९९ थी ३००: २४५ थी २४७-३०१ थी ३०३; २४९ अने २५०-३ ६ अने ३०७: २५२-३०८: २५५-३१० ; २५६-३११ ; २५७-३१२ ; २५८-३१२ ; २५९-३१३ ; २६२-३१७; २६४-३१८; २६५ थी २७५-३२० थी ३३०; २७७ अने

२७८-३३१ अने ३३२ : २८२-३३३ अने ३३४ : २८४-३३६ ; २९०-३४० ; २९१ थी २९४-३४१ थी ३४३; २९६ थी ३०२-३४५ थी ३५१; ३०३-३५२; ३०६ थो ३११-३५५ थी ३५८; ३१२-३६०; ३१३-३६१; ३१४-३६२; ३१६ - ३६४ ; ३१७ - ३६५ ; ३१८ - ३६६ ; ३१९ - ३६६ अने ३६७ ; ३२० - ३६७ अने ३३८; ३२१-३६९; ३२२-३७०; ३२३ थी ३२७-३७१ थी ३७५; ३३२-३७७ अने ३७८; ३३३-३७८ अने ३७९; ३३४-३७९-३८०; ३३५ थी ३३७-३८० थी ३८२ : ३३८ अने ३३९-३८३ अने ३८४ : ३४२ अने ३४३-३८६ अने ३८७: ३४५-३८८ अने ३८९; ३४९-३९१; ३५१-३९२; ३५२-३९३; ३५३-३९४; ३५४-३९५;३५५ थी ३५९ -३९५ थी ३९९;३६० थी ३६६-४०० थी ४०७ : ३७२-४१० : ३५२ अने ३७३-४११ :३७४ थी ३७९-४११ थी ४१६ : ३८१-४१९ ; ३८२-४१८ , ३८४-४१९ ; ३८६-४२० ; ३८७-४२१ ; ३८७-४२२; ३८८ अने ३८९-४२२ थी ४२४; ३९०-४२४; ३९१-४२६; ३९३ अने ३९४-४४६ अने ४४७; ३९५-४२८; ३९६-४२९; ३९८-४३०; ३९९-४३० अने ४३१; ४०० थी ४२७-४३१ थी ४५९; ४२९-४६१; ४३० थी ४३२-४६२ थी ४६४; ४३३थी ४३७-४६५ थी ४६९; ४३८ थी ४४६-४७० थी ४७८; ४४७-४७९; ४४८-४८०; ४४८ थी ४५२-४८० थी ४८३; ४५३ थी ४५७-४८४ थी ४८७; ४५८ थी ४६०-४८८ थी ४९०; ४८१-४९१; ४६३ थी ४७३-४९२ थी ५०२: ४७४ थी ४८३-५०३ थी ५१३: ४८४ थी ४८८-५१४ थी ५१८ : ४८९ थी ४९५-५१९ थी ५२५ : ४९७ थी ५३५-५२६ थी ५६६: ५३८ थी ५४२-५६७ थी ५७०; ५४३ थी ५५२- ५७१ थी ५८०; ५५४ थी ५५६-५८१ थी ५८३: ५५८ थी ५५९-५८४; ५६०-५८५ अने ५८६; ५६४-५८७; ५६७-५८८; ५६८ शी ५७४-५८९ शी ५९६; ५७५-६१०; ५७६-६११; ५७८-६१३; ५८० थी ५८२-६१६ थी ६१८; ५८५ थी ५८६-६२४ अने ६२५ : ५८७ थी ५८९-६२६ थी ६२८ : ५९० थी ५९२-६२९ थी ६३१ : ५९५-६३३ अने ६३४; ६०३-६४१; ६०४-६४२; ६०५-६४३; ६०६-६४४; ६०७-६४५ ; ६०८-६४६ : ६०९-६४७ ; ६१३-६५२ ; ६१५-६५५ ; ६१६-६५६: ६१७-६५७: ६१८-६५८; ६१९ अने ६२०-६५९ अने ६६०: ६२१ शी ६२४-६६१ थी ६६३; ६२५ थी ६२८-६६४ थो ६६७; ६३४-६७२; ६३५-**દ્રાંક : દ્રાર્વા ફિપ્પ—દ્રાંક થી દ્રાર્ક, દ્રાર—૭૦૬, દ્રાર—૭१૦ ; દ્રારક-૭૧૧:** ६६६-७१६ ; ६६७ अने ६६८-७१७ अने ७१८ ; ६७०-७२० ; ६७४-७२३ : ६७६ थी ६८०-७३४ थी ७३७; ६८०-७३९; ६८१-७४०; ६८४-७४२ अने ७४३ : ६८६-७४४ : ६८८-७४५

आम उपर आपेली माहिती अनुसार जोई राकाय छे के कान्यनो मोटो भाग किन सधा-दनी कृति ''प्रसुम्नचरित''मांथी बेठेबेटो ज वा. कमलरोखरे, मात्र मूळ प्राचीन हिन्दीमांथी प्राचीन गुजरातीमां भाषान्तर करीने, पोतानी कृतिमां उतारी लीधो छे.

#### अलंकार अने छद

वा. कमलशेखरे पोतानी कृतिमां आलेखेला अलंकारो अने छंदोनुं अवलोकन करतां जणाशे के ते पण किव सधारनी कृति ''प्रद्युम्न-चिरत''नी माफक ज आलेखाया छे. ज्यां अने जेम किव सधारए पोतानी कृतिमां उपमा, उत्प्रेक्षा, संदेह, दृष्टांत, व्याजस्तुति इत्यादि अलंकारोनुं आलेखन कर्युं छे, त्यां अने ते ज रीते वा. कमलशेखरे पण करेछं छे.

नारदे पट उपर आलेखेला रुक्मिणीना रूपने कृष्ण जुए छे अने तेने संदेह अलंकारथी कवि सधार आम निरूपे छे, :

की यह अग्राञ्चर की वणदेइ, के मोहणी तिलोत्तम कोई की विजाहरि रूप सुतारि, काके रूप लिखो यह नारि ५५ ए ज प्रसंगे अने ए ज रीते वा. कमलशेखर पण ए ज अलंकार निरूपे छे:

> कइ अपछर ए देवहतणी, कइ मोहणि तिलोत्तमवणी कड विद्याधरतणी कुमारि, कुणइ रूप लिखिउ संसारि ४°

प्रद्युम्ने मायामय वानरो वडे सत्यभामानी वाडी वेरणछेरण करी दीधी तेने सभाव आलं-कारिक रीते निरूपतां कहे छे:

लंका जइसी की हणवंत, तिम वारी की वालखंदत ३५३ ''प्रद्युम्नकुमार-चुपई''मां पण ए ज दृष्टांत छे :

लंका जिम कीधी हनुमंति तिम वाडी कीधी बलवंति ३९३ कृष्णनी तलवारनुं उपमा अने उत्प्रेक्षामय आ वर्णन कवि सधारनुं छे:

बीजु सरिसु चमकइ करवालु, जाणौ सु जीम पसारै काल ५३९

तो तेनु ते ज वर्णन वा. कमलशेखरे पोतानी कृतिमां कर्युं छे:

बीज सरिख् झलकइ करवाल, जाणे जीभ पसारी काल-५३८

आगळ कहेला अलंकारना पण आवा बीजां अनेक उदाहरणो आपी शकाय एम छे, के जे वा. कमलहोलरे सीघेसीचा ज किं संघारनी कृतिमांथी लई पोतानी काव्यकृतिने पहेरावी दीधा छे.

छंदोमां पण किव सघारए, जेम तेनी कृतिमां महद् अंशे चोपाई, दोहा अने वस्तुछंदनो उपयोग कर्यों छे, तेम वा. कमलशेखरे पण बहुधा चोपाई, दोहा अने वस्तुछंदनो उपयोग कर्यों छे. किव सधारुनी जेम वा. कमलशेखरनी कृतिनो मोटो भाग पण चोपाईबद्ध छे. जे छंद किव सधारुए जे प्रकारना वर्णन माटे वापर्यों छे, महद्अशे वा. कमलशेखरे पण पोतानी कृतिमां ते प्रसंगना वर्णन माटे ते ज छंदनो उपयोग कर्यों छे. उदाहरण तरीके रुक्मिणींनुं हरण करी खता कृष्णने शिशुपाल द्वारा पडकार फेंकवो ७६; छडी रात्रिए प्रद्युम्नना हरणनो प्रसंग १२७; पुण्यप्रभावनुं वर्णन २३१; कनकमाला पासे, युद्धमांथी पाछा आवी कालसंवर द्वारा विद्या मागता, कनकमालाए करेली बनावटथी दुःखित कालसंवरनुं वर्णन २६५; नारद द्वारा द्वारिकानगरीनुं वर्णन ३१४; प्रद्युम्न अने रुक्मिणीनुं मिलन ४२९; रुक्मिणी द्वारा यादवोना बळनुं वर्णन सामळी क्रोधित थयेला प्रद्युम्ननुं वर्णन ४६१; प्रद्युम्नना युद्ध-ललकारथी रोषे मरायेला कृष्णनुं वर्णन ४७४; रणक्षेत्रमां पडेली यादवसेनानुं वर्णन ५०२ के प्रद्युम्न द्वारा पोतानो परिचय अपाता गुस्से थयेला रुक्मीनुं वर्णन ६४३—ए प्रसंगोमां किव सधारुए वस्तुछंदनो

उपयोग कर्या छे, तो ते ज प्रमाणे बराबर उपर्युक्त प्रसंगो बखते अनुक्रमे ७०, १३३, २८८, ३२०, ३६२, ४६१, ४९१, ५०३, ५३१,६८१ ए कडीओमां वा. कमल्डोखरे पण बस्तुछंदनो ज उपयोग कर्यो छे.

आम 'प्रद्युम्नकुपार-चुपई'मांनी घटनाओ, तेनो क्रम, तेना आलेखननी पद्धित तथा पद्यरचना, छंदोलय इत्यादि सर्व अंशोनुं आलेखन वा. कमल्होखरे कवि सधार-कृत 'प्रद्युम्न-चिन्त' मांथी ज सीधेसीधुं पोतानी कृतिमां करेखं छे. आथी आगळ कह्यं छे तेम 'प्रद्युम्नचित्त' ए 'प्रद्युम्नकुमार-चुपई' नुं मात्र उद्गमस्थान ज नथी, परंतु एम कही शकाय के 'प्रद्युम्न-कुमार-चुपई' ए मूळ हिन्दीभाषामां रचायेली किंव सधारुनी कृति 'प्रद्युम्नचरित'नुं वा. कमल्शेखरे प्राचीन गुजरातीभाषामां करेखं रूपान्तर ज छे. बन्ने कृतिओ वच्चे जणाता फेरफारो :

उपर जोयुं तेम, कि विधार अने वा. कमलशेखरे पोतानी कृतिमां निरूपेली घणी घटनाओं एक सरखी रीते ज निरूपाइ छे. तो बीजा एवा केटलाइ प्रसंगों छे, जेनुं आलेखन वा. कमलशेखरे किव सधार करतां सहेज जुदी रीते कर्ं छे. ए उपरांत बीजा पण एवा केटलाइ कथाप्रसंगों छे, जेनुं आलेखन वा. कमलशेखरे किव सधार करतां पोतानी कृतिमां विशेष करेलुं छे. जो के आवा फेरफारों अने कथाप्रसंगोंनी संख्या घणी नथी, छतां एना उपरथी एडुं अनुमान थई शके एम छे के वा. कमलशेखरे 'प्रद्युम्नकुमार चुपई'नी रचना माटे तेना उद्भव-स्थान तरीके किव सधारनी कृति 'प्रद्युम्नचरित' उपरांत बीजी कोई कृतिनो गण आधार लीचेलों छे. प्रथम आपणे वा. कमलशेखरे पोतानी कृतिमां किव सधार करतां जुड़ी रीते आलेखेला प्रसंगोमांना महत्त्वना फेरफारों तथा विशेष आलेखेला प्रसंगोने जोई लईए.

- १. किव सधार कृत 'प्रशुम्नचरित' मां रुक्मिणीना रूपने जोई विह्वळ थयेला कृष्ण, नारदना कहेवाथी तरत ज कुंडिनपुर जाय छे, अने त्यां रिक्मणीनुं हरण करे छे. 'प्रशुम्न-कुमार-चुपई''मां रुक्मिणीना रूपने जोइ विह्वळ थयेल कृष्ण प्रथम दूत द्वारा भीष्मक राजा पासे रुक्मिणीना हाथनी मागणी करे छे. ते वखा रुक्मी कृष्णनो उपहास करी तेनी मागणी नक्रे छे. अग वात सांभळी रुक्मिणी पोतानी धात्रीने, गमे ते गैने कृष्णने मेळवी आपवानुं कहे छे. तेथी ते धात्री एक दूतने गुप्त रीते बोलावी कृष्णने रुक्मिणीनुं हरण करी जवानो संदेशो पाठवे छे. ए संदेशो वांची पछी कृष्ण, वळराम-सहित कुंडिनपुर जई रुक्मिणीनुं हरण करे छे. आम, कृष्णनी भीष्मक पासे रुक्मिणीनी मांगणी, रुक्मीए तेनो करेलो अनादर अने उपहास अने रुक्मिणीनी इच्छाथी धात्री द्वारा एक दूत मारकत गुप्त रीते कृष्णने रुक्मिणी-हरणनो संदेशो पाठ-विमाणीनी कवि सधार करतां वा. कमलशेखरे पोतानी कृतिमां विशेष आलेख्या छे.
- २. किव संघार ''प्रद्युम्नचरित''मां सत्यभामाने रुक्मिणीनो मिलाप एक देवी तरीके वगीचामां करावे छे, ज्यारे वा कमलशेखर ''प्रद्युम्नकुमार-चुर्न्ह''मां लक्ष्मीदेवी तरीके लक्ष्मीना मंदिरमां करावे छे.
- ३. कृष्ण द्वारा जांबुवतीना पाणिग्रहणनो प्रसंग मात्र ''प्रद्युम्नकुमार-चुपई''मां ज आलेख येला छे.
- ४. रुक्मिणी अने सत्यभामाने पुत्रजन्म थाय छे, ते पहेलां रुक्मिणीने थयेलुं सुभ स्थु-प्नद्र्शन, कुण द्वारा तेना फळरूपे पोताना सरखा पराक्रती पुत्रना जन्मनी आगाही, ते सांमळी

. सरयमामा द्वारा कल्पित स्वप्नदर्शनतुं कथन – ए प्रसंगो मात्र ''प्रद्युम्नकुमार-चुर्गई''मां ज आलेखाया छे.

५. प्रद्युम्न द्वारा सिद्धपुरुषनु रूप रुई सत्यभामाने स्वरूपवान बनावशना बहाने तेनुं कपटथी शिर मूंडो तथा मोढे मसी लगाडी विरूप करवानो प्रसंग मात्र "प्रद्युम्नकुमार-चुपई" मां आलेखायेलो छे.

६. सांबकुमारना जन्मप्रसंगमां "प्रद्युम्नकुमार-चुपई"मां एम आलेखन छे के सत्यभामा, कृष्ण पासे रुकिमणीना जेवा पुत्रनी मांगणी करे छे तथी कृष्ण उपवास करो देवनुं ध्यान घरे छे, त्यां हरेणेगमेत्रो देव आतीने कृष्णने तेनी इच्छा पूछे छे, त्यारे कृष्ण, प्रद्युम्न जेवा बीजा पुत्रनी मांगणी करे छे. देव कहे छे के "ते मारो पूर्वजन्मनो उहोदर हो। हवे हु देव थयो छु. आ रतनजिश हार तने आपुं छु ते जे राणी पहेरशे, तेने त्यां प्रद्युम्न जेवो पुत्र थशे " "प्रद्युम्नचरित"मां सत्यभामानी प्रद्युम्न जेवा पुत्रनी मांगणीनो प्रसंग के तद्धें कृष्णनुं तप करवं — ए प्रसंगो नथी आलेखाया। त्यां तो देव पोते ज सीधो कृष्णनी सभामां जई हार आपे छे. वळी "प्रद्युम्नचरेत" प्रमाणे देवे कृष्णने आवो दिव्य हार आप्यो ते वातनी प्रद्युम्नने एम ने एम ज खबर पडी जाय छे. "प्रद्युम्नकुमार-चुपई" प्रमाणे कृष्ण पोते ज प्रद्युम्नने ए वातशी विदित करे छे.

- ७. "प्रद्युम्नचिति" प्रमाणे कृष्ण सत्यभामारूप बनेली जांबवतीने हार पहेरावे छे के तरत ज जांबवती पोतानु असल स्वरूप प्रकट करे छे, त्यारे कृष्णने मूळ वातनी खबर पडे छे. "प्रद्युम्नकुमार-चुपई" प्रमाणे सत्यभामा बनेली जांबवतीने कृष्ण हार पहेरावे छे के तरत ज ते चाली जाय छे अने थोडीवारमां खरी सत्यभामा कृष्ण पासे आवे छे त्यारे कृष्ण कहे छे, "वळी पाछी शा माटे आवी ?" त्यारे सत्यभामा कहे छे, 'एवी वात वळी हुं करो छो ?' त्यां तरत ज कृष्ण विचार करे छे अने तेमने मूळ वातनी खबर पडे छे.
- ८. परणवा आवेला नेमिनाथ, तेमना विवाहोत्सवमां मिजबानी अर्थे बांधी राखेला प्राणीओनो पोकार सांभळी, परण्या वगर ज पाछा चाल्या जाय छे अने पछी दीक्षा है छे ए प्रसंग मात्र ''प्रद्युम्नकुमार-चुपई''मां ज आलेखायो छे .
- ९. यादवकुमारो द्वारा द्वैपायनऋषिने मार मारवो अने द्वैपायनऋषि द्वारा तेमते शाष आपवानो प्रसंग पण मात्र 'प्रद्युम्नकुार-चुपहै' मां ज आलेखवामां आन्यो छे. 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' अने 'प्रद्युम्नकुमार-चुप्है'

आम किव संघारनी कृति प्रद्युग्नचरित' नी सरखामणीमां वा. कमलशेखरे पोतानी कृति-मां करेला उर्ण्युक्त महत्त्वना फेरफारो अने विशेष आलेखेला प्रसंगोने जोता एम जणाय छे के वा. कमलशेखरे करेला ए फेरफारो अने आलेखेला विशेषप्रसंगोने हेमचन्द्राचार्य-कृत 'त्रिषष्टिं-शलाकापुरुषचरित्र' नो आधार हशे, कारण के वा कमलशेखरे जे रीते पोतानी कृतिमां उपर्युक्त फेरफारो करेला छे, तथा विशेष प्रसंगोनुं आलेखन करेलुं छे, लगभग ते ज प्रमाणे 'त्रिषष्टि-शलाकां ते मां तेनुं निरूपण आपणने मळे छे. आनी चर्चा पाछळ करी छे. एटलुं ज निह्न परंतु उपर्युक्त कहेला प्रसंगोमांथी केटलाक प्रसंग-विशेषोनुं तो वा. कमलशेखरे 'त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरित्र' मांथी ते ते प्रसंगना संस्कृत श्लोकोने ज सीधेसीधा पोतानी कृतिमां मूकी दईने आलेखन करेलुं छे.

'त्रिष्षिशालाकापुरुषचरित्र'मां नारदे पट उपर आलेखेला रूपने जोता कृष्ण कामविह्नल थइ, दूत द्वारा भीष्मक पासे रुक्मिणोना हाथनी मांगणी करे छे. ते वखते रुक्मी जे वचनो डच्चारे छे ते आम छे:

> हसित्बोवाच रुक्म्येवं गोपो हीनकुलोऽप्यहो। मज्जामि याचते मुढः कोऽयं तस्य मनोरथः॥

> > [त्र.श.प.च.-पर्व ८मुं-सर्ग ६ठो-श्लोक २०]

'ब्रयम्नकुमार-चुपई' मां पण लगभग आवुंज आलेखन छे:

"एह वात जब कांने सुणी ्रद्भ नारः दूतवचनि ते हसिउ कुमार अन्याई ए भूंडुं घणउं मृढ मनीरथ मोटउ करइ, ऊत्तम राय कुमरि किम वरइ ५२

महितइ जई मागी रुखमिणी गोपी हीनकुलइ अवतार ५१ कंस वधी इहां आविउ **सुण**उं

अने त्यारपछी, पर्व ८, सर्ग ६ना श्लोक २१ अने २२ के जेमां स्क्मी शिशुपालने ज हॅक्मिणी आपवानो निर्धार करे छे, ते बन्ने संस्कृत श्लोको वा. कमलरोखरे पोतानी कृतिमां सीवेंसीधा उतारी लीधा छे. वळी पोतानो विवाह शिशुपाल साथे थवानो छे, त्यारे रुक्मिणी. गमे तेम करीने कृष्णने मेळवी आपवानुं पोतानी फोईने कहे छे त्यारे, 'त्रिषष्टिशलाकापुरुष-चरित्र' मां एम आलेखन छे के

कृष्णेऽभिलाषं रुष्मिण्या ज्ञात्वैवं सा पितृष्वसा । सद्यः प्रच्छन्न-दृतेन कृष्णायैवमजिज्ञपत्रे।।।

वा. कमलरोखरे पण तेवा ज प्रकारनुं आलेखन करतां कहां छे के कृष्ण-अभिकाष माइ जाणोयुं, एक दूत प्रकन भाणीयु

चीरी आपी लागी पाय । ५४ कहि तु जइनइ यादवराय.

त्यारबाद, 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' मांथी पर्व ८, सर्ग ६, श्लोक २९थी ३२─ए चार श्लोको के जेमां, रुक्मिणीनी फोईए कृष्णने, माधमासनी ग्रुक्त अष्टमीए नगरबहारनी वाडीमांथी रिक्मणीनुं हरण करी जवानो पाठवेलो संदेशो ; रुक्मिणीने परणवा माटे शिशुगलनुं कुंडिनपुरमां आगमन अने तेने आवेलो जाणी कलहप्रिय नारद द्वारा कृष्णने खबर आपवा—तेनं निरू क्ण छे. ते बा. कमलरोखरे पोतानी कृतिमां अक्षरशः उतारी लीधुं छे. आम कृष्णनी भीष्मक वासे रुक्मिणीनी मांगणी. रुक्मीए करेली तेनी अनादर अने उपहास अने रुक्मिणीनी इच्छा-थी फोई द्वारा एक दूत मारफत गुप्त रीते कृष्णने रुक्मिणीना हरणनो संदेशो पाठववो-ए प्रसंगो कवि संघार करता वा. कमलशेखरे जे पोतानी कृतिमां विशेष आडेख्या छे, ते सर्व, उपर्युक्त रीते जोतां, 'त्रिष्टिशशकापुरुष ०' ना आधारे आहेलाया छे एम निःशंकपणे कही शकाय.

आ उपरांत, शिशुपाल अने रुम्मी मोटी सेना लई राम-कृष्णनी पाछळ पडे छे त्यारे बन्ने भाईओने एकला जोइ भयभीत थयेली रुक्मिणीने कृष्ण, तालवृक्षनी श्रेणिने एक ज बाणथी छेरी नाखी तथा अंगुठा अने आंगळीनी वच्चे राखीने पोतानी मुद्रिकानो हीरो मसूरना

१ त्रिष्टि-ना अहीं सर्वरूथाने आपेला पर्व, सर्ग अने श्लोकना संख्यांक, श्रीजैनधर्म प्रसाः रक सभा. भावनगर तरफथी प्रकाशित थयेल आवृत्तिने आधारे आपेला छे.

२ त्रिषच्टि० पर्व ८, सर्ग ६, श्लोक २८.

दाणानी जेम चूर्ण करी, पोताना बळनी प्रतीति करावी, आनंदित करे छे. ते प्रसंगनुं पण वा. कमलरोखरे, 'त्रिष्टिशलाका ॰'' पर्व ८,सर्ग ६डाना श्लोक ४२थी४७ ए छ श्लोकोने सीघे सीघा ज पोतानी कृतिमां मूकी दईने आलेखन करें छे.

वळी, ज्यारे रुक्मिणीनुं पाणिग्रहण करी कृष्ण द्वारिकामां आवे छे त्यारे रुक्मिणी कृष्णने "मने तो एकली केदीनी जेम लई आव्या छो, तो हुं मारी सपत्नीओनी आगळ हास्यपात्र न याउं एम करो" -एम कहे छे, त्यारे कृष्ण "तने हुं सर्वथी अधि क करा रा" एम कही सत्यभामानी पडखेना एक महेलमां रुक्मिणीने उतारे छे. ए प्रसंगनुं पण वा. कमलशेखरे, "त्रिषिटिशलाका-पुरुषचरित्र" पर्व ८, सर्ग ६ट्ठाना श्लोक ६१थी६३-ए त्रण श्लोकोने सीधेसीधा ज पोतानी कृतिमां मुकी दईने आलेखन करेलुं छे.

कृष्ण द्वारा जांबुवती-पाणिग्रहण प्रसंगमां, एक वखत नारदनुं आगमन, कृष्ण द्वारा तेमने कोई आश्चर्यकारक स्थान जोवामां आव्युं होय तो तेना विषे पूछ्युं, तेना संदर्भमां नारद द्वारा वितादयगिरी उपर जांबवाननी अनुपम स्वरूपवान पुत्री जांबवतीनी वात करवी —ते प्रसंगनुं निरूपण पण था. कमल्हरोखरे, ''त्रिषिट्शलाकापुरुषचरित्र'' पर्व ८, सर्ग ६ हाना श्लोक ७७थी७९ —ए त्रण श्लोकोने सीधेसीधा ज पोतानी कृतिमां मूकी दईने करेछं छे. त्यार पछी गंगाकिनारे क्रीडार्थे आवेली जांबवतीनुं कृष्ण द्वारा हरण, जांबवान अने कृष्ण वच्चे युद्ध, जांबवानने पराजित करी जांबवती अने तेना भाई विश्वकसेन साथे कृष्णनुं द्वारिकामां आवंदुं अने जांबवतीने रुक्मिणीना महेलनी बाजुना महेलमां उतारवी —ए प्रसंगनुं आलेखन पण लगभग 'त्रिषिट्शलाका' पर्वट, सर्ग६, श्लोक ८०थी र ६ मां आलेखायेला ते ज प्रसंगोने आधारे करेखं छे. केटलीक पंक्तिओ तो जाणे संस्कृतमांथी महद्अंशे वा. कमलशेखरे प्राचीन गुनरातीमां क स्थान्तर करीने मूकी होय एवी लागे छे. जेम के

'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र'मांथी यथोक्ता नारदेनेयं तथैवेति वदन् हरिः ।८२।

अपमानाद्विरक्तस्तु प्रत्रज्यां स्वयमाददे । ८४ । स्किमणीसदनाभ्यणें तस्या हम्ये ददौ हरिः । ८६। 'प्रद्युम्नकुमार -चुपई'मांथी कही नारदर्शल जेहवी मय दीठी कुमर्र तेहवी ११० दुःख वइरागिइ संजिम लीइ-११२ रुखमणि नइ पासइ आवासि जांबवित मेल्ही ते पासि ११३

योग्यमन्यच्च सा त्वासीद्विक्मण्या सह सख्यभाक् ।८७ । बहिनगणा बेहुजिणीइं कीध कृष्ण सुरारह मांन घण दोध ११४

आम जांबनती-पाणिग्रहणनो प्रसंग पण, उपर प्रमाणे जोतां, वा. कमलशेखरे 'त्रिषष्टिशलाका ०' ना आधारे ज निरूप्यो छे तेम कही शकाय.

आ उपरांत रुक्मिणी अने सत्यभामाने पुत्रजन्म थाय छे ते पहेलां रुक्मिणीने आवेला शुभ स्वप्न अने कृष्ण द्वारा तेना फळरूपे पराक्रमी एवा पुत्रना जन्मनी आगाही: आ बातनी पोतानी दासी द्वारा सत्यभामाने जाण थतां तेनुं पण कृष्ण पासे कल्पित स्वप्ननुं कथन इत्यादि प्रसंगो पण लगभग 'त्रिषष्टिशलाकां क' ना आधारे 'प्रयुम्नकुमार-चुपई' मां आलेखाया छे. बन्ने राणीओने जे प्रकारनां स्वप्नां आव्यानी वात 'त्रिषष्टिशलाकां क' मां कहेवाई छे ते ज प्रकारे 'प्रयुम्नकुमार-चुपई'मां पण कहेवाइ छे.

'त्रिषष्टिशलाका ॰' मां रुविमणीना ग्रुभस्वप्नदर्शनतुं वर्णन आम छे : अन्यदा रुविमणी स्वप्ने बलक्षवृषभस्थिते । विमाने स्वं समारुढं दद्शे प्रत्यबोधि च ॥११८ पर्वट, सर्ग ६ ]

'प्रद्यम्नकुमार-चुपई' मां ए ज प्रकारना स्वप्ननी वात कहेली छे: रूपीण सुपन दृषभ पेखंती, चडी हुं अमर विमानइ मति ११५ तो सत्यभामानु किल्पत स्वप्न 'त्रिषष्टिशलाका ' मां आम छे: सापि स्वप्नं कल्पयित्वोपेत्याख्याच्छाङ्गीपाणये।

सापि स्वप्न कल्पायत्वापत्याख्याच्छाङ्गपाणय । हस्तिमल्लोपमो हस्ती स्वप्नेऽद्य दृहशे मया ॥१२२ पर्वट.सर्गे६ ]

'प्रद्युम्नकुमार चुर्व्ह' मां थोडाक फेर साथे लगभग एवी ज वात करी छे:

... ... ... ... कलपित्त स्वप्न कहइ ते वली ११७ स्वामी सुणंड सुपन मह दीठ, मोटंड मयगल मुखि पईंठ ११८

आम र्शावमणी अने सत्यभामाने,पुत्रजन्मनी आगाहीरूप, स्वप्नदर्शननो प्रसंग जे कवि संघारुए नथी आलेख्यो, तेनुं वा. कमलशेखरे 'त्रिषष्टिशलाकां ना आधारे आलेखन कर्युं होय एम लागे छे.

प्रद्युग्न द्वारा स्वरूपपिश्वर्तन करी सत्यभामाने स्वरूपवान बनाववाना बहाने तेनुं शिर मूंडी तथा मसी लगाडीने विरूप करवानो प्रसंग, जैन पुराणग्रन्थोमां मात्र 'त्रिषध्दिशलाका व'मां ज विशिष्ट रीते आलेखायो छे.' तेथी 'प्रद्युग्नकुमार-चुपई'मां आलेखायेला ए प्रसंगनी कथानो आधार 'त्रिषष्टिशलाका व' ज होवो जोइए.

'प्रद्यम्नकुमार चुपई'-एक रासकृति :

आम ''प्रद्युम्नकुमार-चुपई''ना उद्भवस्थाननी चर्चा कर्या पछी हवे तेना रास तरीके ना स्वरूपनी विचारणा करोए.

मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां जैन किविओ शसने 'चरित' 'आख्यान', 'पवाडु', 'प्रबंध' एम जुदां जुदां नामे ओळखावता तो वळी मालण, नाकर, विष्णुदास वगेरे आख्यानने रास पण कहे छे-आम, आ सर्व साहित्यप्रकारो अमुक अंशे भिन्न भिन्न होवा छतां रचना-हिंदए तेमां केटलीक समानता पण रहेली होवाथी ते एकवीजाना पर्याय तरीके केटलीक वार वपराता आ ज रीते घणी ''चोपाई''नामधारी कृतिओ पण वस्तुतः रासकृतिओ ज हती. पोतानी कृतिमां चोपाई छंदना सविशेष उपयोगने कारणे तेनो किव ते कृतिने ''चोपाई'' नाम आपतो. मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां आवा अनेक रासकृतिओ ''चोपाई'' नाम पामी छे, जेमां संवत १३३१ मां जगडुए रचेली ''सम्यक्त्यमाइ चउपई'', चौदमा शतकना आरंभमाना वरसोनी आसपासमां रवायेली विनयचंद्रपूरि-कृत 'नेमिनाथ चतुष्पदिका'', वि. सं.१४६२मां रचायेली वितयचंद्रपूरि-कृत 'नेमिनाथ चतुष्पदिका'', वि. सं.१४६२मां रचायेली वित्यचंद्रपूरि चुति ''गुणकरंडक चोपाई'', कीर्तिसागर -शिष्ये सं.१७०४२मां रचेली ''मीमचोपाई', सं. १७४५मां कुशलसागर-कृत ''वीरभाण उदयभाण चोपाई'' इस्यादि असंख्य कृतिओ गणावी शकाय.

- १. 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र' पर्व ८मुं, सर्ग ६ हो, श्लोक ४२५-४४२.
  - २. 'प्रद्युम्नकुमार-चुपई' कडी ५९८ थी ६०९

प्रस्तुत "प्रद्यम्नकुमार-चुपई" पण वस्तुतः रासकृति ज छे. कान्यान्ते कविए भले, तेमां चोपाई छंदना सिवशेष उपयोगयी, "इति प्रद्यम्नकुमार चुपई समास" एम कही पोतानी कृतिने चोपाई कही होय, परंतु कान्यना आरंभे कविए पोते ज रास रचु रिल्यामणुं १: एम कही आ कृतिने रासकृति तरीके गणावी छे. आम "प्रद्युम्नकुमार-चुपई" ए एक रासकृति ज़ छे अने तेनुं मूल्यांकन पण एक रासकृति तरीके ज करवुं योग्य जणाय छे. आयी प्रथम रास स्वरूपना लक्षणो तारवी तेने अधारे "प्रद्युम्नकुमार-चुपई" नु अहीं मूल्यांकन करवानो प्रयत्न करेलो छे.

### 'प्रद्युम्नकुमार-चुपई' मां प्रतीत थतां रासस्वरूपना सामान्य लक्षणोः

उपर कहुं ते प्रभाणे रास, प्रबंध, प्रवाह, चोगाई इत्यादि साहित्य-प्रकारोमां रचना-दृष्टिए खास कोई फरक नथी अने रास अने आख्यान प्रकार वच्चे पण घणुं साम्य रहेलुं छे. आथी रासकृतिना जे लक्षणो तारवीए तेमांना केटलांक लक्षणो उपर कहेला अन्य माहित्य-प्रकारोमां सामान्य होय ए स्वाभाविक छे. एटले ते लक्षणो चुस्त रीते मात्र रासस्वरूपनां ज छे एम कहीं, न राकाय. अहीं १२मी राताब्दीथी १८मी राताब्दी वच्चे सर्जायेला राससाहित्यमांथी प्रतीत युतां सामान्य लक्षणोने रासस्वरूपनां लक्षणो तरी के गणाव्यां छे अने तेने आधारे "प्रयुम्नकुमार-चुगई"-नुं रासकृति तरीकेनुं मूल्यांकन करेलुं छे.

डाँ. भारती वैद्ये तेमना "मध्यकाठीन राससाहित्य-१२मीथी १८मी सदी" नामना पुस्तकमां ते समय दरिमयान रचायेठी केटलीक रासकृतिओना अभ्यास परथी रासना स्वरूप विषे केटलांक चोक्कस अनुमानो बांध्यां छे, तेने अनुलक्षीने, सहु पहेलां आ साहित्य-प्रकारना आकारनो विचार करीए:

१ रासनो प्रारंभः (क) रासनो प्रारंभ नमस्कारात्मक रहेतो. प्रारंभमां सरस्वती देश जिनदेवता, पंच परमेश्वर के गुरु अथवा बधांने प्रणाम करवामां आवता. सरस्वती देश उपरांत अविका के चक्रेश्वरीदेवीनुं पण आ मंगळाचरणमां स्मरण करवामां आवतुं. "मांकृण रासो" जेवी कोईक कृतिमां अपवादरूपे प्रारंभमां गणपतिने नमस्कार करवामां आव्या छे. सामान्य रीते कृतिनो आ स्तुतिखंड बहु लांबो नथी होतो, छतां ज्यां २४ तर्थकर, देवी, गुरु इत्यादि सर्वनी आशीर्वादत्मक स्तुति करवामां आवी होय छे त्यां सहेजे पंदर-वीस कडीओनो निस्तार शई जाय छे

(ख) क्यारेक रासना प्रारंभमां रचनाना विषयनो निर्देश पण कावामां आवतो अथवा वस्तु कांथी लीधुं छे तेना निर्देश पण करवामां आवतो.

वा. कमलशेखरे ''प्रद्युम्नकुमार चुपई'' नो प्रारंभ पण सर्व जिनश्वरो, सरस्वतीदेवी अने गुरु ने नमस्कार करीने करेलो छे अने ते मात्र एक कडीमां ज. अने पछी तरत ज पोतानी रचनानो विषयिनदेश करतां कहे छे के "यादवनी सरस कथा हुं एक चित्तथी कहीश (तेमां आवतुं) प्रद्युम्नकुमारनुं सुंदर चरित्र तमे सांभलो." विषयिनदेश पछी कर्ताओं वस्तु क्यांथी लीशुं छे तेनो कोइ निर्देश कर्यो नथी. आपणे आगळ जोशुं ते प्रमाणे वा. कमलशेखरे कवि सधारकृत "प्रद्युम्नचरित" नो मात्र वस्तु माटे आधार लीधो हतो एटलुं ज नहीं, परंतु तेमांथी केटलीये कडीओ पोतानी कृतिनां सीधेसीधी अथवा तो भाषान्तर करीने मकी ठीधी छे जितां वा. कमलशेखरे तेनो जराये ऋणस्वीकार कर्यो नथी.

''प्रद्युम्नचरित'' उपरांत वा. कमजरोखरे ''त्रिषष्टिरालाकापुरुषचरित्र'' नो पण आधार लीधो छे, ते पण आपणे जोयुं छतां तेनो पण कर्ताओ क्यांय निर्देश नथी कर्यो.

- २. रासनो अंतः (क) रासना अंतमां फलश्रुति आपवामां आवती. आमां रासना पठन-थी, श्रवणथी के कीर्तनथी थनारा लाम वर्णववामां आवता.
- (ख) केटलीक कृतिओमां कविए पोतानुं नाम पण प्रारंभमां जणान्युं होय छे, पण साधारण रीते कवि पोतानुं नाम रचनाने अंते आपतो होय छे. आ साथे केटलीक वार कवि पोताना गच्छनी विगत, गुरुनुं नाम के गुर्वाविलिनुं निरूपण पण करतो होय छे.
- (ग) आ उपरांत रचनानो समय, रचनास्थल, रचनानो ढाळ होय तो ढाळनी संख्या अथवा पद्यसंख्या—आ बधी विगत पण किं अंते आपतो होय छे.
  - (घ) कवि अंतमां सहुना कल्याणनी कामना व्यक्त करतो होय छे.
- (च) वळी पोते रचनामां जे कहुं होय ते आगमथी विरुद्ध होय अथवा पोतानी कंई भूहचूक होय तो ते बदल क्षमायाचन। पण किव अंते करतो होय छे, अथवा बीजानी सरखा-मणीमां पोतानी नम्रता पण दर्शावतो होय छे.
- वा. कमल्रोखर "प्रयुम्नकुमार-चुर्व्ह"ना अंतमां पोताना गच्छ तथा गच्छनायकनां नामोना उल्लेखमां जणावे छे के ''विधिपक्षगच्छमां अत्यन्त गुणवान एवा धर्ममूर्तिसूरि हता (७५४)'', पछी पोतानुं नाम, रचनानुं स्थळ तथा रचनाना समयनो निर्देश करतां जणावे छे के ''घणा उल्लासपूर्वक कमलशेखर मांडल नगरमां चोमासु रह्या हता त्यारे (तेमणे) संवत सोळसो छवीशमां कार्तिक सुदि तेरशने दिवसे दूहा अने चोपाई हैये घरीने (आ) चोपाई करो" (७५७). अहीं एक विशेषता ए छे के किव पोतानां नाम, रचनास्थल अने समयनी साथे कृतिमां सवि-चोष आलेखायेला छंदोनो पण उल्लेख करे छे. कर्ताए अहीं अंतमां पोताना नामनो उल्लेख करेलो छे. परंतु ते पहेला प्रथम सर्गने अंते ''बीजउ सर्ग जंबवित तणु, वाचक कमलरोखर कहइ सुणु'' (१०६) एम कही पोताना नामनो उल्लेख करेलो छे. आम अहीं कर्ता पोताना नामनो पहेला अने छेल्ला सर्गमां एम वे बखत उल्लेख करे छे. ए उपरांत संक्षेपमां पोतानी गुरु-परंपरा दर्शावतां कवि कहे छे के "वणारीस वेलराजना वे गुणवान शिष्यो (ते) उपाध्याय पुण्यलिश अने वणारीम लाभशेखर (अने) तेमना शिष्ये (आ) चोपाई रती." आम अहीं ने तेमणे पोताना गुरु, गुरुबंधु अने गुरुना गुरु एम त्रणेयनां नामनुं स्मरण करेलुं छे. कृतिने अंते कर्ताए तेनी कुल गाथा संख्या ७९३नी नोंधेली छे. जो के कृतिनी वच्चे केटलेक ठेकाणे ल हिपानी भूलथी के गमे तेम पण कडीसख्ता लखवामां भूल थयेली छे. वळी, बहारथी उद्धत करेला प्रलोको के गाथ।ओने पण कृतिमां चालु सख्यांक आपेलो छे. आथी जो कडी संख्यांनी भूलो सुधारीए तथा बहारथी उद्भृत करेला श्रलो हो के गाथाओने न गणीए तो ते प्रमाणे कुळ ७५९ कड़ीओ थाय छे. अहीं सर्वना कल्याणनी कामना, कोई भूलचूक के एना माटे क्षमा-याचना के अन्य कविनी सरखामणीमां पोतानी नम्रतानो वा. कमलरोखरै केाई उल्लेख करेला नथी.
- ३. छंदोल्य : रासमां छंदोवैविध्य रहेतुं, पण रासनी रचना मोटे भागे चोपाई, दुहा जेवा मात्रामेळ छंदमां थती. चोपाई, दुहा उपरांत १६+१६+१३नी त्रिपादी, सोरठा, वस्तु, रोळा, त्रोटक, वदना, पद्धिया, मदनावतार, कवित, कुंडळिया, सवैया जेवा छंद पण

बपराता. जो के १५मा सैकानी जयशेखरस्रिनी रचना "अर्जुदाचलवीनती" द्वतिवलंबितमां, तथा शालिभद्रस्रि कृत "पंचपंडवचरित्र—रासु" आखी संस्कृत अक्षरगणमेळ छंदोमां छे, पण ते तो मात्र अपवादरूपे; नवीनता अने वैविध्य खातर आ कविओए अक्षरमेळ छंदोमां रचना करी होय एम मानवुं रह्युं. आ उपरांत रासो गेय होई छंदनी देशीओमां, कोई लोकप्रिय अथवा लोकजीमे वसी गयेला गीतना ढाळमां के शास्त्रीय रागमां गाई शकाता अने ते अंगे जरूरी सूचनाओ मूकवामां आवती.

"प्रद्युम्नकुमार-चुपई'' ए शीर्षक उपरथी ज सूचवाय छे तेम ए आ कृतिमां चोपाई छंदनो सिवशेष उपयोग थयेलो छे. ए उपरांत दुहा, वस्तु छंद तथा एक ठेकाणे दालनो पण कर्ताए प्रसंगानुकूळ उपयोग करेलो छे.

चोपाई: -संख्यानी दृष्टिए गणीए तो कविए चेपाई छंदमां ६८८ कडीओ रचेली छे. आ रीते जोईए तो पोणा भाग उपरांतनी कृति चोपाईमां छे, जे कृतिने आपेला शीर्षकनी सार्थकता सिद्ध करे छे. चोपाईनुं बंधारण आ प्रमाणे छे:

मात्रा १५, चरण ४, ताल चार−१, ५, ९, १३मी मात्राप. छेवटना वे अक्षरो अनुक्रमे गुरु अने लघु

 ४
 ४
 गाल

 राउत
 करी स
 जउ हथि
 यार

 २११
 १२१
 २१ = १५.

सामान्य रीते उपर प्रमाणेनुं चोपाईनुं बंधारण रह्युं छे, छतां जोडणीभेदने लईने केटलेक ठेकाणे तेनी मात्रा इत्यादिमां वधघट थई छे.

दुहा: --- दुहामां बावन कडीओ रचायेळी छे. एनं बंधारण सामान्य रीते नीचे मुजबनं रह्यं छे:

मात्रा २४, यति १३मी मात्राए, ताल ६–१, ५, ९मी मात्रा ए पूर्वार्धमां त्रण, अने एवी रीते उत्तरार्धमां त्रण- द्विदळ रचना.

प्रथम दळना पूर्वार्धमां १३ अने उत्तरार्धमां ११-विषमचरण एटले पहेला अने त्रीजा चरणमां १३ मात्रा, अने सम एटले बीजा अने चोथा चरणमां ११ मात्रा; समचरणनी ११मी मात्रा लघु.

> दाललल दादा दादा दादा दादा गाल जिन मं दिर अति धवलहर गढ मढ मंडप सार ११११ २१**१** ११११, ११२ १११ <mark>२१</mark> 1 1 १३ मात्रा ११ मात्रा

वस्तु छंदः - आ उपरांत वस्तुछंदनो पण कविए अगियारवार उपयोग कर्यो छे. तेनुं बंधारण सामान्य रीते आ प्रमाणे छे : प्रथम चरण १५ मात्रानुं, बीजुं १३ मात्रानुं, त्रीजुं १५ मात्रानुं, चोथुं १३ मात्रानुं. अंते १३-११ : १३-११ ना मापवाळो दुहा. पहेला चरणमां प्रथम मात मात्रानुं आवर्तन थतुं होय छे. बीजा चरण अने चोथा चरणनी १३

4

मात्रानुं बंधारण, दुहाना विषम चरणना बंधारण जेवुं होय छे. त्रीजा अने चोथा चरणनी १५ मात्रा ३+३+५+४ ए रीते वहेंचायेली छे. त्रीजा अने पांचमा चरणनो प्रास मेळवेलो होय छे.

ढाल :- मात्र एक ज वार, प्रयुम्नहरणथी दुःखी रुक्मिणीना विलापनुं (कडी १४६ थी १५३) वर्णन कविए ढालमां कयुँ छे, पण ते दुहानी ज देशी छे. आ रीते जोईए तो वा. कमलशेखरे प्रस्तुत कृतिमां मात्रामेळ छंदनो विशेष उपयोग कर्यो छे. वर्णनो सामान्य रीते चोपाईमां ज आलेखायां छे, तो बीजी एक नौधनीय वस्तु ए छे के शिशुपाळ, प्रयुम्न, कृष्ण के रुक्मी जेवा वीर पुरुषो ज्यारे कोधमां आवीने युद्ध करे छे के युद्ध माटे पडकार फेंके छे त्यारे तेनुं शब्द-चित्र आलेखवा माटे कर्ताने वस्तुछंद विशेष योग्य लाग्यो जणाय छे. अनुक्रमे कडीसंख्या ७०, ४९१, ५०३, ६८१ एनां उदाहरणो छे.

- ४. विस्तार अने विभाग:— (क) रासकृतिना विस्तार परत्वे १३-१४मा सैकामां ५० कडी जेटला विस्तार आसपासनुं प्रमाण साधारणपणे देखाय छे. पण ते पछी १५मा सैकामां ५० कडीनी रचना ओछी पण १००-१५०थी २००-३०० कडीनी रचनाओ वधु प्रमाणमां देखाय छे. आ ज सैकामां एक-वे हजार कडीना विस्तारनी रचना देखावा मांडे छे. पण ते बहु ज थोडी. आम १५मा सैकामां एक हजारथी वधु कडीनी रचनानुं वलण शरू थयुं एम कही शकाय. १६मा सैकामां २००थी ४०० कडीनो विस्तार साधारणपणे स्थिर थतो जणाय छे, अने ते सामे ५००-६००थी मांडी वे हजार कडीना विस्तारनी रचनाओनुं प्रमाण वधनुं जाय छे. ते पछी १७-१८मा सैकामां एक हजारथी मांडी छ हजार करतां पण वधु कडीनी विस्तृत रचनाओ प्राप्त था। छे. आम शरूआतना रास ढूंका हता पण पाछळथी तेनो विस्तार वधवा मांडयो.
- (ख) श्राह्मआतना रासाओनां विभाग पाडवानुं वलण ओह्यं हतुं, पण पाछळथी तेना विभाग पाडवानी पद्धित दाखल थई. रासना कडवा ठवणि, वाणि, भाषा, आदेश, खंड, उल्लास, ढाल एवा विभागो पाडवामां आवता. आमां "ढाल" विभाग हमेशां कथानो विभाग न सुचवतां लढणासूचक अर्थमां वपरायेलो घणीवार जोवा मळे छे. पठननी अनुकूळता के श्रोता-ओना रसनी जळवणी अर्थे रासना विभाग पाडवानी पद्धित शरू थई होय.

आपणे आगळ जोयुं तेम, वा. कमलशेखरे प्रस्तुत कृतिनी रचना ७५९ कडीओमां करेली छे. आम, ते पचास के सो कडी जेटलो दंको य नथी अने हजारथी वे हजार कडीओ जेटलो लांबो पण नथी, परंतु तेनो विस्तार सामान्य रीते मध्यम ज गणाय. लांबी लचक स्तुतिओ, निरर्थक वर्णनो, अप्रस्तुत आडकथाओं के कडीओनी कडीओ सुधी लंबातो धर्मीपदेश इत्यादि विगतो कृतिना लंबाणनुं कारण होय छे. परंतु प्रस्तुत कृतिमां उपर्यक्त सर्व अंगो प्रमाणसर ज आलेखायां छे. काव्य-विभागना नामकरण परत्वे आ कृति नोंधनीय छे. उपर जणावेला कडवा, ठविल, खंड, ढाळ इत्यादि विभागोने बदले, महाकाव्यनी रीते वा. कमलशेखरे आ काव्यने जुदा जुदा छ सर्गीमां विभक्त कर्युं छे, रासकृतिना विभागोना नाम पैकी आ 'सर्ग'नो उल्लेख एक अपवादरूप होय तेम जणाय छे डो. भारती वैद्य पण तेमना पुस्तकमां, रासकृतिना विभागने कोई ठेकाणे कोईए सर्ग कह्यो होय तेवुं नोंध्युं नथी. कदाच वा. कमलशेखरे, प्रस्तुत कृतिना एक आधारप्रनथ कवि सधार कृत 'प्रयुम्नचरित'ना अनुकरणमां ज, पोतानी कृतिना विभागोने सर्ग कह्या होय-

# भूमिका

'দ্ব্ৰুদ্নকুদাर-লুपई'না वा. कमटहोस्तरे प्रसंगालेखननी दृष्टिए नीचे प्रमाणे छ विभाग पाड्या छे :

- (१) कृष्ण-रुक्मिणी विवाह : कडी १थी १०६ कुछ कडी १०६
- (२) जांबवतीपाणिग्रहण : कडी १०७थी ११४-कुल कडी ८
- (३) प्रशुम्नविद्याग्रहण तथा माता रुक्मिणी साथें मिलन : कडी ११५थी ४६४—कुल कडी ३५०
- (४) प्रद्युम्नविवाह : कडी ४६५थी ६३१-कुछ कडी १६७
- (५) शांब-प्रद्युम्नपाणिग्रहण : कडी ६३२थी ६९६-कुल कडी ६५
- (६) नेमकुमार-दीक्षा, केवळज्ञान तथा प्रद्यम्नकुमार-दीक्षा, ज्ञान अने निर्वाण : कडी ६९७थी ७५९-कुल कडी ६३

दरेक विभागने अंते कर्ताए संस्कृत भाषामां, विभाग-अंतर्गत आलेखायेला विशिष्ट कथा-प्रसंगोनो उल्लेख करी ते दरेक विभागने 'सर्ग' कह्यो छे. जेम के त्रीजा सर्गने अंते कवि लखे छे —''इति प्रदिमनकुमारचरित्रे विद्याग्रहण रुखमिणीमातामिलनो नाम तृतीय सर्ग : ।''

उपर्युक्त विभागो जोतां एम जणाय छे के ज्यांथी कथानो नवो तत्रक्को शरू थाय छे त्यांथी नवो विभाग शरू थाय छे. रुक्मिणी-कृष्णना विवाहनो मुख्य प्रसंग अने सत्यभामा द्वारा नारदनो अनादर के रुक्मी-शिशुपालनुं कृष्ण साथे युद्ध इत्यादि प्रसंगोने लईने कर्ताए प्रथम सर्गनी योजना करी छे. रुक्मिणी विवाहना प्रसंगनी समाप्ति करी बीजा सर्गमां तदन नवो ज प्रसंग के जेने पहेला सर्ग साथे कंई संबंध नथी ते जांबवती-पाणिग्रहणनो प्रसंग मात्र आठ ज कडीमां आलेखायो छे. प्रद्यम्नकुमारनी कथामां पूर्वभूमिकारूपे रहेला आ वे महत्त्वना प्रसंगो पछी, त्रीजा सर्गथी प्रद्यम्तकुमारनी कथानो आरंभ थाय छे. तेमां प्रद्यम्नना जन्म अने तेना अपहरणथी मांडी तेनी विद्यापाप्ति, तेना अवनवा साहस अने मायावी पराक्रमोनी कथाना आलेखन बाद स्रोळ वर्षे तेनी माता रुक्मिणीने मळे छे त्यां सुधीनी घटनाओनुं आलेखन करेलं छे आम आ सर्गमां प्रद्यम्नना जीवननी महत्त्वनी घटनाओनं आलेखन थयुं होवाथी तेनो विस्तार अन्य रर्गनी सरखामणीमां वधु रह्यो छे. चोथा सर्गना आरंभे भले कवि "एत-र्ह्य अवर कथांतर हुउ (४६५)" एम कहे, परंतु तेमां पण कोई नवो बनाव न बनतां त्रीजा सर्गनी माफक मायावी विद्याबळथी प्रद्युम्न द्वारा अन्य पात्रोनी कनडगत अने युद्धनं निरूपण करेलुं छे. त्रीजा सर्गमां भानुकुमार, सरपभामा, वसुदेव के रुकिमगीने प्रद्युम्न पोतानी मायावी विद्याओंनो परचो बतावे छे. तेम ते चोथा सर्गमां बलिभद्र, अन्य यादवो. कृष्ण तथा पुनः सत्यभामाने पोतानी मायावी विद्याओनो चमरकार अने साहसवृत्तिनो परिचय करावे छे. आथी चोथो सर्ग ए कथाप्रवाहमां कोई नवुं वहेण नथी दाखवतो, परंतु त्रीजा सर्गना कथाप्रसंगनो विस्तार ज साधे छे. वळी आ सर्गमां कृष्णनी साथे प्रद्युम्नकुमारनुं मिलन याजाय छे, ते पछी प्रद्युम्त द्वारा सत्यभामाने रूपशान बनाववाना बहाने त्रिरूप बनाववानो जे प्रसंग योजायो छे ते संकलनानी दृष्टिए उचित नथी लागतो, कारण के प्रद्यम्न साथे कृष्णनुं मिलन योजाय छे, ते पूर्वे प्रद्युम्न द्वारा मायावी विद्याओं वडे तेना स्वजनोने रंजाडवाना सर्व प्रसंगोनं आलेखन थई गयुं होय छे अने ते पछी कृष्णनी साथे मळी प्रद्युम्न द्वारिकामां ठाठमाठ साथे आवे छे अने ते बखते त्यां आवेला तेना पालक पिता कालसंवरनी रित नामनी पुत्री साथे तेना विवाह

निश्चित थाय छे अने तेना विवाहोत्सवनी तैयारीओ थाय छे. आ लग्नप्रसंगना आलेखननी वच्चे वळी पालुं स्वरूपान्तर करी प्रद्युम्न द्वारा सत्यभामाने स्वरूपवान बनाववाना बहाने विरूप बनावी रंजाडवाना प्रसंगनुं आलेखन, चालु कथा-बहेणमां विक्षेप पाडी रसक्षित करे छे. आ प्रसंगनुं आलेखन कर्युं, तेना करतां आगळ क्यां प्रद्युम्न पोतानी मायावी विद्याओ वडे पोताना स्वजनोने रंजाडे छे त्यां जो कोई उचित जग्याए ते मूक्यो होत तो प्रसंगा-लेखननी व्यवस्था सचवात. वळी आ सर्गने ''प्रद्युम्नविवाह'' ए नाम आप्युं छे तेना करतां ''प्रद्युम्न-कृष्ण-मिल्न'' एवं नाम वधु सार्थक गणात, कारण के आखाय सर्गनी १६७ कडी-ओमांथी प्रद्युम्नना विवाहनी वात अने तेना विवाहोत्सवनुं वर्णन तो सर्गने अन्ते मात्र पंदर-सोळ कडीमां च थयुं छे, ज्यारे प्रद्युम्न-कृष्णना मिल्ननो प्रसंग तथा तेनी पूर्व-भूमिकारूपे रहेलां प्रद्युम्न द्वारा रुक्मिणीनुं हरण, प्रद्युम्न द्वारा यादववीरोनो उपहास तथा कृष्ण-प्रद्युम्न युद्धनो प्रसंग आखाय सर्गनो घणो मोटो भाग रोके छे.

पांचमा सर्गथी कथाना वहेणमां नवो वळांक आवे छे. शांबकुमार-जन्म, शांब-सुभानु-क्रीडा अने सर्वथी महत्त्वनो रुक्मीनी पुत्रीओ साथे शांब-प्रद्युम्नना विवाहनो प्रसंग आमां आ-लेखायो छे. शांब-प्रद्युम्नना रुक्मीपुत्रीओनी साथे पाणिग्रहणनो आ प्रसंग आखा सर्गनी ६५ कडीमांथी लगभग ३५ कडी जेटलो आलेखायो छे. सर्गना अडधा उपरांतनो भाग रोकता आ प्रसंगने अनुलक्षीने आ सर्गने 'शांब-प्रद्युम्न-पाणिग्रहण' एवं नाम आप्युं छे, ते सार्थक छे. ''जांबवती—पाणिग्रहण' नामनो जे बीजो सर्ग छे ते आ सर्गनी पूर्वभूमिकारूपे रहेलो छे.

छट्टा सर्गथी प्रद्युम्नकथामांनो छेल्लो अने नवो तबको रारू थाय छे. ज्यांथी कथा अंत तरफ ढळती जाय छे. प्रद्यम्नकुमारनी दीक्षा अने तेमना निर्वाणनी कथानी पूर्वभूमिकामां नेमिनाथनी कथा, द्वारिकाना विनाशनी आगाही, यादवकुमारो द्वारा द्वैपायनमुनिनी सतामणी तेथी द्वैपायनमुनिए आपेलो शाप, अग्निकुमार बन्या बाद द्वारिका बाळवाने माटे द्वैगायनमुनिन् अववुं पण नगरजनोनी तपश्चर्याना बळथी पाछा जवुं, ते वखते अनेक नगरजनो द्वारा नेमिनाथ पासे दीक्षा ग्रहण करवी इत्यादि प्रसंगोनुं संक्षेपमां आलेखन करेलुं छे. छेल्छे माता -पिताने धर्मोपदेश दई प्रद्यम्नकुमार पण नेमिनाथ पासे दीक्षा लई, अणसण करी, ग्रुक्लध्यान धरतां घरतां के बळज्ञान पामी मोक्षे जाय छे त्यां कथानक पूर्ण करी, ग्रन्थकार पोतानो परिचय आपी. रचना-मिति तथा स्थळ जणावी, फळश्रुति साथे कृतिनी समाप्ति करे छे. आखी कथामां प्रसंगो एक पछी एक झडपथी बनता जाय छे तेथी वाचक के श्रोताओ उपर कथानकनी प्रकट सारी रहे छे. वळी काव्यने प्रभावशाळी बनाववा अवान्तर कथाओन्' आलेखन पण आवश्यक होई आ कृतिमां रुक्मिणीहरण, जांबवती-पाणिग्रहण, सिंहरथ-युद्ध, भानुकुमार-विवाह-वर्णन. समान-शांबनी क्रीडाओ, नेमिनाथ-कथा इत्यादि अवान्तर कथाओनुं पण निरूपण थयेलुं छे. तेनाथी ''प्रद्यम्नकुमार-चुपई''ना काव्यत्वमां वृद्धि थयेली छे. आ अवान्तरकथाओ काव्यमां कां तो आवता प्रसंगनी प्रस्तावनारूप होय छे, कां तो पाछळथी बनता कोई प्रसंग साथे सीधा या आडकतरो संबंध धरावनी होय छे. आथी काव्यमां ते निरर्थक नहीं परंतु आवश्यक बनी रहे छे. आम वस्तुना विभागीकरण अने आयोजननी दृष्टिथी जोईए तो कर्ताए, कथामां बनता अनेकानेक अवनवा प्रसंगोने, कथाप्रवाहने अनुकूळ थाय ए रीते विभागी, रोचक रीते ए घटनाओंनो शंखलाबद्ध क्रम राखी, तथा ए घटनाओंने तेने दोग्य एटला प्रमाणमां आलेखीने पोतानी आलेखनसूझनो सारो एवो ख्याल आप्यो छे.

रास-साहित्यनां अन्य अंगोमां हवे तेनो विषय, कथानो झोक अने रचनाना उद्देश विशे जिचार करीए.

4. रासोनो विषय:—(क) रासोनो विषय मोटे भागे चरित्रकथननो रहेतो. मोटा भागना रास कोईक जैनपुराणप्रसिद्ध, इतिहासप्रसिद्ध के कल्पित पात्रना जीवननं अथवा तेना जीवनना कोई कसोटीभर्या प्रसंगनुं वर्णन करता. आ उपरांत धार्मिक मिद्धांत के व्रतमाहातम्य दर्शावता तेम ज रूपकात्मक, बोधात्मक, गुरुमिहमानुं गान करता के दीक्षाप्रसंग, चैरपपरीपाटी, तीर्थस्थळ इत्यादिनुं वर्णन करता रास पण रचाता. आ विषयोना रास प्रमाणमां ओछा छे.

प्रद्युम्नकुमार ए जैनोना नवमा वासुदेव श्रीकृष्णना चरमशरीरी एवा ज्येष्ठपुत्र छे, तथा चोवीश कामदेवमांना एक छे. आम ए जैन-पुराणप्रत्थोनुं एक प्रसिद्ध पात्र छे. वा. कमलशेखरे, उपर कह्युं छे ते प्रमाणे जैनपुराणप्रसिद्ध पात्रना चरित्रनुं वर्णन करवा आ रासनी रचना करेली छे.

(ख) लगभग बधा ज चरित्रात्मक रासोमां पूर्वजन्मनी वात आवती अने ते द्वारा कर्म-वादना सिद्धांतनुं प्रतिपादन करवामां आवतुं. केटलाक रासाओमां अंते पूर्वजन्मनी वात जाणी संसारनी असारता समनी मुख्य पात्र तथा तेनी आसपासनां अन्य पात्रो दोक्षा छेतां होय छे.

'प्रद्युम्नकुमार-चुपई'मां पण प्रद्युम्नकुमार, शांब तथा रुक्मिणीना पूर्वभवोनु वर्णन करवामां आत्युं छे, अने ते द्वारा कर्मना सिद्धांतनुं प्रतिपादन पण करवामां आव्युं छे. घणी-वार कर्मना सिद्धांतना प्रतिपादनार्थे तथा कथा-विस्तारना लोभे रासकारो पात्रोना पूर्वभवनी लांबी लांबी जीवनघटमाळतुं आलेखन करता. अने तेथी रासकृतिनुं घोरण काव्यस्वनी दृष्टिए नीचुं जतुं. परंतु प्रस्तुत कृतिमां कर्ताए प्रद्युम्न, शांब अने रुक्मिणीनां पूर्वजन्मनी कथाओनुं निरूपण खूब संक्षेपमां करेलुं छे. कुल ७५९ कडीमांथी मात्र ४४ कडीओमां ज (कडी १७० थी २१३) आ त्रणे पात्रोना पूर्वजन्मनी कथाओनुं समुचित रीते आलेखन करेलुं छे. अहीं नोंधनीय ए छे के घणा रासाओमां, उपर कह्यं तेम पूर्वजन्मनी कथाओनुं आलेखन कृतिना अंतमां आवतं होय छे अने ते सांमळी मुख्य तथा अन्य पात्रो दीक्षा लेतां होय छे, त्यारे प्रस्तत कृतिमां पूर्वजन्मनी कथाओ, कथानी वच्चे तेना योग्य स्थाने ज कर्ताए रज, करेली छे. बाळक प्रदामनन जन्मतावेंत ज हरण केम थयुं अने तेनु आहरण करनार साथे तेने तुश्मना-वट केतो रीते थई ते, प्रद्युम्ननी शोध माटे गयेला नारदना प्रश्नना उत्तरमां सीमंधरस्वामी, प्रयुम्नना पूर्वजन्मनी तथा रुक्मिणीने कया कारणसर सोळ वर्षनी पुत्र-वियोग थयो तेना जवाबमां तेना पूर्वजन्मनी वात, कहे छे. आथी अन्तमां प्रद्युम्न तथा अन्य पात्रो पोताना पूर्वजन्मनी कथाओना श्रवणथी संसारनी असारता समजी दीक्षा ले छे एम नथी बताब्यं, परन्तु द्वारिका-विनाशनी आगाहा परत्वे नेमिनाथ प्रभुना उगदेशथी विरक्त थई प्रद्यम्न तथा अन्य पात्रो दोश्चा ग्रहण करे छे

६. रासनी रचनानो हेतुः रावाओना विषय अने तेना कथानकनुं वलण जोतां एटलुं स्पष्ट जणाय छे के रासकृतिनी रचना पाछळ तेना कर्तानो हेतु कोई उत्कृष्ट साहित्यकृति रचनानो निह परंतु कृति द्वारा धर्म-उद्बोधन अने जैनधर्मना सिद्धान्तोनो प्रचार करी तेनुं माहात्म्य गावानो हुनो. लोकोने सीधेसीधो नयीं उपदेश आपवा करतां हृष्टांतात्मक रीते कोई आदर्शभूत व्यक्तिना धार्मिक चरित्रना अत्रगाठनथी, ए प्रकारनुं जीवन जीववानी प्रेरणा मळे अने ते रीते जैनधर्मनुं आकर्षण वघे ए इष्टियी चरित्रात्मक रासाओनुं निर्माण थतुं.

'प्रद्युम्नकुमार चुपई' मां तेना कर्ताए पोतानी आ रचना पाछळना कोई विशिष्ट हेतु-ने। क्यांय निर्देश नथी कर्यो. छतां कान्यमां ठेर ठेर कथाप्रसंगने अनुषंगे ज्यां ज्यां कर्ताने तक मळी छे त्यां त्यां धर्मोपदेश आपेला छे. आ रीते कर्ताए पुण्यनो प्रभाव दर्शान्यो छे, स्त्री उपर विश्वास मूकवाथी भोगववा पडतां दुष्परिणामोनुं ब्यान करेलुं छे, अहिंसानो उपदेश दीधो छे, संयमनो महिमा गायो छे, पार्थिव पदार्थीनी असारता बतावी छे, अने कर्मना सिद्धांतनुं प्रतिपादन करेलुं छे.

प्रद्युम्नकुमारने तेना पुण्योदयथी ज दिव्य वस्तुओ अने विद्याओनी प्राप्ति थई हती एम वर्णवता कवि कहे छे :

> पुन्य बलवंत बलवंत अछइ संसारि, पुन्यह सेवइ सुर स्थल, पुन्य पुह्वि अरिहंत भाखइ पुन्यइ अणिवितिउं फलइ, मरणभय ते पुण्य राखइ रिद्धि चुद्धि पुन्यइ मिलइ, पुन्यइ राजभंडार पुन्यइ सवि आवी मिलइ, जिम प्रदिमनकुमार (२८८)

प्रद्यम्त ज्यारे कोलगुफामां कालासुरने हरावे छे त्यारे ते तेना पराक्रमथी प्रसन्न थई तेने छत्र तथा चामर आपे छे. कवि एने पण पुण्यनुं ज फळ गणे छे:

कुमर प्राक्रम देखी तेय, आविड छत्रचामर करि लेय पाय लागीनइ दीधा सोय, पुण्यतणां फल एह ज जोइ (२६०)

तो "पज्ञन वीवाह पुन्यइ फलिउ" (६१७) एम कही पुण्यने ज तेना लग्नना कारणरूप किन माने छे. कृष्ण पण पोतानुं अपमान करनार प्रद्युम्न उपर गुस्से नथी थता तेना कारणमां कृष्ण पोते प्रद्युम्नना पुण्यने ज कारण तरोके लेखावता कहे छे, "पुन्यवंत तुं क्षित्री होइ तुझ ऊपरि मुझ कोप न कोइ" (५४१). आम पुण्यनो महिमा कविष् घणे ठेकाणे गायो छे.

स्त्रीनो विश्वास जीवनमां अधःपतन आणे छे, तेना समर्थनमां कवि स्त्रीचरितोना केटलाक दाखला आपी मानवीने स्त्रीनो विश्वास न करवानो बोध आपे छे. कवि कहे छे, "स्त्री तणु जे वेसासह करइ, तेय मांणस अखूटइ मरइ" (३२१) "जुटुं बोलई जुटुं लवइ, निज प्री मेल्हि अवर भोगवइ" (३२२) के

स्त्रीनइ साहस बिमणु होइ, स्त्री-चरित्र निव जाणइ कोइ स्त्रीनी बुद्धि नीची नितु रहइ, उत्तम छोडि नीच संग्रहइ ३२३

आ प्रमाणे "एहवी असतितणु सभाउ" (३२४) एम कही किन तेना समर्थनमां, पोतानी परनीने पोतानुं राज्य सोंपनार उजैनना राजा बिनिशारनुं दृष्टांत, पोताना पितने निषमा लाडवा खबडावो कोई कुनडा साथे कीडा करनार अमृतादेवी (१) अने तेना पित राजा यशोधरनुं दृष्टांत, हापाशेठ—के जेने दोरडाथी बांधो, तेनी पत्नी दारम नेने मूकी, एक धूर्तने घरमां घाला भरथार बनाने छे — तेनुं दृष्टांत आ उत्तरांत सुदर्शन शेठ अने अभयाराणीनुं दृष्टांत, राममां मोह पामेली शूर्रणखाए द्रेषमां राज्य द्वारा सीतानुं हरण करानी रामरानण बच्चे युद्ध जगान्युं, परिगामे लंकानुं दृहन अने राज्यनो नध्य थयो ते दृष्टांत, अनरकं कान्तरीमांथी युद्ध मचानी कृष्णे पद्मनाम द्वारा हरण करायेली द्रौपदी पाछी आणी तेनी दृष्टांतकथा, एम अनेक दृष्टांतकथाओनो त्यां उन्हेल करे छे. आ प्रमाणे स्त्री उत्तर विश्वास न राखनाना सदुपदेश पण कनिए पोतानी कृतिनां आपेशे छेन्ती उत्तरणता जा। नेन कृतार, पोताना लग्ननी उज्जनणीमां

मिजनानी अर्थे बांघेला पशुओनो पोकार सांभळी, परण्या विना ज पाछा वळे छे अने संयम धारण करे छे, ते आखाय प्रसंगमां (कडी ७०२ थी ७०८) कविए अहिंसानो उरदेश दीघो छे. तो नेमिनाथ प्रभुना उपदेशथी जालि, मयालि इत्यादि यादवकुमारो, कृष्णनी पटराणीओ तथा बीजा लोको अने प्रशुम्नकुमार पोते संसारना अढळक सुखने ठोकर मारी दीक्षाग्रहण करे छे, अथवा तो प्रशुम्ननी पूर्वजन्मनी कथा ओमां ज्यां ज्यां तेणे चित्र्यग्रहण कर्युं छे त्यां तेने देवलोक के उत्तम मनुष्यकुळमां जन्म मळयानुं कथन छे— ए सर्व ठेकाणे कविए संयमनो महिमा गायो छे.

अंतमां दीक्षात्रत अंगीकार करता प्रद्युम्नकुमारने तेना मातापिता तेम न करवा बीनवी द्वारिकानुं राज्य भोगववा कहे छे, त्यारे प्रद्युग्नकुमार जे उपदेश आपे छे तेमां कविए संसारना सर्व संबंधो अने वस्तु भोनी असारतानुं खूर वेधक निरूपण कर्युं छे. कृष्ण ज्यारे प्रद्युग्नने तेना विद्याबळ अने पुरुषार्थनां वखाण करी दीक्षा छेवा करतां द्वारिकानुं राज्यसुख भोगववानुं कहे छे त्यारे ते सर्वनी असारतानुं, प्रद्युग्नना जबाब द्वारा, किन आम वर्णन करे छे:

नारायणना वयण सुणेय, वलतु ऊतर पज्रमन देइ
केहनां राज-भोग घरबार, सुपनांतर जेहनुं संसार ७३९
इस कायाका कुण भरुंसा, जगजाइ सुपनंतर जइसा
सर्व तिजइ जीव चलइ एकला, वीछड्या पीछइ मिलन दुहेला ७४०
केहनां घन पवरख बल घणा केहना बाप कुटुंब केहतणा
घडीमांहि जाइ विहडाइ, आविइं मरणि न सइ रहवाइ ७४१

पोताना पुत्रने दीक्षा ठेवा तत्वर थयेल जाणी रुक्मिणी विलाप करती कहे छे के, 'हे पुत्र ! तुं केवी रीते भिक्षा मांगीश, अने माथाना केशनुं लूंचन करतां तो घणुं कष्ट पड़शे, माटे तुं छंयम न लईश.'' त्यां प्रशुम्न शरीरनी क्षणमंगुरता समजावी संसारनी असारता समजावतां उपदेश आपे छे:

लावन्य रूप शरीरह सार, जिम रूठई तु हूठ सहू छार म करि शरीर दुल बहूत, कहनी माइ नइ केहना पूत ७४५ अरहटमाल जिम ए संसार, स्वर्ग पाताल पुह्वि अवतार पूर्वजन्मन संबंध जाणि, मिलइ जीवह टाणोठांणि ७४६

कर्मना सिद्धांतनुं प्रतिगदन करवा पात्रना दुःखनुं कारण एना पूर्वजन्मनी करणी छे, एनी साबिती माटे पूर्वजन्मनी कथाओ उपरांत बीजा अनेक प्रसंगे अमुक कार्यना कारणरूपे कर्मने ज गणवामां आव्युं छे. अनेक पंक्तिओमों कर्मनुं माहास्म्य कविए दर्शाव्युं छे:

कर्मयोगि जउ जुडइ संयोग, तु हुई नारायणनुं योग ३६ पूर्वकर्म न मेटइ कोइ, जेहनइ सिर जी परणइ सोइ ४२ पूर्वकर्म न मेटइ कोइ. कर्म करइ ते निश्चिइ होइ १३२ पूर्वि भवि कर्म बांध्या घणा रुखमणि फल लाघा तेहतणां १८७ सोलमास राखिउ ते मोर, बांधा कर्म तिहिं अतिहि कठोर सोल मासनां सोल वर्ष थीयां,मोरमयूरी वनमांहि गया १९८ फल दुर्गेछाकर्मह तणुं, सचर सतम दिनि विणठडं घणुं २०१ पूरव लिखत न मेटइ कोइ, प्रदिमन विद्या लेई गयु सोइ ३३१ असुभ कर्म जब आवइ वही, सुजन हुइ ते वयरी सही ३३२

आवी बीजी अनेक पंक्तिओ ब्रिंगंकी शकाय ज्यां किए कर्मनी महत्ता गाई छे- आम जोई शकाय छे के वा. कमलरोखरे पोतानी वृतिमां अनेक रीते धर्मनी देशना दीधेली छे, आथी एम कही शकाय के ''एकचित्ते यादवनी सरस कथा (२)'' कहेवानी साथोसाथ धर्मोपदेश देवानो पण कविनो हेतु रहेलो छे.

#### ४. महत्त्वनां कथाघटकोनो अभ्यासः

प्रास्ताविक:— कोई पण एक प्रजानां वार्तासाहित्यनो, कोई अन्य प्रजाना वार्तासाहित्य साथे तुलनात्मक दृष्टियी विचार करीए तो ते बन्नेमां केटलीक एवी कथाओ, कंईक विगतमेंदे परन्तु समान कही शकाय ए रीते रूपान्तर पामेली मळी आवे छे. ए रीते कोई एक देश विशेष-ना परंपरागत वार्तासाहित्यना तुल्लनात्मक अध्ययन बाद जणाइ आवशे के तेमांनी केटलीक कथाओमां केटलाक अंशो एवा होय छे के जे कंईक विगतमेंदे पण समानरीते निरूपायेला आपणने प्राप्त थाय छे. आ रीतना कथा के कथाधटकना संवादीपणामां कथा के कथाधटकनी पोतानी आगवी आकर्षक प्रतिभा उपरांत भिन्न संस्कृतिओनी परस्पर असर, अने साथे साथे भिन्न भिन्न भाषा, समाज के संस्कृतिनी नीचे मूलगत मानवप्रकृतिनी केटलीक समानता कारण-रूप होय छे.

Stith Thompson' नामना लोककथा विषयक विद्वाने आ जातना कथा-स्व-रूप अने कथाघटक वच्चेनो तफावत समजावतां स्पष्ट कर्युं छे के कथास्वरूपनुं स्वतंत्र अस्ति-त्व होय छे अने तेने पोताना तात्पर्य माटे अन्य कोई कथा परत्वे आधार राखवो नथी पडतो. ज्यारे कथाघटक ए एवी कथाओमांनो नानामां नानो अंश छे के जे पर परामां टकी रहेवाने समर्थ होय छे. आ प्रकारनुं सामर्थ्य तेमांना असाधारण के वैचिन्यवाळा तत्त्वने आभारी होय छे.

आ रीते भिन्न भिन्न प्रजाओमां समयान्तरे अमुक कथास्वरूप के कथाघटको अनेक-रूपे प्रचलित हतां, तेनो अभ्यास पाश्चारय विद्वानोए करेलो छे. विश्वना परंपरागत कथा-साहित्यनां स्वरूपोनी सूचि आनें अने टोम्सने [Arne and Thompson) तेमना 'The Type of the Folk Tale' नामना प्रथमां करेली छे. ते उपरांत टोम्सने तेना 'Motif Index of Folk Literature' ए नामना पांच खंडोमां विभक्त पुस्तकमां कथाघटकोनी विस्तृत यादी तैयार करेली छे.

आपणा गुजराती साहित्यमां आ प्रकारनी शोध अने तेना अभ्यासनी दिशामां छेल्ला दशकामां कंईक प्रगति थयेली जणाय छे. डॉ. हरिवल्लम भायाणीने आ प्रकारनी शोध अने तेना स्वाध्याय माटे आद्य अने अग्रणी गणी शकाय. "सिंहासनबत्रीशी", "वेतालपचीशी" के "मरनमोहना" जेत्री कथाओना ताणेदाणे वणायेलां आवां कथाघटकोनी तेम ज "जादुई पक्षी", "ठगारं मागणुं अरे ठगारी चूकवणी", "मायावी सृष्टि", "आंधळे बहें रं", "नाची फाटेली मोजडी अने देवदमनी", "एक सांताली लोककथा" के "लोककथामां

1. 'Folk-tale'-Stith Thompson-p. 415

आळ' इत्यादि कथास्वरूपो के कथाघटक विषयक विगतपूर्ण माहिती तेमणे आपेली छे.' इां. भारती वैद्ये तेमना 'मध्यकार्ल'न गससाहित्य — १२मीथी १८मी सदी' नामना पुस्तकमां केटलीक रासकृतिओना अभ्यास परथी ते रासागत कथासामग्रीमांथी मळता विविध कथाघटकोनो अभ्यास करेलो छे. आ उपरांत डां. जनक दवेए पण एमना अप्रकृतिओना महानिवंधमां शामळनो 'सिंहासनबत्रीशी' नो २८ थी ३१ सुधीनी वार्ताओनां केटलाक महत्त्वनां कथास्त्ररूप के कथाघटकोने तारवी, तेमनुं मुख्यत्वे मारतीय कथापर पराने अनुलक्षीने तुलनात्मक अध्ययन करेलुं छे. हिन्दोभाषामां डां. सत्येन्द्रे तेमना 'मध्ययुगीन हिन्दीसाहित्यका लोकतात्त्विक अध्ययन"—ए नामनां पुस्तकमां केटलीक कृतिओमांना कथाघटकोनी तारवणी करी तेने लगती कथाओना उल्लेखा करेला छे. तेमां तेम हे 'प्रयुम्नचरित''मांना केटलांक कथाघटकोनी तारवणी करी तेने लगती कराओना उल्लेखा करेला छे. तेमां तेम हे 'प्रयुम्नचरित''मांना केटलांक कथाघटकोनी तारवणी करी तेने लगती कराओना सामान्य उल्लेख कर्यों छे.

अहीं, में संपादित करेली वा. कमलरोखरनी "प्रद्युम्नकुमार चुपई'मांना केटलाक महत्त्वनां अने रसप्रद कथाघटकानी तारवणी करी तेने लगतां जेटलां बनी शक्यां छे तेटलां कथानकोनुं संकलन करी, तेना सामान्य अभ्यास रज् कर्यो छे. कथासाहित्यनी विशाळता अने तेनुं वैविध्य एटलुं अगाध छे के अहीं तारवेला कथाघटका अंगे पण बीजी घणी दृष्टान्तात्मक माहिती प्राप्त थाय. अहीं में जे कथाघटकोनी तुलनात्मक माहिती आपी छे ते दृष्टांतरूप के प्रतिनिधिरूप ज समजवी. ते उपरात बीजा अनेक रूपान्तरो प्राप्त थवानी शक्यता छे ज.

तुलनात्मक अध्ययन करेल कथाघटको :

- (१) कोई बेदरकार-बेध्यान पात्र द्वारा ऋषि-मुनिनो अमादर अने तेथी क्रोधित बनेला ते ऋषि-मुनि द्वारा कराती शिक्षा.
- (२) चित्रपट द्वारा अनुराग
- (३) जन्मतां ज बाळकतुं अवहरण
- (४) मोटा भाईनी इर्घ्या अने विजेता नानो भाई
- (५) आळ-भ्रष्टाचारनु आळ
- (६) परपुरुष साथे छानो संबंध राखती पत्नी
- (७) छळ-कपट द्वारा दिव्य विद्या के वस्तुनी प्राप्ति
- (८) पिताथी विख्टा पहेला पुत्रनुं अज्ञात पिता साथे युद्ध के स्पर्घा
- १. कोई बेदरकार-बेध्यान पात्र द्वारा ऋषिमुनिनो अनादर अने तेथी कोधित बनेला ते ऋषिमुनि द्वारा कराती शिक्षा :

भारतीय पौराणिक कथा-साहित्यमां ऋषिमुनिना पात्रनुं आलेखन अनेकविध रीते थयेछुं छे. तेओ दैत्योना संहारक के भक्तोना परम उद्धारक होय छे. तेओ पोताने प्रसन्न करनार व्यक्तिने वरदान आपी तेना जीवनने समृद्ध बनावी दे छे, तो क्यारेक तेओ पोताने कुद्ध करनार ब्यक्तिना जीवनने क्रोधना साक्षात् अवतार बनी, छिन्नभिन्न करी नांखे छे. तेओने समृद्धिनी

१. जुओ तेमनुं पुस्तक 'शोध अने स्वाध्याय'.

<sup>&</sup>quot;Shamal's Sinhasanbatrisi: Preparation of an Authenticedition of Tales Nos. 28, 29, 30, 31 from the original Mss together with a Critical Studay of These Tales", 1964.

स्पृहा करतां आदर अने भक्तिनी किंमत वधारे होय छे. आवा निस्पृह ऋषिमुनिओ, राजाओना मुख्य सलाहकार, संकट समयना मदद्गार अने हितेच्छु होई तेमने मन खूब पूज्य होय छे. आथी ज ज्यारे ज्यारे तेओनु आगमन पोताना शहेरमां, सभामां के अंत:पुरमां थाय छे त्यारे राजवीओ तेमने। हृदयपूर्वकनो सन्कार करे छे. उत्तम चारिज्यवाळा आ ऋषिमुनिओ कशा अवरोध विना छूटथी गमे त्यां गमे त्यारे जई आवी शके छे अने ज्यां ज्यां तेओ जाय आवे छे त्यां त्यां तेमनो आदरपूर्वक सत्कार करवामां आवे छे.

हवे ज्यारे आ ऋषिमुनिओनुं आगमन थयुं होय त्यारे जो यजमान द्वारा तेमना सत्कार न थाय, तो स्वमानने सर्वथी अधिक मानता आ ऋषिमुनिओ, ते अविवेकी व्यक्तिने तेनी शिक्षा करी, तेनो बदलो ले छे. कथा-साहित्यमां आ प्रकारना दृष्टान्तो मळी आवे छे.

आवा दृष्टान्तोमां कदोक यजमान व्यक्ति कोई विचारमां तल्लीन होय अने ते वखते कोई ऋषिनुं आगमन थाय तो ते बेध्यान व्यक्ति तेमनो आदर करी शकती नथी, आथी क्रोधित बनी ते ऋषिमुनि तेने शिक्षा करें छे. पुराण-प्रसिद्ध दृष्यन्त-शकुन्तलानी कथामां, दृष्यन्तना प्रेममां रंगायेली शकुन्तला, पोताना प्रियतमना विचारोमां लीन थई, बारणे आवेला दुर्वासा मुनि प्रत्ये बेध्यान बनी, तेमनो सरकार करवानो विवेक चूके छे त्यारे दुर्वासा मुनि पोताना आदरनो बदलो त्यांने त्यां ज शाप आणी चूकवे छे – जे व्यक्तिना विचारोमा लीन थई ते मुनि—सरकारनो धर्म चूके छे, ते ज व्यक्ति तेने, याद कराववा छतां पण शापना प्रभावे भूली जाय छे. व्यक्ति विशेष प्रत्येनो अति प्रेम विवेक चुकावी तेना ज वियोगनुं कारण बने छे.

क्यारेक कोई व्यक्ति आगन्तुक ऋषिमुनिना बिहामणा वेषथी गभराई जई, तेनो आदर-सत्कार करवाने बदले दूर भागे छे, त्यारे पण ऋषिमुनिनुं स्वमान घवाय छे अने ते, अनादरनां वेरनो बदलो ले छे. 'त्रिषाष्टेशलाकापुरुषचरित्र'मां सीताचरित्र अंतर्गत आवुं दृष्टान्त प्राप्त थाय छे. ते दूंकमां आ प्रमाणे छे :

जानकीना रूपनुं वर्णन सांमळीने तेने जोवा माटे नारद ऋषि आव्या अने कन्याग्रहमां प्रवेश कर्यो. पीळां नेत्रवाळा, पीळा वाळवाळा, मोटा पेटवाळा, हाथमां छत्री अने दंड राखनार, मात्र लंगोटी घारण करनार, कृश शरीरवाळा अने ऊडता वाळवाळा भयंकर नारदने जोई सीता भय पामी, कंपती कंपती 'हे मा!' अम बोलती गर्भागारमां पेशी गई. आ सांमळीने दासीओ तथा द्वारपाळो तत्काळ दोडी आव्या अने नारदने पकडी लीघा. त्यां तो शस्त्रधारी 'मारो मारो'-एम बोलता दोडी आव्या नारद तेमनी पासेथी मांड मांड छूटी, ऊडीने वैताढयगिरि आव्या अने विचार्यु के 'आ गिरिनी दक्षिण श्रेणिमां मामंडळ नामे चन्द्रगतिनो युवान पुत्र छे तो एक पट ऊपर सीताने आलेखी तेने बतावुं जेथी ते बळात्कारे तेनुं हरण करशे अटले तेणे मारी ऊपर जे कर्यु तेनो बदणे मळशे' आवो विचार करी नारदे सीतानुं अनुपम रूप पट ऊपर आठेखी मामंडळने बतावुं, अने तेने सीता प्रत्ये कामातुर बनाव्यो तेथी ते कामथी पीडावा लागो. उपारे चन्द्रगतिओ आ वात जाणी त्यारे नारदऋषिने बोलावी सीतानो वृत्तान्त पूछ्यो. त्यारे नारदे सीताना खूब गुणगान गायां.

तथी चन्द्रगतिए तरत ज जनकराजानुं अपहरण कर्युं अने तेनी पुत्री सीतानी, पोताना पुत्र भामेंडळ माटे, मागणी करी. पण जनके, 'ते ते। दशरथना पुत्र रामने आपी दीधेळी छे' एम

१. 'त्रिष्ठिटशलाकापुरुषचरित्र'--पर्व ७- सर्ग ४. गुज. भाषांतर--पृ. ७१

कह्यं. त्यारे चन्द्रगतिओ तेने वे धनुष्य आप्या अने कह्युं के, 'जो आ वे धनुष्यमांथी एकने पण राम चढावरो तो तेनाथी अमे पराजित थई गया एम समज्ञु, पछी ते तमारो पुत्री सीताने सुखेथी परणें. त्यारबाद रामे ते धनुष्य मिथिलानी भर सभामां चढाव्युं त्यारे चन्द्रगति विलखो थई भामंडळ सहित पोताने स्थानके गयो.

आम अहीं ऋषि, पोतानी अनादर करावनार व्यक्तिनुं अपहरण करावी तेने शिक्षा करे छे. ए ज रीते 'त्रिपष्टिशलाकापुरुष॰'मां 'द्रौपदी-चरित्र'मां पण आ कथाघटकने निरूपता वृत्तान्तनुं कथन छे. कथानो ट्रंक सार आ प्रमाणे छे:

पांडवो ज्यारे हस्तिनापुरमां द्रौपदी साथे हर्षथी क्रीष्टा करता हता त्यारे एक बलत नारद फरता फरता द्रौपदीने घेर आव्या त्यारे आ अविरत छे एम जाणीने द्रौपदीए तेमनो सत्कार कर्यो नहि. तेथी आ द्रौपदी केवी रीते दु:खी थाय एम विचारता नारद धातकीखण्डना भरत-क्षेत्रमां गया. त्यां चंपानगरीमां रहेनारा कपिल नामना वासुदेवनो सेवक, अमरकंका नगरीनो स्वामो पद्मनाभ राजा व्यभिचारी हतो तेनी पासे आव्या. त्यारे तेणे पोताना अन्तःपुरनी सर्व स्त्रीओ बतावीने कहा के 'हे नारद! तमे आवी स्त्रीओ कोई स्थानके जोई छे ?' ते वखते नारदे द्रौपदीना रूपना तेनी पासे वखाण कर्या अने चाल्या गया.

त्यारबाद पद्मनाभ राजाए, द्रौपदीने मेळववा पाताळवासी देवनी मदद्धी, तेनुं अपहरण कर्युं अने भोग भोगववानुं जणाव्युं. द्रौपदीए कह्युं के 'एक मासनी अंदर जो कोई मारो संबंधी अहीं नहीं आवे तो पछी हुं तमारं वचन मान्य राखीश'. त्यारबाद कृष्ण, पद्मनाभ साथे भयंकर युद्ध खेली, द्रौपदीने पाछी लाव्या.

आम ऋषि-मुनिनो ज्यारे ज्यारे वेदरकारी के बेध्यानपणाथी अनादर थाय छे, त्यारे तेना फळरूपे व्यक्तिने मुनि द्वारा ज लवातां संकटो सहन करवा पडे छे.

(२) चित्रपट द्वारा अनुराग

कथासाहित्यमां नायक-नायिकाना प्रणयसंबंधनी अनेक कथाओ अनेक रीते कहेवाई छे. प्रणयनी ए लीलाओनी रसाळ कथाओए कथासाहित्यनी ताजगीने ओसरवा नथी दीघी. आ प्रणयकथाओमां नायक-नायिकाना सफळ के विफळ प्रणयनी कथाओ केम अने केवी रीते शरू थाय छे तेनो वृत्तान्त खरेखर रसिक छे.

सामाजिक अने नैतिक बंधनो वच्चे पण नायक के नायिकाना हृदयमा प्रेमनु प्रथम वार बीजारोपण अनेक रीते थई जतुं होय छे. ज्यां स्त्री-पुरुष छूटथी एक बीजाने मळतां होय त्यां तो प्रथम दृष्टिए प्रेम जागी जनानी शक्यता होय छे, पण ज्यां नायक के नायिका एक बीजाथी द्र अने अन्योन्यथी अज्ञाण होय छे त्यां कथाकार माटे उभयना प्रणय-मिलननो कोयडो आवीने ऊभो रहे छे. आवी परिस्थितिमां कथाकार नायक-नायिकाना हृदयमां अनुराग जन्मा-वयानी इतर अनेक योजनाओ शोधी पोतानी कथामां निरूपे छे.

नायक-नायिकाना हृदयमां प्रेमांकुर त्रण रीते फूटता होय छे-दर्शनथी, श्रवणथी अने हमरणथी एक बीजानी पासे के दूर वसता नायक-नायिका, अमुक वस्तु के व्यक्तिने जुए

- Motif-Index T II. 2 मां आ कथाघटक समाववामां आव्युं छे.
- आ विषय परत्वे डॉ. हरिवल्लभ भायाणीना एक संशोधनात्मक लेख 'प्रेमकथाओमां अनुरागबीजनो उद्गम'-'शोध अने स्वाध्याय'-ए. २८७-२८९ मां सारी एवी माहिती आपेली छे.

के सांभळे अने तेनाथी पूर्वभवनुं स्मरण थतां आगळना भवना पति-पतनी तरीकेनो पोतानो संबंध जुए अने पछी अन्योन्य प्रत्ये प्रीति जन्मे – आम स्मरण द्वारा बनतुं होय छे.

श्रवण द्वारा ज्यां अन्योन्य प्रत्ये प्रीति जन्माववानी योजना होय छे, त्यां कोई साधु, मुसाफर, पंखी के नारद जेवी देनी व्यक्ति के शक्ति दूर वसतां नायक—नायिकामां रूपगुणनुं एक बीजानी पासे आवी ब्यान करता होय छे अने ए रीते उभयनी हृदयभूमिमां प्रेमनां बीज रोपी जतां होय छे. दर्शन, प्रत्यक्ष अने परोक्ष उभय प्रकारनुं होई, ज्यां प्रत्यक्ष दर्शननो अनुराग जन्माववामां उपयोग थाय छे त्यां नायक—नायिका कोई उत्सवप्रसंगे कोई स्थळे मेगां मळी जनां होय छे, कदि देवमंदिरे के कदि नदी-सरोवर-कांठे अनायासे मळी जतां होय छे, कदि संकट प्रस्त नायिकाने बचावता नायक साथे तेनुं मिलन योजाय छे, तो कदिक सहाध्यायीरूपे विद्याभ्यास करतां पण तेओ प्रेममां पडतां होय छे. ज्यां परोक्षदर्शन द्वारा नायक—नायिकाना हृदयमां प्रेम प्रकटाववानो होय त्यां ते परोक्षदर्शन चित्र, मूर्ति के स्वप्न द्वारा कराववामां आवे छे.

अहीं 'चित्र द्वारा अनुराग'-ए कथा-घटकनो, केटलीक कथाओ लईने सामान्य अभ्यास रज् कर्यो छे. डॉ हरिवल्लभ भाषाणीए, चित्रकार पासेथी राजकुमारीनुं चित्र जोईने प्रेममां पडवानी घटना परत्वे मल्लि, मालविका-अग्निमित्र, उदयन-रत्नावलीनी कथाओनो उल्लेख करेलो छे. आ उपरांत 'त्रिषष्टिशलाकापुरुष 'मां नेमिनाथादिना चरित्रमां धनुकुमारनी कथामां आ कथा-घटकनुं निरूपण थयेलुं छे. टूंकमां कथासार आ प्रमाणे छे: '

जंबुद्विपमां अचळपुर नामना नगरमां विक्रमधन नामना राजाने धारिणी नामनी राणीथी धनुकुमार नामनो पुत्र थयो. अनुक्रमे ते यौवनने प्राप्त थयो. ए अरसामां कुसुमपुर नामना नगरमां सिंह नामना राजाने विमळा नामनी राणीथी धनवती नामनी पुत्री उत्पन्न थई. अनुक्रमे ते पण यौवनमां आवी त्यारे वसंतक्ष्युमां उद्याननी शोभा जोवा ते सखीओ साथे त्यां गई. तेवामां अशोकत्रक्ष नीचे हाथमां चित्रपट रुईने ऊभो रहेलो एक चित्रकार तेना जोवामां आव्यो. तेना हाथमांथी धनवतीनी सखीए बळात्कारे नित्रपट रुई लीधुं तो तेमां सुंदर पुरुषनुं रूप चित्रेखं हतुं. तेनी सखीए ज्यारे आ रूपवान विषे चित्रकारने पूछ्युं त्यारे तेणे धनकुमारनुं नाम जणाव्युं. ज्यारे धनवतीए आ चित्र जोयुं त्यारे ते तेना अनुरागमां अत्यन्त लोन थई गई अने अनेक प्रकारनी प्रेमपीडा अनुभववा लागी...

'समराईच्चकहा'मां समरादित्यराजाना आठमा भवनी कथा-'गुणचन्द्र अने रत्नवती' नी कथामां पण 'चित्र द्वारा अनुराग'नुं कथाघटक निरूपायुं छे. कथा ट्कमां आम छेः व

अयोध्या नामनी नगरीमां मैत्रबळ नामना राजाने पद्मावती नामनी राणीथी गुणचन्द्र नामे पुत्र थयो. ते चित्रकळानो शोखीन हतो. ए अरसामां शंखपुरना राजा शंखायननी राणी कान्ति-मतीथी रत्नवती नामनी पुत्री हती. तेना मातापिताए चतुर पुरुषोने तेने योग्य वर माटेनी शोध करवा मोकच्या, तेमांथी चित्रमती अने भूषण बन्ने अयोध्यामां आव्यां, त्यां गुणचन्द्रने जोयो पण तेनो अपूर्व कान्ति चित्रमां चीतरी शक्या नहि, तेथी तेओ पाछा शंखपुरमां गया अने रत्नवतीनुं एक चित्र दोरी पाछा अयोध्या आवो कुनारने मळ्या अने तेनी सामे रत्नवतीनुं

१. 'त्रिषाष्ट्रेशलाकापुरुष नरित्र'-पर्व ८ -सर्ग १ गुजराती भाषांतर पृ. १९८

२. हरिभद्राचार्य-क्रन 'समराइच्च-कहा' गुनराती भाषांतर हेमसागरसूरि पृश्ठांक-२९ मुं.

चित्रपट मूक्युं. ते वखते गुणचन्द्रे चित्रनां वखाण करी, 'तमे आ रूप क्यां निहाळ्युं छे ?' एम पूछ्युं एटले बन्नेए तेने रत्नवतीनो बृत्तान्त जणाव्योः. त्यारणी गुणचन्द्र रत्नवती प्रत्ये अभिलाषावाळो थयो. तेणे पोते रत्नवतीनुं चित्र आलेख्युं. बनेए ते लईने, तथा गुणचन्द्रनी छबी चीतरी लईने ते रत्नवतीने बतावी त्यारे रत्नवती गुणचन्द्र प्रत्ये अनुरागवाळी थई ..

उपर्युक्त वे कथाओमां जेम पहेली कथामां चित्रकार अने बीजी कथामां चित्रमती तथा भूषण द्वारा चित्रनी प्राप्ति थतां नायक—नायिका वच्चे अनुराग प्रकटे छे तो वळी 'राणी चेलणा अने श्रेणिकराजानी कथा'मां कोई एक तापसी द्वारा नायकने नायिकाना चित्रनी प्राप्ति थतां ते नायिकाने प्राप्त करवानी योजना करे छे. ट्कमां कथा आ प्रमाणे छे :

एकदा कोई एक तापसी चेटकराजानी सुज्येष्टा नामनी पुत्रीनुं चित्र लईने श्रेणकराजानी समामां आवी. राजाने ते चित्र जोईने ते राजकत्याने परणवानी इच्छा थई. तथी राजाए ते विषे अभयकुमारने आज्ञा करी. एटले अभयकुमारे गांधीना वेशे चेटकराजानी विशाखानगरीमां जई राजाना अंत:पुरनी पासे दुकान मांडी. पछी ज्यारे सुज्येष्टानी दासी तेनी दुकाने कंई वस्तु लेवा आवे त्यारे अभयकुमार श्रेणिकराजाना चित्रनी पूजा करे. ते जोईने एकदा दासीए तेने पूछ्युं के 'आ कोनुं चित्र छे !' त्यारे तेणे 'श्रेणिकराजानु' छे'-एम कह्यु. ते सांमळीने दासीए अभयकुमार पासेथी ते चित्र मागी लईने सुज्येष्टाने बताब्युं. ते जोई सुज्येष्टा कामानुर थईने बोली के, 'हे दासी ! आ राजा मारो पति थाय.' ते बात दासीए अभयकुमारने जणावी त्यारे अभयकुमारे तेना अंतःपुरथी मांडी राजग्रह नगरी सुधीनी सुरंग खोदावी. ते रस्ते पिताने अमुक दिवसे त्यां आववानुं जणाव्युं......

आम नायक के नायिकानुं चित्र अनायासे कोई व्यक्ति पासेथी प्राप्त थाय छे, कां तो कोई व्यक्ति पोते ज चाहीने ते चित्र बतावे छे. कां तो चित्रने अमुक विशेष व्यक्ति पासे पहोंचाडवा कोई योजना घडवामां आवे छे.

अनुराग जगाववा युक्तिपूर्वक इन्छित व्यक्तिने चित्र बताववानी वात, 'कथासिरिसागर' मांनी 'पृथ्वीरूप राजा अने रूपलता राणी'नी कथामां आलेखवामां आवी छे. आ कथानी टूक सार आ प्रमाणे छे:

प्रतिष्ठान नामना नगरमां पृथ्वीरूप नामना राजा पासे वे बौद्ध साधुओए मुक्तिपुरना राजा नी रूनलता नामनी कनानां रूपगुणना वखाण कर्यां. आ सांमळी पृथ्वीरूप राजा कामातुर थयो अने तेणे पोताना कुमारिदत्त नामना चित्रकार पासे पोतानी छबी चितरावी अने कह्युं के 'तुं आ छबी लई आ वे साधुओ साथे मुक्तिपुर जई रूपघर राजा अने रूपलताने कोई युक्तिथी आ मारी छबी बतावजे. अने रूपलतानी छबी चित्रमां आलेखी अहीं मारी पासे लावजे.'

मुन्तिपुरमां पहोंची ते चिताराए राजानी छबीवाळो पडदो मुख्य बजारमां लटकावी सर्वने जणाब्युं के 'मारा जेवो श्रेष्ठ चितारो दुनियामां नथी.' राजा रूपधरे आ सांभळी चिताराने बोलाको अने पोतानी पुत्री रूपलतानुं चित्र आलेखवा कह्युं. चिताराए रूपलताने कपडा उपर ताहरा आलेखी. ते जोई योग्य जमाई मेळववानी इच्छाथी राजाए योग्य पुरुष जो जोयो होय

१. 'उपदेशप्रोसाद'-स्तंभ ३ जो व्याख्यान ३६ मुं, पृ. १८६-इर्ता विजयलक्ष्मीसूरि-[ गुज. भाषां. ]

२. 'कथासरित्सागर'-'अलंकारवती लंबक'-तरंग १ लो -गुज, भाषांतर, पृ. ६१७

तो चिताराने पूछ्युं. आ सांभळी चिताराए पृथ्वीरूप राजानां वखाण करी तेनी छनी बतावी. रूपछता आ चित्र जोतां ज अत्यंत कामातुर थई गई. ते जोई रूपधर राजाए चिताराने रूपछतानुं चित्र आपी पृथ्वीरूप राजा पासे मोकल्यो. चित्रकारे पृथ्वीरूप राजा पासे आवी संदेशो कहो। अने चित्रमां आलेखेळी रूपछता बतावी. पृथ्वीरूपराजा ते जोई आभो ज बनी गयो. बीजे दिवसे ते मुक्तिपुर तरफ विदाय थयो. इत्यादि......

उपरनी कथामां, चित्रकार बजारमां राजानी छबीवाळो पडदो लटकावी राजाने आकर्षे छे, ज्यारे कथासरित्सागर'नी 'कनकवर्ष अने मदनसुंदरी'नी कथामां एक चित्रकार पोतानी निपुण-तासुचक एक पडदो सिंहपोळ उपर लटकावी राजकुं वरने आकर्षे छे. टूंकमां कथा आम छे :

कनकपुर नामना नगरमां प्रियदर्शननी राणी यशोधराने पेटे कनकवर्ष नामनो कुमार जन्म्यो हतो. एक दिवस आ कनकवर्ष चित्रप्रासादमां गयो, त्यां प्रतिहारे आवीने कह्युं के विदर्भदेशमांथी रोलदेव नामनो चित्रकार आव्यो छे. पोतानी निपुणतासूचक एक पडदो सिहपोळ पर लटकावी रहेलो ते पोताने सर्पश्लेष्ठ गणे छे.' राजाए तेने तेडी मंगाव्यो अने चित्रकारनी विनतीथी तेने पोतानुं चित्र दोरवा जणाव्युं, त्यारे त्यां वेठेलाओए कह्युं के 'आ चित्रमां एकला राजाने जीवा नथी इच्छता, माटे चितरेली भींत उपर जे राणीनां चित्र आलेखेलां छे तेमांथी योग्य राणीने राजानी पडखे आलेखो.' त्यारे चित्रकारे कह्युं के, 'आमांथी कोई राणी कनकवर्षने योग्य तथी, परन्तु तेने योग्य विदर्भदेशमां कुंडिनपुर नगरमां राजा देवशक्तिनी अनंतवती राणीनां मदनमुंदरी नामनी राजकन्या छे.' एम कही, ए मदनमुंदरी पण राजा प्रत्ये कामातुर थई कामज्वरमां प्रजळे छे एम जणाव्युं. ते सांभळी राजाए ए मदनमुंदरीनुं चित्र रोलदेव पासे माग्युं. त्यारे एक पेटीमांथी एक मुंदर चित्रपटमां आलेखेली मदनमुंदरी तेणे राजाने बतावी. कन्यानुं अद्भुत लावण्य जोई राजा तरत ज मदनवश थई गयो अने मदनमुंदरीनुं मागुं कर्युं. देवशक्ति राजाए ते बचन कबूल कर्युं.

आगळ जोयुं तेम कोई कथामां तापती के कोई कथामां चित्रकार, चित्रद्वारा अनुराग उपजावनामां निमित्तरूप थाय छे. 'कथासरित्तागर'मांनी 'सुंदरसेन अने मंदारवर्तानी कथा'मां कोई एक साधुडी चित्र द्वारा नायक—नायिकामां अनुराग उत्पन्न करे छे. ट कमां कथा आप्रमाणे छे :

नैषधदेशनो राजकुमार सुंदरसेन मृगया माटे वनमां जतो हतो एवामां कात्यायनी नामनी साधुडीए तेनी पासे आवी, 'राजकुमारनो विजय थाओ'—एम कह्यं, पण राजकुमारे सांमळ्युं निह. तेथी ते साधुडी गुस्से थईने बोळी के 'जुवानी अने बीजा गुणोने ळईने तने मत्सर छे, पण ज्यारे तुं हंसद्वीपना राजानी मंदारवती कन्याने परणीश त्यारे तुं एटळो मदमत्त थईश के कोईनं सांमळोश निह !'

गजकुमारे मंदारवती विषे पूछ्युं त्यारे साधुडीए तेना गुणगान गायां. त्यारबाद राजकुमारे तेनु रूप बताबवा कह्युं त्यारे साधुडीए झोळीमांथी वांसनी एक भूगळीमां राखेली, एक कपडा पर दारेलो मंदारवतीनी छवी राजकुमारने बतावी. चित्र जोतां ज सुंदरसेन स्वड्घ बनी गयो अने

१. 'कथासरित्सागर'- 'अलंकारवती लंबक'-तरंग ५मो-गुज भाषां. प्र ६८१.

२. 'कथासरित्सागर'-'शशांकवती छंत्रक'-तरंग ३४मो, गुज. भाषां. पृ. १२१९.

तेने कामज्वर लागु पडचो. आ बात राजाराणीनां जाणवामां आवतां मंदारवतीना पिता पासे मागुं मोकलान्युं. दूते मंदारदेवना दरबारमां जई राजकुमार सुंदरसेननुं चित्र बतान्युं. तेने जोई राजकुमारी अने राजाराणी प्रसन्न थयां अने मागुं कबूल्युं.

'कथासिरिसागर'मां 'कमलाकर अने हंसावलीनी कथा'मां पण युक्तिपूर्वक चित्र द्वारा अनुराग प्रकटाववानो बृत्तान्त आवे छे. आ कथानो ट्रॉक सार नीचे प्रमाणे छे :

कोशलानगरीमां विमलाकर राजाने स्वरूपकान एवो कमलाकर नामे पुत्र हतो. तेना एक परिचित बंदीने वारंवार एक गाथा गातो जोई, ते विषे तेने पूछ्युं त्यारे बंदीजन बोल्यो के ''एकवार विदिशानगरीनी राजकुंवरी हंसावलीनुं नृत्य अने रूप जोतां मने एम थयुं के आ कन्याने योग्य कमलाकर कुमार ज छे, तेथी ते आपने वरे ए माटे में युक्ति करी. नृत्य थई रह्या पछी हुं राजमहेलना बारणा उपर गयो अने एक चित्र तैयार करी, तेनो पडदो लटकावीने बधाने जणाव्युं के, 'जे कोई मारी साथे चित्र दोरवानी स्पर्धा करवा इच्छतो होय तेणे कोई चित्र चीतरवुं' आखा गाममां कोईए पराक्रम बताव्युं निह. एटले राजाए मने बोलाव्यो अने पोतानी पुत्रीना महेलमां चित्रकामनो मने अधिकारी निम्यो. पछी राजपुत्रीना महेलमा ओरडामां मींत पर में तमारुं चित्र दोर्युं अने राजकुमारीने कंई पण उपाये तमारो परिचय आपवानो उपाय शोधवा लाग्यो.

त्यारपछी मारा मित्रनी साथे गुप्त संकेत करीने तेने शीखन्युं के 'तुं महेलमां जई गांड-पणनो ढोंग करीने कमळाकरना गुण, राजकन्या तथा तेना भाई भो आगळ गाजे'. मारा मित्रे ते प्रमाणे कर्युं त्यारे राजकुमारीए मने, ''आ गांडो कोना गुणो गाय छे अने तमे कोनुं चित्र दोर्युं छे १' एम पूछ्युं. में तमारा खून गुणगान गायां तेथी तेनुं मन प्रेमातुर थई गयुं. एवामां तेनो बाप त्यां आन्यो अने तेणे मने अने मारा मित्रने बहार काढी मूक्या. परंतु राजकन्याने तमारो विरह सालतां मने मंदिरे बोलाबी बस्त्रोनी मेट आपी. तेमांना एक बस्त्रना भरेली कोरवां तमारे माटे एक गाथा लखेली जणाई. ए हुं वारंबार गाउं छुं.''—एम कही बंदीए गाथाबाळुं बस्त्र कमलाक ने बतान्युं अने तेथी ते पण प्रेमातुर थई गयो.

कोई चित्रकार, नायकने नायिका प्रत्ये अनुराग प्रकटाववा माटे नहि, परंतु आकास्मिक रीते ज नायिकानुं चित्रपट नायकने आपे, अने ते जोई नायक ते नायिका प्रत्ये कामातुर बने तेवी एक कथा पण 'कथासरित्सागर'नी 'मलयवर्तानो कथा'मां निरूपाई छे. कथा द्वंकमां आ प्रमाणे छेंै:

विक्रमादित्य राजानी पासे नगरस्वामी नामनो एक फक्कड चितारो हतो. ते बब्बे दिवसे एक एक नवी स्त्रीनुं चित्र चीतरीने राजाने आपतो. एक दिवस उत्सवने कारणे चित्र दोरायुं नहि. राजाने चित्र अर्पण करवानो दिवस आव्यो त्यारे ते चिंतामां पड्यो. एटलामां दूरदेश-वासी एक पथिक तेनी ासे आवी चढ्यो अने ते नगरस्वामीने एक पोथी आपी चाढ्यो गयो. पोथी खोळतां तेमां नगरस्वामीए लावण्यमयी स्त्रीनुं चित्रपट जायुं. आथी आनन्दित थई नगरस्वामीए ते दिवसे ते ज चित्र राजाने मेट धर्युं. चित्र जोतां ज राजा खूब विस्मय पाम्यो अने

१. ''कथासरित्सागर''ः'शशांकवती लंबक'-तरंग ४थ गुज. भाषा **ए. ९२६**.

२. 'कथासरित्सागर'-'विषमशील लंबक'-तरंग ३जो-गुज. भाषां. ए. १५३१.

चिताराने साची हकीकत जणाववा कह्यं. त्यारे नगरस्वामीए साचेंशाचो वृत्तान्त राजाने जणाव्यो. राजानुं मन ए चित्रपटमां चीतरेली सुंदरी उपर बेटुं अने ते तेनी ज झंखना करवा लाग्यो.

एक दिवस राजाए एक स्वप्नमां ए ज स्त्रीने बीजा द्वीपमां प्रत्यक्ष जोई अने तेने काम-इवर लागु पड़चो. भद्रायुध नामना प्रतिहारोए राजाने सोसाने जोई तेनुं कारण पूछ्युं त्यारे राजाए स्वप्नमां जोयेलो सर्व वृत्तान्त कहाो.

त्यारवाद भद्रायुधना कहा। मुजब राजाए स्वप्नमां जोयेल नगर, राजमार्ग वगेरे चीतरीने आप्युं, प्रतिहारे एक नवीन मठ करावी तेमां ते चित्र लईने टांग्युं. एक दिवस त्यां शंबरसिद्धि नामना भाटे ते चित्र जोयुं अने तेने ओळख्युं तेथी राजसेव ही तेने राजा पासे लई गया. त्यां तेणे, राजाने जेवुं स्पप्न आब्युं हतुं ते ज प्रमाणे मलयवती नामनी राजकन्यानी वात करी अने कह्युं के 'मलयवती पण स्वप्नमां जे वीरपुरुषने जोयो छे, तेना कामज्वरमां बळी रही छे.'

आम अहीं एक परदेशी द्वारा अजाणताथी ज नायिकानुं चित्रपट प्राप्त थाय छे. परन्तु घणीबार नायकने नायिकानुं चित्र केवळ आकस्मिक ज प्राप्त थाय छे. कोई व्यक्ति ते चित्र तेने आपती नथी. उत्तरप्रदेशनी एक लोककथामां नायकने आम आकस्मिक प्राप्त थता नायिकाना चित्रनो बृत्तान्त छे, जेना बढे ते नायिका प्रत्ये अनुरक्त थाय छे. ट्रंक्मां कथा आ प्रमाणे छे :

एक दिवस एक राजकुमार अने मंत्रोपुत्र के जेओ जिगरजान मित्र हता, तेओ शिकार माटे वनमां गया. रस्तामां राजपुत्र तरस्यो थयो तेथी तेने वृक्ष नीचे वेसाडी मंत्रीपुत्र जळनी शोधमां नीकळ्यो. पाणी शोधतो शोधतो ते एक तळावने तीरे आबी पहोंच्यो अने त्यांथी पाणी छई राजकुमारने पायुं. पाणीनो स्वाद चाखी राजकुमारने तळाव जोवानी इच्छा थई. मंत्री तेने बताववा तैयार थयो, परंतु तेने तरत ज याद आव्युं के तळावने तीरे पोते एक स्वरूपवान कन्यानी छबी जोई हती. हवे जो राजकुमार ए छबी जोशे तो कदाच ते तेने परणवानो आग्रह करशे. तेथी तेणे राजकुमारने 'आ तळाव गंवुं छे' एम कही न जवा विनव्यो. पण राजकुमार मान्यो निह अंते तळावने तीरे तेओ बन्ने गया अने तरत ज राजकुमारे त्यां पेछी सौन्दर्यवान कन्यानुं चित्र पडेछुं जोयुं अने तरत ज ते प्रेमातुर थई गयो. तेणे मंत्रीपुत्रने कह्युं के 'ज्यां सुधी मने आ चित्रमांनी कन्या परणाववामां निह आवे त्यां सुधी हुं अहींथी खसीश निह ' प्रधानपुत्र तेने कन्या लावी आपवानु वचन आप्युं, इत्यादि .....

सिंधनी लाककथामां पण एक आम आकस्मिक रीते ज नायकने नायिकानुं चित्र प्राप्त थाय छे, एवुं कथानक प्रचलित छे. कथानुं शीर्षक छे-"आठमी चाव।". ट्रकमां कथा आप्रमाणे छे :

सिंधदेशमां एक राजाने मोटी उंमरे एक पुत्र थयो राजा ज्यारे मरणपथारीए हतो त्यारे तेणे प्रधानने बालावीने पोताना आठ खजानानी आठ चावीओ सुप्रत करी अने कह्युं के, 'ज्यारे राजकुमार उंमरलायक थाय त्यारे प्रथम सात खजानानी चावी तेने आपजा, पण ज्यां सुधी ए पांच वर्ष सुधी बराबर राज्य न चलावे त्यां सुधी आठमा खजानानी चावी न आपता' प्रधाने ते वात कब्ली अने राजाए प्राण छे।इया.

ज्यारे राजकुमार उम्मरलायक थयो त्यारे प्रधाने प्रथम सात खजानानी सात चावी तेने सुपत

१. 'Folktales of Hindustan'-by William Crooke, C. S. जुओ : 'Indian Antiquary' Vol XXI, p. 185

करी. आ साते चावीओथी राजकुमारे साते खजाना खोळी जोया अने तेमांथी सोनु, चांदी अने रत्नो मळेळां जोई खुश खुश थयो अने प्रधाननी वफादारी माटे खूब राजी थयो.

वखत जतां कोई एक दुष्ट वृद्धपुरुष के ज प्रधाननी अदेखाई करतो हतो, तेणे राजकुमार पासे आठमा खजानानी चाबीनी चाडी खाधी. राजकुमारे प्रधानने धमकावीने पूछतां तेणे आठमी चाबी आणी. तरत ज राजकुमारे आठमो खजानो खोल्यो त्यारे ते साव खाळीखम हतो. मात्र त्यां एक लावण्यमयी कन्यानुं चित्र हतुं. आ चित्र जोतां ज राजकुमार तेना अगाध प्रेममां हुनी गयो अने धीमे धीमे भान भूळी जतां मूर्च्छा खाई पडी गयो

आम जोई शकाय छे के ''चित्रद्वारा अनुराग"नुं कथानक कथा-साहित्यमां व्यापक छे. चित्रकार, साधु, प्रवासी, अनेक प्रकारनी व्यक्तिओ द्वारा अनेक प्रकारे अवनवा स्थळोएथी, नायक-नायिकाने एकमेकनी छबीओ प्राप्त थाय छे. उपरांत आकस्मिक रीते कोईपण व्यक्तिनी मदद विना अनायासे ज नायक-नायिकाने एकमेकनी छबी मळी जाय अने ते जोतां ज जोनार पात्रनी हृदयभूमिमां प्रेमबीज रोपाई जाय ए प्रकारनां वृत्तान्तनो, प्रेमकथाकारोए पोतानी कथाओमां उपयोग करी नायक-नायिकानो प्रणयमिलनां गोठवेलां छे.

#### (३) जन्मतां ज बाळकनुं अपहरण

पूर्वजन्मना कोई वेरने लईने अन्य भवमां कोई व्यक्ति तेना बदलारूपे पोताना वेरीनुं अपहरण करी तेने मारी नालवानो प्रयास करे एवा प्रसंगनुं निरूपण विशिष्ट रीते जैनपरंपराना कथासाहित्यमांनी केटलीक कथाओमां थयुं छे. तेमांय खास करीने वेरीनो ज्यारे हजी मात्र क्यांक जन्म ज थयो होय छे त्यां तो पूर्वजन्मनुं वेर याद आवतां ते व्यक्ति तेनुं अपहरण करे ए कथाधटकनो, अहीं एक-बे उपलब्ध थयेलां दृष्टान्तो द्वारा विचार कर्यो छे.

धूमकेतु प्रद्युम्ननुं जन्मतांवेंत ज अपहरण करे छे कारण के पूर्वभवमां प्रशुम्न ज्यारे मधु नामनो राजा हतो त्यारे तेणे, धूमकेतु के जे पूर्वजन्ममां कनकरथ नामनो राजा हतो, तेनी चन्द्राभा नामनी स्वरूपवान स्त्रीनुं कपटथी अपहरण कर्युं हतुं. आम गत जन्ममां पोतानी स्त्रीन। अपहरणना वेरना बदलारूपे आ भवे धूमकेतु प्रद्युम्नन्ं जन्मतां ज अपहरण करे छे.

आ ज प्रमाणे 'त्रिषष्टिशलाकापुरुष०'मां सीताना भाई मामंडळनुं पण जन्मतांवेंत ज अपहरण थाय छे. ट्रंकमां कथा आ प्रमाणे छेः

बंब्द्रीपना भरतक्षेत्रमां दारु नामना गाममां वसुभूति नामना ब्राह्मणने अनुकोशा नामनी स्त्रीथी अतिभूति नामे एक पुत्र थयो. अतिभूतिने सर्ता नामे पत्नी हतो. एक वखत क्यान नामना ब्राह्मणे अनुरागथी तेनुं हरण कर्युं. अतिभूति तेने शोधवाने पृथ्वी पर भमवा लाग्यो अने ए पुत्र-पुत्रवधूनो पछवाडे अनुकोशा अने वसुभूति पण भमवा लाग्या. पण पुत्र अने पुत्र-वधूनो पत्तो न लाग्यो. अंते मुनिनी पासेथी धर्म सांभळीने बन्ने जणाए व्रत ब्रहण कर्युं. काळयोगे मृत्यु पामी तेओ सौधर्म देवलोकमां देवता थया. वसुभूति त्यांथी च्यवी वैतादय पर्वत पर रथन् पर नगग्नो चन्द्रगति नामे राजा थयो अने अनुकोशा तेनी पत्नी पुष्पवती थई. सरसा दीक्षा लई मृत्यु पामी, ईशान देवलोकमां देवीपणे उत्पन्न थई. सरसाना विग्हमां पीडित अति-भूति मृत्यु पामी, अनेक भवभवान्तरो भमी, विदग्ध नामना नगरमां प्रकाशिन्ह राजानी प्रवरावली

S

१. 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र'-पर्व ७मुं, सर्ग चोथो.

नामनो राणीथी कुंडलमंडित नामनो पुत्र थयो. पेलो क्यान चिरकाळ भवभवान्तर भमी, चक्रपुर नगरना राजा चक्रध्वजना पुरोहितनो पिंगल नामे पुत्र थयो. आ पिंगलने चक्रध्वजनी अतिसुंदरी नामनी पुत्रीनो साथे एक गुरु पासे भणतां परस्पर अनुराग थयो अने पिंगल छळथी अतिसुंदरीनुं अपहरण करी विदग्ध नगरे चाल्यो गयो. त्यां राजपुत्र कुडलमंडितना जोवामां ते अतिसुंदरी आवतां तेणे तेनुं हरण कर्युं. आथी पिंगल उन्मत्त थई पृथ्वी पर भमना लाग्यो, त्यारबाद तेणे दीक्षा लीधी.

आ कुंडलमंडित त्यांथी मृत्यु पामी मिथिला नामनी नगरीमां जनकराजानी स्त्री विदेहाना यर्भमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. पिंगल मृश्यु पामी सौधर्म करमां देवता थयो. तेणे अवधिज्ञानथी पोताना पूर्वभव जोयो, एटले पोताना पूर्वभवना वेरी कुंडलमंडितने जनकराजाना पुत्ररूपे जनमतो दीठो. पूर्वजन्मना वैरथी कोप करीने तेणे तेने जन्मतां ज हरी लीधो, अने विचार्युं के, आने शिलातळ उपर अफळावी हणी नाणुं. 'पण बाळहत्या बडे वळी पाछा अनंत मव परिभ्रमण कर्खं पडे ए बीकथी तेणे बाळकने वैताद्यगिरिनी श्रेणीमां रथन्पुर नगरना नंदनोद्यानमां मूक्यो. त्यांना राजा चक्रगतिने ते प्राप्त थयो अने तेनुं नाम भामंडळ पाड्युं.

आम भवोभवनुं अपहरणनुं वेर व्यक्ति पासे जन्मतावेंत ज तेना वेरीरूप बाळकनुं अप-हरण करावे छे. तो केटलीक वार भवान्तरना इतर प्रकारना वेरथी पण व्यक्ति पोताना वेरी बाळकनुं आ जन्ममां अपहरण करे छे. 'कुवलयमाला'मां 'वनसुंदरी एणिकानी कथा'मां बाळकनुं जन्मतावेतं ज आ रीते अपहरण थाय छे. टूंकमां कथा आ प्रमाणे छे:

उज्जियिनी नगरीमां श्रीवत्स नामना राजाने श्रीवर्धन नामे पुत्र हतो अने श्रीमती नामनी एक पुत्री हती. तेने विजय नामना राजाना सिंह नामना पुत्र साथे परणावी हती. आ सिंहने निर्दयपणे गमे तेम खूंटफाट करतो जोई विजयराजाए तेने देशनिकाल कर्यो. एटले ते पोतानी भार्या श्रीमतीने लई सीमाडाना गाममां रहेवा लाग्यो.

केटलाक समय पछी श्रीवर्धन राजपुत्र धर्मेरुचि नामना एक साधु पासे धर्मश्रवण करी वैरागी बनी साधु बन्यों विहार करतां करतां ते साधु पोताना बहेन-बनेवीना गाममां आव्या अने गोचरी अर्थे विचरतां विचरतां बहेनना घरे आव्या पोताना भाईने जोईने बहेन स्नेह्यी कंठे वळगी पडी अने आलिंगन दई रडवा लागी. एटलामां तेनो पित सिंह बहारथी आब्यों. पेलाने आलिंगन करातो जोई, 'अरे ! आ कोई पाखंडी परपुरुष मारी पत्नीनी अभिलाषा करे छे'—अम विचारी तलवार खेंची तेणे मुनिने हणी नाख्या. आ दुःसह वध जोई ते स्त्रीए पितने एक लाकडा वती प्रहार कर्यों एटले ते मूर्छित थईने पड्यों, पण पडतां पडतां तेणे तलवारथी पोतानी भार्यांने पण हणी नाखी, अने त्यारबाद पोते मरण पामी नरकमां गयों. तेनी पत्नी पण नरके गई अने साधु सौधर्म विमानमां उत्पन्न थया.

पछी सिंहकुमार नरकमांथी नीकळी भवान्तरे ज्योतिषदेवमां उत्पन्न थयो अने केवळी पासे जई पोताना भवान्तरो पूछ्यां, भगवाने तेना भव कह्यां. ते सांभळी होने क्रोध उत्पन्न थयो. 'अरे ! मारी पत्नीए मने मारी नाख्यो, माटे ते दुराचारिणी अत्यारे क्यां हशे ?' अम विचारतां तेने देवायुं के ते स्त्री नरकमांथी नीकळी पद्मनगरना पद्मराजानी श्रीकान्ता नामनी पत्नीना

१. उद्योतनसूरि-कृत 'कुवळयमाला', गुजराती भाषांतर—हेमसागरसूरि, प्रकरण १५मुं, पृष्ठांक २०८—२११,

उदरमां पुत्री तरीके उत्पन्न थई छे. ते बखते हजु ते तरत ज जन्मेली हती. तेने जोतां ज क्रोधित बनी तेने मारा नाखवानी इच्छाथी ए ज्योतिषदेव, त्यां आवी, बाळकीनुं अपहरण करी ऊंचे उड्यो. परंतु स्त्रीहत्या अने बाळहत्याना डरथी तेने पोते मारी नहि. 'वनमां पक्षीओ चांचथी फोलीं खादो'—एम विवारी आकाशमांथी तेणे तेने नीचे फेंकी.

ते वाळकी वेलीओ अने पांदडाओवाळी सलामत जग्याए पडतां बची गई. ते ज वखते एक गर्मिणी हरणीए त्यां ज प्रसव कर्यो. प्रसव-बेदनानी मूच्छी वळतां तेने मृगबाळक अने बाळकी देखायां. मृगलीए 'आ पोतानुं ज जन्म आपेछं जोडछं छे' एम जोणी पोताना दूधथी तेने पाळवा लागी. हरिणोथी उछेराती ते बाळकी एणिकापुत्री कहेवाई.

आम अहीं आपणे पूर्वजन्मना वेरथी, जन्म पामतां ज बाळकनुं अवहरण थाय छे ते कथाधटकनो विचार क्यों.

### (४) मोटाभाईनी ईर्घ्या अने विजेता नानोभाई

सीथी नानामाईनां पराक्रमो अने तेना विजयनी कथा, कथासाहित्यनुं एक लोकप्रिय कथाघटक छे. सगा के अपर एवा घणा भाई ओमां जे सौथी नानो भाई होय छे ते मातापितानो
लाडको अने तेमना पक्षपाती प्रेमनो विशेषाधिकारी होय छे. आम सौथी नानापुत्र उपरनो मातापितानो सविशेष प्रेम तेना मोटा भाई ओमां ई ध्याँ प्रेरे छे. मोटा भाई ओमां नाना भाई प्रत्येनी
ई ध्याँना आ सिवाय बीजां कारणोमां मोटा भाई ओ ज्यारे खुव काम—महेंनत करी घरनो बोजो
उपाडता होय छे त्यारे नानो भाई निष्क्रिय बनी, आळसु अने रखडेल जीवन जीवतो,
लहर करतो होय छे; आम पोतानो मजूरीभरी जिन्दगीनी सामे नाना भाईने मोजमजा करतो
जोई मोटा भाईओमां देषाग्न पकटे छे. ए उपरांत कोई विशेष प्रसंगे कोई साहसभर्या
कार्यमां मोटा भाईओ पराजय पामे छे त्यारे नानो भाई पोताना बुद्धियातुर्यथी, कुराळताथो के
आत्मबळथी तेमां फत्तेह मेळते छे. आधी मोटा भाईओ ते काम न करी राक्रवाथी झंखवाणा
पड़ी जईने, अने ते काम पार पाडवा बदल नानाभाईने मळनार समृद्धिना द्वेषथी, तेनी ई ध्या
करे छे. आ उपरांत सौथी नाना राजकुमारना पराक्रम अने बुद्धियातुर्यथी आकर्षाह राजा पोतानी
गादी मोटा राजकुमारोने न सोंपता नाना राजकुमारने आपे छे त्यारे पण मोटा भाईओ नाना माईनी
ई ध्यां करे छे.

आ रीते अनेक प्रकारे नाना भाई प्रत्ये मोटा भाईओनी ईर्ष्या प्रज्वलित थाय छे. तेनाथी क्रोधित थई मोटा भाईओ नाना भाईनो कांटो दूर करवाना पेंतरा रचे छे. ए पेंतरा मुजब तेओ नाना भाईने अनेक मरणोन्मुख स्थळोए फसावे छे, अनेक संकटोमां तेने नाखे छे, परन्तु ते सर्वमांथी दैवयोगे के पोताना पराकमथी ते बची छाय छे. एटछुं ज निह परंतु संकटोनो सामनो करतां करतां ते अनेक प्रकारनी सुख-सगवडो, खिताबो के दिग्य वस्तु-विद्याओ — एम अलौकिक के लौकिक सिद्धिओ प्राप्त करे छे अने सुखवैभवनो चिरअधिकारी बने छे. उपर्युक्त कथावटकनो जे कथानकोमां उग्योग थयेलो जणाय छे, तेमां महाभारतमां कौरवो अने पांडवोनी कथा तो सर्वने विदित छे ज. ते उपरांत नळ-दमयंतीनी कथामां पण नळ अने तेना नाना भाई कूबरनो ईर्ध्यांनो प्रसंग आवे छे. ट्रंकमां ते प्रसंग आ प्रमाणे छे:

१ Motit-Index मां LO थी L99 ना क्रमांक्रमां आ कथाघटक समाववामां आन्धुं छे. २. त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र-पर्व ८मुं, सर्ग ३जो.

जंबुद्वीपना भरतक्षेत्रमां अयोध्या नगरोमां निषष राजा राज्य करतो हतो. तेने वे पुत्रो हता, तेमां नळ उत्तन पुरुष हतो अने कूबर नीच अने कपटी हतो.

आ नळराजा कुंडिननगरना भीमराजानी पुत्री दबदंती साथ परण्यो हतो. अन्यदा निषध राजाए नळने राज्य पर अने कूबरने युवराजाद उपर स्थापन करीने व्रतग्रहण कर्युं. नळना राज्यमां सर्व सुखी हता, पण तेनो अनुज बंधु कूबर नळना हमेशां छिद्रो ज शोधतो. नळराजाने चूत प्रत्ये विशेष आसिक्त हती ए जाणीने 'हुं आ नळ पासेथी सर्व पृथ्वी चूत रमीने जीती लडं एवा नठारा आश्ययी नळने चूत रमवानुं आमंत्रण आण्युं. नळराजा चूत रमवा बेठा. तेमां ते सर्व राज्य हारी बेठा. दबदंतीए नळराजाने घणुं रोक्या पण ते रोकाया नहि. छेवटे ते पोताना राज्य साथे दबदंतीने पण हारी गया, त्यारे कूबरे तेने पोतानुं राज्य छोडी देवानी आज्ञा करी. नळराजा जवा लाग्या एटले दबदंती पण तेनी पाछळ जवा लागी. ए जोई कूबरे तेने रोकी अने भयंकर शब्दो वर्डे पोताना अंतःपुरने अलंकृत करवानुं कह्युं. पण मंत्री इत्यादिना समजाव्याथी तेणे दबदंतीने जवा दीधी त्यारबाद नळ—दबदंतीए बनवास बेठतां अनेक कष्टो सहन कर्यां अने नळे पाछा अयोध्या आवी कूबर साथे चूत रमी पोतानुं राज्य पाछु मेलव्युं. '

उपर्युक्त कथामां नाना भाईनो मोटा भाई प्रत्येनी ईर्ध्यानो वृत्तान्त छे, अने नाना भाई पोतानी भाभी प्रत्ये आस कित सेवेछे. पण नेमि राजर्षिनो कथामां मोटो भाई नाना भाईनी स्वरूपवान पत्नीने जोई, तेने पोतानी करवा नाना भाईनी हत्या करे छे एवी कथा पण निरूपाई छे. कथानो टूकसार आ प्रमाणे छे.

अवन्तीदेशमां सुदर्शन नामना नगरमां मणिरथ नामे राजा हतो. तेनो नाना भाई युगबाहु युवराजाद उगर हतो. तेने मदनरेखा नामनी अति स्वरूपवान स्त्री हती. मदनरेखाने नीरखीने मणिरथ राजा कामातुर थयो अने तेने वश करवा निरंतर दासी द्वारा पुष्प, तांबूल इ० मोकलवा लाग्यो 'आ तो जेठनी प्रशादी छे'—एम मानो मदनरेखा ते ग्रहण करवा लागी.

एकदा राजाना कहेवाथी दासीए मदनरेखा पासे राजानी इच्छा जगावी त्यारे मदनरेखाए शीलनो महिमा समजावी राजाए आवुं अयोग्य वचन न कहेवा, दासीने जगाव्युं. दासीए राजाने ज्यारे आ बात जगावी त्यारे रागलुब्ध राजाए नाना भाईने मारी नाखी, मदनरेखाने कवजे करवोनो विचार कर्यो.

एक वखत युगबाहु अने मदनरेखा उद्यानमां क्रीडा करी रात्रिओ पण त्यां ज कदलीगृहमां सूई रह्यां. ते अवसर जोईने गुप्त रीते राजाए खड्ड्ग रूई, कुलमर्यादानुं उल्लंघन करी, कदलोगृहमां पेसी नाना बंधुनो शिरच्छेद कर्यों. ते ज बखते मदनरेखा जागृत थई. तेणे राजानुं कुकृत्य जोयुं, छतां मौन रहीने मरण पामतां युगबाहुने सुबबनो संमळाव्यां. युगबाहु मरण पामी पांचमा देवलोकमां गयो.

१. राज्यलोम ए माई प्रत्येनी इर्ष्यांनुं कारण छे. केटलीकवार ए लोम माईने माईनी हत्या करवा सुधी असंयमी बनावी दे छे. इतिहासमां और गझेबनो दाखलो मोजुद छे. तेमां और गझेबे पोताना दारा, सुजा अने मुराद नामना भाईओनी हत्या करी, राज्यगादो मेळवो हती एम कहेवाय छे.

२. 'उपदेशप्रासाद'-कर्ता श्री विजयज्ञक्षमीसूरि गु. भाषांतर. श्री जेन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर, स्तंम चोथो, व्याख्यान ५२मं, पृष्ठांक २५० [गु. भाषां. त्रीजी आदृत्ति]

आ उपरांत जैन परंपरामां घन्यकुमारनी कथामां पण आ कथाघटकनु निरूपण आई शकाय छै. जेमां घन्यना भाईओ तेना पर द्वेष राखता हता एटले ते घरबार नगर छोडी चाली नीकळचो त्यारबाद राजा श्रेणिके तेने पोतानी सोमश्री नामनी कन्या परणावी तेनी बीजी पत्नी सुभद्राना महेणाया ते दीक्षा लई मोक्षपदने पाम्यो.

बंगाळनी होककथाओमां मोटा भाईओनी ईर्ष्या अने नाना भाईनी विजयकथानु वृत्तान्त अनेक कथाओमां निरूपायुं छे. 'लाल माणेकनी उत्पत्ति' ए कथामां आ कथावटक परत्वे नीचेनुं कथानक रज्ज थयुं छे:<sup>2</sup>

कोई एक राजा पोतानी पाछळ चार पुत्रोने मूर्फा मरण पास्यो. राणीने सौथी नाना कुंबर प्रत्ये खूब वात्सल्य होई तेने सारा सारा कपडां, घोडां तथा राचरचीछ बगेरे आपती. आथी मोटा त्रण पुत्रो नाना भाईनी ईर्ष्या करवा लाग्या अने तेनी सामे षड्यंत्र रची तेने जुदा घरमां राख्यो अने राज्यनो कबजो लई लीधो.

एक दिवस नदीमां नहाता तेणे एक नावडी जोई अने माताए ना पाड्या छतां ते तेमां बेसी मा साथे मुसाफरीए नीकळयो. रस्तामां तेणे अनेक लाल माणेक पाणी पर तग्तां जयां, तेमांथी एक माणेक लई लीधुं. पछी एक बंदर पर ऊतरी राणी अने नानो कुंवर झूंपडामां रहेवां लाग्यां.

एक दिवस राजाना दीकराओ ज्यारे लाखोटीथी रमी रह्या हता त्यारे आ राजकुमार लाल माणेकथी रमवा लाग्यो. तेवामां राजकुंवरीए ते माणेक जोई राजा पासे हठ करी ते मेळबी लीधुं अने बीजा माणेकनी मागणी करी. नानो राजकुमार नावडी लई दिश्यामां ज्यां अनेक लाल माणेक तरतां हतां तेना मूळनी अंदर छूबकी मारीने पड़्यो. त्यां जई पराक्रमथी एक स्वरूपवान कन्याने लई तेपाछो फर्यों अने अनेक लाल माणेक साथे लीघां अने बंदर ऊ।र जई राजाने मोकलाव्यां. राजाए तेना पराक्रमथी खुश थई पोतानी राजकुंवरी तेने परणावी. नानो भाई बन्ने सुंदर कन्याओ साथे सुखमां दिवसो गुजारवा लाग्यों.

आ कथामां तो मात्र मोटा भाईओनी ईर्ध्या अने न ना भाईनी विजयकथा आवे छे, पण बीजी एक कथामां तो ते उपरांत मोटा भाईओ नाना भाईने पोतानुं इच्छित साधवा मरणना मुखमां घकेली देतां पण अचकाता नथी. आ कथा आ प्रमाणे छे:

एक राजाने दुहा अने सुहा नामनी वे पत्नी हती. सुहाने वे पुत्रो अने दुहाने मात्र एक लंगडो पुत्र हतो. एक रात्रे स्वप्नमां राजाए जेने चांदीनुं थड, सोनानी डाळी, हीरानां

- १. 'मध्यकालीन राससाहित्य' डॉ. भारती वैद्य-पृष्ठांक ३६१-३६२.
- 2. 'Folktale: of Bengal'-Day L. B. pp.211-216
- २. गुजरातीमां आ कथा माटे जुओ:

'भारत लोककथा'-भाग ७मो 'माणिक्यनी उत्पत्ति'-पृष्टांक १ थी ५. आ उपरांत पात्र अने प्रसंगना विगतफेर साथे आवी ज कथा माटे जुओ: 'Folklore in Western India'-Putalibai D. H. Wadia. 'The Indian Antiquary'-vol. XVI Page—210-214.

'Lal Pari and Kevada Pari'

४. Bengali Folklore—'A legend from Dinajpur'-Damant G. H. ন্তুজা: 'The Indian Antiquary' vol. I Page –115-120.

पान, मोतीनां फळ अने जेना पर नाचता मोर फळ खातां हतां-एवा अद्भुत वृक्षने जोयुं ने तरत ज ते आंघळो बनी गयो. फरीथी तेने स्वप्नुं आब्युं के ज्यारे ए खरेखर आ वृक्षने जोशे त्यारे तेनी ह्रष्ट पाछी आवशे.

प्रथम सुहाना वे पुत्रो अद्भुत वृक्षनी शोधमां चाली नीकळचा. तेमनी साथे दुहानो पुत्र पण नकीथी जोडायो. रसोईया तरीके मोटा माईओए तेने पोतानी साथे राख्यो.

रस्तामां आ लंगडो नानो भाई नागना भयमांथी पक्षीना बच्चाने छोडावे छे ते वखते पक्षी पोताना बच्चाने कहे छे 'आ अद्भुत बृक्ष, जो राजकुमार नीचेना कृवामां ऊतरे तो मळी शके.' ज्यारे दुहाना पुत्रे आ वात सांमळी त्यारे तेणे तेना भाईओने कृवामां ऊतरवा कहुं. तेओए ना पाडी. दुहानो पुत्र पोते ऊतरवा तैयार थयो अने जणाव्युं 'हुं दोरडुं हलाडुं नहि त्यां सुधी तमारे बीजे क्यांय अबुं नहि अने ज्यारे हलाबुं त्यारे दोरडुं उपर देवी लई भने कादजो' एम कही कम्मरे दोरडुं बांधी कृवामां नीचे ऊतर्यो.

नीचे ऊतर्या बाद ते राक्षसना नगरमां जाय छे. त्यां एक स्त्रीनी मददथी ते राक्षसना मरणनो भेद जाणी खूब खतरनाक एवा साहस वडे राक्षसने मारी नाखे छे. वच्चे ते एक नाग अने वाघने खाडामांथी बचावे छे त्यारे तेओ संकट समये मदद करवानं वचन आपे छे.

केटलाक दिवस बाद तेने पोताना पितानी वात याद आवता पेली स्त्रीने तेणे अद्भुत वृक्षनी वात कही, त्यारे पेली स्त्रीए 'हवे अहीं नथी रहेवु' एम जणावी कमंडळमां दस दिवसनो खोराक भरी लीघो अने घरमांथी अदर-बहार जाव-आव करी मोडुं करवा लागी. आथी कोधे भराई दुहाना पुत्रे मोटी छरी लई तेने भारी के तरत ज ते पेला अद्भुत वृक्षमां फेरवाई गई. दुहानो पुत्र स्त्रीने मारी नाखवा बदल पस्तावा लाग्यो. एवामां तेना हाथमांथी छरी पडी गई के तरत ज वृक्षमांथी पाछी पेली स्त्री थई गई. आम नाना राजकुमारे छरी वडे स्त्रीमांथी वृक्ष अने वृक्षमांथी पाछी स्त्री बनाववानो मर्म जाणी लीधो.

त्यारबाद कूबामां द्वार पासे आबी दोरडुं हलाब्युं के मेाटा भाईओए बन्नेने बहार काढचा. आबी सुन्दर कन्या जोई तेओए नाना भाईने मारी, आ कन्या हाथ करवानो ईरादी कर्यो. रस्तामां बहाणमां तेओए दुहाना पुत्रने बांधीने दिरवामां नाख्या. पेळी स्त्री के जे आ बधुं जोती हती तेणे पेळुं खाराकवाळुं कमंडळ दिरयामां फेंक्युं, जेना वडे दुहानो पुत्र तरवा लाग्यो अने खोराक खाई जीववा लाग्यो.

आ बाजु पेला वे भाईओ राजा पासे आव्या अने पोते वृक्ष न गोती शक्या पण आ कन्या गोती छे एम जणाव्युं. आ बाजु दुहाना पुत्रे पेला नाग अने वाघनी मददथी घरे आवी, राजाने, स्त्रीने छरी मारी स्वप्न मुजवना अद्भुत वृक्षना दर्शन कराव्यां अने आंख पाछी लावी आपी पण बीजा भाईओ ईर्ष्यामां कहेवा लाग्या के 'आ स्त्री तो अमने मळी छे अने नाना भाईए पडावी लीधी छे.' त्यारे राजाए जे। शक्ति होय तो वृक्षमांथी पाछी स्त्री बनाववानुं जणाब्युं, पण तेओ तेम करी न शक्या. अंते नाना राज्कुमारे छरी जमीन पर पाडीने तरत वृक्षमांथी पाछ स्त्री करी. राजाए तेने राज्य आप्युं अने पेला दुष्ट राजकुमारेने देशनिकाल कर्या.

आ। ज प्रकारनी पण प्रसंगालेखननी दृष्टिए भिन्न एवी एक बीजी कथामां पण मोटा भाईओनी नाना भाई प्रत्येनी ईर्ष्यां छतां अंते नाना भाईना विजयनी कथा कहेवाई छे. टूंकमां कथा आम छे:

'The wonderful tree'

१. 'Folklore in Western India'—Putalibai D. H. Wadia. जुओ: 'The Indian Antiquary'-vol. XIX. Page-152-155

एक राजाने सात पुत्री हतो. तेमांथी पहेली पुत्रीने एक दीकरो अने बीजीने वे दीकरा हता. राजाने बीजी पुत्रीनां वे पुत्रे। प्रत्ये अथाग प्रेम हतो, ज्यारे पहेली पुत्रीना एक दीकरा प्रत्ये ते वेदरकार हतो.

एक दिवस राजाए स्वप्नमां आकाश सुधी पहोंचतां एक वृक्षने जोयुं, जेनुं थड चांदीनुं, डाळीओ सोनानी, पांदडां माणेकनां अने फळ मोतीनां हतां. राजाए ए बृक्ष मेळववानी हट पकडी. एउले प्रथम तेना वे मानीता मोटा पौत्रो पुष्कळ पैसा लई ऊपड्या, पण खराब मित्रोबी सोवतमां बीजे गाम जई पैसा उडाडवा लाग्या.

त्यारबाद आ राजानो नानो पोत्र आ अद्भुत द्वक्षनी शोषमां नीकळ्यो. रस्ते चालतां तेणे एक जंगलमां लाल नागने महात कर्यो. लाल नाग मरण पाम्यो के तरत ज तेनी सामें सांबोल पहोळो रस्तो जोयो. तेना पर थई ते चालतो चालतो एक बागमां आव्यो. त्यांनी परीए आ नाना राजकुमारने जायो के तरत ज रिताना मृत्युनी खातरी थतां ते रडवा मांडी त्यारे नाना राजकुमार तेने सान्तवन आप्युं के पोताना बचाव माटे तेणें तेना पिताने मार्था छे. पण ते तेना बाळ पण वांका नहि करे, पण एक शरत के ते तेने चांदीना थडवाळुं, सोनानी डाळवाळुं, माणे हनां पादडांवाळुं अने मोतीनां फलवाळुं वृक्ष बतावे. परीए तेने कह्युं के, 'हुं रजतपरी छुं, मारे सुवर्णपरी, माणेकपरी अने मोतीपरी एम त्रण बहेनो छे. तुं अमने चारे-यने एक साथे करी दे तो तुं तरत ज ते वृक्ष जोई शकीश.' एक पछी एक ते नानो राजकुमार दरेक परी पासे गयो. छेळी मोतीपरीए तेने एक तल्वार आणी अने कछुं के ते तल्वारने अमुक रीते राखशे एटछे ते चारेय बहेनोने साथे करी शकशे अने ते चारेय बहेनो ए अद्भुत वृक्षमां फेरवाई जशे. नाना राजकुमारे ते प्रमाणे कर्युं एटछे तरत ज अद्भुत वृक्ष खडुं थई गयुं. अने पाछुं तेणे ते वृक्षने चार परीमां फेरवी नाख्युं अने तेने साथे लईने पोताने वतन पाछो फर्यो.

रस्ते चालतां ते एक शहेग्मां आन्यो, ज्यां तेना मोटा भाईओ [पित्राई भाईओ ] मोज-मजा करता हता. त्यां जई नाना भाईए निखालसम्प्रे पोतानो बधा वृत्तान्त कह्यो आ सांभळीने ए बे मोटा भाईओंनी दानत बगडो अने नाना भाईना कांट्रो काढवाना पेंतरो रच्या.

त्यांथी बधा साथे पोताने नगर जवा नीकळ्या. रस्तामां वे भाईओए कपट करी नाना भाईने कूवामां घकेली दीधो अने जादुई तलवारनो कबजो करी लीधो. चार परीओ तेमनो प्रपंच समजी गई, पण लाचार बनी कंई पण बोल्या धगर तेमनो साथे चालो नीकळी, पण रस्तामां तेओ पोताना वाळ तोडी वेरती गई.

बन्ने भाईओ घरे आव्या अने चार परीमांथी वृक्ष बनाववा जादुई तलवार आम तेम बधी रीते फेरववा मांडी पण तेनो उपयोग न जाणवार्थ। ते परीमांथी वृक्ष न करी शक्या. राजा तेमनी वर्तणुक पर खूब गुस्से थई गयो.

आ बाजु नानो भाई कोई रस्ते जता अजाण्या मुसाफरनी सहायथी क्रुवामांथी बहार नीकळी परीओना तूटेला वाळना पगेरे पगेरे घरे आव्यो अने राजाने बधी बात करी, जादुई तलबार लाववा कह्युं. पछी तलबार अमुक रीते राखी के तरत ज पेली चार परीमांथी पेलुं अद्भुत बृक्ष खडुं थई गयुं. राजा खूब हुपे पाम्यो अने नाना पौत्रने गादीनो वारस बनावी, वे मोटा पौत्रोने **फांसीनी सजा करी.** 

आ उररांत 'सोनेरी पोपट,' ए नामनी कथामां पण आ ज प्रकारनां कथा घटकनो उपयोग थयेलो छे. ट्रंकमां कथा आ प्रमाणे छेः ।

एक राजाने सात पुत्रो हता. आ राजा पश्चीओनो खूब शोखीन हतो. एक दिवस स्त्रप्नमां तैने कोई भूते आवीने तरता टापु उपर रहेता परीओनी राणी पासेना सोनेरी पोपटनी वात करी. बीजे दिवसे सवारे राजाए साते पुत्रोने बोलावी जणाव्युं के जे कोई सोनेरी पोपट लावी आपशे तैने पोते, नानामोठाना भेंद वगर अर्धुं राज आपशे.

आ सांभळी प्रथम छ मोटाभाईओए नानाभाईने बोलावी एक दूघना पात्रमां वच्चे तीर ऊमुं राखी तेने छापरे मूकी राखवा जणाव्युं अने कहां के 'अमे सोनेरी पंखीनी शोधमां जईए छीए, जो संकटमां घेराई जइशुं तो आ दूघ लाल रंगमां फेरवाई जशे. तुं जो बनी शके तो मददे आवजे, अने जो अमे अमारा काममां फतेह मेळवशुं तो तीर नीचुं नमी जशे.' आम कही छ भोटा भाईओ चाली नीकळचा.

चालतां चालतां रात्रे एक पथिकाश्रममां तेओ आवी पहोंच्या, पण त्यां लूंटाराओ वेशप-लटो करी तेमने लटी गया. आथी छए राजकुमारो पासे पैसा न रहेतां पथिकाश्रमना मालिकनुं देखुं चूकववा तेओने तेना गुलाम थईने रहेखुं पड्युं

आ बाजु दूघ लाल रंगमां फेरवाई जतां नानो भाई तरत ज मोटा भाईओनो शोधमां अने सोनेरी पोपटनी आशामां घरेथी नीकळी पडचो.

रस्तामां नाना भाईए एक बृद्ध संन्यासीने प्रसन्न करी सोनेरी पंखी माग्युं. त्यारे संन्यासीए तेने कहुं, 'अहीं एक सरोवरमां सवारे परीओ कांठे पोतानी पांखो उतारी नहावा पडे त्यारे तेमांथी एक जोडी पांख लई, परीओनी पाछल पाछल ऊडी तेमना देशमां जई, बपोरे त्यां ज्यारे परीओ आराम करती होय त्यारे तुं सोनेरी पंखी लई झडपथी पाछो आवतो रहेजे.'

संन्यासीना कहेवा मुजब नानाभाईए कर्युं अने सोनेरी पंखी लई आब्यो. अने जे परीनी पांख लई पोते ऊडयो हतो तेने पोते ते पांख क्यांकथी शोधी लाब्यो छे एम बताबीने पाछी आपी. तेथी खुश थईने ते परीए तेने सोनेरी बंसरी आपी अने कह्युं, 'संकटसमये मध्यरात्रिए वांसळी बजावतां हुं तारी मददे आवीश.' एम कही परी गई?.

आम सोनेरी पोपट अने बंसरी लई ज्यां मोटाभाई गुलाम तरीके रहेता हता त्यां आवी तेओ जाणे निह ते रीते तेमनुं देवुं चूक्वी मुक्त कर्या. छए भाईओ मुक्त थई पोताने वतन जवा नीकळ्या. त्यां रस्तामां नानाभाइने सुवर्णना पोपट साथे जोतां तेनी फतेह उपर तेओ ईब्याथी बळी ऊठ्या अने सोनेरो पंखी खूंटी नानाभाईने मारी नाखवानो मनसूबो घड्यो.

१. पात्र अने प्रसंगालेखनमां कंइक विगतफेर साथे आवा ज प्रकारना कथानक माटे जुओ: 'सोनारूपानुं झाड', 'गुजरात तथा काठियावाड देशनी वारता – भ'ग २ जो, पृष्टांक १२३ – १२९, आवृति २ जो

<sup>2. &#</sup>x27;The Golden Parrot'-'The Orient Pearls' (Indian Folklore)-pages-29-36 .by Tagore Shovona devi

आवा दुष्ट निश्चय पछी तेओ ज्यारे एक कूवा प्रासे आव्या त्यारे त्यां कपट करी, नानाभाईने कूवामां घकेली दई, सोनेरी पोपट लई घर तरफ चाल्या.

आ बाजु मध्यरात्रिए नाना भाईए सोनेरी बंसरी बजावीने परीने बोलावी. तेनी मदद्यी क्वामांथी बहार नीकळी, तेनी पांखो पर बेसी, राजा-राणी पासे पहेलां आवी पहोंच्यो अने कहा के, 'मोटा भाईओ सोनेरी पोपट लावशे'.

थोडा समयमां मोटा भाईओ सोनेरी पोपट रुईने आन्या अने अडधुं राज्य माग्युं, पण स्यां नाना माईने सुखरूप घरे जोई दिग्मूढ बनी गया. त्यारबाद नाना भाईए माता-पिताने सर्व वृत्तान्त जणान्यो. आ जाणी राजाए छए मोटा माईओने देशनिकाल करी नानानी साथे राज्य मोगन्युं.

बीजी एक बंगाळनी लोककथामां पण, साहसिक कार्य करवामां पराजित मोटा भाईओ ते कार्यमां विजयी नीवडेला नाना भाई प्रत्ये इर्ग्यामां सळगता दगो करी मारी नाखवानो प्रयत्न करे छे. कथानुं शीर्षक छे-सुवर्णनुं पक्षी. कथासार आ प्रमाणे छे:

एक राजाना उद्यानमां एक वृक्षना सुवर्णनां पाननी घणी चोकी करवा छतां चोरी यती हती तथी राजाए पोताना वण पुत्रोने चोकी करवानुं कह्यं. प्रथम के कुमारो चोर पकडी न शक्या. सौथी नाना पुत्रे रातना जागरण करी उद्याननो पहेरो भरवा मांडयो. ते समये जोयुं तो एक सोनेरी पंखी त्यां आवी सुवर्णनुं एक पान तोडी छई जतुं हतुं. नाना राजपुत्रे ताकीने तीर मार्युं. परन्तु ते पंखी मरी न जतां मात्र तेनुं सुवर्णनुं पींछु नीचे पड्युं. नाना पुत्रे पींछु छई राजाने बतान्युं अने वधी वात जणावी. राजाए त्रणे राजकुमारोने सुवर्णनुं पक्षी लाववानी आजा करी.

प्रथम मोटो राजकुमार सुवर्णपंखीनी शोधमां नीकळथो. रस्तामां एक शियाळे शीखामण आपी के, 'आगळ जतां जे वे धर्मशाळा आवे तेमांथी जेमां नाचगान थतां होय तेवी धर्मशाळामां न जतां जे अंधारी धर्मशाळा होय तेमां रहेजे.' आगळ जतां राजकुमारे ते प्रमाणे वे धर्मशाळा जोई, पण शियाळनुं कह्युं अवगणी नाचगान थतां हतां ते धर्मशाळामां उतर्यों अने मुख बनी सुवर्णपंखीनी वात वीसरी गयो. वचला राजकुमारे पण ते ज प्रमाणे कर्यु.

आखरे सौथी नानो पुत्र सुवर्णपंखीनी शोधमां नीकळ्यो. तेणे शियालनी शिखामण मानी अने अंघारी धर्मशाळामां उतर्यो. एने बीजे दिवसे सवारमां शियाळ मळयुं. त्यार बाद शियाळनी मददथी ए नाना पुत्रे अनेक पराक्रमो बतावी सुवर्णपंखी, सुवर्णसुंदरी, अने सुवर्णअश्व प्राप्त कर्यो.

ते लईने नानो भाई नगर पासेनी ए ज वे घर्मशाळा पासे आव्यो. त्यां फांसीनी शिक्षा पामेला पोताना बन्ने भाईओने तेणे हजार सुवर्ण-महोरो आपी छोडाव्या. त्रणे भाईओ स्वदेश आवया नीकळ्या.

रस्तामां सुवर्णसुंदरीनुं रूप जोई मोटो कुंवर तेना पर मोहित थई गयो. तेने प्राप्त करवा बन्ने मोटा भाईओए षड्यंत्र रच्युं अने ते मुजब ज्यारे एक नदी पासे आवी त्यारे तेओए नाना

- र. पात्र अने प्रसंगालेखननी दृष्टिए विगतफेर साथे आवा प्रकारनुं कथानक आ ज पुस्तक मां 'The Sand river, The Stone Boat and The Monkey Ferryman' ए नामनी कथामां निरूपायुं छे. पृ. ७२-७८
- २. 'भारत लोककथा'-भाग-८मो पृ. १६४-१६७ संपा० गुजराती प्रेस

भाईने घक्को मारोने नदीमां नाखी दीघो. नानो भाई अगाध जळमां तणावा लाग्यो. पण शियाळ-नी मददथी ते कीनारे आन्यो, त्यांथी जलदी ते पितानी पासे आन्यों अने बधी वात जणावी. त्यां तो बंने मोटा कुंवरो आन्या अने तेमणे 'सुवर्णपक्षी पोते लान्या छे' एम जाहेर कर्युं. पण सुवर्णसुन्दरीए तेमनुं पोकळ फोडी नाख्युं. नाना कुंवरने पनि तरीके पसंद कर्यो. राजाए मोटा बन्ने राजकुमारने जन्मटीपनी सजा करी.

नाना भाईनी सुख—सगवडोनी सामे पोतानी गरीनी जोई अदेखाईथी तंग आवी मोटा भाईओ तेने खतम करी नाखवाना केवा दावपेच खेले छे अने तेनी सामे बुद्धिचातुर्यथी नानो भाई उलटां तेमने ज फसावी केवी रिद्धिसिद्धि मेळवे छे तेनुं एक बंगाळी कथानक, आ कथाघटकनुं सुंदर उदाहरण छे. कथानो टूंकसार जोईए: र

सात भाईओना एक कुटुंबमां छ परणेला हता अने तेओ जुदा रहेता हता. सौथी नानो खूडेह [Khoodeh] कुंबारो हतो. ते तेना पिताने खूब लाडको होई तेमणे गायोना घण अने पैसाना वारसामांथी मोटो भाग खूडेहने आप्यो हतो. तेथी छए भाईओ इष्यांथी बळता हता अने खूडेहने घिषकारता हता. मोटा भाईओने तो खाबाना फांफां हता, ज्यारे नानो भाई खुडेह सानुक्ळताथी रहेतो हतो. अदेखाईथी तंग थई तेओए एक दिवस खूडेहने खतम करी नाखवानो विचार कर्यो अने एक योजना करी. ए योजना मुजब तेओए खूडेहने लग्न करवा कह्यं। भाईओना पेटनो दगा जाणतो होवा छतां खूडेहे हा पाडी. थोडा दिवस पछी एक सवारे खूडेहना मोटा भाईओए तेने खोटेखोटुं जणाव्युं के कन्या तैयार छे, आज रागे ज लग्न पताववाना छे अने तेथी सांजे ज तेणीना पिताना घर तरफ जवानुं छे. भाईओए गोठवेलां छटकाने जाणतो होवा छतां खूडेहे तेमनी साथे प्रयाण कर्युं.

रस्तामां नदी पार करवानी आवी त्यारे खुडेहे तेना भाईओनी पछी नदी पार करवानी योजना करी अने छटकी गयो. अने रस्तामांथी एक गोवाळने परणवानो होभ बतावी, पोताना कपडां पहेरावी, पोतानी जग्याए मोकह्यो अने तेनी गायो हई घरे पाछो गयो. आ बाजु ज्यारे गोवाळ वरराजाना बेशे त्यां आज्यो त्यारे सांजना अंधारामां तेना भाईओए तेने खुडेह धारी नदीनी अध्वय धकेली दीधो.

ज्यारे भाईओ पाछा आन्या त्यारे खुडेहने सांजनुं खाणुं रांघतो जोई नवाई पाम्या, पण घीरज गुमान्या वगर कहुं 'भाई खुडेह ! नावडीने मोटो घक्को लागतां तुं बहार फेंकाई गयो. अमे बचाववा घणी महेनत करी. पण कांइ निह, चाल आपणे मेटीए. पण आ गायो तने क्यांथी मळी ?' खुडेहे कहां, 'भगवाने आपी.'

खूडेहना भाईओए पोतानी निष्फळताथी अने खूडेहनी समृद्धिथी बळी ऊठी, रागे खूडेह-ना घरने बाळी नाखवानो दुष्ट विचार कथी. गमे ते रीते खूडेहने खबर पडी गई. ते

- श. आवा प्रकारनं कथानक कंईक पात्रना नाम अने आलेखनना थोडा फेरफार साथे फेन्च लोककथामां पण कहेवायुं छे. जुओ 'The Golden Bird', 'Tales from the French Folklore of Missouri'—by Josheph Medard Carriere. Page-60
- 2. 'Khoodeh the Youngest Born', 'Bengali Fairy Tales' Pages 17-22. by F.B. Bradley-Birt.

रात्रे ते बहार बीजे क्यांय सूइ रह्यो. योजना मुजब मोटा माईओए खूडेहना घरने बाळी नाख्युं. अने ज्यां त्यां कोलसाना ढगला कर्या. खूडेहे आवी पोतानी एक गाय उपर राख अने कोलसानी गुण मूकी वेचवाना बहाने बजारमां जई युक्तिपूर्वक एक रूपिया भरेली गुण साथे अदला-बदली करी घरे आब्यो अने सवारे भाईओनी बहुओ सांमले तेम रूपिया भरेली गुण खाली करी रूपिया गणता लाग्यो. पछी एक भाभीने त्यांथी त्राजवा मंगावी तेनी नीचे एक रूपियो चोंटाडी दीधो, अने पछी पाळुं मोकल्युं. आ जोई मोटा भाईओ विचारमां पढी गया के नानो आटलुं बधुं धन लाग्यो क्यांथी के जेने तोलवा माटे त्राजवानी जरूर पढी ? मोटा भाईओए तेनी पासे जईने आ बाबत विषे पूछ्युं, त्यारे खूडेहें कह्युं, 'मारुं घर बळी गयुं अने खूब कोलसा—राख मळचा. थोडे दूर एक गाममां कोलसानी खूब किंमत उपजे छे लोको एक कोलसानी गुणने बदले एक गुणी भरीने रूपिया आपे छे. हुं तमने पण तमारा घर बाळी मूकवानी सलाह आपुं लुं अने पछी तेना कोलसा लई बाजुना गाममां जई बूम मारजो के, 'कोलसायी मरेली गुणीनी किंमत तेवडी ज मोटी गुणी भरीने रूपिया छे!'

त्यारबाद ते प्रमाणे मोटा भाईओए कर्युं अने पोतानां घर बाळी मार्या अने गुणो भरोने कोलसा लीघा अने बाजुना गाममां जई खूडेहना कहेवा मुजब बूमो मारवी शरू करी. गामना लोकोए तेमने गांडा गणी, मार मारीने स्यांधी तगडी मूक्या. तेओ निराधार थई गया अने झूंपडा बांधी मजुर तरीके खेतरमां काम करवा लाग्या. खूडेह समृद्धिवान थयो, एक सुंदर कन्या परण्यो अने सट्टामां घणुं कमायो. त्यार बाद भाईओने साथे—बोलाव्या अने एक पण पाई लीधा वगर धंघामां भागीदार बनाव्या अने सुखेथी रहेवा लाग्या.

आम, आ कथामां नानो भाई, ईंष्याळु मोटा भाईओना अपकारनी बदला उपकारथी वाळे छे. आ ज प्रमाणे पेक्युनो जोआओ [Pequeno Joao] कथामां पण ते पोताना दगा- बाब भाईओना अपकारने बदले ऊंचो दरज्जो अपावी तेमनुं मान वधारे छे. कथानी टूंकी रूप-रेखा आ प्रमाणे छे:'

एक राजाने त्रण दीकरा हता. तेमांथी पहेला बे अभण अने मूर्ख हता. ज्यारे त्रीजो पेक्युनो जोआओ विनक्षण गुणवाळो हतो. राजाए जोयुं के प्रथम बे पुत्रो नकामा छे त्यारे तेणे ते पुत्रोने अमुक रकम आपी पोतपोतानुं फोडी लेवाजण व्युं. आथी त्रीजो सौथी नानो छुत्र पेक्युनो राजाना वारस तरीके रह्यो, परन्तु पेक्युनोए राजानुं कह्युं मान्युं नहि अने पोताना बे भाईओ साथे चाली नीकळ्यो.

रस्तामां तेओ एक राक्षसना घरमां रातवासो रह्या त्यारे राक्षसनी, सर्वनो कोळियो करी खाई जवानी युक्तिने पेक्युनोए बुध्धि-चातुर्यथी निष्फळ बनावी अने तेनी छ लाल टोपीओ लईने भाईओ साथे बीजा शहेरमां आन्यो. ते शहेरना राजाए आ त्रणेयने उत्तम पुरुषो धारीने सौथी मोटाने कारमारी, बीजाने अध्यक्ष अने पेक्युनोने भरवाड तरीके नोकरीमां राख्या.

रोज सवारे पेक्युनो घेटां चारवा जतो, त्यां वांसळी बजावतो. वांसळीना सूरथी ए राजानी कुंबरी आकर्षाइ. तेने पेक्युनोनी टोपी आकर्षक लागी. तेणे पोताना प्रणयनो पेक्युनो पासे एकरार करी छ टोपीओ मेळवी अने पिताने कहीने पेक्युनोने बढती अपावी.

ং. 'Karne da Pequeno Joao' (Folklore in Salsette) G.F. D'penha গুओ: 'Indian Antiquary' Vol. XVI P. 327-332. पोताना नाना भाईने राजा द्वारा बढती मळेली जोईने तेना वे मोटा भाईओ इर्ध्याना मार्या बळा जवा लाग्या अने तेने खतम करी नाखवानी योजना घडवा लाग्या.

एक दिवस राजा मांदो पड्या त्यारे मोटा भाईओए नाना भाईने राक्षस पासे मोकली मारी नाखवाना हेतुथी राजाने कहां, 'जो तमे राक्षसना सोनेरी पोपटनुं दर्शन करशो तो साजा थशो' अने राजाने ते माटे नाना भाईने मोकलवानी सलाह आपी. नानो भाई बहादुरीपूर्व क राक्षसने त्यां गयो अने चतुराइपूर्व क पोपट लई आव्यो. ते रीते मोटा भाईओए राक्षसने त्यांथी मारी नाखवा माटे नाना भाईने राक्षसनी घोडी, रत्ननी वींटी अने कांबळी लई आव्या जणाव्युं. ते नानो भाई लई आव्यो. अंते मोटा भाईओए छेल्लो दाव अजमाव्यो. राक्षसने पकडी लावी, राजा जो तेनी उपर सवारी करे तो साजो थाय-एम कही राक्षसने पकडवा नाना भाईने मोकल्यो. स्यारे पण नानो माई युक्तिपुर्व क राक्षसने पकडी लाव्यो. राजाए तेना उपर सवारी करी अने दैव-योगे साजो थई गयो, तेथी खुश थई राजाए पोतानी राजकु वरी परणावी, राजपाट आप्युं. पेक्युनोए पोताना मोटा भाईओ प्रत्ये वेरनो बदलो न लेतां तेओने ऊंचा दरज्जे स्थापी मान वधार्युं.

आम अहीं इर्धानी आगमां सळगता मोटा भाईओ नाना भाईने अनेकवार मरणोन्मुख स्थळे घकेले छे. पण हमेशां त्यांथी विजयी थईने ज नानो भाई पाछो आवी सुख-वैभवनो अधिकारी बने छे.

रायपुर जिल्लानी एक लोककथामां पण अा कथाघटकनो सुंदर रीते उपयोग थयो छे. टूंकमां कथा आ प्रमाणे छे:

एक राजाना खेतरने भूंडो खूब नुकसान करता होई पोताना सात दीकरामांथी एक एकने तेनी चोकी करवा माटे रात्रे मोकल्या. परन्तु प्रथम मोटा छ तो रात्रे ऊंघो गया अने खेतरनी चोकी न करी शक्या सौथी नाना पुत्रे रात्रे खेतरमां चई पोतानी आंगळीनुं टेरबुं कापी तेना पर मोठुं भमरान्यु, जेथी तेनो पीडामां रात्रे ऊंघ न आवी जाय. आम ते रात्रे जागतो हतो त्यारे मध्यरात्रोए सात घोडाआ अना खावा आव्या त्यारे नाना पुत्रे तेमांथी एक घोडाने पकडी पाड्यो. पकडायेला ते अध्वे संकट-समये मदद करवानुं चवन आच्युं त्यारे नाना पुत्रे तेने छोडी मूक्यो.

बीजो सवारे खेतरने सहीसलामत जोई राजा खुश थई गयो. राजाए बाकीना मोटा पुत्रोने देशनिकाल कर्या. परन्तु नानो पुत्र तो मोटा भाईओनी पाछळ ज गयो. ज्यारे मोटा भाईओए तेने जोया त्यारे तेने खूब मार मार्यो अने तेने ख़लास करी नाखत्रा मांड्या. ते बखते सौथी मोटा पुत्रे तेने गुलाम तरीके राखवा कह्यं.

केटलाक समय पछी तेओ बीजा राजाना गाममां आज्या. राजाने एक कुंवारी कन्या हती. राजाए ढंडेरो पीटाब्यो के, 'जे कोइ पोताना घोडा वडे राजमहेल कुदावी जरो तेने पोतानी दीकरी परणावरो.' सोथी नाना पुत्रे भगवानना घोडानी मदस्थी राजमहेल कुदाव्यो अने राज-कुंवरी परण्यो. आ सांभळी तेना भाईओए योजना करो के मोठा शब्दोथी लल्लवानीने नाना भाईने मारी नाखवो अने राजकुंवरीने पडावी लेवी.

₹ The Youngest Son. (A God-dhuka Lohar Story from Raipur Districit) From 'Foktales of Mahakoshal' by Verrier Elwin

आम विचार करी घर तरफ जतां रस्तामां नाना भाईने मोटा भाई ओए भेगा मळी कूत्रामां धकेळी दीधो अने राजकुं वरीने उठावी गया. आ बाजु पेळो नानो भाई भगवानना घोडानी मद-दथी बहार नीकळी तेना पर बेली पोताना घरे आव्यो अने पिताने सव वात बाहेर करी. ड्यारे छ ये भाईओ घरे पहोंच्या त्यारे तेओए नाना भाईने जोयो. राजाए छएने मारी नाख्या. नाना पुत्रे राजकुं वरी साथे सुख योगवतां राज कर्युं.

पोते महेनत मज्र्री करे अने नानो भाई लहेर उडावे ए जोई मोटा भाईओ नाना भाई प्रत्ये इर्ध्याळ बनी तेने मारी नाखवानी क्रूर योजना घडे तेवुं कथान क कारिकोट [Karikot] तरफ प्रचलित छे. ते कथा ट्रंकमां आ प्रमाणे छे :

एक वृद्धने सात पुत्रो हता. जेमांथी सीथी नानो कुंवारो हतो. ज्यारे वृद्ध मरण पाम्यो त्यारे छये भाईओ मेगा रहेवा मांड्या. छए भाईओ खूब महेनतमजुरी करवा लाग्या अने नानो भाई रखडवामां अने रमवामां वखत गाळतो. पोताना नानो भाईने आम बेफिकरो बोई छए जणे खेतरमां ऊंडो खाडो खोदी दाटी मारवानी योजना करी. ए राते ते भोए नाना भाईने आवती कालथी रांडवुं लईने खेतरमां आववानुं जणाव्युं अने नहीं आवे तो मारी नाखवानी धमकी आपी.

बीजे दिवसे नानो भाई खेतरमां आवे ते पहेलां सीथी मोटा भाईए पोतानी कुहाडी खाडामां नाखी. स्यारे नानो भाई आव्यो त्यारे मोटा भाईए खाडामांथी कुहाडी काढी आपवाना बहाने तेने खाडामां उतारी उपरथी कादव अने पथ्थर मारीने दाटी दीघो अने रडता रडता घरे गया.

आ बाजु नानो माई खाडामां उंदरे करेला दर मारफते जंगलमां नीकळी आव्यो अने पाछो घरे गयो. त्यां मोटा माईओ तेनी उत्तरिक्षया करता हता. नाना भाईने जोई तेओ भय पामी गया. नाना भाईए पोतानो सर्व बृत्तान्त कह्यो अने जणाव्युं के पोते हवे तेओनी साथे निह रहे. आम कही ते जंगलमां गयो अने छाणनुं लींपेलु घर पोताना माटे बनाव्युं. थोडा वखत पछी महापुरवे एक माछीकन्या तेनी पासे मोकलावी. तेने ते परण्यो अने बन्ने सुखेथी छाणना घरमां रहेवा लाग्या.

शयपुर जिल्लामां बीजी एक आ ज कथाघटकने निरूपती कथा प्रचलित छे. जेमां नाना भाई प्रत्ये माता-पिताने खूब पक्षपाती प्रेम होवाथी मोटा भाईओ इष्यीमां प्रज्वळतां, तेनो कांटो दूर करवानी योजना करे छे. पण अंते नानो भाई विजेता बनी सुखसमृद्धिनो स्वामी बने छे. टूंकमां कथा आ प्रमाणे छे<sup>ड</sup>:

एक राजाने पांच पुत्रोमांथी सौथी नाना पुत्र उपर खूब प्रेम होई तेने मनमानी उत्तम चीजो अपावतो हतो. ते जोई चारे य मोटा भाईओए अदेखाइथी बळता होई, नाना भाईने जंगलमां लई जई मारी नाखवानो निर्णय कर्यो.

एक दिवसे शिकारना बहाने मोटा भाईओए नाना भाईने जंगलमां लई जईने रखडतो मूकी दीधो अने घरे आबी राजाने जणाव्युं के 'वाघे तेने फाडी खाबो छे' आ बाजु नानो भाई रख-इतो रखडतो मधुवनमां आव्यो अने सुरिभ गायनी साथे रहेवा लाग्यो. एक वखत एक वृद्ध ब्राह्मण

<sup>2. &#</sup>x27;The Iron Cart' (A God-dhuka Lohar Story from Raipur District) From 'Folktales of Mahakoshal,' by Verrier Elwin

तेने उपाडी जवा लाग्यो त्यारे सुरिम गायोए तेने छोडाववा प्राण आपी दीघा. परंतु त्यांथी छटकी नानो भाई चमरगुरुनी सेवा करवा लाग्यो. वरदानमां नाना भाईए अमृतजळ मांगी सुरिम गायोने जीवित करी अने पाछो तेमनी साथे रहेवा लाग्यो.

एक दिवस एक राजा, पोतानी नानी पुत्रीने योग्य आ ज वर छे—एम जाणी नाना भाईने रथमां बेसाडी पोताने महेल लई आब्यो. जेवी तेणे राजानी कुंवरी जोई तेवी ज तेने गमी गई. तेनी साथे लग्न करीने ते सुखेथी रहेवा लाग्यो.

मंडल जिल्लानी एक कथामां एक नानो भाई निर्धन होवा छतां समृद्धिनी स्वप्नील श्लंखना करे छे. ते जोई मोटा भाईओ तेने धुरकारी मृत्युना मुखमां धकेले छे. पण तेमांथी ते बची पोताना पुरुषार्थ वडे शंखेली सनृद्धि मेळवीने ज जंपे छे. कथा टू कमां आ प्रमाणे छे :

पांच गरीब भाईओ हता अने लाकडां कापी वेचवानो घंघो करता हता. एक दिवस लाकडां वेचवा जता हता त्यां रस्तामां एक झरणाने कांठे आराम लेवा बेठा अने गण्यां मारवा मांडचा. एवामां नाना माईए कह्युं, 'हुं अहीं वच्चे हाथीघोडानां रहेठाणो सहितनो एक राजमहेल बांधीश अने मारा नोकरो पण अहीं रहेरों' आ सांभळी मोटा भाईओ क्रोधे भराइ बराडचा के, 'तारा जेवुं भूख्युं प्राणी वळी राजमहेल हुं बांधवानुं?' लाकडा वेची आवती वखते मोटा भाईओए पोंते तरस्या थया छे एवुं बहानुं बतावी पाणी लेवा माटे नाना भाईने क्वे मोकल्यो अने तेमां धक्को मारी नाखी दीघो.

बीजे दिवसे एक ह्जामे तेने कृवामांथी बहार काद्यो अने तेने राजा पासे लई गयो. राजाए उनचार करी तेने जीवाङ्यो अने चपरासी तरीके राख्यो. त्यां तेने हजाम साथे दोस्ती थई. एक दिवस हजाम अने नानो भाई वेपार करवा देशान्तरे जत्रा तैयार थया. रस्तामां एक निर्जन गाममां आव्या. त्यांना बघां रहेवासीओने एक राक्षस भन्नी गयो हतो अने त्यांनी दोळतनुं रक्षण तेनो दोकरो करतो हतो. नाना भाईए अने हजामे आखा गाममां रखडी पुष्कळ घन एकटुं कर्युं. नानो भाई तो ते घन लई पोताना घोडा उपर चाली नीकळ्यो अने हजाम अति लोभथी बीजी उत्तम चीजो लेवा रोकायो. एटलामां राक्षस त्यां आव्यों अने हजामने खाई गयो आ बाजु आ दोलत वडे नाना भाईए पेला झरणा पासे एक राजमहेल बंधाव्यो ....

आ उपरांत फ्रेन्च लोककथामां पण आ कथाघटकनुं निरूपण करतां कथानको प्राप्त थाय छे. 'सोनेरी वाळवाळी सुंदरी' नामनी कथामां नाना भाईनी विजयकथा साथे मोटा भाईओनी ईर्ष्यानुं वृत्तान्त आम कहेवायु छे<sup>र</sup>ः

एक आंघळा राजाए पोताना त्रण दीकरामांथी जे कोई सोनेरी वाळवाळी सुंदरीना फुवारा-मांथी जादुई जळ लावी आपी पोतानी आंखो सारी करशे तेने पोतानुं राज्य आपवानुं वचन आप्युं. प्रथम वे मोटा भाईओ जादुई जळनी शोधमां नीकळचा. पण रस्तामां पथिकाश्रमां रोकाया ज्यां तेमणे पोतानुं बधुं घत गुमान्युं अने त्यांनी मालकणना गुलाम बनी रह्या.

- R. The Palace by the Stream (A Baiga story from Pandpur Mandal District) From 'Folktales of Mahakoshal' By Verrier Elwin.
- 7. 'The Fair Lady of the Golden Locks' From: 'Tales from the French Folklore of Missouri' P. 167. by Medard Carriere.

## भूमिका

ज्यारे तेओ पाछा न फर्या त्यारे पीटर नामनो सौथी नानो राजंकुमार जादुई जळनी शोधमां नीकळ्यो. ते पण आ पथिकाश्रममां आज्यो. अने त्यांनी मालकणनी बधी मिलकत जीती लीधी. ते मालकणे तेने जणाच्युं, 'सोनेरी वाळवाळी सुंदरीना किल्लामां बपोरे ज्यारे बधां ऊंघता होय त्यारे त्यांना फुवारामांथी जादुई जळ लई लेबुं'. बीजे दिबसे नाना भाईए किल्लामां जई त्यांनी सुंदरी साथे क्रीडा करी अने फुवारामांथी जादुई जळ लई पाछा फरतां तेणे पोताना बे भाईआने मुक्त कर्या.

रस्तामां सौथी मोटा भाईए दगाथी जादुई जळने चोरी लई तेनी जग्याए खारुं पाणी मूकी दीधुं. ज्यारे पीटरे तेना पिताने ते जळ जादुई गणी आप्युं अने आंखे छांट्यु त्यारे तेने दगा-बाज गणी देहांतदंडनी सजा करी. परंतु माराए तेने छोडी मूक्यो. पीटरे एक राजाने त्यां नाकरी स्वीकारी.

एवामां सोनेरी बाळवाळी सुंदरीए पुत्रने जन्म आप्या. तेणे पीटरना पिताने, जे जादुई जळ लई गयो हतो ते राजकुंत्ररने मोकलवा जणाव्युं. ज्यारे सौथी मोटो पुत्र त्यां गयो अने सुंदरीना प्रश्नोना जवाब न आपी शक्यो त्यारे सुंदरीए फरोथी राजाने साची राजकुंत्रर मोकलवा जणाव्युं. त्यारबाद राजाने जादुई जळनी अदलाबदलीनो वातनी खबर पडी. अंते पोटरने शोधी काद्यो अने सोनेरी वाळवाळी सुंदरी साथे ते परण्यो.

बीजी एक फ्रेन्च लोककथामां नाना भाईना विजयथी मोटा भाईने इन्ध्री आवता ते तेने मारी नाखे छे. त्यारबाद चमत्कारिक रीते मृत्यु बाद वांसळीरूपे जन्मेला नाना भाई मोटा भाईनुं पोकळ बहार पांडे छे. कथा ट्रंकमां आ प्रमाणे छे :

एक राजानी राजकुं वरीए एक गुलाबनुं फूल माग्युं. राजा ते लाव्यो. परंतु रस्तामां ते फूल ऊडी गयुं. राजाए पोताना त्रण दीकराओने बोलावीने कह्युं, 'जे कोई आ गुलाबनुं फूल लावी आपरो तेने हुं राजगादी आपीश.'

सीथी नानो कुंवर आ फूल शोधीने लावतो होय छे त्यां रस्तामां तेने तेनो मोटो माई मळे छे. मोटो भाई तेने रस्तामां ज मारी नांखे छे अने वचला भाईने आ वात गुप्त राखवाना सोगंद आपे छे. आ वे दगाखोर मोटा भाईओ त्यारबाद, नाना भाईनुं शब जमीनमां दाटो दे छे. परंतु तेम करतां अजाण रीते नाना भाईना शबनी टचली आंगळी बहार रही जाय छे.

एक दिवस एक भरवाडे रस्तामां कंइक चळकतुं जोयुं. ते लेतां जाण्युं के ते एक वांसळी हती. तेणे जेवी वांसळी वगाडी के अवाज आव्यो, 'वगाड वगाड. तें गुलाबना फूल माटे मने नथी मार्यो'. भरवाड आ वांसळी राजदरबारमां लई गयो. त्यां राजा राणी वचेट दीकरो-ए बघए ते वगाडी. आगळनो माफक ज तेमांथी अवाज नीकळचो. मोटा माईए ज्यारे ते वगाडी के तस्त ज तेमांना अवाजे तेने दोषित ठराव्यो. राजाए तेने फांसी आपी.

आ रीते मात्र गुजराती कथासाहित्यमां ज नहि परन्तु इतरप्रान्तिय अने ते उपरांत विदेशी कथासाहित्यमां पण आ कथाघटकनी लोकप्रियता अने व्यापकता जोई शकाय छे.

'The Rose of Peppermette' From 'Tales from the French
 fo lklore of Missouri'. P.240. Joseph Medard Carriere

५. आळ-भ्रष्टाचारनं आळ

एक व्यक्ति द्वारा अन्य व्यक्ति उपर जुठो दोषारोप मूक्तवानां कथाविंव के कथावंटकनी निर्देश आपणने भारतीय परंपराना साहित्य उपरांत विदेशी साहित्यमां पण अनेक ठेकाणे जोवा मळे छे. आ प्रकारनां कथाघटक परत्वे डॉ. हरिवल्लभ भायाणीए तेमना 'शोध अने स्वाध्यां मळे छे. आ प्रकारनां कथाघटक परत्वे डॉ. हरिवल्लभ भायाणीए तेमना 'शोध अने स्वाध्यां मं नामनां पुस्तकमां 'लोककथामां आळ" ए शर्षक नीचे एक माहितीसभर संशोधनात्मक लेख आपेलो छे. त्यां तेमणे प्रपंचना एक प्रकार तरीके आळने शंका अने वहेम करतां जुदुं दर्शावी आळनो लोककथामां कई कई रीते उपयोग थयो छे तेनुं विश्लेषण कर्युं छे. प्रथम तेमणे आळना उद्भव परत्वे विचार करतां दर्शाव्यं छे के 'आळ कां तो अकस्मात-योगानुयोगथी आवे, कां तो कोईथी हेतुपूर्वक उद्भवित होय. प्रागर्वाचीन समयमा तेम च निरक्षर समाजीमां ने लोककथानी सृष्टिमां आळ मोटे भागे उद्भावित च गणवानुं रहे. कथाओंनां निरूपणनी जुदी जुदी कोटिओ अनुसार तेना उद्भावक तरीके मनुष्य के अलैकिक सस्व पण होय. कोई वार मनुष्यं इतर सत्तांथी प्रेराया वगर स्वतंत्रपणे आळनो उद्भावक होय, तो क्यांक मनुष्यं के अलैकिक सत्त्व नसीच के कमें जेवा व्यापक बळथी प्रेराईने आ प्रकारने कार्यं करतुं निरूपायुं होय छे. समूहमां लोकोथी मूकायेलुं आळ ते लोकापवाद'.

आम आळनो उद्भव अने तेना उद्भावकनो विचार कर्या पछी तेओए तेना कारणोमां मनुष्यकृत स्वतंत्रपणे मूकायेला आळमां, स्वभावगत दुष्टता, निष्कारण शत्रुता, टीखळवृत्ति, पर-पोडनवृत्ति, वेर. अदेखाई, स्वार्थ ने प्रभुत्ववृत्ति इ.ने कारणभूत गणाव्या छे. आळ चोरीनुं, चारित्य-भ्रष्टतानुं, मनुष्यवधनुं के विद्रोहनुं एम अनेक प्रकारनुं होय छे.

आ आळ ज्यारे सत्य हकीकत आपमेळे योगानुयोगथी बहार आवे त्यारे ऊतरी जाय छे. अथवा तो आळनो भोग बनेली व्यक्तिनी निजी आगवी शक्ति द्वारा के अलैकिक बळनी सहा-यताथी पण ऊतरी जाय छे. आ उपरांत केटलीक वखत अंतरनो ढंख असह्य बनता आळ मूक-नार पोते ज कार्यसिद्धिने अंते आळ ऊतारवानी गोठवण करे छे

आळ परत्वेना उपर्युक्त विश्लेषण पछी तेओए इण्टान्त केखे संयोगोधी उद्भावित आळमां स्यमंतक मणि अने मेतार्थ मुनिना इण्टान्त आप्यां छे, तो अढोिकिक व्यक्ति के शक्तिथी उद्भावित आळमां गुणश्री, नळ-दमयंती अने पद्मश्रीना कथानकोनुं संक्षेपमां आलेखन करेडं छे. लोक के व्यक्तिथी उद्भावित आळमां सीताना लोकापवादनुं इष्टान्त टांक्युं छे, तो व्यभिचारनी मागणी नकारनार पर बलारकारना दाखलाओमां प्राचीन मिसग-साहित्यनी "बे बंधुओनी वार्ता" नो, "इलिभड" मांनो बेलेरोफोननी कथानो, "बाईबल" मांना जोसेफ अने पोटिफरना प्रसंगनो, "चुल्ल पदुम" के "कुणाल" जातक जेवी जातककथ ओनो, रामायणनी द्रूर्पणखानी वातनो, कथासिरत्सागरनी केटलीक कथाओनो, 'इंसावली" नी वार्तानो तथा "पुरन भगत"नी दंतकथानो उल्लेख करेलो छे.

१. Stirb Thompson कृत 'Motif Index of Folk-Literature'-ए ग्रंथमां 'False Accusation-ए कथाघटकना, के -२१०थी-२१९९ सुधी कमांकोमां, आ कथाघटकनो क्रम के२१११ दर्शावायो छे अने तेनुं नामाभिधान 'Potiphar's wife' तरीके थयुं छे. 'Standard Dictionary of Folklore'-ए पुस्तकमां तेना पृ. ८८२ उपर तेनी विगतो प्राप्त थाय छे.

२. पृष्ठांक २७० थी २८६

आ उपरांत शत्रुने वहेमनो भोग बनावी तेने सीघो करवाना संबंधमां आळना प्रसंगरूपे तेमणे "पउमसिरिचरिउ"मांनी धनश्रीनी कथानुं, जैन वार्तासाहित्यनी "नटपुत्र रोहक"नी वार्तानुं, पूर्णभद्रना "पंचाख्यान"मां अने पश्चिम भारतीय "पंचतंत्र"मां आवतो दंतिल श्रेष्ठि अने गोरंभनी वातनुं तथा सोळमो सदीना अंतमां रचायेला बल्लाल-कृत "भोजप्रबंध"मांनी एक दंतकथानुं द्रंकमां निरूपण करेलुं छे.

अदेखाईथी प्रेरित आळमां तेमणे ''महाउम्मग्ग जातक'' तेम ज मोज-कालिदासनी दंतकथा-ओनो उल्लेख करेलो छे. आम डॉ. भायाणीए आळना कथाघटकनी पृथक्करणशील सोदाहरण चर्चा करेली छे.

आ उपरांत डॉ. जनक द्वेए तेमना अप्रकट महानिबंधमां पण आळना कथाघटकनो विचार कर्यो छे. दोषारोपना घणां कारणोमांथी वेरवृत्ति पण एक कारणरूप छे एम जणावी, खोडुं आळ मूकवानां अनेक कथानकोनुं तेमणे ट्कमां निरूपण करेखं छे. तथा साथे साथे तुलनात्मक अभ्यास पण करेखो छे. आळना कथाघटक परत्वे तेमणे जे जे कथानकोनुं निरूपण करेखं छे ते नीचे प्रमाणे छे :

१ भर्तृहरिनी कथा २. बंधनमोक्षजातक ३. एना जेवुं ज एक बीजी जातककथानुं कथानक ४. "विषिट्यलाकापुरुषचरित्र" तथा "वस्तुदेवहिंडी" अंतर्गत प्रयुग्ननी कथा ५. इजिसना वार्तासाहित्यमांनी "अनपू अने बाटानी कथा" ६. "कथासरित्सागर" कथापीठ लंबक नतरंग ५ मांनी "वरहचि-चितारा"नी कथा ७. पंडित ग्रुभशीलगणिकृत "विकमचरित्रम्" प्रकरण ३७मांथी "शारदानंदगुवनी कथा" ८. "कथासरित्सागर" कथापीठ लंबक नतरंग ५ मांनी "आदित्यवर्मा राजा अने शिववर्मा मंत्रीनी कथा" ९. ग्रुभशीलगणिकृत "विकमचरित्रम्"ना प्रकरण ५६मांनी शतबुद्धि, सहस्त्रबुद्धि, लक्षबुद्धि अने कोटिबुद्धि ए चार वफादार सेवकोनी वात १०. "पंचनंत्रन्न"मांनी नोळियानी वात ११. "इष्टांतशतक"मांना १००मा दृष्टांतनी कथा १२. पंडित ग्रुभशीलगणि कृत "विकमचरित्रम्"द्वितीय खंडमांनी, प्रकरण ५७मांनी एक जुगारीनी कथा १३. पूरन भगत अथवा चौरंगीनाथनी कथा. १४. "जहांदारशा अने हुरमनुरझांहा"नी कथा १५. अमरसेन वयरसेननी कथा १६. हंसराज वच्छराजनी कथा १७. वीरमाण उदयमाणनी कथा १८. "होथल पदमणा"नो कथा १९ "कथासरित्सागर" — "शक्तित्यशा लंबक" — तरंग ७मांनी "यशाधर अने लक्ष्मीधर"नी कथा—आम अहीं डॉ. दवेए जुदां जुदां कथानकोमां प्रतीत थतुं आळनुं कथावटक केवी रोते आलेखायुं छे तेनो सारो एवो ख्याल आप्यो छे."

- \*. "Shamal's Sinhasanbatrisī-Preparation of an Authentic Edition of Tales Nos. 28,29,30,31 from the Original Manuscripts together with a Critical Study of these Tales."
- R. 'The Jatak' vol. I Pages 120 Ed. Cowel E.B.
- ?. 'The Jatak' vol. IV Page 117, Ed. Cowel E.B.
- ४. ''पंचतंत्र'' संपादक डॉ. भोगीलाल सांडेसरा पृ. ३३५-३३७
- ५. आ कथानको जे जे पुस्तकोमांथी लीघां छे तेनी सविस्तर माहिती ते महानिबंधमां पृ. ६७२ थी ६९२ सुधीमां, ते ते कथाना उल्लेख प्रसंगे नीचे फूटनोटमां आपेली छे.

आपणी प्रद्युम्नकथामां प्रद्युम्ननी पालकमाता कनकमाडा प्रद्युम्ननी बीरता, रूप अने गुणबी आकर्षाई तेनी पासे अणछाजती मागणी करे छे. प्रद्युम्न, माता तरफनो पोतानो पूज्यमाव प्रकट करी चाल्यो जाय छे. त्यारे पोतानी कामवासना पूर्ण न थवाथी रोषे मरायेजी कनकमाछा तेना पर चारिज्यभ्रष्टतानुं आळ मूके छे.

आगळ जोयुं ए प्रमाणे आळ अनेक प्रकारनां होय छे. तेमांथी अहीं मात्र चारिन्यप्रष्टताना आळ विषे वधु विचार करेलो छे. चारिन्य-प्रष्टतानुं आ आळ स्त्री कोई परपुरुष उपर,
पोताना ओरमान के पालकपुत्र उपर के दियर उपर मूके छे. स्त्री उपयुक्त कोई पण व्यक्ति
उपर तेनी वीरता, रूप, गुण के यौवनथी आकर्षाई आसक्त थाय छे. अने त्यारबाद ते व्यक्तिनी
पासे पोतानी इच्छाने तृष्त करवा ते शारीरिक हावभाव के शृंगारिक चेष्टाओ वडे नम्न बनी
मागणी करे छे. आवी मागणी करती स्त्री साथेना पोताना संबंधनो ख्याल करी तथा नीति
अने फरजना भान साथे पेली व्यक्ति ए स्त्रीनी नठारी मांगणीनो ज्यारे अस्वीकार करे छे
त्यारे पोतानी इच्छा वर न आववाना कारणे वेरथी उदिप्त थई तथा पोताना आ कुकर्म उपर
ढांकपिछेडो करवाना हेतुथी पोताना शरीरनी विकृति करी, पेली व्यक्ति उपर, पोताना पर बलात्कार
करवानुं आळ ओढाडे छे. कदिक पोताने अणगमती व्यक्तिने दूर करवा माटे पण तेना पर
चारिन्य-प्रष्टतानुं आळ ओढाडवामां आवे छे.

परंतु घणी वखत स्त्री, जे व्यक्ति उपर आळ मूके छे ते व्यक्तिने तेणे पहेलां क्यारेय जोइ नथी होती. परंतु अकस्माते ए व्यक्ति रात्रीना अंघकारमां के एकांतमां पोतानी तरफ आवती होय के पोताना शयननी बाजुमां ऊभी होय त्यारे स्त्री ए व्यक्ति पोतानुं चारित्र्य भ्रष्ट करवा ज आवती होय छे अथवा ऊभी होय छे एम समजी तेना पर जाण्या बूझ्या वगर ज, चारित्र्य-भ्रष्टतानुं आळ मूके छे.

अंते आ आळ, साची वस्तुपरिस्थितिनी जाणथी, आळ मूकायेली व्यक्तिनी वीरताथी के तेना शीलमाहात्म्यथी प्रसन्न थयेली कोई अलैकिक शक्ति वडे छत्री जाय छे. कदिक चारित्य-भ्रष्टताना आळथी कोइ व्यक्ति देहांतदंड भोगवे छे अने तेना मरण पछी साची वात बहार आवती होय छे. कदिक आळ मूकायेली व्यक्ति आळ ऊतरी जतां लोकोमां पूजाय छे अने आळ मूकनार व्यक्ति, पोतानी पोल पकडाइ जवाथी लोकोमां निंदापात्र थाय छे. अने तेनी बीके घणी-वार ते गळे फांसो खाई जीवननो अंत लावती होय छे.

आम चारिन्यभ्रष्टताना आळ विषे आटलो प्रास्तविक विचार कर्या पछी केटलांक कथानको द्वारा ते कथाघटकने समजवानो प्रयत्न करीए. डॉ॰ भायाणी तथा डॉ. दवेए लीघेलां कथानकोनी नोंघ आगळ आपी छे. तेमणे निरूपेलां कथानकोनो अहीं उपयोग नथी कर्यो. ते उपरांत बीजां केटलांक नवा कथानकोनुं अहीं निरूपण करेलुं छे.

बौद्धसाहित्यमां राजा अशोकनुं कथानक आवे छे. तेमां तेना पुत्र कुणालनी करण कथा आलेखवामां आवी छे. कुणाल नामनां पक्षी जेवी सुंदर आंखो घरावतो आ अशोक-पुत्र कुणाल राजसभानी खटपटोथी हमेशां दूर ज रहेती होय छे. राजानी राणीओमांनी एक तिष्यरिक्षता आ सुंदर अने युवान कुणाल पत्ये प्रेममां सळगती होय छे. ते राणीए कुणाल पासे आवी अध्यदित मागणी करी, परंतु तेनी विनंति के घाकघमकी बधुं नकामुं गयुं. वेरनी आग संतोषवा तेणे एक कावतुं रच्युं. ते मुजब तेणे कुणालने दूरना प्रान्तमां मोकल्यो अने पछी चोरीकृपीथी

राजानी मुद्रावाळो एक आज्ञापत्र लखी त्यां कुणालनी आंखो फोडी नाखवानो हुकम लखी मोकलाब्यो. ते प्रमाणे तेनी बन्ने आंखा फोडी नाखवामां आवी.

त्यारबाद ते भिखारीनी हालतमां तेनी पत्नी साथे अशोकनी नगरीमां आन्यो अने त्यां राजमहेलनी सामे वीणा बजाववा लाग्यो. राजाए अवाज सांभळता तेने बोळाव्यो. साची वस्तुनी जाण थई. राजाए गुस्सामां राणीने मारी नाखवानो हुकम कर्यो, पण क्षमावंत कुणाले विनंतिथी तेने जीवितदान आप्युं अने कहूयुं के "ए मारी माता प्रत्ये मने हजी पण अपार लागणी छे. जा आ शब्दो साचा होय तो मारी आंख पाछी जेवी हती तेवी थई जाओ." अने तरत ज तेनी आंखो पहेलांना जेवी सुंदर थई गई. "

आ कथामां अपरमानी अघटित मागणी अने पुत्र द्वारा अनादरनी वात आवे छे. जो के आमां उघाडा आळनी वात नथो आवती, परंतु अनादरथी उद्दित थयेला वेरनी वसुला-तनी वात आवे छे.

जैनसाहित्यमां सुदर्शन श्रेष्ठिनो कथामां भ्रष्टाचारना आळनी वात आवे छे. शीलनो प्रभाव अने तेना माहारम्य अर्थे जैन कथासाहित्यमां आ कथा खुव प्रचलित छे. तेनी कथा टूंकमां आ प्रमाणे छे :-

चंपापुरीमां ऋषभदास नामना श्रेष्टिने अहदासी नामनी स्त्री हती. तेने सुदर्शन नामनो पुत्र थयो. ते सुदर्शन युवावस्था पाम्यो त्यारे तेने श्रेष्ठिए मनोरमा नामनी कन्या परणावी सुदर्शनने राजाना पुरोहित किपलनी साथ गाढ मैत्री हती. एक वखत किपलना सुख्यी सुदर्शननी प्रसंशा सीमळी तेनी स्त्री किपला तेना पर अनुरक्त थई.

एक दिवस एकांतनो वखत जोईने किपला सुदर्शनने घेर गई अने तेने कह्यं, 'आजे तमारा मित्रने शरीरे ठीक नथी. माटे तेनी खबर लेवा माटे घरे चालो, ते बोलावे छे'. एम कही सुदर्शनने पोताने घरे तेडी गई. त्यां गुप्त गृहमां तेने लई जई बारणा बंध करी, लज्जा स्यागीने तेणे भोगनी प्रार्थना करो. त्यारे सुदर्शन पोते नपुंसक छे एम कही त्यांथी बहार नीकळी पोताने घेर गयो.

एकदा राजा, पुरोहित अने सुदर्शनने साथे लई उद्यानमां क्रीडा करवा गयो. ते वखते वाहनमां बेनोने ते राजानी अभया नामनी राणी किपलाने साथे लई उद्यानमां आवी. तेवामां मार्गमां किपलाए एक स्त्रीने छ पुत्रो सहित मार्गे चाली जती जोईने, 'आ स्त्री कोण छे ?' एम अभया राणीने पूछ्युं. त्यारे ते बोली के, 'आ तो सुदर्शन रोठनी स्त्री छे. अने आ छ तेना पुत्रो छे.' ते सांभळोने किपलाए कह्युं के, 'रोठ तो नपुंसक छे. तेने पुत्रो क्यांथी ?' एम कही तेणे पोतानो सर्व वृत्तान्त राणीने जणाव्यो. राणीए ते सांभळी कह्युं के "तुं तो मूर्व छे, ते रोठे तने कपट करीने छेतरी छे." किपला बोली, ''हे देवी! तमारी चतुराइ तो हुं त्यारे ज जाणुं के ज्यारे तमे एक पण वखत ते सुदर्शन रोठ साथे क्रीडा करो." राणीए वचन अंगी-कार कर्युं.

र. अपरमाता पोताना दीकरानी आंखो पोताना पित पासे ज फोडी नखावे छे. ए प्रकारनें कथानक फ्रेन्च लोककथामां पण छे. जुओ : 'Tales from the French Folklore of Missouri-by Joseph Medard Carriere-[कथा नं० ४२ ए० २०८]

२. 'Buddha and the Gospel of Buddhism.' -आनंद कुमार स्वामी पृ० ३१४-३१५

३. ''उपदेशप्रासाद''—कर्ता विजयलक्ष्मीसूरि, गु० भाषांतर—श्री जैनधर्म प्रचारक सभा, भावनगर, [३ जी आवृत्ति] स्तंभ ४थो, न्याख्यान ५३मुं, पृ. २५६

एकदा राजा इत्यदि सर्वे क्रीडा करवा उद्यानमां गया हता. महेलमां अभया राणी एकल हती. ते वलते पंडिता नामनी पोतानी धात्रीने सुदर्शन शेठने तेडी लाववानुं कह्युं. ते धात्री सुदर्शनने घर गई तो एक घरमां सुदर्शनने कायोरसों रहेलां जायां. तेने धात्रीए उपाडी रथमां नाखी राणीना महेलमां लइ गई. एकांतमां राणोए हावभावपूर्वक कार्मावकार देलाडी तेनी घणी प्रार्थना करी तो पण सुदर्शननुं मन क्षोभ न पाम्युं. छेवटे राणी थाकी गई त्यारे तेणीए पोकार करी सिपाईओने बोलावीने "आ सुदर्शन मारा पर बलात्कार करवा अहीं आव्यो छे"—एम कह्युं. सिपाईओ सुदर्शनने पकडी राजा पासे लई गया. राजाए साची वात पूछी, त्यारे तेणे राणीनी दयाने लीधे कंई पण कह्युं नहि. त्यारे तेने दुषित धारी शूळीए चढाववाना हुकम कर्यो. राजाना सेवकोए तेने शूळी पर चढाव्यो. तो ते शूळी, शीलना प्रभावथी सुवर्णनुं सिंहासन थई गई. सिपाईओए तेनो वध करवा कंठ, मस्तक, कान तथा हाथपग उपर खडूग वडे प्रहारो कर्यां. तो अनुक्रमे त्यां हार, मुकुट, कुंडल अने कडां थई गया. ते आश्चर्यकारक बनाव सिपाई-ओए राजाने कह्यो. राजाए ज्यारे आमहपूर्वक साची वात जणाववा कह्युं त्यारे तेणे राणीने अभयवचन अपावी बधी वात करी. आ वृत्तान्त जाणी अभयाराणी गळे फांसो खाई मृत्यु पामी. पंडिता पाटलिपुत्रमां कोई वेश्याने त्यां जती रही. अनुक्रमे शेठ वैराग्य पामी दी आ हर्द्य पामी. पंडिता पाटलिपुत्रमां कोई वेश्याने त्यां जती रही. अनुक्रमे शेठ वैराग्य पामी दी आ हर्द्य मोक्षे गया.

आम अहीं हेतुपूर्वकना आळनी वात आबे छे, पण आळमां फसायेली व्यक्ति अलैकिक शक्तिथी बची जाय छे अने आळ ओढाडनार पोते मृत्यु पामे छे. वळी आळमां फसायेली व्यक्ति युक्तिपूर्वक छूटी पण जाय छे. आळना कथाघटकतुं आ एक सुंदर उदाहरण छे.

आ उपरांत लाखाफूलाणीनी कथामां पण तेनी विमाता राणी घण तेना पर मोहित थाय हे. परन्त अनादर पामता ते तेना पर भ्रष्टाचारनुं आळ मूके छे. कथा टूंकमां आ प्रमाणे छे:

केलाकोट नामनी वस्तीमां फूल नामे राजा हतो. ते गाममां सुकाळ वर्ततो होवाथी त्यांना श्वाणियाने अनाजना धंधामां खोट जती हती. तेथी मंत्र—युक्तिथी तेमणे दुकाळ वर्तांथों. फूलने काने वात आवता तेणे वनमां जई मन्त्रयुक्ति खेरवी नाखी अने त्यां मुशळधार वरसाद अरसवो शरू थई गयो. ते दरमियान फूल पाछो फर्यो. तेना साथीओ वधा विवश थई गया अने पाछळ पडी गया. वरसादमां रखडतो कूटाता फूल अचेत थई गयो. तेनो घोडो तेने खेरडी गाममां लई पहोंच्यो. त्यां जमला आहीरनी मोटी कुंवारो पुत्रीए, तेना पितानी संमतिथी फूलनी साथे ए ज अवस्थामां लग्ननां फेरा फरीने वे पहर सुधा फूलने छातीसाथे भीडाबी चेतन आप्युं. ज्यारे अडघी रात्रे फूल जाग्यो त्यारे तेने वधा वात जणावो. फूल खुश थयो अने होष रात्री रसरंगमां वितावी. ए ज रात्रीए कन्याने गर्भ रहो।

प्रभात थतां फूल अश्वारूढ थई, कन्याने कोई कलंकित न कहे ते माटे मुद्रिका निशानी रूपे आपी अने एक लखाण करी आपो पछी केलाकोट चाल्यो गयो. अने पटराणो घणना प्रेमभावमां लीन थई आ आहीर कन्याने भूली गयो.

आ बाजु अविधि पूर्ण थतां पेली कन्याना पेटथी लाखानो जन्म थयो. ते आठ-दश वर्षनो थयो त्यारे पिता विशे पृष्ठतां तेनी माताए बधो वृत्तान्त जणावा, लाखाना कहेवाथी तेने फूले आपेली मुद्रिका अने लखाण आपी केलाकोट मोकल्यो.

'१. 'मुहणोत नैणवीरी ख्यात' खंड-२ संपा. ही. गौ. ओझा, अनु॰ रामनारायण दुग्गड, प्रकरण १७, पृ. २२९. केलाकोटमां पिताने बधी बस्तुओ बतावी. फूले लाखाने हर्षपूर्वक पोतानी पासे राख्या. फूलने बीजो कोई पुत्र हतो निह. फूल प्रायः केलाकोटमां रहेतो निह अने लाखो केलाकोटमां काम चलावतो. ते रूप गुणनो मंडार हतो. एनुं रूप जोईने राणी घणना मनोभावमां विकार थया. एकवार राणीए तेने पोताना महेलमां बोलावी पोतानी दुष्ट वासना प्रकट करी. लाखाए तेना प्रत्ये माताभाव दर्शावी तेम न करवानी वात साफ जणावी दीधी. वेरथी प्रज्वलतो घण राणीए एक सांदणी-सवार मारफत एक पत्र फूलनो पासे माकलाव्यो. काइ आवश्यक काम होय तो ज सांदणीसवार आवतो. तेथी फूले तेने आवतो जोई आ अडधो दूहो पूछ्या:

''कच्छ करीरै छंडियो कु देसडो कु सुत्त।''

तेना उत्तरमां कासिदे कह्युं :

"लाखो फूल महलियाँ खिण देवर खिण पुत्त।"

—घणे आ समाचार कहेवडाव्या छे. सांभळतानी साथे फूले कोघथो सरदाराने लाखाने देशनिकालनो हुकम कर्यो. ज्यारे आ वातनी लाखाने खबर पडी त्यारे तेणे कह्युं के "मारा पितानी बृद्धावस्थाए तमे मने काढी मूको छो, पण याद राखजो के जे कोई आवीने मने फूल मरी गया छे ए शब्द कहेशे तेनी जीभ कापी काढीश." आम कही पाताना मामाने त्यां ते जतो रह्यो. फूलनुं मृत्यु थतां घण राणी तेनी साथे बळी मरी. आ समाचार लाखाने जणाववा कोई तैयार न थयुं. परंतु डाही डोमनीए जईने युक्तिपूर्वक लाखाना ज मोढेथी कहेवडाब्युं के, "शुं फूल मरी गया ?" आम पोताना मुखेथी ज ए शब्दों सांभळता ते पातानी जीभ कापो नाखवा तैयार थया, पण समजावटथी सोनानी जीभ सात वार कापी अने पछी ते केलाकोटनी राजगादीए बेठो.

आम आ कथामां विमाता द्वारा आळ ओढाडाय छे, परन्तु ते आळ उत्तर्यांनी वात अहीं आवती नथी.

शामळ भट्टनी "सिंहासनबत्रीशी"मांनी पचीशमी "जोगणोनी वार्ता"मां अपरमानी पुत्र प्रत्येनी कामवासनानी वात आवे छे. तेनो सार नीचे प्रमाणे छे":

उज्जैणोमां एक घेलो देखातो युवान आवी चढ्यो अने अणबोहयो तंबोळीनी दुकाने रहेवा लाग्यो. विक्रमनी सभामां ए घेलानी पेर काढवानी होड थई अने राजाए तेनी पासे जई तेना चिह्न ओळखी ते बत्रीश्र छक्षणो होवानुं कह्यं. पछी तेने पोताना महेलमां लावी पेरे पेरे तेनी पार पामी लीघो. तेणे विक्रमने कह्यं, "रतनपुरीनो हुं राजकुमार छु. मारा पिता, विदर्भना राजानी चढाइ आवता राज मूकी नासी गया. मारी अपरमाना महेलमां एकदा मारो दड़ो गेडीथी उछाळता जई पड्यो. ते लेबा हुं त्यां गयो एटले मारा यौवनथी आकर्षाइ तेणे मने पोतानी साथ रंगे रमवा कह्यं. में ना कही एटले मारे माथे अष्टाचारनो आरोप मूकी, मारा पिताने ए प्रमाणेनो पत्र पाठव्यो. तेमणे कंई पण तपास कर्या विना मारा कटका करवा प्रधानने आज्ञा मोकली. शाणा प्रधाने पोतानी पुत्री द्वारा मार्च शील तपासाव्युं. हुं ए प्रधानपुत्रीनो लपटाव्यो न लपटायो. प्रधानने मारा सचारित्यनी खातरी थइ. आथी तेणे पोतानी पुत्री मारी साथे परणावी. त्यारबाद तेना आवासमां हु गुप्तरीते रहेवा लाग्यो. परंतु सासरे वखारे वखत रहेवुं याग्य न लागतां हु घोडे चडीने त्यांथी भागी नीकळथो इत्यादि .... इत्यादि ....

१ 'सिंहासन बत्रीशी' कर्ता शामळ भट्ट सं. हरिहर पुस्तकालय (असल बत्रीश पुतळीनी मोटी बार्ता)

गेडीथी दडो उछळी अपरमाना घरमां पडतां ते लेवा राजकुमार जाय अने त्यां अपरमा तेने जोई तेना रूप-यौवनथी आकर्षाई अघटित मागणी करे अने अनादर पामतां चारित्र्य-भ्रष्टतानुं आळ मूके ए प्रकारनुं कथाघटक ''हं सावली''नी कथामां पण प्रतीत थाय छे.

आ ज प्रमाणे गेडीथी उछळेलो दडो अपरमा पासे पडतां ते लेवा आवतां ओरमान पुत्र उपर तेनी अपरमा ते अणगमतो होवाथो तेनो कांटो दूर करवानी इच्छाथो एकांतनो लाम छई, शरीरनी विकृति करी, तेना पर व्यभिचारन आळ ओदाडे तेवी एक कथा पश्चिम भारत-मां पण प्रचलित छे. कथानो टूंक सार आ प्रमाणे छे:

एक राजा पोतानी एक राणी अने वे संतानो साथे रहेतो हतो. थोडा दिवस बाद राणी मरण पामी अने राजा बीजी राणी परणी लाग्यो. आ बीजी राणी पहेली राणीनां बाळको प्रत्ये अदेखाई करवा लागी अने राजा तथा पोतानी साथेथी बाळकोने टाळवा लागी. बाळको अपरमानी आ बर्त णूकथी समजीने दूर रहेतां हतां.

एक दिवस राणी बगीचामां महालती हती. तेवामां हीरामोतीथी बडेलो एक दडो तेना पग आगळ आवो पड्यो. आवो अमूल्य दडो पोताना ओरमान पुत्रोनो ज छे एम जाणीने ते ते लेवा बती हती त्यां तेनो ओरमान दीकरें। भींत कूदीने बगीचामां आव्यो अने ज्यां राणी हती त्यांथी दडो लई झडपथी भागवा लाग्यो. पण तेणे पीठ फेरबी के तरत ज राणीए शोर मचावी मूक्यो, छातीफाट च्दन करवा लागी, पोताना वाळ फेंदी नाख्या अने कपडां फाडी नाख्यां. एवामां चोकीदारो त्यां दोडी आव्या अने शोक-संताप माटे पूछतां राणीए तरत बरोषमां ते मोटा ओरमान दीकरा पर बदचलनतुं आळ ओढाइ्युं. चोकीदारो तेने पकडी राजा पासे लई गयाः राणीए राजा पासे मोटा दीकरा विचद्ध काळी कहानी रजू करी. गुस्साथी कंपता राजाए राणीना कह्या मुजब बन्ने राजकुमारोने मारी नाखी तेमनी आंखो हाजर करवानो माराओने हुकम कर्यो.

त्यारबाद मारानी दयाथी बन्ने भाईओ बची जाय छे अने नासी छूटा पडी जाय छे. तेमांथी एक भाई पर हाथणी कळश ढोळे छे, एटले ते बीनवारस गादीनो राजा थाय छे. बीजो रखडतो रहे छे. केटलांक साहसिक पराक्रमो पछी ए पण राजा थाय छे. अंते भाईओनो मेळाप थाय छे. बन्ने मळी पिता पासे आवे छे. ओरमान मा पोतानो गुनो कबूल करे छे. राजा तेने गाम बहार घकेली दे छे. पितापुत्रो आनन्दथी राज्य करे छे.

एक मिणपूरी कथामां उपर्युक्त कथानुं ज कंइक विगतभेदे निरूपण करवामां आन्युं छे. राजानुं नाम हेमांगसेन अने राणीनुं नाम अनंगमंजरी छे. तेना वे पुत्रोनुं नाम तूरी अने वसंत छे. अहीं तेआनी मा मरी जतां जे नवी मा आवे छे ते ओरमान पुत्रो पर आळ न मूकतां नवो प्रपंच खेले छे. मांदगीनो ढोंग करी गुप्त रीते शाणा माणसने बोलावी तेने राजा

- ?. Folktale in Western India No. 11-by Putali H.Wadia. The Indian Antiquary Vol. XVII March 1881, P.75-81
- २. आ ज प्रकारनी कथा 'अमरसेन-वयरसेन'नी वार्तामां, 'हं सराज-वच्छराज'नी वार्तामां अने 'वीरभाण-उदयभाण'नी वार्तामां कंइक विगतमेंदे कहेवाय छे.
- The Two Brothers' by Damant G. H., The Indian Antiquary Vol IV. 1875 p.260.—264

ने एम कहेवानुं शिखवे छे के-आ राणी जो तमारा वै दीकरा तूरी अने बसंतनां लोहीयी स्नान करे तो साजी थाय. राजा ज्यारे शाणा माणसने राणीनी मांदगीनुं कारण पूछे छे त्यारे ते राणीना शीखव्या प्रमाणे ज जणावे छे. राजा पुत्रोने मारी नाखवानो हुकम करे छे. पण माराओनी दयाथी छूटी जाय छे ........हत्यादि.......

आवा ज प्रकारनी एक बीजी कथा काश्मीरनी लोककथामां पण कहेवाई छे. तेनी कथा उपर प्रमाणेनी ज छे. तेमां फेर एटलो ज छे के नवी राणी ए वजीरनी पुत्री होय छे. नवी राणी राजाने पोतानो मानीतो बनावी पछी मंभेरे छे के तेना बे पुत्रो स्वच्छं ने छे अने पोताना तरफ खराब वर्तनवाळा छे. राजा आ सांभळी बाळकोने मारी नाखवानो हुकम करे छे. माराओ ज्यां मारवा जाय छे त्यां देवीना प्रतापथी तेमनी तलवार लाकडानी थई जाय छे. आथी तेओं ते छोकराओने जंगलमां छोडी दे छे इत्यादि.....

काश्मीरनी एक बीजी लोककथामां अपरमा पोताना पुत्र पासे अघटित आचरण करवानुं जणावे छे. त्यारे तेओ ए वातना अनादर करे छे. अपरमा वेरथो प्रज्वलित थई तेमना पर आळ ओढाडी राजा पासे ते वे पुत्रोना हृदयनी मागणी करे छे. वार्तीना टूंक सार आ प्रमाणे छे:

एक राजा अने एक राणीने वे बाळको हतां. थोडा समय पछी राणी मृत्यु पामी अने राजा बीजी वार परणीने नवी राणी लाव्यो. बन्ने बाळकोए एकमेकनी सलाह लई विचार कर्यो के आपणे नवीमाने क इक अभिनंदनातमक भेट घरीए. तेथी ते ओए हीरा—माणेकथी एक थाळ भर्यो अने नवी माना चरणोमां घर्यो. नवी राणीए तेनो स्वीकार कर्यो, ते वखते आ वे राजकुमारो पर तेनी नजर चोंटी. राजकुमारो चाल्या गया. दिवसे दिवसे तेओ नवी राणी माटे एवी जरीते मेट-वस्तुओ लेता आवता हता.

आम करता एक दिवस नवी राणीना मनमां ते ओरमान पुत्रो प्रत्ये कामवासना जाग्रत थई अने तेणे ते पुत्रोने पोतानी साथे अनीति आचरवानुं कह्युं. पण तेओ बोल्या के, 'तमे तो अमारी माता थाओ. तमारी अने अमारी वच्चे आवुं कदापि संभवे नहि.' आम कही तेओ चाल्या गया.

सांजे ज्यारे राजा अंतःपुरमां गयो त्यारे राणीए पोतानुं द्वार वासी राख्युं. राजाए खलडान्युं तो पण तेणे उघाड्युं निह. राजाए कारण पूछ्युं त्यारे ते बोली, 'हुं तमारी परनी छुं के तमारा वे बाळकोनी ?' आम कही तेणे ते बाळको पर व्यभिचारनुं आळ ओढाड्युं. अने कह्युं, ''हबे ज्यां सुधी तमे मने तमारा वे पुत्रोना हृदय काढीने निह आपो त्यां सुधी हुं द्वार खोळवानी नथी.'' राजाए त्यारबाद वजीरने ते बाळकोने मारी नाखवा जणान्युं पण वजीरनी द्याथी तेओ जंगलमां नासी नीकळ्या इत्यादी ..

Folktales of Kashmir by Knowls. J. H. [बीजी आधुत्ति] [पृष्ठांक १६६]
 Hatim Tales. Kashmiri Stories and Songs by Sir Aurel Stain and G.A. Grierson P. 45

आ उपरांत पात्र अने प्रसंगना आलेखनमां कंइक विगतफेर साथे आ ज प्रकारनी बीजी काइमोरी कथा माटे जुओ Folktales of Kashmir by Knowls G.H.ए पुस्तकमांनी पृष्ठाक ४१५ थी ४४१ सुधी आपेली 'The Four Princes'—चार राजकुमारो ए नामनी कथा.

वार्ता आगळ चाले छे. तेमां पण फरीथी राजकुमार उपर भ्रष्टाचारनी शंका आवे छे. ते आ प्रमाणेः

रखडतां रखडतां वे राजकुमारो एक बीजा गाममां पहोंच्या. त्यांना राजाए तेमने उत्तम-कुळना जाणी नोकरीमां राख्या अने पोताना वे वृद्ध अंगरक्षकोनी साथे ते वे जणने पण अंग-रक्षक तरीके नीम्या.

रात्रीना प्रथम प्रहरे मोटो राजकुमार चोकी करवा आव्यो अने ते राजाराणी सूतां हता ते श्यतग्रह आगळ चोकी करवा मांड्यो. रात्रीने वजते एक मोटो सर्प छत ऊपरथी नीचे सरतो तेनी नजरे पड्यो. सरतो सरतो ते राणी पासे पहोंच्यो. तरत ज मोटा राजपुत्रे पोतानी तलकारी ए सर्पना कटका करी नाख्या अने तेने पथारी नीचे मूकी दीधा अने पोतानी तलवारने एक छूगडांमां वीटी लीधी. पछी एक छूगडांथी राणीनुं शारीर छूछवा गयो कारण के तेने थयुं के कदाच सर्पनुं विष राणीनां शरीरने लाग्युं होय. जेवो ते राणीना शरीरने छूछवा जाय छे त्यां राजा जागी जाय छे अने जुए छे तो राणीनी पासे तेनो आ अंगरक्षक ऊभो होय छे. राजा कंइ बोलतो नथी. पण पछी त्यारबाद आवता दरेक अंगरक्षकने ए पूछे छे के, 'जे सेवक पोताना मालिकने दगो दे तेने शुं सजा करवी?' दरेक अंगरक्षक जवाब आपे छे के, 'तेनो शिरच्छेद करवो'. पण ते वखते उतावळे कार्य करवाथी हानि थाय छे ए विषे एक एक दृष्टान्त कहे छे. त्यारबाद मोटा राजपुत्रे आवी रात्रीनो सर्व वृत्तान्त जणाव्यो अने पोतानी निर्दोषता साबित करी.

अहीं मात्र भ्रष्टाचारनी राजाने शंका ज आवे छे पण आ ज प्रकारनुं जे कथानक बंगाळनी लोककथामां खूब प्रचलित छे तेमां तो राणी स्पष्ट रीते भ्रष्टाचारनुं आळ ओढाडे छे. बंगाळनी आ कथा आ प्रमाणे छे: े

एक राजाने त्रण पुत्रों हता. राज्यमां चोरोनो त्रात थयो होवाथी राजाए त्रणे पुत्रोने ते त्रास दूर करवानी आज्ञा आपी. प्रथम बन्ने भाईओ रात्रे फरवा नीकळ्या. पण बन्नेने चोरनी माळ छागी नहीं. त्यारबाद सौथी नानो पुत्र राहेरमां नीकळ्यो. राजमहेलना दरवाजा पासे आवता तेणे राजमहेलमांथी एक स्वरूपवान कन्याने बहार नीसरती जोई एने पूछ्युं के, 'तुं कोण छे? अवे रात्रीने समये क्यां जाय छे?' एटले कन्याए कह्यु के, 'हुं राज्यलक्ष्मी छुं. आज रात्रीए राजानुं मृत्यु थवानुं छे. तेथो अहीं हवे मारो जरूर नथी. हुं बहार चाली जाउं छुं' नाना राजकुमारे तेने राजाने बचाववानुं वचन आपी, राजमहेलमां पाछी वाळी.

राजकुमार त्यांथी सीधो पिताना शयनग्रहमां गयो. त्यां जोयुं तो राजा भर ऊंघमां हतो अने बाजुनी शय्यामां तेनी बीजी युवान राणी सूती हती. त्यां तो राजकुमारे एक मोटा नागने राजाना पळ गनी आजुबाजु फरतो जोयो. राजकुमारे पोतानी तलवारथी ते नागना वे दूकडा कर्या. छतां पण संतोष न थवाथी तेणे ए नागना सेंकडो टूकडा कर्या अने पाननी थाळीमां मूक्या.

परन्तु ज्यारे राजकुमार सर्पना ट्रकड़ा करतो हतो त्यारे ए नागना लोहीनुं विषमय टीपुं तेनी युवान ओरमान माना स्तन उपर जईने पड्युं. राजकुमारे जेम पिताने तेम माताने बचाववानो निश्चय करी पोतानी जीमें सात पडवाळो लूगठानो ट्रकड़ो वींटाळीने तेना वडे तेनी ओरमान माना स्तन पर पडेलुं लोहीनुं टीपुं लूछवा गयो. ज्यां ते नीचो वळीने टीपुं लूछे छे एटलामां तो राणी झागी गई. तरत ब राजकुमार श्वयनगृहमांथी दोडी गयो. नाना राजकुमारनो नाश करवाना

१. Folktales of Bengal by L.B.Day [पुन्डांक १४०-१५१]

हेतुथी राणीए राजाने जगाडीने कहुं के, 'में हमणा तमारा सीथी नाना पुत्रने मारा स्तननो स्पर्ध करता पकद्भयो छे. नक्की ते बददानतथी अहीं घूस्यो हतो.' राजा आ सांभळी स्तब्ध बनी गयो. आ बाजु नानो राजकुमार पोताना भाईओ पासे पाछो आव्यो अने कंड पण बोल्यो नहि

बहेली सवारे मोटा पुत्रने अने त्यारबाद बीजा पुत्रने बोलावीने राजाए पूछ्युं के, 'ए मानवी के जेनी पासेथी में मारी कीर्ति अने जिंदगीनो भरोसो राख्यो होय ते ज दगाबाज नीवडे तो मारे हुं करवुं?' बन्नेए अनुक्रमे 'शिरच्छेदनी शिक्षा ज करवी घटे' एम जणाब्युं. परन्तु उटाहरणो द्वारा समजाब्युं के 'प्रथम एनी खात्री करी लेवी जोइए के ते खरेखर गुनेगार छे के निहें. सौथी नाना पुत्रने ज्यारे बोलाववामां आब्यो त्यारे तेणे पण ए ज रीते जवाब आपीने पछी गई रात्रीनी बधी बात जणावी. राजा खुश थयो अने तेने खूब चाहवा लाग्यो.'

उपर्युक्त बन्ने कथाओमां आलेखननी दृष्टिए बंगाळनी कथा अवश्य कलात्मक रीते कहे-वाई छे. काश्मीरनी कथामां राजा परपुरुष पर राणी प्रत्येना भ्रष्टाचारनी शंका सेवे छे, ज्यारे अहीं बंगाळनी कथामां अपरमाता ओरमान नाना पुत्र उपर पोते ज तेना विनाशार्थे बद्चलननुं आळ मूके छे.

आ उपरांत बंगाळनी एक बीजी 'शीत अने बसंत' ए नामनी कथामां पण अपरमाता तेना ओरमान पुत्र पर व्यभिचारनुं आळ ओढाडे छे ए कथाघटकनो उपयोग थयेलो छे. ते कथा टूंकमां आ प्रमाणे छे :

एंक राजाने सूओ नामें मानीती अने दूओ नामें अणमानीती राणी हती. सूओ दुष्ट हती अने दूओने कष्ट आपती हती. सूओ निःसंतान हती. दूओने शीत अने बसंत नामना वे पुत्रो हता.

एक दिवस बन्ने राणीओ नदीए नहावा गइ, त्यारे सूओए युक्तिपूर्वक दूओने माथे कंइक ताखीने पोपटी बनावी दीधी. घरे आवीने सूओए जाहेर कर्यु के दूओ नदीमां डूबी गई छे.

आ बाजु वखत जतां सूओने त्रण दीकरा अवतर्या. तेओ साव दोरी जेता पातळा हता. ज्यारे शीत अने बसंत भरावदार हता. तेथी तेनी ओरमान मा तेमने खूब दुःख आपती. एक दिवस शीत अने बसंतने बदनाम करवाना हेतुथी तेओ ज्यारे शाळाएथी घरे आव्या त्यारे ओरमान माए पोताना वाळ तोडी खूब शोर मचावी गुस्सामां एक दासीने बोळावी राजा पासे कहे-वडाब्युं के तमारा दीकरा शीत अने बसंते तेमनी ओरमान माने खूब गळीच भाषामां बदनाम करी छे. राजा ज्यारे क्रोधमां भभूकतो आब्यो त्यारे राणीए तेने ते वे पुत्रोना रक्तथी स्नान करवानी इच्छा जणावी. राजाए तेम करवानी आजा आपी. परंतु माराओनी दयाथी तेओ छूटी गया. इत्यादि...

आ उपरांत सिंधनी लोककथामां लाल शाहबाझ नामना एक महापुरुषनी कथा प्रचलित छे. आ 'लाल शाहबाझ'नी कथामां पण भ्रष्टाचारना आळनी वात आवे छे. ते टूंकमां आ प्रमाणे छे:

१. आ ज कथा 'शिक्षा अने शांति' ए शीर्षक नीचे 'म।रत लोककथा' संपादक : ठक्कुर वसनजी, भाग चोथामां पृ. २१८ थी २२८सुघीमां आपेली छे.

<sup>2.</sup> Bengal Fairy Tales by F.B.Bradly-Birt p.153

३: Folktales of Sind and Gujarat (पृष्ठांक७ थी१२) कर्ता-Kincaid C.A

लाल शाहबाझनुं खरुं नाम हझरत सैयद उस्मानशाह मारवाडी हतुं. जीवननी शरूआत-नां वर्षोमां ज तेओ आध्यात्मिक जीवन तरफ वळ्या हता. बार वर्षनी वये, कहेवाय छे के, तेमणे आंधळाने देखतां कर्या, बहेराने सांभळता अने मूंगाने बोलता कर्या.

तेमने त्रण साथीदारो हता. तेमना नाम शेख बहावलदीन, शेख फरीदगंज शंकर अने मखदून जलालुदीन. लाल शाहबाझने आ 'लाल शाहबाझ' नाम एमणे बतावेल चमत्कारना परिणामे मळेलुं हतुं.

रोख जलाल नामना फकीरने पराजय आपीने लाल शाहबाझ तेमना उपयुक्त त्रण साथी-दारो साथे मुक्का अने मदीना गया हता. त्यांथी पाछा फरतां तेओ एक गाममां रातवासो करवा रोकाया ते वखते शेख फरीदगंज साथीदारो माटे बहार पांउ खरीद करवा गया. कमनसीबे पांउ पकाववावाळानी दुष्ट पत्नीने आ युवानने जोतां कामवासना जागृत थई. तेणे ज्यारे अघटित मागणी करी त्यारे शेख फरीदगंजे तेनो अनादर कर्यो. आथी तेणे शेख फरीदगंज उपर भ्रष्टाचारनुं आळ मूक्युं. तरत ज तेने पकडवामां आव्यो. अने तेने देहांतदंडनी सजा थई. ज्यारे लाल-शाहबाझे आ सांभळखुं त्यारे तरत ज पोताना मित्रने छोडाववाना पगलां लीघां. तेमणे बाकीना वे मित्रोमांथी एकने हरण बनावी वघरतंभ तरफ छाडी मूक्यो. लाको घेला थईने आ हरण पकडवा तेनी पाछळ पड्या. तरत ज लाल शाहबाझे तेना बीजा मित्रने सिंह बनावी दोधा. तेने जोई मारा भागी गया. अंते संत बाज पक्षीनुं रूप लई शेख फरीदगंजने उपाडी सलामत स्थळे लई गया. आ चमत्कारथी ते संत 'दशाहबाज' कहेवाया, जेनो सिंधी-भाषामां ''बाज पक्षी'' एवो अर्थ थाय छे.

आम आ कथामां एक पर स्त्री एक संतपुरुष उपर मोह पामी आळ ओढाडे छे. ए आ कथाघडकना निरूपणमांनुं एक नोंधनीय तत्त्व छे. आ उपरांत मध्यप्रदेशमांनी एक गोंड— लोककथामां पण एक भ्रष्टाचारना आळनुं कथानक आवे छे. दूँकमां आ कथानक आ प्रमाणे हो :

एक पक्षीनां वे इंडांमांथी गुंजमरा अने गुंजिहरा (Gunjmara and Gunjhira) नामना वे कुमारो पेदा थाय छे. मोटा थई तेओ एक राज्यमां जाय छे. त्यां नानो कुमार गुंजिहरा ते गाममां त्रास फेलावनार मत्स्यने मारी नांखे छे. राजाए जाहेर कर्युं होय छे के जे मत्स्यने मारशे तेने राजकुंवरी परणावी मोटी समृद्धि आपवामां आवशे.

गुंजिहराना पराक्रमथी राजकन्या तेना प्रेममां पडी जाय छे. अने राजा पोतानी शरत मुजब मरस्यने मारनार आ गुंजिहराने ते राजकुंवरी आपे छे. परंतु गुंजिहरा ते राजकन्याने पोताना मोटा माई गुंजमरा साथे परणाववानुं कहे छे. अंते राजकन्या गुंजिहरा प्रत्ये प्रेममां परोवायेळी होय छे छतां, साथे रहेवाना लोभे गुंजमरा साथे परणे छे अने बधां साथे रहे छे.

एक दिवस गुंजमरा शिकार माटे बहार गयो होय छे त्यारे भाभी गुंबहिराने अंदर जमवा बोलावे छे. बन्ने अंदर गया त्यारे भाभी बनेली राजकन्याए गुंबहिरा पासे अघटित मागणी करी. जेनो गुंबहिराए अनादर कर्यों त्यारे गुस्से थई राजकुंबरी बोली, 'हुं मरी जईश अने तने पण मारी नाखोश'. एम कही ते दहीं लावी अने तेने पोताना आखा शरीर चोपड्यु अने बिलाबी-

<sup>?.</sup> Folktales of Mahakoshal'-P.178 by Verrier Elwin

भूमिका ७५

ओने पोतानुं शरीर चाटवा बालावी. बिलाडीओए नहोर इत्यादिथी तेने मरणतोल करी नाखी. सांजे ज्यारे मोटो माई घरे आव्यो त्यारे पत्नीनी आ हाला विषे पूछ्युं. त्यारे ते गुंजिहरा उपर आळ ओढाडती बोली, 'तमारा भाईए मारा पर बळात्कार करवानो प्रयत्न करी मारी आ हालत करी मूकी छे.' कोषे भराई गुंजमरा फांसो खावा जाय छे. पण गुंजिहरा 'पंच समक्ष आ वातनो फेंसलो थरों' एम कही पाछो वाळे छे. अंते गुंजिहरा पंच समक्ष तपावेला लोखंडना थांमलाने भेटा, सहीसलामत रही पोताना चारित्रनी साक्षी आपी जंगलमां चाह्यो जाय छे.

आम आ कथानकमां आळ मूकवा माटे स्त्री पोताना शरीरनी सामान्य रीते जे प्रमाणे पोताना ज हाथे कपडां फाडो, वाळ तोडी, कृत्रिम विकृति करे छे, तेना करता कंइक विचित्र रीते बिलाडीओ पासे ए प्रकारनी विकृति कराववानुं आलेखन नोंधनीय छे. अहीं आरोपी शोलप्रभावे भयंकर कसोटीमांथी पसार थई, तेमांथी हेमखेम पार उत्तरी पोतानी पवित्रता साबित करी पोतानां कलंकने धोई नाखे छे.

आ ज प्रकारनी एक मुरिआ कथामां पण आळतुं कथानक आवे छे.

एक राजाना थूंकथी एक हरणीने गर्भ रह्यो अने ज्यारे बाळक अवतर्युं त्यारे वृक्ष नीचे मूकी दीधुं. राजा निःसंतान होई तेने महेलमां लई जईने उछेरवा मांड्यो. कमे कमे ते मोटो थयो.

एक दिवस राजा शिकार करवा गयो ते वखते राजानी राणी अने आ छोकरो एक ज खंडमां सूतां हतां. राणी आ छोकराने जोई कामातुर थई अने तेने पोताने आलिंगन आपवा माटे दबाण कर्युं. छोकराए तेतुं कह्युं मान्यु नहीं. तेथी राणी खूब गुस्से थई.

राजानो ज्यारे आववानो समय थयो त्यारे राणीए कांटाओ वडे पोतानुं दारीर उझरडी नाख्युं अने भोंय पड़ी गई. राजाए ज्यारे कारण पूछ्युं त्यारे तेणे पोताना पर बळात्कार करवानुं आळ पेला छोकरा पर ओढाड्युं. राजाए तेने जेलमां घकेली दीघो. त्यारबाद पेली हरणी युक्तिपूर्वक तेने छोडावे छे अने साची वात राजाने जणावे छे. तेथी राजा ते राणीने जीवती दाटी दे छे. अने ते हरणी हरणी मटी सुंदर कन्या बनी जाय छे.

आम आ कथानकमां प्र्युम्नकथानी माफक पालकमाता तेना पालकपुत्र प्रत्ये मेाह पामी, पातानी अघटित मागणीओना अनादर थतां भ्रष्टाचारनुं आळ मूके छे.

मध्यप्रदेशनी एक कथामां वळी एक राणी पातानी ओरमान कुंवारी पुत्री उपर भ्रष्टाचारनुं आळ ओढाडे छे-एवुं आलेखन थयेछुं छे. कथा टूकमां आ प्रमाणे छे<sup>ड</sup>:

एक राजाने एक राणी अने वे बाळकोमां एक दीकरी हती. राणीना मरण बाद राजा बीजी राणी लाव्यो. ते आ बाळकोने असहा दुःख आपवा लागी. आथी पण संतोष न पामता ए ओरमान माताए ए छेाकरी उपर आळ मूकीने राजाने भरमाव्या के, ''छेाकरी कुचारिन्यनी छे, जुओ तेना द्यारे उपर सगर्भावस्थाना चिन्हो जणाय छे.'' ज्यारे ए छेाकरीना माईए आ आळनी वात जाणी त्यारे ते बहेन अने माई महेलमांथी भागी छूट्या...इत्यादि...

<sup>8.</sup> Folktales of Mahakoshal P 361-363 by Verrier Elwin

२. 'Folklore in the Central Provinces of India' by M. N. Venkataswami of Nagpur. जुओ 'The Indian Antiquary'Vol. XXV (Feb. 1876) p. 48

आम भारतना अनेक भाषाना कथा-साहित्यमां आ भ्रष्टाचारनां आळनुं घटक समावती अनेक कथाओ प्राप्त थाय छे. विदेशो कथासाहित्यमां पण आ कथाघटकना अनेक कथाओमां उपयोग थयेला छे. डॉ. भायाणीए तेना उदाहरणार्थे प्राचीन मिसरी साहित्यमांथी "वे वंधु-ओनी वार्तां"नो, "इलिएड"मांनी बेलेरे।फोननी कथानो तथा "बाइबल"मांथी जोसेफ अने पोटिफरना प्रसंगना उत्लेख कर्यो छे. ते उपरान्त ग्रीक साहित्यमांनी "Phaedra and Hippolytus" नी कथामां पण भ्रष्टाचारनां आळनी वात आवे छे. कथा द्वंकमां आ प्रमाणे छेरै:

थेसस (Theseus) नामना राजाने हिप्पोलिटा (Hippolyta) नामनी राणीने हिप्पोलिटस नामे पुत्र हतो. पछीथी थेसस, फएड्रा नामनी बीजी स्त्रीने परण्यो. त्यारपछी हिप्पोलिटसने तेना पिताए पिथ्येअस (Pittheus) नी पासे मोकल्यो. जेणे पोताना ट्रोझननी गादीना वारस तरोके तेने दत्तक लीधो.

हिप्पोलिटसे ट्रोझनमां आर्टेमिस (Artemis) देवीनुं देवळ बंधाब्युं. आ बाबत एफींडा-इट नामनी देवीने अपमानजनक लागी. तेथी हिप्पोलिटसने शिक्षा करवाना हेतुथी तेनी अपरमा फएड्रा तेना प्रेममां पडे एम विचारवा लागी.

येससनी गेरहाजरीमां फएड्रा हिप्पोलिटसनी पाछळ ट्रोझनमां आवी अने त्यां तेणे हिप्पोलिटसनी कसरतशाळानी सामे एक देवळ बंधाव्युं के जेथी ते हिप्पोलिटस ज्यारे नग्न थई कसरत करे त्यारे तेने जोई शके. आम ते हिप्पोलिटस प्रत्येनी कामवासनामां खूब बळवा मांडी. तेणे हिप्पोलिटस प्रत्येनी मानुमाव छूपावी राख्यो. पण ते दिवसे दिवसे सुकावा लागी. आ बाबत तेनी बुद्ध धात्री जाणी गई तेथी तेणे हिप्पोलिटस उपर फएड्राने प्रेमनी मागणी करतो कागळ लखवानुं जणाव्युं. फएड्राए ते प्रमाणे पोतानी कामवासना तृप्त करना माटे जणावतो पत्र हिप्पोलिटस उपर पाठव्यो. हिप्पोलिटसे ते कागळ बाळी नाख्यो अने धुंआपुंआ यतो फएड्रामा खंडमां आवी मोटेथी ठपका आपवा लाग्यो. पण त्यां तो फएड्राए पोताना कपडां फाडी नाख्यां अने मोटेथी बूमो पाडवा मांडी 'मदद मदद, मारा पर बळात्कार थाय छे'. पछो तेणे पोते गळे फांसो खाधी अने पाछळ हिपोलिटस पर मयंकर आळ मूकती गई ईस्यादि.

आम आ कथामां अपरमाता पुत्र पर अध्याचारनुं आळ ओढाडी पोते ए आळने बधारे सचोट बनाववा गळे फांसो खाई मरी जाय छे जेथी एम साबित थाय के अध्याचार आदरनार व्यक्तिए पोतानुं कार्य पतावो ए कार्यनी जाण न थाय ए माटे अध्य थयेली व्यक्तिनुं निकंदन ज काढी नाख्युं छे. ग्रीककथा उपरांत इरानो साहित्यमां पण एक कथानकमां आ कथाघटकनों उपयोग थयो छे.

कवि फिरदौसीना 'शाहनामा'मां राजा काउस (Kai Kaus) नी कथामां आ वात आवे छे. 3

१. 'शोध अने स्वाध्याय' पृ. २८२

<sup>3.</sup> The Greek Myths Vol. I, P. 356 Robert Graves.

इ. The Shahnama of Firdausi Vol.II. page 200. Translated into English by Warnar Arthur George and Warnar Edmond तथा जुओ Mythology of all Races (Iranian Mythology) Vol Vl. P. 336. Ed. by Albert J. Cornoy

पिश्चिमो राजा काउस, सूडाजा (Sūdābā) नामनी एक स्त्रीने परण्यो हतों. ते द्वेषिली हती. ते पोतानो आगली शोक्यना सियावृष (Siyāwush) नामना युवान पुत्र उपर मोहित थई अने तेनी पासे तेणे अघटित मागणी करी. सियावृषे ते मागणी नकारी एटले तेणे तेनो विनाश करवा तेना पर अष्टाचारनुं आळ ओढाड्युं. त्यारबाद कोई डाकणथी तेने वे राक्षसी बाळको थया छे एवो दोवारोप तेनी अपरमा तेना पर मूके छे. तेमांथी सियावृष मुक्त थाय छे. छतां पण तेनी मा तेने देशनिकाल करे छे.

भूमिका

दुष्ट राणी सूडाबानी माफक च चीननी लोककथामां राणी टा—ची (Tā-chi)नी कथामां पण ते तेना ओरमान पुत्र उपर भ्रष्टाचारनुं आळ मूके छे, ते कथाघटक निरूपायुं छे, ते कथा टूकमां आम छे:

पॉ-आइ-काऑ (Po-I-Kao) ए वॅन वांग (Wen Wang) नो मोटो पुत्र हतो. चाउ (Chau) नामना राजाए वेन वांगने जीती जेलमां पूर्यो हतो. पॉ-आइ-काऑए पोताना पिताने मुक्त करवा अथाग प्रयत्न कर्यो. चाउने प्रसन्न करवा तेणे घणी समृश्वि साथे दस सुंदर युव तिओ अने सफेद मुखवाळा अजब यादशक्ति घरावता वांदराओ मोकल्या.

कसनिष्ठी पॉ—आइ-काऑनी उपर राजा चाउनी मानीती रखात टा-ची (Ta-chi) कामा-तुर थई अने तेणे पॉ—आई-काओने पोतानी बाळमां फसाववा घणा प्रयत्नो कर्या, परंतु ते निष्फळ गया. अंते तेणे पॉ—आइ-काओ- उपर भ्रष्टाचारनुं आळ मूक्युं, राजा चाउए तपास करी पॉ-आइ-काऑने निर्दोष जाहेर कर्यो. त्यारबाद टा-ची पॉ—आइ-काऑने अनेक रीते हेरान करवा लागी, तेथी पॉ—आइ-काओए राजाने आ दुष्ट टा-चीथी पोताने दूर मोकलवा विनंती करी. ते बखते टा-चीए पॉ—आई-काऑनुं अपमान कर्युं. तेथी गुस्सामां पॉ-आइ-काऑए तेने वीणा बडे फटकारी, आंथी तेने क्रूर रीते मारी नाखवामां आव्यो अने तेनुं मांस तेना पिताने खावा मोकल्युं इत्यादि... व

आम आपणे जोई राकीए छीए के मोटा भागे अपरमाता के पालकमाता पोताना आकर्षक अने युवान पुत्रना रूप-यौवनथी आकर्षाई कामातुर थाय छे, अघटित मागणी करे छे अने दरेक वखते ए सुपुत्र ते अघटित संबंधनो अनादर करी, माता द्वारा अष्टाचारनुं आळ पोताना शारे वहोरी ले छे. क्याँक भाभी दियर उपर, तो कोइ स्त्री परपुरुष उपर पण ए ज रीते कामानुर थाय छे. परंतु ज्यारे पोतानी अघटित मागणीनो ते व्यक्ति द्वारा अनादर थाय छे त्यारे पोतानुं कपट छूपाववा तेना पर अष्टाचारनुं आळ औढाडे छे. आम आपणे भारतीय परंपरा तथा विदेशो परंपराना कथासाहित्यमां 'अष्टाचारनुं आळ' ए कथाघटकनो व्यापक रीते उपयोग थयेलो जोई शकीए छीए.

#### (६) परपुरुष साथे छानो संबंध राखती पत्नी

?. Myths and Legends of China by F.T.C. Warner, P.192

२. पर्शियानी राणी सुडाबा अने चीननी राणी टा-ची (Ta-chi) ना आ भ्रष्टाचारना आळनी कथाना तुलनात्मक अभ्यास माटे जुओ Some Shahanama Legends and their Chinese Parallels by Coyajee J.C., Journal and Proceedings of Asiatic Society of Bengal Vol. 24.P. 191 (New Series)

आ एक हलका प्रकारनुं स्त्री—चरित्र छे. घणी वखत स्त्रीनी कामवासना एटली बधी उिद्दिप्त होय छे के ते पोतानुं गौरव, लज्जा के फरजनुं भान भूली पोताना प्रत उपरांत इतर परपुरुष साथे अयोग्य संबंध बांधी कामभोग भोगवती होय छे. पित आ वातथी अजाण होय छे अने पत्नी तेनो लाभ लई पोतानी कामवासनाने संतोष जती होय छे. आ रीते ते एटली हदे असंयमी बनी जाय छे के पोताना वासनाने संतोषवा माटे पोताना जारना हाथनो असहय मार पण सहन करे छे. एटलुं ज निह पण क्यारेक तो ते जारनो आज्ञाने वशवतीं पोताना पितनुं निकंदन पण कादी नाखती होय छे. केटलीक वार पितने पोतानी पत्नीना आ व्यभिचारनी खबर पड़ी जाय छे, त्यारे पत्नो पोतानी निर्दोषता पुरवार करवा बीजा अनेक प्रकारना स्त्री—चिरोत्रो अजमावे छे. केटलीक वार चालाक पित पोतानी पत्नीनी आ प्रकारनी युक्तिआने निष्फळ बनावी तेनुं पोल उघाडुं पण पाडे छे. क्यारेक पत्नी पोतानुं भ्रष्ट चारित्र्य छूपाववा पति उपर सामुं आळ पण मूके छे, तो क्यारेक पोताना यार साथे मनमानी मोज करवा माटे कूर बनी पोते ज पोताना हाथे पितनो कांटो दूर पण करती होय छे.

आमां मात्र नीच क्ळनी के हलका वर्णनी स्त्रीओ उत्तम क्ळना परपुरुष साथे ज आवो अयोग्य संबंध राखे छे एवुं नथी, के स्त्री पोताना पांगळा कुरूप के निर्धन पितथी कंटाळीने कोइ सराक्त, देखावडा अने धनवान परपुरुष साथे पोतानी कामवासनानी भूख भांगवा जाय छे एवुं य नथी। परन्तु 'कामांघो नैव परयति' ए न्याये उत्तम क्ळनी स्त्रीओ नीच वर्णना पुरुषो साथे पण कामभोग आचरे छे अने पोताना गुणवान, रूपवान अने मोभादार-धनवान पितने छोडीने रस्ते रखडता कूबडानी साथे अनीति आचरती होय छे.

डॉ. जनक द्वेए पोताना अप्रकट महानिबंधमां ''नारीनी नीच प्रीति'' ए कथाघटकनो केटलाक दृष्टान्तो साथे विचार कर्यो छे. तेमां तेमणे नीचेना दृष्टातोनुं आ कथाघटक परत्वे निरूपण करेलं छे:

१. मर्नृहरिनी कथा २. दृष्टान्तरातकमांनी मन्दृहरिनी कथाने मळ्ती एक बीजी कथा ३. धर्मीपदेशमाळा विवरणमांनी 'दोषबादुल्ये नूपुरपंडिता कथा'' ४. तेमां ज नारीनी नीच प्रीतिनुं एक बीजुं कथानक ५. तेमां ज वळी एवुं त्रीजु कथानक ६. दोषबादुल्ये नूपुर-पंडिता कथाना प्रथम अंशना रूपान्तर समो शामळनी 'सूडाबहोतेरी'नी 'कोण मूरख?' ए शीर्षकवाळी कथा ७. पंडित शुमशीलगणिकृत "विकमचरित्रम्'मां 'स्त्रीचरित्र वीक्षण संबन्धः' मांनी वे कथा— एक 'रत्नमंजरीकथा'', बीजी 'राज्ञीचरित्रवीक्षणम्'' ८. शामळनी पंचदंडनी वार्तामां पांचमा दंडनी प्राप्तिनी वार्ता ९. पंडित शुमशीलगणिकृत "विकमचरित्रम्'मांनो छाहडनी वार्तामां पांचमा दंडनी प्राप्तिनी वार्ता ९. पंडित शुमशीलगणिकृत "विकमचरित्रम्'भांनो छाहडनी वार्ता १०. शामळनी 'सिंहासनबत्रीशी'' मांनी वहाणनी वार्ता ११. तेमांनी ज मेना—पोपटनी वार्ता १२. 'स्त्री— चरित्रनी नवीन वार्ताओ'' नामना पुस्तकमांनी "कोडीलाल अने चतुरानी वार्ता' १३. ए पुस्तक मांनी ज त्रीजी 'रतनशी सोनी तथा तेनी स्त्री कूळवंतीनी वार्ता'' १४. ए पुस्तकमांनी ज छडी 'जहांदारशाह अने हुरमन्रझांहानी वार्ता' १५. ए पुस्तकमांनी ज "अमरासिह अने तेनो स्त्री जारमती' नी कथा १६. "वर्दा' पत्रिकामांनुं लाखा फूलाणीनुं कथानक १७. "कथासरिस्सागर''—शक्तियशालंबक, तरंग २ जो''मांनी 'सिंहबळ अने तेनी राणीनी कथा १८. शुमशोल-

<sup>8.</sup> Shāmal's Sinhāsanbatrisī Preparation of an Authentic Edition of Tales Nos. 28,29,30,31 From the Original Manuscripts together with a Critical Study of these Tales p.638-675.

गणिकृत विक्रमचरित्रम्, (गु. अनुवाद प्रकरण ४९) नी एक कथा १९. ए पुस्तकमांनी ज 'वे माछलाने हसवानुं कारण' ए कथा. २०. ''कथासिरित्सागर—कथापीठलंबक'', -५मा तरंगनी एक कथा २१. ''जंबुस्वामी रास''—कर्तां यशोविजयजी—संपादक रमणलाल शाह, पांचमो अधिकार, तरंग ८ मां ढाळ १ ली. पृ. ११४—१२२ मांनी एक कथा. २२. ''कथासिरित्सागर— शक्तियशालंबकनी 'घट अने कर्पर नामना चोरनी कथा', ''धनदेवनी बहूनी कथा'' 'रुद्रसोमनी स्त्रीनी कथा' ''शशीनी कथा, ''एक नागदेव अने तेनी कथा'', तरंग ७मानी 'यशोधर अने लक्ष्मीधरनी कथा', तरंग ९ मानी ''व्यभिचारी नारीनी कथा'', तरंग १० मानी ''सिंहाक्षनी राणीनी कथा', तरंग ५ मानी ''अस्थिमुग्धनी कथा''.

आम डॉ. दवेए "कथासरित्सागर", "स्त्रीचरित्रनी नवीन वार्ताओ" तथा ग्रुमशीलगणि-कृत "विक्रमचरित्रम्" मांथी मोटे भागे कथाओ टांकी छे अने ते द्वारा स्त्रीचरित्रना वैविष्यनो ख्याल आप्यो छे.

आ उपरात में पण अहीं बीजा केटलाक नवा कथानको द्वारा आ कथाघटकनो विचार करवानो प्रयत्न करेलो छे.

आचार्य हरिभद्रसूरि विरचित प्राकृत प्र'थ 'समराइच्चकहा' मां समरादित्य राजाना चोथा भवनी कथामा 'यशोधरचरित्र' आवे छे. अहीं यशोधर नामना श्रमण पोतानो वृत्तान्त कहे छे—

''विशाला नामनी नगरीमां अमरदत्त नामनो राजा हतो. आ भवनी पहेलाना नवमा भवमां सुरेन्द्रदत्त नामनो हुं तेमनो पुत्र हतो. मारी मातानुं नाम यशोधरा हतुं. अने ते वखते नयना वली नामनी मारी भार्या हती.

एक दिवस मारो पोतानो सफेद केश हाथमां आवतां मने वैराग्यभाव जागृत थयो अने में ते बात नयनावळीने कही. त्यारे नयनावळीए खूब अनुरागपूर्वक पोते पण दीक्षा छेशे एम जणान्युं. पछो तेना अनुरागनो प्रशंसा करता करतो हुं शयनगृहमा जई सूई रह्यो.

एटलामां नयनावली हुं ऊंघी गयो छुं एम जाणी परंग ऊपरथी उतरीने वासघरमांथी बहार नीकळी. नक्की मारा भावि वियोगथी कायर बनी ते आत्महत्या करशे—एम धारी, तलबार लई हुं तेनी पाछळ गयो. त्यां तो राणीए राजमहेलनुं रक्षण करनार एक कूनडाने जगाडियो. कूनडाए राणीनो सुगंधी चोटलो पकडीने भूमि उपर पछाडी. छतां राणीए तेने आलिगन अने चूंबन करी शांत कर्यो. आ जोई मारुं मन विरक्त थई गयुं अने धर्म तरफ वधु खेंचायो. दीक्षा लेवानो निश्चय करी पाछो हुं शयनगृहमां आवी सूई गयां एटलामां नयनावली पाछी आवी.

र. ''समराइच्चकहा'' मूळ कर्तां—आचार्य हरिभद्रसूरि—गुर्जरानुवाद : आचार्य हेमसागरसूरि पृ.१२०-१२७.

२. जारना हाथनो मार खावानी वात नीचेना कथानकोमां पण प्राप्त थाय छे. १. 'घमों पदेश विवरण' मांनी 'दोष बाहुल्ये नूपुरंपडिता' नी कथामां राणी पोताना जार महावत वडें मोडा थवा बदल सांकळनो मार खाय छे. जुओं –डां. जनक दवेनो महानिबंध पृ. ६४३ २. पंडित ग्रुमशीलगणिकुत विक्रमचरित्रम् अन्तर्गत गगनधूिलनी वार्तामां ज्यारे स्किमणी मोदक लई जाय छे त्यारे मोडा थवा माटे तेने जार तमाचो मारे छे. जुओ डां. जनक दवेनो महानिबंध पृ. ६२१. ३. 'स्त्रीचरित्रनी नवीन वार्ताओ'मां 'कोडीलाल अने चतुरा'नी वार्तामां चतुरानो यार तेना नाककान कापी नाखे छे. जुओ डां. जनक दवेनो महानिबंध पृ.६२४. ४. आगळ पृ.५८९ पर काश्मीरनी लोककथानी एक वार्तामां पण जार वढें डांगनो मार खाती स्त्रीनी वात आवे छे.

त्यारबाद नयनावलीए विचार्युं के, 'राजा दीक्षा लेशे अने हु नहीं लउं तो मने मोंडुं कलंक लागशे. जो पित मृत्यु पामे अने मंत्री पोते वचनथी बाळ राजाना पालन माटे मने पित पाछळ मरती रोकशे, तो तेटलुं कलंक निह लागे. माटे कोई पण उपाये महाराजाने मारी नाखुं'. एम विचारी तेणे भोजनमां झेर भेळव्युं. ते भोजन खावाथी मने झेर चढ्युं, हुं सिंहासन ऊपरथी पटकाया. ते वखते सेवको राजवैद्योने बोलाववा गया. ''वैद्य बोलाववा ठीक निहं' एम चिंतवती राणी व्याकुळ बनी, पोतानुं वस्त्र मारा मुख उपर नाखती, हाहारव करती मारा देह उपर पड़ी. कोई न देखे तेवी रीते अने पोतानां वस्त्रो अस्त व्यस्त थई गया होय ए रीते हदन करती एवी तेणीए अंगूठो अने आंगळीओ वडे गळे टूंपो मारी मारा प्राण हरी लीधा.''

आम आ कथामां राणी जेवी उच्च वर्णनी अने प्रेमाळ तथा मोभादार पति पामैली स्त्री कूबडा साथे अनीति आचरे छे अने छेवटे पोताना पतिनुं निकंदन काढी नाखे छे.

भा उपरांत परपुरुष साथे अघटित संबंध राखती पत्नी, पोताना ए कपटनी पोताना पितने खबर पडे छे त्यारे सामुं ते तेना पर चोरीनुं आळ मूके छे-एवं वृत्तान्त आपणे 'श्री उपदेश- शासाद' मांनी काष्टमुनिनी कथामां जोईशुंः'

राजग्रहनगरमां काष्ट नामे श्रेष्टिने वज्रा नामे कुलटा स्त्रीथी देवप्रिय नामे पुत्र हतो. ते. श्रेष्ठिए पोपट, मेना अने एक कृष्ण पाळ्या हता. अने घरनी संभाळ राखवा माटे एक ब्राह्मणना पुत्रने राख्यो हतो. ए हदा श्रेष्ठि बहारगाम गयो त्यारे तेनी स्त्री आ युवान ब्राह्मणपुत्र साथे विषयसुख मोगववा लागो. आ जोई मेना तेने उपदेश देवा जतां वज्राए क्रोधथी पकडीने अग्निमां नाखी दीधी. ते जोई पोपट मौन रह्यो.

एक वखत ते वजाने घेर बे मुनि भिक्षा लेवा माटे आव्या. तेमांथी वृद्ध मुनिए नाना-निने कहुं के 'आ क्कडानुं मस्तक मांजर सिंहत जे खाय ते राजा थाय.' ते वचन पेजा. ब्राह्मणपुत्रे सांभळी, तेणे वजाने क्कडाने मारी तेनुं मस्तक मांजर सिंहत पकावी आम्वानुं कह्यु बजाए तेम कर्युं. परंतु ब्राह्मणपुत्र स्नान करवा गयेलो अने एटलामां पोतानो पुत्र निशालेथी भूख्या आव्यो हतो, एटले तेणे क्कडानुं मस्तक पोताना पुत्रने खवडावी दीघुं. आ वात ब्राह्मणपुत्रे ज्यारे जाणी स्यारे तेणे बजाने पोताना पुत्रने मारी तेना पेटमांथी क्कडानुं मस्तक लावी आपवानुं कह्युं. बजाए ते बात स्वीकारो. ते बात पुत्रनी धावमाता सांमळी गई, एटले ते निशालेथी परभारी ज पुत्रने लई चालती चालतो चंपानगरीना उद्यानमां आवी. त्यां ते गामनो राजा अपुत्र मरण पाम्यो होवाथी, प्रधानोए पंचिद्वय कर्या हतां. ते पंचिद्वये उद्यानमां सूतेला पेला पुत्रने प्रमाण कर्यों. आम ते देविषय राजा बन्यों.

अहीं केंटलेक काळे काष्ट श्रेष्ठि परदेशथी घरे आब्यो एटले पोपटे तेने सर्व वात कही. ते सांभळीने श्रेष्ठिए वैराग्य पामो दीक्षा लीघी. राजाना भयथी वज्रा पण ब्राह्मणपुत्रनी साथे पोताना गामथी नीकळी दैवयोगे पोवाना पुत्रनां राज्यवाळा नगरमां आवीने रहेवा लागी.

१. ''श्री उपदेशप्रासाद''-कर्ता श्री विजयहरूमीसूरि. गु० भाषांतर :-श्री जैनधर्मप्रसारक सभा— त्रीजी आवृति, पांचमा तपस्वी प्रभावक विषे काष्ट्रसुनिनुं दृष्टांत पृ० १५६-१५८

काष्टमुनि विहारना कमें फरतां फरतां ते ज नगरमां भाष्या अने अकस्मात ते वजाना घरे भिक्षा माटे आष्या. वजाए पोताना पितने भोळखीने विचार्युं, ''जा आ मने ओळखरीं तो मारी हेलना कररों' आथी तेणे भिक्षाना पात्रमां भिक्षानी साथे पोतानुं एक आभूषण मूकी दई पोकार कर्यों. तेथी राजसेवकीए ते साधुने चोर घारीने पकडी राजा पासे लई गया. ते वखते राजा पासे बेठेली घात्रीए तेने ओळखीने राजाने कह्युं के, 'आ तारा पिता छे", एटले राजाए सर्व वृत्तान्त जाणी, पिताने हणवा इच्छती माताने गाम बहार काढी मूकी अने पोते आवक थयों.

आम अहीं भ्र॰ट थयेली स्त्री, बेवफाइनी हदे पहोंची, पोताना पुत्र अने पतिनु कासळ कादवा तैयार थई जाय छे.

काश्मीरनी लोककथामां पण एक एवी कथा छे के जेमां जारना कहेवाथी परनी पतिनुं कासळ काढी नाखे छे. पण पछी तेना फळरूपे ज जार तेने तरछोडी जाय छे त्यारे पोतानुं कपट छूपाववा अने पोताने निर्दोष पुरवार करवा स्त्रा केंद्रं चरित्र करे छे तेनो वृत्तान्त जोईए :

एक वेपारी तेनी परनीने घरे मूकीने वेपारार्थे बहारगाम गयो. आ बाज़ वेपारीनी परनी एक फकीर साथे विलास करवा लागी. एक दिवस वेपारी घरे पाछो आध्यो.

आ गामनो राजा रात्रे नगरचर्या जोवा नीकळतो हतो. ते वखते मध्यरात्रीए ए वेपारीना घर पासे आवी ऊमी अने जोयुं तो वेपारीनी पत्नी रांघेला मातनी थाळी माथे मूकी क्यांक जती हती. राजा छूपातो छूपातो तेनी पाछळ पाछळ गयो अने जोयुं तो ते एक फकीर पासे गई अने थाळी मूकीने प्रणाम करी ऊमी रही. अने फकीरने मात आरोगवा विनंति करी. रयारे फकीरे पोतानी डांगथी तेने फटकारी अने मोडा आववा माटे कारण पूछ्युं. एटले वेपारीनी स्त्रीए पोतानो पति घरे पाछो आव्यो छे अने तेथी मोडुं थई गयुं एम कही मात खावा जणाव्युं. पण फकीरे भात खावानी ना पाडीने कह्युं के "तुं तारा पतिनुं माथुं कापी लाव तो हुं भात खाऊं." जारनी ए वात पण मान्य राखी स्त्री घरे गई अने पोताना ऊंघता पतिनुं माथुं कापी नाख्युं अने फकीर पासे लावी त्यारे फकीरे तेने डांग वडे फटकारी कह्युं के "तुं तारा पतिने वफादार नथी, तो मने क्यांथी वफादार रहेवानी ।"—आम कही ते चाल्यो गयो. राजा आ वधुं जोतो रह्यो.

सवारना राजाए शोरवकोर सांभळ्यो के, "वेपारीने चोरोए मारी नाख्यो छे." वेपारीनी स्त्रीए पण 'पोताना पतिने चोरोए मारी नाख्यो छे.' एवी वात राजाने करी. राजा जाणतो हतो के वेपारीने कोणे मारी नाख्यो छे. लोको गुनेगारने शोधवा मांझ्या इत्यादि...

एम मनाय छे के स्त्री स्वभावथी ज चंचळ हृदयनी होय छे. मेडिये पूरो के जंगलमानां एकान्तमां एकली राखी, पण जो तेनी कामवासना उद्दित थरो तो जारकर्म करवा विविध युक्तिओ अजमावरो.

Hatim's Tale- "Kashmiri Stories and Songs"
 पृष्ठांक १३ थी १७, कर्ताः-Aurel Stein & G. A.Grierson.

२. जारना हाथे स्त्रीमार खाय छे-ए कथानक माटे जुओ: पृष्ठांक ५७८ ११

काश्मीरनी एक बीजी लौककथामां आवी ज एक वात आवे छे. एक दिवस शिकार करता एक राजांने एक फीर मळचो अने तेणे राजांने कंइक मागवा कह्युं. राजाए एक सुन्दर परनी मागी. फकीरे कह्युं के, ''हुं तने ते आपीश पण चेती जजे के. स्त्री बेवफा ज निवडशे.'' राजाए कह्युं, 'कंइ बांचो नहि.' फकीरे तेने सुन्दर परनी आगी. राजाए ते राणी माढे जंगलना एकान्तमां एक महेल बंधाव्यो अने बने एटलो वधारे समय तेनी साथे रहेवा लाग्यो.

एक दिवस ते राणीए राजानी गेरहाजरीमां महेल नोचेथी सुन्दर अने युवान एवा वजीरने जतो जोयो, ते तरत ज तेना प्रेममां पड़ी अने तेने उपर बोलाब्यो. आ प्रमाणे रोज तेओ गुप्त रीते मळवा लाग्यां. एकबीजानां मन खूब मळी गयां त्यारे वजीरे शहेरथी राजमहेल सुधीनुं गुप्त भोयरं खोदाब्यु अने ते मार्गे रोज ते राणी पासे आववा लाग्यो.

एक दिवस वजीरे एक मोटी मिल्नानी गोठवी अने राजाने आमंत्रण आप्युं. पेली राणी पण वेशपलटो करी त्यां आवी. राजाए तेने ओळखी लीबी. छतां चोक्कस खात्री करवा माटे राणीना वस्त्रना छेडाने हळदरनो डाघ पाडी दीघा अने चाल्यो गयो.

रात्रे ज्यारे ते महेलमां राणी पासे आन्यो त्यारे तेणे ते ज हळदरनो डाध तेना वस्त्रना छेडे जोयो. तरत ज तेणे तलवारना झाटके राणीनो शिरच्छेद कर्यो अने बीजे दिवसे राजपाट छोडी फकीर बनी गयो.

"अखेराज देवडा" नी कथामां पण आ ज कथाघटकनो उपयोग थयेलो छे:

शिरोही नगरमां अखेराज देवडो राज्य करतो हतो. तेनुं लग्न झालावाडमां एक झालीनी साथे थयुं हतुं, पण परण्यां पछी अणबनाव धतां राजाए बीजुं लग्न कर्युं. झाली मवजाबना होई तेनुं चित्त खूब कामातुर रहेतुं.

एक दिवस दिब्हीना बादशाहनो शाहजादो देशाटने नीकळ्यो हतो, ते फरतो फरतो आ राणीना महेल नीचेथी नीकळ्यो. आवो कान्तिमान शाहजादो जोई झालीनुं मन चळी गयुं अने संदेशो पाठवी पोतानी इच्छा संतोषवा जणाब्युं, पण गभर शाहजादाए पोतानो छावणीए आववा जणाब्युं. रात्रे राणी शाहजादानी छावणीमां आवी अने तेने शाहजादाए पोतानी पासे राखी दिस्ही चाल्यो गयो.

सवारे ज्यारे असेराजने आ वातनी खबर पड़ी त्यारे ते अने तेनो भाणेज उमेदिंग दिल्ही गया. रस्तामां पोताना ओळखीता नटोनी साथे दिल्हीना राजा पासे ढोळबाळाने वेशे तेओ गया. शाहजादानुं माथुं खाळामां रुईने बेठेली झालीने जोतां प्रचंह आवेगमां आवी ते जोरथी ढोळ बजाववा मांडयो. झालो अखेराजने ओळखी गई अने शाहजादाने ओळख आपी. शाहजादाए ढोळवाळानुं मस्तक कापी नाखवानो हुकम कर्यों. आ हुकम दोर उपर चढेला नटे सांभळयो अने विचार कर्यों के "लाख मरजो पण लाखनो पाळवावाळो मरशो निह". तेथी ते दोर उपरथी ऊतरी राजा पासेथी ढोळ छईने पोते वगाडवा मांडयो. सिपाइओए आवीने होल वगाडता नटनुं माथुं वाढी नास्युं.

g. "Folktales of Kashmir'-by J. H. Knowles [ Second Edition P. 227-228 ]

२. 'भारत लोककथा''-प्रथम गुच्छ, पृष्ठांक १थी १७. संपादक 'गुजराती'' प्रेस.

आ बाजु अखेराज अने उमेदसिंग बन्नेए झालीने पकडवानो निश्चय कर्यो अने दरबार-गढमां दाखल थया. पण चोतरफ आंगरानो खाई हती. ते वखते वफादार उमेदसिंग ते खाईनी बच्चे पहेला जईने ऊंघो पडचो, तेनी पीठ उपर थईने अखेराज सामी बाजु पहोंची, बृक्षना सहारे चलदीथी राजमहेलमां जई, शाहचादाने वाढी नाखी, झालीने पकडीने पाछा उमेदसिंगनी पीठ पर थईने कूदी सामे जतो रह्यो.

सवारे बादशाहने शाहजादाना मरणनी खबर पड़ी ग्यारे ते वखते झालीने न जोवाथी सात्री थह के आ अखेराजनुं काम छे. तेथी तेनी पाछळ लश्कर मोकल्युं. तेमांथी वे सिपाइओ लश्करनी बहार आगळ नीकळी गया अने रस्तामां राजाने तथा झालीने पकड़ी लीघा अने अखे-राजने बांधी, ते बन्ने नमाज पढ़वा माटे पासेनी वावमां ऊतर्या.

आ बाजु अखेराजे युक्तिपूर्वक पासे ऊभी ऊभी मलकाती झालीने कह्युं के "तें नीचकृत्य तो कर्युं, पण आ मलेक्छना हाथे मरवा करतां हुं तारा जेवी रजपूताणीने हाथे मरवा धारुं छुं. तो मारी तलवारथी तुं मने मारी नाख." आ सांभळी खुश थती राणीए विचार्युं के 'लावने टाढे पाणीए खस काढुं', एम विचारी तलबार लइ ते जेवी राजा उपर घा करवा जाय छे के तरत ज राजाए एवी करामत करी के झालीनो झटको बांधेला बंधनो उपर पडयों. बंधन तूटी गया अने राजा मुक्त थइने झालीने पकडी, षावमां नमाच पढता बे सिपाइने खलास करी, शिरोही चाल्यो. त्यां जई झालीने चीवती भींतमां दाटी.

बीजी आ प्रकारनी अनेक कथाओं मां बेवफा परतीनो पित कां तो स्त्रीना कपटनो भोग बनी मृत्यु पामे छे, कां तो स्त्रीनो नीच बृत्तान्त जाणी संसार पर वैराग्य भावता साधु बनी जाय छे. पण आ अखेराजनी कथामां ते खूब बहादुरीपूर्वक अने युक्तिपूर्वक बेवफा परनीना वेरनो बदलो लहने च जंपे छे.

मध्यप्रदेशनी एक कथामां एक दुष्ट राणीना वृत्तान्तमां पण आवा ज प्रकारनां कथा-घटकनुं निरूपण थयुं छे. जेमां एक राजा राणी राणीनी माने घेर जवा नीकळ्या छे. त्यां रस्तामां तरस लगतां एक कृता पासे आवे छे. त्यां एक फकीर सारंगी वगाडतो होय छे. राजा-राणी त्यां आराम करवा रोकाय छे. जमी परवारी राजा स्इ गयो. पण राणी अने पेला फकीरनी आंखों मळतां प्रेम जाग्यो. राणी फकीरनी पासे आवी कहेवा लगी, 'प्रिमने खातर हुं तारी साथे ज आवीश''. त्यारे फकीरे, राणीने तरस्या थवाना बहाने राजाने कृवामांथी पाणी भरी छाववा माटे जणावी, ज्यारे राजा कृवा पासे जाय त्यारे घकको मारी कृवामां घकेली दई मारी नाखवा जणाव्युं. राणीए ते प्रमाणे कर्युं अने त्यांथी फकीर अने राणी भागी गयां अने नाच-गान करतां दिवसो गुजारवां लाग्यां.

आ बाजु राणीए घक्को मारता राजा कूवामां पड्यो, परन्तु ते वच्चे दोरडुं पकडी छटकी रह्यो हतो. एवामां कोइ एक छामसेननी मददथी ते बहार आब्या अने तेनुं ऋण च्कवबा तेना नोकर तरीके तेनी साथे तेने गाम गयो.

<sup>?. &</sup>quot;The Rāṇī's Lover" From- 'Folktales of Mahakoshal' -by Verrier Elwin. First Edition -p. 315-316

पेलो फकीर अने राणी ते जगाममां नाचवा—गावा आब्यां अने स्यां राणीए लिमसेननी साथे राजाने जोयो, पण बोली निह्, ते गामना राजा पासे आ फकीर अने राणीए रातमर सुंदर नृत्य कर्युं एटले राजाए प्रसन्न थई वरदान मागवा कह्युं. एटले राणीए कह्युं के, 'लामसेननो नोकर छे तेने शूलीए चढावो.' राजाए हुकम करी तेने बोलाव्यो, त्यारे नोकरे पोते राजा छे एम कही पोतानी बनेली बधी वितककथा पेला लामसेननी साक्षीए राजाने कही संमळावी, त्यारे राजाए फकीर अने राणीने मारी नंखाव्यां.

आ रीते कथा साहित्यमां बीजा अनेक दाखलाओ भर्या छे, जेमां अनेकविध रीते आ घटकनुं निरूपण थयेलुं छे. विश्वभरना कथा साहित्यमां व्यापक एवा आ कथाघटकनां, अहीं तो मात्र वैविध्यसभर, थोडाक ज दाखला आप्या छे.

### ७. छळ कपट द्वारा दिव्य विद्या के वस्तुनी प्राप्ति

कोइ व्यक्ति द्वारा अलैकिक वस्तु के विद्यानी, तेना मालिक पासेथी युक्तिपूर्वक प्राप्ति करवानो प्रसंग केटलीक कथाओमां निरूपायो छे. पालकमाता कनकमाला पासेथी तेणीनी काम-वासना तृष्त करवानी हा पाडी प्रद्युम्न प्रथम तेना बदलामां तेणीनी त्रण विद्याओ पात करी छे छे. आम एक वस्तत विद्याप्राप्ति थई गई पछी ''तमे तो मार पालन कर्युं, एटले मारी माता थाओ अने विद्या दीधी एटले गुरु थया छो. तेथी माता अने गुरु साथे कोइ व्यक्तिने अनीति शोमे नहि". एम जणावी कनकमालाने ठगीने प्रद्युम्न चाल्यो जाय छे.

आवो ज प्रसंग जैन परंपराना "रावण-उपरंभा"ना वृत्तान्तमां निरूपायो छे . टूंकमां कथा आ प्रमाणे छे:

एक वखते दुर्लैध्यपुरमां रहेला इन्द्रराजाना पूर्विदिक्याळ नलकूबरने पक्तडवा माटे कुंभकर्ण वगेरे रावणनी आज्ञाथो गया त्यां ते नलकूबरे आशाळी विद्यार्थी पोताना नगरनो आसपास सो योजन पर्यंत अग्निमय किल्हों करेलो हतो.

कुं भकर्ण वगेरे त्यां आवी ते किल्लानी सामे पण जोई न शक्या अने किल्लाने दुर्लेध्य गणी पाछा आव्या अने ते खबर रावणने पहोंची. ते सांभळी रावण पोते त्यां आव्यो अने ते किल्लो सर करवानो पोताना बंधुओ साथे विचार करवा लाग्यो.

ते समये रावणनी उपर अनुरागी थयेली नलक्बरनी परनी उपरंभाए एक दूती मोकलीने रावणने कहां के, "उपरंभा तमारी साथे कीडा करवाने इच्छे छे. आ किल्लानुं रक्षण करनार आशाळी नामनी विद्या ते तमारे आधीन करशे. तेथी तमे आ नगर तथा नलक्बरने ताबे करी शकशो. वळी सुदर्शन नामे एक चक्र तमे साध्य करशो". दूतीनी आ वातने विभीषणे स्वीकारी त्यारे रावणे कुलाचार विस्द्रनो वात मानवानी ना पाडी. त्यारे विभीषणे कह्यं,

१. मध्यप्रदेशमां जे युवाननुं कुटुम्ब, कन्यानी परनी तरीकेनी किंमत आपी न शके अने तथी भावि ससराने त्यां तेने वे, पांच के सात वर्ष कान करवा माटे भोकले ते युवानने लामसेन (घरजमाइ) कहे छे. जुओ : 'Folktales of Mahakoshal'-by Verrier Elwin-p. 315

२. 'त्रिषच्टिशलाकापुरुषचरित' - पर्व ७ मुं -सर्ग २ जो. (गुज. भाषां. पृ. ३६-३८)

"उपरंभा भले आवे ने तमने विद्या पण आपे. राष्ट्र तमारे वश थाय एटले पछी तमे तेने अंगीकार करशो नहिः वाणीनी युक्तिथी छोडी देको." रावणे आ वचनो स्वोकार्या.

उपरंभा त्यां आवी पहोंची. तेणे आशाळी विद्या रावणने आपी. ते उपरांत बीजां व्यंतर-रक्षित अमोधशस्त्रो आप्यां. पछी रावणे ते विद्याथों ते किल्लो सर करी नलकूबरने पकडी लीधो. सुदर्शन चक्र रावणने त्यांथी प्राप्त थयु. पछी नलकूबर नमी पड्यो एटले रावणे तेनुं नगर तेने पाळु सोंपी दीधुं.

पछी रावणे उपरंभाने कह्यं, ''तारा कूळने योग्य एवा तारा पितने ज तुं अंगीकार कर कारण के तें मने विद्यादान दीधुं एटले तुं तो मारे गुरुस्थाने छे. तेम ज परस्त्रीने हुं माता अने बहेनने ठेकाणे ज जोऊं छुं" आम कही तेने कलकूबर राजाने सोंपी.

दिव्य विद्याओनी जेम छळ-कपटथी तेना मालिकने बनावीने दिव्य वस्तुओनी प्राप्ति पण थाय छे. राजस्थाननी लोककथामां ''राजकुमारी फूलमदे''नी कथामां आ प्रकारना वृत्तान्तनुं निरूपण थयुं छे'. टूंकमां कथा आ प्रमाणे छे:

फूलमदे नामनी राजकुमारीने पोताना साहस अने पराक्रम वडे एक रजपूत जीतीने परणे छे. अने पोताने देश जवा नीकळें छे. रस्तामां एक जादुगर मळे छे. ते आ सुंदर राजकन्याने पोतानी पासे राखी जवानुं कहे छे, अने तेना बदलामां एक जादुइ गदा पोते तेने आपशे एम जणावी "आ गदा, तेनो मालिक जे प्रमाणे हुकम करशे ते प्रमाणे करशे." एम कह्यं. रजपूते हुकम कर्यों के, "जादुगरने मार", तरत ज गदा जादुगरने मारवा लागी. ड्यारे खूब मार खाधो त्यारे जादुगरे जादुइ गदा अने राजकुमारो बन्ने रजपूतने आपी दीधां.

सांजने टाणे बीजा गाममां बीजो एक जादुगर मळचो. तेणे पण रजपूतने राजकुमारीने पोतानी पासे राखी जवानुं कह्युं अने तेना बदलामां पोते जादुइ दोरड्डं तेने आपशे एम एम कही, "आ दोरड्डं हुकम थतां आखा सैन्यने कोइनी पण मदद विना बांधी शके छे." एम जणाव्युं. रजपूते तेनी पासे राजकुमारी मूकी अने जादुई दोरड्डं लई तरत ज तेने जादुगरने बांधी लेवानो हुकम कयों अने गदाने मार मारवानो हुकम कयों. खूब मार खांधी त्यारे बादुगरे दोरड्डं अने राजकुमारी बन्ने रजपूतने आपी दीधां.

त्यारबाद पोताना गामनो राजा के जे आ राजकुंवरी मागे छे, तेने पण जादुई गदा अने दोरडा वडे हरावी दे छे अने राजपाट भोगवे छे.

उपर प्रमाणेनी ज कथा, ''गुजरात तथा काठियावाड देशनी वारता'' मांनी ''बेलाराणी'' नामनी वार्तामां निरूपाइ छे. एमां एक राजकुमार पोतानी भाभीनुं महेणुं टाळवा बेलाराणी परणीने आवे छे त्यारे रस्तामां तेना बे गुरुओने आ बेलाराणी आपवाना बहाने छेतरी तेमनी पासेथी अनुक्रमे उपरनी कथा प्रमाणे ज, जादुइ सोटो अने दोरडुं लई ले छे.

<sup>?. &#</sup>x27;Princess Fulamde' From: 'Folktales from Rajasthan' - p. 47-51 -by Birla L. N.

२. 'गुजरात तथा काठियावाड देशनी वारता'—भाग २ जो. ए. १३०—१३४. सं. गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी तरफथी हीरालाल त्रिभोवनदास पारेख (आवृत्ति २ जी)

आ उपरांत बंगाळनी छोककथामां ''त्रण भाइओ'' नामनी वार्तीमां पण कंईक आवा ज प्रकारनुं कथानक कहेवायुं छे. कथा टूंकमां नीचे प्रमाणे छे:

त्रण भाईओ नसीब अजमाववा चाल्या. रस्तामां मोटा भाईने रूपुं अने वचेट भाईने सोनुं मळ्युं एटले तेओ घरे चाल्या गया. नाना भाईने रस्तामां एक जादुई रेशमी रूमाल मळ्यो, जेमांथी खाद्यपदार्थ खूटतां ज निह.

एक दिवस एक पहाडी माणसने तेणे दिव्य रूमालमांथी खाद्यपदार्थ काढी आप्या. एटले पेला पुरुषे रूमालना बदलामां तेने म्यानमां घालेली तलवार आपवानुं जणाव्युं अने कह्युं के, ''आ तलवारने म्यानमांथी खेंची बहार काढो, तेटली वार म्यानमांथी बार सहस्त्र योद्धाओ नीकळी तमारुं धारेलुं कार्य पार पाडरो.'' नाना भाईए रूमाल आपी तलवार लीधी, ने थोडे दूर जई म्यानमांथी तलवार बहार काढ़ी बार सहस्त्र योद्धाने बोलावी, पेला पुरुष पासेथी पोतानो दिव्य रूमाल पडावी लेवानुं जणाव्युं. तेओए तरत ज पेला पुरुष पासेथी रूमाल लावी आप्यो. आ ज प्रमाणे आगळ ते रूमालना बदलामां, दिव्य टोपी के जेने अवळी वाळी माथे पहेरवाथी चारे दिशामां मोटा अवाज थाय, तथा एक सींगडुं के जेने वगाडवाथी ज्यांसुधी तेनों अवाज संभळाय त्यां सुधीनी तमाम जमीन उपर एक पण झाडपान के घर रहे नहि—एम वे वस्तुओं ले छे अने पछी तलवार द्वारा सैनिकोने बोलावी ते बन्नेना मालिक पासेथी रूमाल पडावी ले छे. त्यारबाद आ दिव्य वस्तुओंनी मददथी ते राजानी राजकुमारीने परणी सुखी थाय छे.

आम जोई शकाय छे के "छळ-कपट द्वारा दिव्य विद्या के वस्तुनी प्राप्ति" नुं कथाघटक केटलीक कथाओमां निरूपायुं छे.

# (८) पिताथी विखूटा प<sup>डे</sup>ला पुत्रनुं अज्ञात पिता साथे युद्ध के स्पर्धा

पिताथी एकदम नानी वयमां पुत्र विख्टो पडे तेनां अनेक कारणो होय छे. पितना अणगमतां कार्यथी पत्नी पितने छोडी चाली जाय छे, साथे पोतानो नानी वयनो अणसमजु दीकरो
लेती जाय अने एम पितापुत्र विख्टा पडे. अथवा अकस्मात पित-पत्नी छूटा पडी जाय, त्यारबाद पत्नीने पुत्र जन्मे. आम पुत्रना जन्मथी ज पितापुत्र विख्टा होय. किदक पित कोई कारणवशात् पत्नीनो त्याग करे. त्यारबाद पत्नीने पुत्र जन्मे. आम त्यारे पण पुत्रना जन्मथी ज पिता
तेनाथी विख्टो होय छे. क्यारेक नानी वयमां ज पुत्रनुं अपहरण थतां पितापुत्र विख्टा पडी
जाय छे. क्वचित एम पण बने के राजा कोई कन्याने त्यां जई तेने परणे पछी अमुक दिवसी
तेनी साथे वितावी पोतानां राज्यमां पाछो आवे अने ते कन्याने भूली जाय. त्यारबाद कन्याने
दीकरो जन्मे. आम जन्मथी ज पुत्र-पिता विख्टा पडे छे.

आम विख्रा पडेला पिता-पुत्रनुं अचानक क्यांक मिलन थाय, ते प्रसंगे कदिक कोई बाबत परत्वे ते वे बच्चे विसंवाद थाय अने तेमांथी, परस्पर अजाण होई, युद्ध थाय. अथवा तो किदिक पिताथी विख्रा पडेलो पुत्र पोताना पिताने मळवा जाय, परंतु ते पहेलां पिताने पोताना पौरुषनी प्रतीति कराववा, तेमनी साथे युद्ध करी तेमने पराजय पमाडे, अने पछी पोतानी ओळखाण आपे. आम पिताथी विख्रा पडेला पुत्रनुं अणओळखायेल पिता साथे युद्ध थाय तेवुं निरूपण कथाबाहित्यनी अनेक कथाओमां थयेलुं आपणने प्राप्त थाय छे.

(ई. स. १९१९)

१. 'भारत लोककथा'-भाग ८मो-पृ. १५२-१५६. प्र. गुजराती प्रिन्टींग प्रेस.

रामायणमां लोकापवादना भयथी राम, सीतानो त्याग करे छे. त्यारबाद सीताने लव-कुश नामना पुत्रो थाय छे. आश्रममां ऊछरतां आ बालको रामनां अश्वमेध यज्ञमां घोडाने पकडे छे अने त्यारे राम अने लव-कुश—एक बीजाथी अणजाण एवा पिता-पुत्रो—वच्चे युद्ध थाय छे. रामायणनी आ सर्वविदित कथामां पित द्वारा परनीनो त्याग थाय छे. अने त्यारे बच्चे पुत्रोनो अन्म थाय छे. आ प्रमाणे अहीं पुत्रोना जन्मथी ज पिता तेनाथी विख्डा होय छे.

वि. सं. १४१० मां शालिभद्रसृरिए रचेला 'पंचपंडवचरित्र रासु'मां पण आ कथा-सार आम छे: हस्तिनापुरमां शांतनु नामे राजा हतो, तेने शिकारनो खूब शोख हतो. शिकार करतां एकबार शांतनु जंगलमां दूर नीकळी गयो. त्यां गंगाकिनारे वनमां एक मणिमय महेलमां जहुँ राजनी पुत्री गंगाने जोई तेने ते परण्यो. तेमने गांगेय नामे पुत्र थयो.

गंगाए राजाने शिकारनी लत छोडावबाना प्रयस्न कर्या, पण राजा न मान्यो. छेबटे राजाना शिकारशोखथी छेडायेली गंगा पुत्रने लई पियर चाली गई. आमने आम चोवीस वर्ष वीती गयां.

एकवार राजा शिकार करतो गंगातटे आवे छे. त्यां वे भाथां अने हाथमां धनुष्य हाई एक वीर बाळक आवे छे. राजाने ते पोते वननो रखेवाळां होई, वनना होकोने हैरान निह करवानी विनंति करे छे. पण राजा तेना वचननी अवगणना करेछे. छेवटे राजा अने बाळक वच्चे युद्ध थाय छे. युद्धनी वात जाणी बाळकनी माता गंगा आवे छे अने बाप-दीकरानी परस्पर ओळखाण करावे छे.

आम आ कथामां पत्नी, पितनो त्याग करी, नाना बाळकने रुई जाय छे अने एम पिता-पुत्र विख्टा पडे छे. त्यारबाद वर्षो बाद पिता-पुत्र वच्चे विसंवाद थतां युद्ध थाय छे.

आ उपरांत जैनसाहित्यनी प्रसिद्ध करकंडुनी कथामां पण आ प्रकारना ब्रुत्तान्तनुं निरूपण थयेंछं छे. परंतु तेमां पति-परनी अकस्माते छूटा पड़ी जाय छे अने त्यार बाद परनाने पुत्र जनमे छे. आम अहीं पण पुत्रना जन्मथी ज पिता छूटा पड़ी गया होय छे अने त्यारबाद पुत्र पण दैवयोगे राजा बनी पिता साथे अजाणतां युद्ध करें छे. कथा ट्रंकमा आम छे:

कलिंगदेशना राजा दिधवाहनने पद्मावती नामनी राणी हती. एकवार तेओ विहार करता हता तेवामां हाथी तोफानी बनतां बन्ने विख्टा पडी गया. त्यारबाद राणीए हताश बनी दीक्षा लीघी. ते पछी करकंडुनो जन्म थयो. दीक्षित साध्वीनो पुत्र एटले जन्मतां ज तेनो त्याग कर-वामा आव्यो. आम ए एक चांडाळना हाथमां आव्यो अने चांडाळपुत्र कहेवायो.

एक वार करकंडु अने तेना मित्रो रमता हता तेवामां एक चमत्कारिक दंड तेमना हाथमां आन्यो अने तेमांथी ब्राह्मणपुत्र साथे ते दंड कोने आपवो ते बाबतमां झघडो थयो. चांडाळो ब्राह्मणो साथे झघडे ए चलावी न लेवाय-ए हिसाबे करकंडुए नगर छोड्स्युं. दंडना प्रभावे करकंडु कांचनपुरनो राजा थयो.

आ बाजु दिधवाहने धारिणी नामनी स्त्री साथे लग्न कर्या. तेमने एक पुत्री जन्मी. दिधवा-हन अने शतानिक राजा वच्चेना युद्धमां दिधवाहनने नासवुं पड्युं. पण त्यारबाद दिधवाहनने

१. ''मध्यकालीन राससाहिय'' डॉ. भारती वैद्य, पृ. १८३-१८४.

२. अहीं ''शाकुन्तल'' ना दुष्यंतना तेना पुत्र साथेना मेलापनो प्रसंग याद आवे छे.

३ ''मध्यकालीन राससाहित्य'' डॉ. भारती वैद्य, पृष्ठांक ३५२-५३

प्रधान अने बीजाओनी मददथी राज्य मळ्युं. पण पछी द्विजपुत्रने दान आपवामा आवेला एक गाम संबंधमा एकबीजाने न पिलानता करकंडु अने दिधवाहन वच्चे युद्ध थयुं. त्यां साध्वीए आवीने पितापुत्रने परस्परनी ओळखाण आपी. दिधवाहने करकंडुने राजपाट सोंपी दीक्षा लीधी. पछी करकंडुए पण दीक्षा लोधी.

आ उपरांत उदयभानु कृत 'विक्रमचरित्र रास'मां पण आ प्रकारनुं कथानक आवे छे. जेमां राजा कन्याने परणी तेनी साथे थोडो वखत रही पछी पोताना राज्यमां चाल्यो जाय छे अने कन्याने भूली जाय छे. त्यारबाद कन्यानो पुत्र पोताना पिताना राज्यमां जई तेमने पोताना पौर- धनी प्रतीति कराववा अनेक पराक्रमो करे छे अने अंते पिताने मळे छे. टूंकमां कथा आ प्रमाणे छे:

उज्जैनीमां विक्रम नामे राजा हतो. तेणे स्वप्नमां लीलावती नामनी कन्याने जोई. त्यारबाद एक अवधूतना जणाब्या मुजब ते लीलावतीना देशमां जई युक्तिपूर्वक तेने परण्यो. त्यारबाद विक्रम छ मास त्यां रह्यो. दरमियान लीलावती गर्भवती थई. राजा घरे जवा तैयार थयो, त्यारे लीला-वतीने तेणे पाटडा उपर गाथामां नामठाम बधुं लखी आप्युं अने पछी-'तारा पुत्र सिवाय कोईने आ बात कहीश नहि'—एम कही उज्जैनी आवी राजपाट संभाळी लीधुं.

आ बाजु लीलावतीने पुत्र जन्म्यो. मोटो थतां 'न-बापो' कही निशाळियाए तेने महेणुं मार्युं. आशी मा पासे आवी तेणे बाप विषे पूछ्युं. माए विक्रमे दीघेली गाथा आपी अने कह्युं, 'ए मने धूतीने परणी गयां'. कुंवरे कह्युं, 'जो हुं तेने अनेक रीते धूतुं त्यारे ज तारो पुत्र खरो'. मातानी रजा लईने ते उज्जैनी आव्यो. त्यां चंपक नामना विणक साथे तेनी दोस्ती बंधाई अने तेनी मदद्यी तेणे युक्तिपूर्वक नापित अने कापिडियाने झघडाव्या. राजाए आ धूताराने पकडवा माटे इनाम काद्युं. तेनुं बीडुं अनुक्रमे जयराम नामना शेलोते, दामोदर नामना पुरोहिते, अने गाग नामनी वेश्याए झडप्युं. पण ते बधांने तेणे युक्तिपूर्वक हराव्या. अंते राजाए पोते तेने पकडवा बीडुं झडप्युं.

राजाए एक घोबीने बोलावी पोताना वस्त्रों घोवा आप्यां अने किल्लाना दरवानने कह्यं, 'मने पूछ्या विना कोईने बहार जवा देशों निहं'. कुंवरे आ बधुं जाण्युं अने ते घोबीने त्यां गयो. वहेली सवारे गधेडा उपर ल्याडां लादी घोबी जवा तैयार थयो. जेवो ते बाकीना बीजा लगडां लेवा अंदर गयों के तरत ज कुंवर गधेडुं हांकी गामनां दरवाजे उपडयों अने 'आ राजानां वस्त्रों छे' एम कही दरवाजो खोलाग्यों. एटलं ज निहं परंतु दरवाननां वस्त्रों पण साथे साथे लेतों गयों.

आ बाजु घोबीए बूमराण मचान्युं राजाए ज्यारे आ वात जाणी त्यारे ते तेनी पाछळ पड्यो. रस्तामां कु वरे गधेडाने हांकी मूक्युं अने सोड ताणी एक बाजु सूई गयो. राजाए आवीने पूछ्युं तो कह्युं, ''हुं प्रवासी छुं. में एक माणस अने गधेडाने अहींथी जतां जोयां छे अने ते नदीना पाणीमां जगयां छे'. आधी राजा घोडो बांधी, केड कसीने नदीना पाणीमां पडयो. एटले कुंवर बोडा पर चढो दरवाजे आन्यो अने दरवानने कह्यु के 'राजाना हुकम विना दरवाजो खोळीश नहीं. कदाच चोर पोते आवीने हुं राजा छुं एम कहे तो पण द्वार खोळीश नहिं.'

# भूमिका

राजा नदीमां जई जुए छे तो गधेडो छे पण माणस नथी. पोताने धूतारो मळयो जाणी राजा पाछो आन्यो अने दरवानने पोते राजा छे एम कही दरवाजो खालवा कहचुं पण दर-वाने तेने धूतारो धारी दरवाजो न खोल्यो. सवारे बधाए राजाने ओळख्यो.

राजाए पछी 'जो आ धूतारो मने आवीने मळे तो हु तेने मारुं अर्धु राज्य आएं.' एम कह्युं. एटले पछी कुंबर पोते आवी तेना परे पडियो अने कह्युं, ''तमे मारो माताने छेतरी तेना वेरमां में आखा नगरने छेतर्थुं छे '' राजाए खुदा थई तेने पोताना अर्घा सिंहासने बेसाइयो.'

आम आ कथामां विख्रा पडेला पिता-पुत्रनी वच्चे युद्ध नथी थतुं परंतु वे वच्चेनी युक्तिपूर्वकनी स्पर्धानुं मुंदर आलेखन थयेछुं छे. लगभग आवा ज प्रकारनी कथा कंइक विगतफेर साथे शामळ भट्टनी सिहासन बत्रीशीमांनी बारमी काविडयानी वार्तामां पण आलेखाई छे. तेमां पण आ ज प्रमाणे विख्रो पडेलो राजपुत्र पिताना राज्यमां जइ मालणनी मददथी सहदेव अने मूलदेव नामना पंडितोने, ललो अने पत्तो नामना हलवाइओने, वेश्याने अने छेल्ले राजाने युक्तिपूर्वक हरावे छे.

आ रीते जोई शकाय छे के विख्टा पडेला पिता—पुत्र कां तो परस्पर युद्ध करी कां तो एकबीजा साथे युक्तिपूर्वकर्नी स्पर्धा करी परस्परनो परिचय मेळवे छे.

#### उपसंहार

आम "प्रद्युम्नकुमार चुपई" ए वा. कमलशेखरनी एक गणनापत्र कृति छे. कर्तानी सर्जन-कृति अने कलाभिक्चिना आपणने तेमां दर्शन थया विना रहेतां नथी. उपरांत तेमां आवतां केट-लांक कथाघटकोनो अभ्यास करतां जणाशे के तेमांथी 'चित्र द्वारा अनुराग', 'मोटामाईनी इर्ध्या अने विजेता नानो माई', 'आळ-भ्रष्टाचारनु आळ' के 'परपुक्ष साथे छाना संबंध राखतो परनी' वगेरेनुं अध्ययन अनेक कृतिओने लक्षमां राखीने थयुं छे. आमांथी 'मोटामाईनी इर्ध्या अने विजेता नानाभाई' के "आळ" जेवां कथाघटकने लगती सामग्री भारतीय तेम ज इतर साहित्यमां अढ-ळक पडेली छे. बीजा कथाघटको जेवां के 'बेदरकार-बेध्यान पात्र द्वारा ऋषिमुनिना अनादर अने तेथी क्रोधित बनेला ते ऋषिमुनि द्वारा कराती शिक्षा', 'जन्मतां ज बालकनु अपहरण', 'छल-कपट द्वारा दिन्यविद्या के वस्तुनी प्राप्ति' के 'पितार्था विख्टा पडेला पुत्रनुं अज्ञात पिता साथे युद्ध के स्पर्धा'-माटे अल्प प्रमाणमां समांतर प्रयोगो मळेला छे. शक्य छे के साहित्यना अखुट मंडा-रमांथी आने लगती इतर अनेक कथाओ मळो आवे.

१. विक्रमचरित्र - कर्ता उदयभानु, संपा. ठाकोर बळवंतराय

# प्रद्युम्नकुमार-चुपई

# प्रद्युम्नकुमार-चुपई

# प्रथम सर्ग

# कृष्ण-रुक्मिणी-विवाह

दूहा

(स्तुति	)		
	श्री जिनवर सवि पय नमी	समरी सरसतिमाय	
	रास रचुं रलीयामणु	विल वंदी गुरुपाय	१
( प्रस्ताः	त्रना)		
g - 1	सरस कथा यादवतणी	कहिस्युं ते इक चितु	•
	कुमर पजूनह तेहतणुं	निसुणउ चारु चरितु	२
(सोरठदे	द्या – प्रशस्ति )		
	जंबूद्वीपमझारी वर	भरहखित सुपसिद्ध	
	तेहमांहि सोहइ भल्ल	सोरठदेस समिद्ध	3
यतः	तीर्थानि तटिनीतोयं त	हणी <sup>।</sup> तारलोचना ।	
	तांबुलं तोयधेर्रुक्ष्मीः स		
	जिहां तीरथ छइ अतिभला	श्री सेत्रुंज <sup>2</sup> गिरनार	
	अनेक मुनि-सिउ सिद्धि गया	<del>-</del>	8
	असंख कोडि सिद्धि गया	जां लगि जंबूकुमार	
	वली विशेष वांदीइ	ऊजलगिरि <sup>4</sup> अतिसार	ų
	त्रिणि कल्याणिक तिहां ह्यां	दिक्षा न्यान निरवाण	
	नेमजिणेसर शिक्षय-स्युं	सिद्ध ह्या इणि ठाण	Ę
(द्वारिका	ानगरीनुं वर्णन )		
	सोरठदेस-मांहि पुरी	द्वारमती सुचंग	
	अनेक नगरइ परवरी	दिसइ अतिहि उत्तंग	૭
1.	तुरुणी तारु 2. सेत्रुज	3. पंडरीक 4, ऊजलगरि	

#### प्रयुम्नकुमार-चुपई

यतः वापी विष्र विहार वर्ण विनता वाग्मी वर्न वाटिका विद्या त्राम्हण वारि वादि विद्युधा वेश्या विणग् वाहिनी । विद्या वीर विवेक वित्त विनया वार्चयमा विल्लका वस्त्रं वारण वाजि वेसर वरं राज्यं [व] वैः शोभते ॥२

गढ मढ मंडप धवलहर
जिनप्रतिमा-करी सोभती
कृष्णरायनइ तपि करी
सायरमझि द्वारिकपुरी
गढ कंचणमय दीपतु
मणिमाणिकमय सोभती
पोलि पोलि दीसइ मली
मणिमाणिक जड्या प्रवर

जिनमंदिर अतिसार
अमरावय-अवतार ८
रचीय धणवइ दिध
बारह जोयण किद्ध
पंचवन कोसीस
कणयकलस वर सीस १०
मोती वनरवाल
किमाडह चुसाल ११

दीसइ विविध । पिर आवास चउरासी चह्रटां सुविशाल विद्व दिसि सायर झलकई नीर चिहुं 2 दिसि सास्त्र भणइ झंकारु चोर चरड निव दीसई कोई धर्मवत माणस अतिघणा च्यारि वर्ण क्षत्री बंभणा वसइ राजकुली छत्रीस दसदसारकरि सोहइ राज त्रिण खंडनु श्रीकृष्णह राउ बंधव बलिभद्र कुमरह जोइ कोडि छपन्न यादव अवतार परिगह पूरी बइठउ राउ अगर सुगंध वास परिमलइ

चूपई मढ देउल मंदिर चउपास पुन्य-पवीत्र जिहां भली पोसाल १२ चिह्न दिसि रखवाल्ड सवि वीर चिहुं दिसि सोहइ पोलि पगारु १३ कोटिधज निवसइ तिहि लोइ छत्रीस पवन(?)जाति तेहतणा १४ वेश्य सुद्र कर्मिइ सुं घणा तिहि पुरि निवसइ यादवईस १५ पंचवीर नितु सारइ काज अरीयणदल भांजइ भडवाउ १६ तास बल नवि पूजइ कोइ साहण वाहण घणु खंधार १७ दल सामतन सुहइ ठाउ सोवनदंडइ चामर ढलइ 28

\$

<sup>1.</sup> विवध 2. चिंहं

वाजां पंचशब्द वाजंति भरहभावि नाचइ पग घरइ	घणी भाति पाउला पेखति ताल विनोद करी मनहरइ	१९		
(नारदऋषिनुं आगमन)				
हाथि कमंडल छित्री धरी	दर्भ पाटली साथिइं करी			
चडी विमांनि नारदरिक आइ	नयर देखी मनि आणंद थाइ	२०		
नमस्कार कीयु सारंगपाणि $^{ m 1}$	आसण बइसण दीया आणि			
<b>सदभावइ</b> पूछइ कृष्ण(म)हराज	तुम्हे पहूता किहांथी आज	२१		
अधोलोक जिनवर वंदेवि	गगनथकी हुं आविउ हेवि			
नगरी देखि उपनु भाउ	तुमइ मेटि यादवराउ	२२		
तु नारायण विनउ करेव	मल कीयु जउ आव्या देव			
गाम पवित्र हूउ ए सही	नारदरिखि पछइ गहगही	२३		
कुसलखेम सहकेनइ अछइ	देइ आसीस नइ उठिउ पछइ			
आवइ हरख धरीनइ जिहां	कृष्णतणी पटराणी तिहां	२४		
(सत्यभामा द्वारा नारदनो अनादर)				
तिहां सतिभांमा करइ शृंगार	कंठिइ पहिरइ नवसर हार			
नयणि रेख काजलनी करइ	तिलक ललाटिइ अपूरव धरइ	२५		
कांने झालि झबूकइ दोइ	रत्नजडित सइथु सिरि जोइ			
सोल श्रृंगार सयरि तिहां करइ	तेतलइ नारदरिखि संचरिइ	२ ६		
नारद हाथि कमंडल करी	कलाचरित्र किल देखइ फिरी			
सो सतभामा पीठ पेखीयु	दर्पणमांहि <sup>2</sup> रूप देखीयु	२७		
विपरीत रूप हरि दीठउ जाम	मनि विलखाणी सुंदरि ताम			
देखी कूड-कपट कीयु राउ	•	२८		
वडी नारि रखि ऊभउ रहिउ	करजोडी बइसु नवि कहिउ			
तउ रीस चांपी रे नारि		२९		
1. सारिगपाणि 2. दप्पर्णमांहि				

# (नार

(नारदनुं क्रोधपूर्वक चाल्या जवुं)		
नारदरिख चालिउ रीसाइ मनमांहि बयठउ चिंतइ इसिउ	सीगीपर्वति बइठउ जाइ किणिपरि मानमंग कीजि किसिउ	३०
कोपानिल परजलिउ मुणिद हरि पछितावु करिसिइ घणु	सिलतिल चांपु वेगि विछंद किणिपरि मानभंग एहतणउ	३१
रूपिइ एहथी अधिकी होइ नारद-चरित सुणउ सहुकोइ	हरिनइ परणावुं ते जोइ मानभंग सतिभामा होइ	३२
गाम-नगर सवि जोइ करी खिणमाहि फिरतु चिंतइ सोइ	दोहोत्तर सो खेचरपुरी <sup>1</sup> कुमरि सरूप न दीसइ कोइ	<b>3 3</b>
( कुंडनपुरमां नारदऋषिनुं आगमन		``
भमतु नारद आविउ तिहां	कुंडनपुर नगरी छइ जिहां	
मीषमराजा नयरीतणु	धर्म-नीम ते जाणइ घणु	३ ४
अति सरूप गुणलक्षणसार	बइठउ देखिउ रूपकुमार	
दृष्टि पसारी कहिउ मुनि सोइ	इणिइ अनुसारि जे कन्या होइ	३५
कर्मयोगि जउ जुडइ संयोग	तु हुइ नारायणनुं योग	

### ( रुक्मिणी-रूपवर्णन )

अति स्वरूप सवि लक्षण चंग सिसिवयणी नइ नयन कुरंग तेह समी स्त्री निव दीसइ कोइ हंसगित गयगमणी सोइ ३७

देखण गयु अंते उर भणी जिहां बइठी कुमरि रुखमिणी

### (नारदऋषि अने रुक्मिणीनुं मिलन)

नारद आवत जव देखीयु	नमस्कार तव सुंदरि कीयु	
देखि रुखमिणी बोलइ सोइ	तुं पटराणी हरिनी होइ	३८
रुखमीराइ दीघी रुखमिणी	ससपालराय मोटुं सुणी	
नयरि तेहनइ घणउ उछाह	लगन वधावइ करइ विवाह	३९

1. खेचरपुरि

३६

### जथम सर्ग

रिखिसिंउ सुदरि बोली ताम	हवइ बालणनु नहीं य ज ठाम	
जे अरिराय सुत क्षयनुं काल	ते परणवा आविउ सिसपाल	80
तां निसुणी नारदरिखि कहइ	त्रिखंडलोक सहु आन्या वहइ	
छप्पन <sup>1</sup> कोडि यादवनु नाह	ते मूकी कुण करइ वीवाह	8 \$
पूर्वकर्म न मेटइ कोइ	जेहनइ सिरजी परणइ सोइ	
यम रुहउ कुमरि वात आपणी	नारायण परणइ रुखमणी	४२
तव सुंदरि मनि ऊपनी रली	रखि अइमत्तनी वात ज मिली	
नारद निसुणि मइ वरीयु नाह	किणि जुगतिइ होसिइं वीवाह	४३
रिखि बोलइ तुम्हि एम सधरु	नागपूजण देहरइ संचरु	
नंदनवनमाहि करु सहेट	तिहां आणी करावुं मेट	8 8
तु जंपइ रुखमिणी कुमारि	किम उलखीइ कण्ह मुरारि <sup>2</sup>	
नारदरिखि कहइ सुणि अहिनाणि	संख चक्र जस दीसइ पाणि	४५
हरि पहिरणि पीतंबर जास	बंधव नीलवस्त्र हूइ तासु	
सारिंगधनुष करि जेहतणइ	ते नारायण नारद भणइ	४६
खरी वात कही रिखि जाइ	रुखमणिरूप पटिइ लिखाइ	
चिंड विमानि रिख आविउ तिहां	सभा नारायण बइठउ जिहां	४७
(नारदऋषिनुं श्रीकृष्णनी पासे पुन:	आगमन)	
हाथमांहि पट देखिउ जाम	हरि ऊखेली जोइ ताम	
रुखमणिरूप दीठउ जिसिइ	कामविवहरू हुउ तिसइ	85
	कइ मोहणि तिलोत्तमवणी	
कइ विद्याधरतणी कुमारि	कुणइ रूप सिखिउ संसारी	४९
नारद कहइ सुणउ तुम्ह राय	कुंडनपुरि छइ एहनु ठाय	
-	अनोपम रूपइ छइ रुखमिणी	
(कृष्ण द्वारा रुक्मिणीनी मागणी अ		)
<b>एह</b> वात जब कांने सुणी		^
दूतवचिन ते हसिउ कुमार	गापा हानकुलइ अवतार	५१
1. छप्पन्न 2. मुरिर		

# प्रदानकुमार-चुपई

É

अन्याइए भूंडुं । घणउ

कंसवधी इहां आविउ सुणउ मृढ मनोरथ मोटउ करइ उत्तम राय कुमरि किम वरइ

द्हा

हियउं मणोरह तं करइ जं करवा असमत्थ । सम्गिहि अंब मउरीयउ तांह पसारइ हत्थ ॥३

श्लोक

दास्ये मैथुनिकायामुं शिशुपालाय भूभुजे । उचितो ह्यनयोर्थोगो रोहिणीश्रशिनोरिव ॥४ इति श्रुत्वा स दृतोऽपि तद्वाचं परुषाक्षराम् । आगत्य कथयामास स्वामिने पीतवाससे ॥५

#### चउपई

माय तिम करु जिम हुइ एह विषम प्रीतिमेलापक जेह कृष्ण-अभिलाष माइ जाणीयु एक दूत प्रछन आणीयु कहि तु जईनइ यादवराय

एह वात रुखमणि सांभली धावि आगलि कही ते वली चीरी आपी लागी पाय

५३

५२

48

श्लोक

माघमासे सिताष्टम्यां नागपूजामिषादहम् । रुक्मिण्या सह निर्गत्य यास्याम्युद्यानवीथिकाम् ॥६ आगंतव्यं त्वया तत्र रुक्मिण्या चेत्प्रयोजनम् । अन्यथा शिशुपालोऽमूं परिणेष्यति मानद् ॥७ इतश्र शिशुपालः स आहृतस्तेन रुक्मिणा । उद्घोढुं रुक्मिणीमागात् संसैन्यः कुंडिनं पुरम् ।।८ तत्रायातं शिशुपालं रुविमणी-वरणोद्यतम् । कृष्णाय नारदः कलिकौतुकी ॥९ ज्ञापयामास

<sup>1.</sup> মূদ্ৰ

#### प्रथम सर्ग

#### चउपई

(	श्रीकृष्ण	तथा	बलदेवनुं	कुंडनपुर	तरफ	प्रस्थान 🕽	)
---	-----------	-----	----------	----------	-----	------------	---

हीयडइ हरख ऊपनु वली राइ वात सवे संभली रथिकारइ रथ खेडिउ तिसिइं राम सहित रथि बइठा जिसइ 44 वनमांहि नागभवनि जई रहा पवनवेगि कुंडनपुरि गया रथ छोडीनइ बेइठा जिसिइ द्तइ वात जाणावी तिसिइ ५ ६

# (रुक्मिणीनुं नागपूजन करवा जवुं)

मोतीमाणिक थाल भरेइ द्तवयणि रूपणि हरखेय घणी सहेली मेगी करी नागपूज करिवा संचरी ५७ उतावले पूजइ नागराय आवी वनमांहि घणइ उछाय पेखी नारायणनुं \* रूप उलखीय तिणि निजपति भूप 46

#### (रुक्मिणीहरण)

मूंहनइ लेयण आविउ एह तु रूपणि मनि गयु संदेह पवनवेगि रथ गयु तेतलइ रुखमणि रथि बइठी जेतलइ ५९ सहेलि धावि बूंबारव करइ धूतारा रुखमणिनइ हरइ रूंपीराय तव जाणी सार गाममांहि<sup>1</sup> जव गई पुकार ६०

# ( रुक्मीरायनी कुष्ण साथेना युद्धनी तैयारी )

कोपारूढ थयो असवार2 साहणतणउ नवि लहीइ पार मोटा मयगलनइ मदि भर्या तीखा तुरीय तुंग पाखर्घा ६१ पंचशब्द वाजां वाजंति राउ नीकलिउ पूठि तुरंति ते कुण लेई गयु रुखमणी सिसपालइ वात सवि सुणी ६२

## ( शिशुपालनी युद्ध-तैयारी )

तिणि कोपिइ बोलिउ नरेस तुरीय पल्हाणु वेगि असेस कोपारूढ सुहड रणि चडु रहवर सजु गयवर गडउ ६३

 मांहिं
 असवर \* नारायणनु 9

#### प्रधुम्नकुमार-चुपई

राउत करी सजउ हथीयार धनुषबाणनउ करिउ टंकार सिसपालनइ भीखमराइ बिइ दल पूठिइ वेगइ जाय ६४ घोडांखुरी खेह उछली गयणंगणि<sup>1</sup> जईनइ मिली तेणइ छाहिउ निव दीसइ भाण देखी सुंदरि कह सुजाण ६५

#### श्लोक

दृष्ट्वा च चिकता रुविमण्युवाचांकस्थिता हरिम् ।
क्रूरो महौजा मद्भ्राता शिश्चपालश्च तत्समः ॥१०
तद्गृद्धा बहवोऽन्येऽपि वीराः संवर्मिता इह ।
युवां त्वेकािकनावत्र तेन भीतािस्म का गतिः ॥११
हिसत्वा हरिरण्यूचे मा भेषीः क्षत्रिया द्यसि ।
केऽमी वराका रुवम्याद्याः पत्र्यादः सुभ्रु मद्बलम् ॥१२
इत्युक्त्वा तत्प्रत्ययार्थमर्थचंद्रेण शांगभृत् ।
तालालीमेकघातेन नालपंक्तिमिवाच्छिदत् ॥१३
अंगुलीयकवजं चांगुष्टांगुलिनिपीडनात् ।
दलयामास निर्भष्टमस्रकणलीलया ॥१४
तेन पत्योजसात्यंतं रुविमणी प्रमदं दथौ ।
पद्मनीव प्रभातार्कतेजसा विकचानना ॥१५

#### चउपई

सुंदरि तूं म करसि अंदोह	बल देखाडउ माहरु तोह	
सिसपाल रूपी दल घणुं	सघछुं हणुं कटक एहणुं	६६
पीहर स्वांमी माहरु एह	रुखमीराय राखेजो तेह	
बात कहता दल आविउ घणूं	ते देखी हीयुं रणझणउं	६७
वाजां वाजइ अति निसाण	कायरतणा तव पडइ पराण	
वाजइ नफेरी रणतूर	अति आवइ उजेणी सूर	६८

#### 1. गयणगणि

2

#### प्रथम सर्ग

बलिभद्र तुम्हे लेई जाउ वहु कृष्ण कहइ भाइसिउ बह पडिउ फेटि किम जाइ गोवाल तव धाई बोलीउ शिसुपाल ( श्रीकृष्ण अने शिशुपालनी वच्चे युद्ध ) वस्तु सेसपालह सेसपालह दिठ हरिराय जाणे विस्वानरि घत ढलिउ तेम चिहुंजण कोध उपनु धनुषबाण लेई करी पुन्ववयर मनमाहि सलिउं चोरी रूपणि लेइ गयु ए तइ करिउ उपाय किहां जासि तुं दृष्टिइं पडिउ तव भांजु भडवाय 90 चुपई दुष्ट वयण कांने सांभली कोपारुढ कृष्ण थयु वली धनुषबाण लीयु जव करिइं सिसपाल वीधिउ ते शिरइ ७१ दोइ पचारि वढइ दरवीर वरसइ बाण जिम जलहरनीर गदांइ गज रथ चूरंति कायर भागां दह दिसि जंति ७२ धणुह चडावी लिइं सिसुपाल पांच बाण नांख्या ततकाल नारायणनंइ नांखइ बाण तव नारायण करइ पराण ७३ बेहु राय वढइ रणि वीर बिमणां बिमणां नांखइ तीर दडातणी परि शिर<sup>2</sup> रडवडइ पुहवि न सूझइ तीरह पडइ 08 हाथि चक्र फेरी पेसीयं छेदी सीसनइ हरिनइ दीय विषम झूझ इहां न्हासूं नीठ रुधिरनदी जव वहती दीठ 94 कहइ रुखमणी कृष्णसिउ आय राखु रूपचंदनइ ताय शांति करू छांडु मनवयर आपुं कुंडनपुर वरनयर ७६ संदरिवचनि करिउ पसाय छोडि मेरिहउ मीखमराय रूपचंद पगि लागी करी आविउ नयरिइ कुंडनपुरी ७७ (वनमां श्रीकृष्ण अने रुक्मिणीना विवाह) चालिउ हलधर हरि लेइ नारि दीठउ मंडप वनह मझारि वृक्ष अशोकनी शीतळ छांह च्यारइ जाइ पहुता तिहां 196

1. जांति

1 (इं र )

#### प्रधुम्तकुमार-चुपई

१०
•
•

तव त्रिहुं मिन हुउ उछाह लगन आज छइ करु वीवाह महूयरसाद ते मंगलच्यार सूया वेद पढइ झंकार ७९ मडप रचीउ फ्लइ जाइ बलिभद्र दीइ हथवेलउ आंय पाणिमहण करी रुखमिणी वनमइ वसी वात कही घणी ८०

श्लोक

वभाषे रुक्मिणी कृष्णं पत्न्यस्तव महर्द्धयः । प्रदत्ताः पितृभिः संति सहायातपरिच्छदाः ॥१६ एकाकिन्यहमानीता बंदीव भवता प्रिय । हसनीया यथा तासां न भवामि तथा कुरु ॥१७ करिष्ये त्वां तद्धिकामित्युक्त्वा रुक्मिणीं स्वयम् । सत्यभामागृहाभ्यर्णप्रासादेऽमुंचदच्युतः ॥१८

#### चुपई

## (श्रीकृष्णनं रुक्मिणीनी साथे द्वारिका-आगमन)

नारायण परणी पुरि गयु गूडी बांघी घरि घरि बारि	छपनकोडि नइ आनंद थयु मंगल गावइ सूहवि नारि	८१
रूपणिसिउं श्रीकृष्णमुरारि देखी लोक जय जय भणइ (सत्यभामाना दूतनुं निवेदन)	हसतां पयठां नयरमझारि बे पहुंता मंदिरि आपणइ	८२
(सत्यमामागा पूत्रमु । गयद्ग )		
सर्व विवस स्त्री भोग करंति	सतिभामानी छाडी विति	
तिणि दुखि करी विरुखी खरी	सुकि-साल दुख ते सांभली 🧪	८३
सतिभामाइ दूति मोकली	सुणउ बलिभद्र वात एतली	
कवण दोस ते कवण विचारि	सुद्धि न पुंछइ कृष्णमुरारि	<b>८</b> 8
सुणी वात हलधर गयां तिहां	राय नारायण बइठा जिहां	
हुसां वात वीनती घणी	सार करु सतिभामातणी	64

## (फूब्ण द्वारा सत्यभामानो उपहास)

तव नारायण करइ कुताल	रुखमणिनु लीयु उगाल	
गांठि बांघि संपनु तिहां	सतिभामा मंदिर छइ जिहां	८६
सतिभामा हरि दीठउ नयणि	रुदन करइ न बोलइ वयणि	
कहि वात बहू परि सांभरी	कवण दोसि स्वामी परहरी	८७
	दूहा	
हरि समझावी नारिनय	मधुरां वयण कहेइ	
कपटरूप निद्रा करइ	सेजतिल गंठि घरेइ	66
गांठि झूलती देखी करि	सतिभामा छोडंति	
सुगंध <sup>।</sup> परिमल महमहइ	सयल अंगि विलपंति	८९
अंगि लगाडिउ देखि करि	इम बोलइ गोपाल	
राणी तुम्हे ए सिउं करु	रुखमणितणउ उगारु	90
सतिभामा विरुखी वदनि	हरिनइ कहइ ततकाल	
तुम्हे कूड़ कपटी हुआ	ए मम बहिनि उगाल	९ १
(संत्यभामा द्वारा रुक्मिणी साथे मे	ळाप कराववानो प्रस्ताव)	
गंधरवीवीवाह करी	जे तम्हि आणी नारि	
रूप अनोपम तेहनु	जोईइ कृष्णमुरारि	९२
कहु केहनइ पगि लागसि	इ बोल्ड गोपीराय	
सतिभामा कहइ हूं वडी	लागइ माहरइ पाय	९३
मुझ मनि अति उमाहळुं	देखण रुखमणिरूप	
वनमांहि श्रीधरि मेलसिउ	इम कही चालि भूप	6.8
(श्रीकृष्णनी प्रयुक्ति - सत्यभामा अ	ने रुक्मिणीनुं मिलन)	
नारायण उठी गया	नारी रुखमणि पासि	
वाडी बहु मीतिर फर्ली	चालु देखण जासि	९५
सुस्वासणि चडी आवीया	लिखिमीतणइ भुवनि	
स्वेतवस्र आभरणसिउ	सोहइ रूपणि तन	९६

श्री-प्रतिमा लेंड करी	बइसारी तिणि ठांमि	
मूंन करी बइसी रहु	हुं जइ आवूं ताम	९७
सतिभामानइ हरि कहइ	जायो वनहमझारि	
हूं लेई आवुं छुं तिहां	राणी रुखमणि नारि	९८
	चुपई	
पाछउ आवी हरि तिहां थकी	किमाडंतरि रहिउ ते ॡकी	
सतिभामा सजाई करी	सखी सहित जाइ परवरी	९९
वाविइ हाथपाय घोइ जिसिइ	मालिण फूल लेई आवी तिसिइं	
लेई पुष्फ जव देहरइ जाइ	पूजी पुिफ-फलि प्रणमइ पाय	१००
देवि सुहासणि मुझनइ करे	जिम मानइ यादव अतिखरे	
रूप अनोपम करु मुझतणुं	पागि लागी माय मार्गू घणुं	१०१
तव हरि हरखिइ हड हड <sup>।</sup> हसई <sup>2</sup>	तालोटा देई कर दोइ घसइ	
सतिभामा कहइ इम कांइ राय	वार वार तु लागइ पाय	१०२
पहनी भगति करे तूं घणी	इणइ थांनइ बइठी रुखमिणी	
विलखवदनि बोलइ सतिभाय	सिउं थयु जउ लागी पाय	१०३
कूड-कुबुद्धि करु तुम्हि घणी	ए बहिनि माहरी रुखमिणी	
राति-दिवस कत्रूहल करु	गोवाल टेव न जाइं परु	१०४
रुखमणिसिउ सतिभामा मिली	बिइ आव्यां आवासिइ वली	
सवि सुख भुंजइ भोगविलास	भोग पुरंदर लीलविलास	१०५
प्रणम सर्गि <sup>3</sup> परणी रुखमिणी	कृष्णतणी वात कह घणी	
बीजउ सर्ग4 जंबुवतितणु	वाचक कमलशेखर कहइ सुणु <sup>5</sup>	१०६

<sup>1.</sup> वच्चे वधारानो 'इ' छे, ते काढी लीबो छे. 2. हस्यइ 3. स्वर्धि 4. स्वर्ध

<sup>5.</sup> अंते : कृष्णेन रुखमिणी परणीत नाम प्रथम स्वर्ध.

## द्वितीय सर्ग

## जांबुवती-पाणिग्रहण

श्लोक

कृष्णेनान्येद्युरायातो नाखोऽभ्यर्च्य भाषितः । किं इन्टं किंचिदाश्र्यं अमिस त्वं हि तत्कृते ॥१९ नारदोऽप्यज्ञवीद् दृष्टं श्रृणु वैताद्वयपर्वते । जांबवान् खेचरेन्द्रोऽस्ति शिवचन्द्रा च तत्त्रिया ॥२० विष्वक्सेनस्तयोः सूनुः कन्या जांबवती पुनः । रूपेण तस्याः सदृशी न कापि त्रिजगत्यपि ॥२१

#### चुपई1

एणइ वचिन नारायण हसी	कहइ वात ते मन उल
गगनिथकी किम परणी जाइ	ते परण्या विण सुख न
तव नारद कहइ हरिनइ हसी	खेलण गंगा आवइ धर
तिहां जइनइ परणु राय	बल न हुइ तु बइसु ट
ते सांभल्टि सपराणुं थयु	गज-रथ-तुरंगम-दल लेई
जांबवती तव दीठी नारि	एह सरखी नवि इणि
कही नारदरिख जेहवी	मय दीठी कुमरी तेहवी
हरी नारिनइ चालिइ जिसिइ	राय जोवानइ आविउ
हण हण करी हकारिउ घणुं	कृष्ण देखि बल धाइ
<b>कृष्णराइ</b> विल ते सिव हणी	जांबराय कीधु <b>रे</b> वणी
दुख वइरागिइं संजिम लीइ	कर्म वाछित तप करि
विषसेन आविउ घण भाइ	कृष्णरायना प्रणमइ पाय
जांबुवतीनइ परणी करी	पहुता नयर द्वारिका <b>पु</b> री
रुखमणिनइ पासइ आवासि	जांबवती मेल्ही ते पासि
बहिनपणा बेहुजिणीइ कीध	कृष्णमुरारइ मांन घण
<b>बीजइ स</b> र्गि <sup>3</sup> जांबुवती हुइ	श्रीजइ वात <b>कहुं</b> जूजूइ⁴
1 2	्र विकास का क्षेत्रक की व्यक्तिस्काल

कहइ वात ते मन उल्हसी	
ते परण्या विण सुख नवि थाइ	१०७
खेलण गंगा आवइ धसी	
बल न हुइ तु बइसु ठाय $^2$	१०८
गज-रथ-तुरंगम-दल लेई ग्यु	
एह सरखी निव इणि संसारि	१०९
मय दीठी कुमरी तेहवी	
राय जोवानइ आविउ तिसिइं	११०
कृष्ण देखि बल धाइ आपणुं	
जांबराय कीधु रेवणी	१११
कर्म वाछित तप करि पालीइं	
कृष्णरायना प्रणमइ पाय	११२
पहुता नयर द्वारिकापुरी	
जांबवती मेल्ही ते पासि	११३
कृष्णमुरारइ मांन घण दीध	
श्रीजइ वात कहुं जूजूइ <sup>4</sup>	११४

तृतीय सर्ग प्रद्युग्नकुमार-विद्याग्रहण, रुविमणी-मिलन

(रुक्मिणी अने सत्यभामाने पुत्ररत्ननी प्राप्ति) (स्वप्न)

	चुपई	
मनुषतणा सुख अति भोगवइ रूपणि सुपन वृषभ पेखंति	नारि बिऊंनइ गर्भे ज हवइ चडी हुं अमर-विमानइ भंति	११५
कृष्णरायनइ रुखमणि कहउ सुणि सुंदरि सुपन अणुसारि	रयणमिझ सुपनांतर लहिउं	११६
(सत्यभामानुं स्वप्नविषे असत्य-क	थन )	
सुपनवात दासीइ सांभली एह वात मनमाहि घरी	सतिभामा आगिल कही वली कलपित स्वप्न कहइ ते करी	११७
स्वामी सुणउ सुपन मइ दीठ तं निसुणी कहइ कृष्णमुरारि	मोटउ मयगल मुखि पइठ कुमर होसिइं तुम्ह घरबारि	११८
(रुक्मिणी-सत्यभामा वच्चे शरत)		
सतिभामा-रुखमणि बिइ जिणी	वातचाट करइ पुत्रहतणी	
सो हारइ जसु पाछइ होइ सतिभामा-रुखमणि भाखीयु	ते सिर मूंडी वीवाहइ सोइ बिलभद्र तिहां कीधु साखीयु	११९
ं तुम्हे केहनी म करु कांणि	हारइ ते शिर मूंडी आंणि	१२०
(कौरवना दृतनुं आगमन)		
सभा <sup>1</sup> नारायण बइठउ जिहा तुम्ह घरि जेठउ नंदन होइ	दूत कुरवनु आवि तिहां कुरवपुत्री परणइ सोइं	. १ २ १
1. सुभा		

(बन्ने राणीओने पुत्रजन्म)			
ंमास गर्भना ह्या संपन	रुखमणि जायु पुत्र एक दिन		
लक्षणवंत दीठउ कुमार	दासि आवी जणावी सार	१२२	
पेटि इसूकु पडीयु जिसिइं	सतिभामा पुत्र जनमिउ तिसिइं		
बिहुंना दूत गया जेतलइ	सूता कृष्ण दीठा तेतलइ	१२३	
(ज्येष्ठ पुत्र तरीके रुक्सियणीनो पुत्र	r)		
सतभामा-दृत उसीस रहिउ	रुखमणि-दृत पाग-तिल गयउ		
हरि जागिउ तव दीठउ नयणि	मांगइ वधाई मधुरे <sup>।</sup> वयणि	१२४	
पहिछं हरि हरखीनेइ दीइ	रुखमणिदूत करजोडी लीइ		
पछइ वधाइ बीजु दीध	भाइ वडु रूपणि-सुत कीध	१२५	
(पुत्रजन्म-महोत्सव)			
् विंहुं नारिनय नंदन हुया	आवइ घरि वधावा जूया		
नारी गावइ मंगल च्यारि	बांभण वेद भणइ झंकार	१२६	
वाजइ मेरि तूर कंसाल	वाजइ संख मधुरस्वरि ताल		
वाजइ धपमप मधुर मृदंग	घरि घरि उछव नव नव रंग	१२७	
(धूमकेतु द्वारा प्रद्यम्ननुं हरण)			
छइठी राति सनि जागइ जाम	कृष्णराय पहुता ताम		
आवी सिंहासणि बइठा जिसिइं	खोलइ पुत्र लेई मूकिउ तिसिइ	१२८	
जोइ रूप तव अद्योतह थयुं	प्रद्युम नाम गोपालइ कहिउं		
हरि ह्लावइ जव करि धरी	बाल धूमकेतु ले गयु हरी	१२९	
हरि जाणइ धावि लेई गई			
ूधूमकेतु चालीउ ते प्रही <sup>2</sup>	मारी नांखु समद्रिइ सही	१३०	
सिला एक बावन गजतणी			
रीसइ नांखिउ तेह ज बाल	उपरि सिला मेल्ही ततकाल	१३१	

1. मुधुरे

2, गृही

पूरवकर्म न मेटइ कोइ	कर्म्म करइ ते निश्चिइ होइ	
रुखमणि जागीनइ कह वली	आपु पुत्र जिम पुजइ रही	१३२
	वस्तु	
रयणी छठी रयणी छठी	हरिंउ परदवण	
वासदेव तव इम कहइ	तम्हे पुत्र लेइ गया कवणह	
रूपणि तव कारण कहइ	स्वामि एम म कहु वयणह	
एह हांसु <sup>1</sup> कीजय नही	स्वांमी आपु बाल	
सही को वयरी लइ गयु	इम बोलइ गोपाल	१३३
कहइ कु <sup>ट</sup> ण कहइ कुट्ण	सुणउ बलिभद्र	
छपनु कोडि यादव तुम्हे	नयरमिझ देखणह जायु	
गाम नयर पुर पाटणह	वात सुणी किहां प्रगट थाउ	
यादव जइ जोयु घणुं	किहां नवि दिठ कुमार	
सह़् आवी हरिनइ कहइ	अम्हे नवि लाघी सार	१३४
	चुपई	
सुणी वात रुखमणिसुत गयु	सतिभामानइ आंणंद थयुं	
सुकीला (?) मुझटलीयुं साल	इम नाची वझावइ गाल	१३५
	श <del>्लो</del> क	
यतः भोजने रंजितो विश	ः मयुरा घनगर्जिते ।	
_	खलौ च विकलीयति (?) ॥२२	
(विद्याधर संवररायने प्रद्युम्नकुमार	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	
वैताढ्यपर्वतनइ बिहुं पासि		
मेघकूट छइ ते मांहि देस		१३६
·		149
बारहसइ विद्या जेह पासि		0 7
एक दिन यात्रा जाइ तिहां	-	१३७
खिलें विमान न जाइ किमइ		
क्षण उंची क्षण नीची थाय	ऊतरि विमानथी देखण जाइ	१३८
1. हांसुं 2. छंइ		

6		
सिल उपाडी विद्याबलइ	देखइ कुमर पडिउ सिलतलइ	
राइ कुमर लीधु ततकाल	कनकमालनइ आउ बाल	१३९
लक्षण बत्रीसइ दीठां अंगि	राणी कुमर लीयु उछंगि	
धर्मपुत्र राजाइ कहिउ	विमानि चडी आविउ गहगहिउ	<b>{80</b>
नयरमांहि घणु उछव कीधु	प्रयुमनकुमर नाम तसु दीधु	
अति सरूप अति लक्षणसार	अति वाल्हु प्रद्युमनकुमार	१४१
( प्रद्युम्नकुमारनी विद्यासाधना )		
बीजचंद जिम तिम विध गयु <sup>1</sup>	वरस सातनु <sup>2</sup> बालक थयु	
नेसालइ मूंकीउ भणवा भणी	कला बहुत्तरी आवी सुणी	१४२
भरह पिंगल न्याकरण सुछंदि	शास्त्र भण्या मननइ आंणंदि	
जैन-आगम सांभलीयां घणां	मत जांण्या खटदर्शनतणां	१४३
धनुषबाण झाली करवाल	सिंधझझ करइ देई फाल	
लंडण-भडण पइसार नीसार <sup>3</sup>	सवि जाणइ प्रद्यमनकुमार	<b> </b>
कुंमर पांचसइ मांहि प्रधान	वाधिउ कुमर थयु रूप-निधान	
जिमसंवर देखी हरखंति	वली कथा द्वारिका जंति	१४५
(पुत्र-वियोगिनी रुक्मिणीनो विला	प)	
	ढाल	
रयण दिवसि रोय रुखमिणी	पुत्रतणइ वियोगि	
मुझनइ दुख ए सही ह्र्युं	हिव करम संयोगि	१४६
माहरइ पोतइ पुन्य नहीं <sup>4</sup>	जे हुं पेखुं बाल	
तव सतिभामा आवी कहइ	फल लहिउ ततकालमाहरइ.	
	आंकणी <sup>5</sup>	१४७
मणूयजनम पामी करी	मइ न कीयु धर्म	
बालक माइ विछोहीनइ		885
कइ मइ पुरुष विछोहीया	कय विछोही नारि	
तिणि दुसइ हुं दुखणी	एणइ संसारीमा.	१४९
1. गय 2. सांतनु 3. नी	सारं 4. नही 5. आकणी	

१५०
१५१
१५२
१५३
१५४
0.1.45-
१५४क
<i>र प</i> ४क
<b>र ५४४</b> क
१५५
·
·
<b>શ્પ્ર</b> પ્
<b>શ્પ્ર</b> પ્

<sup>1.</sup> आ दूंहो 'जैन गुर्जर कविओ—भाग १ लो ', पृ. २७२ उपर आपेलो छे, ते प्रमाणे अहीं म्केलो छे. मूळ हस्तप्रतमां आ दूहो नीचे प्रमाणे लखेलो छे:

दृज्जणजण बबूलवण जु सींचु अमीयेण। तुही ते कंटाभाजणा जातिइं तणइ गुणेण।।

	विलखवदिन हरि पेखि करि रुखमणि घरि आवी कहइ	उठिउ नारद ताम वार वार सिरनांम	146
		चुपई	
	कंदलकुतिग पेखइ घणा	देसविदेस करावइ घणा	
	एह्वु आविउ नारद तिहां	मनि विलखाणी रूपणि जिहां	१५९
	आविउ नारद दीठउ जिसिइ	रूपणि रोवा लागी तिसिइ	
	एक पुत्र माहरइ जे थयु	न जाणूं कोई लेई गयु	१६०
	करजोडी वीनवइ रुखमणी	स्वामी सुद्धि कहु सुततणी	
	नारद कहइ अइमतु केवली	पूछउ तुम्हे जईनई वली	१६१
	रुखमणि कहइ ते सिद्धिइं गयु		7
	नारद कहइ अछइ मांहाविदेव(ह)	सीमंधिर जिन देवहदेव	१६२
( न	ारदनुं महाविदेहक्षेत्रमां सीसंघर	स्वामी पासे गमन)	
	नारद कहइ हूं जाई तिहां	पूछी आवुं सघऌ इहा	
	तु नारद तव तिहांथी गयु	सीमंधिरनइ केवल थयु	१६३
	नारद समोसरणि जव जाइ	घणु अचंभु <sup>1</sup> देखी थाय	
	चक्रवर्ति <sup>2</sup> मुनि प्छइ तिहां	एहवा माणसु पुए जइ किहां?	१६४
(₹	ीमंधरस्वामीकथित प्रद्युम्नहरणन	ो वृत्तान्त)	
	जंबूदीवि भरहिखत वसेस	धर्मवंत तिहां सोरठ <b>दे</b> स	
	नगरशिरोमणि द्वारिकापुरी	सागरमाझ देवे करी	१६५
	वासदेव नारायण जिहां	एहवां माणस उपजइ तिहां	
	नारायणि राणी रुखमिणी	धर्मवात ते जाणइ घणी	१६६
	तेहनइ पुत्र एक जव थयु	धूमकेत सुर लेई गयु	,
	चांपि तेउ शल लेई तलइ	मृखिइ तरसिंइ ते टलवलइ	१६७
	पूरवजन्म वयर सांभरी	धूमकेत चालिउ इम करी	•
	तेतल्र आविउ संवरराय	कुमर देखि लीयु घणइ उछाहि	१६८
	1 ਮੜੇਮ 2 ਜਕਰੂਰਿੰ		

<sup>1.</sup> अंचंभु 2. चकवृतिं.

तेहनइ राणी छइ कणयमाल धर्मपुत्र करिथापिउ तेह

आणी आपिउ तेहनइ बाल वात कही ते स्वामी एह

१६९

## ( प्रशुम्नना पूर्ववृत्तान्त विषे नारदनो प्रश्न )

श्लोक

# कथं वैरं धूमकेतोस्तेनाभृत्यूर्वजन्मनि । भूयोऽपि नारदेनेवं पृष्टः स्वामीत्यवोचत ॥२४

(प्रश्रुम्नकुमारना पूर्वभवो १. अग्निभृति – वायुभृतिनो भव)

ज़्बुद्वीप भर(त)खेत्रह ठाम मगधदेसि मोटं सालिगाम मनोरम नामि वन अभिराम वसइ वासि विप्रह सोमदेव नाम १७० अगनिज्वाल तेहनी स्त्री अछइ तेणइ पुत्र बिइं जाया पछइ अगनिभूति-वायभूति कुमार विद्यावेद पढ्या ते सार १७१ लोकमांहि प्रसिद्ध हुया भोग भोगवइ अति घणा<sup>2</sup> जूया एह्वी विप्र सुणी चीनती इणि अवसरि पहुता वनि जती १७२ वाच सिउं जाणु शास्त्रह तणी तिहां आव्या वाद करवा भणी पूर्वभवि अम्हि कुण ह्या उभिइं जाणहु तु कहु अम्ह प्रतिइं १७३ (२. शियाळवानो भव) तव चेळ बोलिउ ततकाल तुम्हे पूरवभवि ह्या सयाल आ चांबड<sup>3</sup> खाधउ हिल बांधिउं जे हाली तण् १७४ विप्रतणइ घरि पुत्र तुह्ये हूया अति आरतइ बेहु मूया न मानु तउ कहुं अहिनाण पूछउ हाली मूकउ जाण १७५ मूकी जइ पूछिउं 4 ते वली मुकु कहइ मइ सांभली जातीसमरण उपनमोहि साचुं कहिउं इणि न्यानी तो हि १७६ 1. पदच 2. ঘण 3. चाबड **4.** मछिं उ

मुकु कहइ माहरा हरुतणुं	सीयाले चांबड खाधुं <sup>।</sup> घणुं	
तिहां म्या इहां अवतर्या	***	१७७
(त्रीजो, चोथो, पांचमो अने छठ्ठो ।	मव )	
विप्र द्वेषि मारण आवीया	रयणदेवइ ते थंभीया	
तिहां बिहुं लीयू चारित्र सार	त्रीजइ भवि सोहम अवतार	१७८
चउथइ भवि सेठपुत्रह होइ	पूर्णभद्र माणिभद्रह जोई	
लेई चारित्र सोहमि सुर हुया	रायपुत्र छठइ भवि जूया	१७९
(मधु-केटभनो भव)		
मधु-कीटभ बि भाई थया <sup>2</sup>	तव वयरी सवि नासी गया	
राजाइ कीधु मधुराय	सह्र आवीनइ प्रणमइ पाय	१८०
कीटभनइ पद दीयुं युवराज	बिहूं मिलीनइ सारइ काज	
ब्राह्मण सोमदेवनु जीव	कनकरथ राजा हूउ कीव	१८१
अगनिज्वाला-जीव सो ईहां जोइ	चंद्राभा तसु राणी होइ	
एक दी कनकराय <sup>3</sup> हित करी	मधुराजा <sup>4</sup> तेंडिउ नहुंतरी	१८२
भोजिन घणी भगति अति करी	मधु लेई गयु चंद्राभा हरी	
राणी चंद्राभातणइ वियोगि	कनकरथिराइ छांड्या भोग	१८३
तापस थईनइ भूखइ मूउ	धूमकेतदेव जोतिष हूउ	
मधु—चंद्राभा वाद करी	मधु–कीटभसिउ चारित्र वरी	<b>\$</b> < 8
सुक सातमइ देव सुजाण	बेहूं ह्या इंद्र समाण	
मधु-सुर-जीव रूपणि-सूत हुउ	धूमकेत स्त्री-वयर लेई गयुं	१८५
सीमंधिर कहइ रखि तुम्हि सुणउ	मायपुत्र वियोग घणउ	
सोल वरस जव जाई वही	रुखमणि पुत्र मिलइ ते सही	१८६
( रुक्मिणीना पूर्वभवो )		
पूरवि भवि कर्म बांध्या घणा	रुखमणि फल लाधा तेहतणां	
कहु स्वामी किणि परि बांधीयां <sup>ऽ</sup>	सांभलि रिखि इण परि सांधीया	१८७
1. खाध 2. थाया 3. क	—— लकराय 4. मघराजा 5. बांधय	İ

जंब्द्बीप भरहखित्तह ठांम सोमदेव तिहा <sup>?</sup> विप्रह होइ	मगधदेस <sup>।</sup> लक्ष्मी तिहि गाम तस घरणी लिखिमीवती जोइ	१८८
एकवार ते विनह मझारि	लिखिमीवती आवी ते नारि	·
वनमांहि अति क्रीडा करी पीला इंडां <sup>4</sup> मेल्ही करी	मयूरांड <sup>3</sup> ते हाथइ घरी भवण भणी जावा सांचरी	१८९
तेतलइ आवी माय मयूरी	इंडां <sup>5</sup> देखी पाखिल फिरी	१९०
कों कों करती पासइ फिरइ	इंडां <sup>5</sup> उपरि नवि अणसरइ	
पासू नवि मेल्हइ एकइ घडी	वार वार जोइ बापडी	१९१
सोल घडी हुई जेतलइ	धाराधर वूठइ तेतलइ	
घोवाणां इंडां <sup>7</sup> जेतलइ	उलिख ऊपरि वइठी तिसिइ	१९२
इंडां <sup>8</sup> सेन्यां <sup>9</sup> सोले घडी	मयूरी अति हरखइ चडी	
क्रमि क्रमि ईंडांथी ते हूउं	मोर एक अनोपम जूउ	१९३
लिखिमीवती ते आवी वली	देखी मोरनइं घणूं ऊछली	
ळीयु मोर न लाई वार	मयूरी <sup>10</sup> तव करइ पुकार	१९४
लेई मोरनइ ते घरि गई	पूठिइ धाइ मयूरी थई	
मोर पांजरइ घालीउ जिसिइं	मयूरी फेरा दिइं तिसइं	१९५
कों कों शबद करीनइ रोइ	लोक घणा आवी तिहां जोइ	
माय-पुत्रनुं घणु संनेह	खिणि खिणि आवां देखइ तेह	१९६
मयूरी न मेरुहइ पंजरुं	दिवस-राति पुत्र खरखरुं	
लोक घणा आव्या मिली	मूंकि मोर पहुचइ मन रली	१९७
सोलमास राखिउ ते मोर	बांधा कर्म तिहि अतिहि कठोर	
सोलमासनां सोल वर्ष थीयां	मोर-मयूरी वनमांहि गयां	१९८
लिखिमीवती इम बांधिउं कर्म	नवि जाणिउं ते धरमह मर्म	
चाली एकदा निज भुवनि उदार	हारइ <sup>11</sup> पहिरइ ते सिणगार	१९९
1 2 0 0 :	·	

मगधदेश
 6-7-8 ईडां
 सोव्या

 <sup>3.</sup> मूयूरांड
 4-5. इडा

 10. मोयूरी
 11. हरइ

मुनिवर सुमतिगुप्त 1 आवीय रे रे मलिन जा तुं परहुं (१) थूं थुकार2 तिणि माहणिनि कीयु दुगंछाकर्महतण् फल अगनिमांहि पइसीनइ मूंई विल मुई ते भारइ करी चुथइ भवि थई कूतिरी भरुचिछ नयरि नदी नरबदा दुर्गधा दोभागिण क्काण (?) तेणइ दुर्गीध न रहइ कोइ धीवरि अलगू घर ते करी मोटी बईरि जव ते हुई वाही नाव आजीवका करइ समाधिगुप्तमुनि विहारह करी कंठि आवी काउसग्ग करिउ दुर्ग घा दीठउ धीवरी दया उपनी ते रिखितणी वींटी मुनिवरनइ ते गई ते मुनिवरनइ बांदइ जिसिइं हई हई देव मय सिउं कीयुं वार वार पगि लागी करी मइ कीधां जे मोटां पाप सांमी ते मुझनइ तुं छोडी मुनिवरि श्रावकन धर्म दीय

लिखिमीवतीनइ नवि भावीयु	
इहां कांइ आविउ अणनुहुंतरिउ	२००
मुनिवर काढी बार तव दीयु	
सचर सतम दिनि विणठउं घणुं	२०१
घोबीघरि रासिभी हुई	
त्रीजइ भवि हूइ स्क्री	२०२
अगनि बलीनइ हाथइं करी	
माछीकुलि आवी एकदा	२०३
भव पंचमतंणा अहिनाण	
पूरव पापतणा फल जोइ	२०४
तिहां राखी ते माहइ छोकरी	
नाव एक बांधी ते जूइ	२०५
इण परि पेट पाराभव भरइ	
नदी नर्बदा आतिउ फिरी	२०६
माहामासनी ताढिई भरिउ	
किम ए सहिसइ सीतह खरी	२०७
तिणइ आणी चारिंह घणी	
प्रभात <sup>4</sup> समइ ते आवी रही	२०८
जातीसमरण ऊपनुं तिसिइं	<b>.</b>
ए मुनिवर देखी धूकीयुं	२०९
खमावइ पूरवभव चरी	
तेहना पाग्यां मइ संताप	२१०
विल विल वांदइ <sup>5</sup> बे कर जोडि	
साधवी साथिइं विहारह कीयु	२११

<sup>1.</sup> समतिगुप्ति 2. धूंधूकार

<sup>5.</sup> वादइ

<sup>3.</sup> दुर्गिधि 4. प्रभांत

विहार करतां इक गामि आवीया नायल श्रावक तिहां भाव	<b>बीयां</b>
नायलनइ घरि रही घीवरी अणसण करी सुरी अवत	
पंचावन परुयोपम आय पूरी आयु तिहां रुखमणि	ग थाइ
मयूरी पुत्रवियोगह करी वरस सोल सुत आवइ	
(नारद ऋषिनुं संवररायने त्यां गमन)	
नारदिरिख सांभलीयुं सहू वांदी चालिउ आणंद बृ	₹
वैताढ्यपर्वत मेघकुटपुरइ संवरराय <sup>।</sup> बइंठउ छइ घ	*
नारदरिव <sup>2</sup> आव्या जेतलइ ऊठी पगि लाग(इ) तेतल	इ
संवरराइं दीधू बहू मांन कहइ हूं देखुं तुम्ह संता	
तव प्रद्युमनकुमर <sup>3</sup> आणियु पेखी नारद वखांणीउ	
रूप कुमरनुं देखी करी आविउ नयर द्वारिकापुरी	4 २१६
(नारदऋषिनुं रुक्मिणी पासे आगमन)	
जेहां ते बयठी छइ रुखमिणी आवी वात कही सुततर्ण	ी
लिखिमीवतीनी वात सांभली वार वार पूछइ ते वली	
खरुं कहिउं सीमंधरदेव भगति करुं हुं तेहनी है	<b>4</b>
प्रतिमा सीमंधरनी करी पूज करइ ते इक चित्ति	
(पुत्रागमन वखतनी ॲधाणीओ)	
जिती एक आविउ मुझ घरिइ तेणइ वात कही इण पर	<b>र</b> इ
ताहर घरइ कस छइ बहू सोनाना जव देखइ सह	२१९
अफल अंब छ तुझ घरतणा जब फलफूल तूं देखइ घ	णा
तव घर-वाडी सूकी अछइ आलीमाली देखिसि पछइ	
सूकी वावि छइ तुम्ह घरतणी पाणी भरी देखिइ रुखमि	
अंचल धुला पीला होइ स्वीर झरइ थण <sup>5</sup> देखी र	
ए अहिनाणह मिलइ जव सही तव तुम्ह कुमर मिलइ ग	
कही सहिनाण गयु ते जाम रूपणि संतोखाणी ताम	<b>२२</b> २
1. संवररांय 2 नारदि 3. प्र द्यमनकुमार 4. द्वारिक	iपुरी 5. घण

# तृतीय सर्ग

रुक्षण जोइ अहिनाणतणा वात सुणउ हिव कुमरहतणी	इम कहितां दिन वुल्या घणा किणि परि विद्या पामी घणी	२२३
(संवररायना पांचसो पुत्रोनो सिंहर	थराजा साथेना युद्धमां पराजय)	
तिहां निवसइ सिंघराय नरेस	तेह सिउ मांडउ जुझ नरेस	
जिम संवरराय कहइ सुजाण	· •	२२४
	दूहा	
कुमर पांचसइ तव कहइ	राय करु पसाउ	
अम्हे जई तिहां जीपसउं	सूर सिंघरथराउ	२२५
तव ते दल लेई चालीया	े. हीई घरी अभिमान	
गज-रथ-तुरंगम पाखर्या	पायक मिल्या प्रधान	२२६
ते सवि सिंधरिथ त्रासन्या	करी सिंघवाद्य जूझ	-
ते देखी प्रद्युमन <sup>1</sup> कहइ	भाई नासइ अबूझ	२२७
(सिंहरथ अने प्रयुम्ननुं युद्ध)	, , ,	
तब ऊठिउ पजून तिहां	पीयनइ कहइ सुजाण	
सामी तुम्ह पसाउ कर	सिंघरथ <sup>2</sup> टाल ठाण	२२८
राय कहइ तूं नान्हडु	न जाणइ जूझह वात	
नान्हउ सींह <sup>3</sup> एवडु	करइ मोटा गजघात	२२९
यतः		
	(2)	
	(?) बोलावइ अप्पाण <sup>4</sup> । ु तु मुज जणिण अप्रमाण ॥२५	
	ाडइ नखइ न लीधउ मग्ग ।	
	ाउँ गलाँ ग लावड मण्य । गयघड भडवा लग्ग ॥२६	
0811 1/1314/11/06	·	
किम हूं नान्हउ तुझ कुंमर	दूहा जाणसि जूझह भेद	
तक आदेस हूउ जिसइ	चालीउ वेगि वछेद	२३०
1. प्रदामन 2. संघर्थ	3. सीह् 4. आप्पाण	

बाल कुमरह आवतु	देखिउं सिंघरथिराय <sup>1</sup>	
हु मोटेंड ए लहूयडेंड	केम जूझच ति थाय	२३१
इम चींतवतां <sup>2</sup> रायनइ	बोलावइ कुमार	• .
हू आविउ <sup>3</sup> अति लहूयडउ	दिउ तुम्हे जूझ अपार	२३२
	चुपई	
वचन सुण्या तव धाया 4 सूर	जेम वहइ नदीनां पूर	
सगणी सीगिणि पाली पटा	कटारी कातरि करि कटा	२३३
हरसी फरसी नइ हडवडी	तरवारि सेल गदा लि वडी	
छत्रीसइ हाथिइं हथीयार	जुझ करइ आवी अपार	२३४
घोडासिउ घोडा ते भिडइ	हाथी हाथी आवी जडहं	•
रथसिउ रथ संप्राम करंति	नीसत नर ते नासी जंति	२३५
पालइ पाला घण्ं आफलइ	सूर सूर वेगा सिहुं मिल्हं	
हाकइ ताकइ नइ घसमसइ	कायरपुरुष पाछे राखसइ	२३६
धाई धूंबड नांखइं तीर	सेल फेरवी नाखइ वीर	
मोगरसिउ मोड मियमत्त <sup>5</sup>	तेतलइ सिंघरथ आय पहुत	२३७
सिंघजुध सिंघरथि मांडियुं	कुमरि अनेरुं जुझ छाडीयु	
तिहां आवी सिंघ युद्ध करंति	संवरराय आवी जोयति	२३८
बेहुं सिंघतणी परि भडइ	पाछे पगि उसरि विल जुडइ	
उछालिउ ते सिंधरथराय <sup>6</sup>	भूमि पडिउ तव चांपिउ पाय	२३९
झांटि साहि झूडइ कुमार	पग साही पेटि दिध प्रहार	
मुख साहीनइ पाड्या दंत	पजूनकुमर नान्हउ बलवंत	२४०
(सिंहरथराजानो प्रयुम्नकुमारे करेले	ो पराजय )	
हारिउ सिंधरथ गयु भडवाय		
जय जय सबद हुउ जेतलइ	जिम संवर बोलिउ तेतलइ	२४१
1. सिघरथि 2. चीतवतां	3. याविड॰	
4. ध्याया 5. मोइय मियमित्त	6. सिघरथरायं	

माहरइ पुत्र पांचसइ अछइ	ते ऊपरि तूं आवीउ पछइ	
गुणे करीनइ तू वडवीर	दीठउ मइं तूं साहसधीर	२४२
बांधिउं छोडिउ सिंघरथराय	तेहनइ कीधु घणउ पसाय	
गज रथ तुरंगम दीधा घणा	वस्त्र अपूरव पहरणतणा	२४३
पयदल घणूं देई राय	पहुतु कीधु आपणइ ठाय	
कुमर पांचसइ विसंवाद थयु	जीवतन्य आपणउ आज ज गयउ	२४४
(पांचसो भाइओनी इर्ष्या अने प्रद्युम	ननो कांटो काढवानी युक्ति)	
एतल्ल राय न राखिउं मान	बालकपणि कीउ प्रधान	
सघला रांक मिला बापडा	कुमर-मारण उपाइ पडा	२४५
जिम एहनु भाजइ भडवाय	आपणनइ मांनइ ते राय	
सोलगुफा देखाडउ आज	जिम थाइ निःकंटक राज	२४६
एह वात मम <sup>1</sup>	वेगि लेई चालु परदवण	
बोलाविउ पांचसइ	वनह-मझारि	२४७
सवि आन्यां ते कुमरह मिली	जोइ वन ते मननी रली	
भणइ कुमर देखु परदवण	विजयगिरि	२४८
जे नर पूंजकरण तिहां जाइ	तेहनइ पुन्य परापति थाइ	
सुणी वात हरिखउ मनि वीर	चडी जोइ <sup>2</sup> ते साहसधी[र]	२४९
	<sup>8</sup> लोक	
अहो अमेघजा वृ	ष्टिरहो अ <del>क सम</del> फलं ।	
अहो पुराकृतं पुण्यं य	ाद् दृष्टो नाथ लोचने ॥२७	
	चुपई	
जिनमंदिर वंद्या जिनदेव	टेव	
जव जोइ ते पोल्लि पगार	तव फुंफारव सुणिउ अपार	२५०
तेणइ हांकिउ प्रद्यमनकुमार <sup>3</sup>	किम आविउ रे इहां गमार	
विसहररूपइ आगी लडइ	तव साहिउ घाई पूंछडइ	२५१
	<u> </u>	

<sup>1.</sup> ज्यां आ प्रमाणे खाली जगा राखी छे, त्यां प्रतमां पाठ खूटे छे.

योइ
 प्रद्यमन

हाथि फेरीवी अधोमुख कीयु तेहतणउ बल सिव मंजीयु
देखी बल सांकिउ ते सही कहइ वात ते ऊभु रही २५२
पूरव जे हुंतुं कणयुराइ राज छांडिनइ व्रत लीघ माइ
सोल विद्या आपुं हित करी ए विद्या तुझ कार्जिइ धरी २५३

श्लोक

# विद्या सह मतव्येन हातव्यं क्रम शंक्षयो (?) । विद्यया लालितो मूर्यः पश्चात् संपद्यते रिपुः ॥२८

#### (सोळ विद्याओ)

	चुपई	
अहि घोणी तस <sup>।</sup> राजातणी	लिइ संभालि विद्या आपणी	
हीयालोकणी न(?म)इमोहणी	जलसोखणी रयणिदेखणी	२५४
गगनगमण पातालगामिणी	सुभदरसिणी खुधाकारिणी	
अगनिथंभनइ जलभारणी	बहुरूपणि प्राणीबांधणी	२५५
गुटिकासिद्धि धराबांधणी	धारबंध अंजनसिद्धितणी	
सोलह विद्या आपी सार	उपरि दीधु मुगटशृंगार	२५६
**** ****	2	
हरखइ लेई आविउ तिहां	रमइ पांचसइ भाई जिहां	२५७
मनमांहि थिउ अचंभु <sup>3</sup> घणउ	प्रद्युमन <sup>4</sup> वात कहूं ते सुणउ	
कालगुफा कहीइ तस नाम	कालासुरदेवनुं ठाम	२५८
सुणी वात गुफाइं गयु	ते देखी सुर उमु थयु	
हाकिउ कुमर देवइ जेतलइ	साही हणिउ देव तेतलइ	२५९
कुमर प्राक्रम देखी तेय	आविउ छत्र-चामर करि लेय	
पाय लागीनइ दीधा सोय	पुण्यतणां फल एह ज जोइ	२६०
ते ले <b>ईनइ</b> आविउ जिसइ <sup>5</sup>	त्रीजी गुफा देखाडी तिसइ	
नागगुफा देखी वरवीर	न बीहइ कहथी साहसधीर	२६१
1. सत 2. शरतचूकथी आ	कडीनो प्रवीर्घ लहियाथी लखवो रही गय	ो छे.

3. अंचंभु

प्रदामन
 प्रदामन
 प्रदासन

## तृतीय सर्ग

फोंफोकार कीयु फणटोप धाई पकडिउ पन्नगपूछ उतलीबल देखिउ कुमार चंद्रसिंघासण आपिउ आणि विद्या तीन तूं लिइ माहरी गाम-नगर-पुर-घर-कारणी एतलु लाभ कुमरनइ थयु नाहता देखी कहइ रखवाल सरोवरि जे $^{1}$  सुर $^{2}$  रिख रहिउ इणि वचिन बोलिउ आकर अगनिकुंडि गयु तिहाथी वीर तूठउ सुरवर बलवंत जाणि ते लेई आधु नीकलिउ पाकां आंब ते तोडी खाय मुझ तुर तोडइ आंब कुण वीर कुमर कोपि तिहि पासइ गयु वयण पचारी जीतु देव पुष्फमाल बि हाथइ करी प्रद्यमन<sup>4</sup> ते लेईनइ गयु दुधर गयवर धायु धसी

आगिल गयु एक वावडी ते मही पूछि फेरवइ सोइ प्रगट हुई नइ सेवा करी तव मलयागिरि ऊपरि गयु करइ साद ते ऊभउ थयु

ते देखवि ऊपनु कोप उपाडी नाखी तस मूंछ २६२ ए समवडि नहीं को संसारि नागसेज पावडी वखाणि २६३ नागपास नइ सेना करी दुष्टजीव आवत वारणी २६४ वली ते नाहण सरोवरि गयु सरोवर मांहिथी नीकलि बाल २६५ ए जिल नाहण कुणि तुझ कहिउ रक्षपालि लहिउ ऊतर खरु २६६ आवत दीठउ साहसधीर अगनिपुट आपिउ3 ते आणि २६७ अंब एक दीठउ ते फलिउ अंबदेव पहुतु आय २६८ मृंहसिउ आवि भडउ ते धीर तेहसिउं जूझ मेलावउ थयु २६९ कर जोडीनइ वीनवइ हेव वली पावडी आगिल धरी २७० वनमांहि जाई हरखित थयु आहणिउ कुंभस्थलि5 गज गयु खसी <sup>6</sup> २७१ विसहर एक दीठउ पावडी विलखवदिन ते फणधर होइ २७२ काममूंद्रडी आपी छुरी

सर

<sup>3.</sup> आंपिउ 4. प्रचमन

कुंभस्छलि
 खिसी

## प्रदारनकुमार-चुपई

अमरदेव तिहां आविउ धसी	ते जीतु प्रद्यमनइ <sup>1</sup> हसी	
अमरदेव तिहां आदर करइ	कंकणयुगल ते आणि धरइ	२७४
सिखर मुगटनइ वस्नहसार	ऊपरि आपिउ नवसरहार	
आघु बारसेण गुफाई गयु	कुमर जई तिहां उभु थयु	२७५
तिणि ठामिइं अमर छइ कोइ	वाराहरूप करइ ते सोइ	
रुप सूयरनुं करीनइ लडिउ	हणिउ कुमरि दंतूसिल पडिउ	२७६
पुफबाण दीयुं तेणि देवि	विजयसंख आपिउ तिहि खेवी	
पर विल आघु जाइ	दुष्टजीव जिहां बइठा आय	२७७
दीठउ वीरमाणस बांधीयु	तेय छोडिनइ साथिइं लीयु	
जिणि विजाहरि रिउ	ते पणि मित्र करी अणसरिउ	२७८
ते विद्याधर लागी पाय	इंद्रजाल विद्या दिइं भाइ	
तव वसंतमिि हुयु उ[छाह]	किरउ विवाह	२७९
	दूहा	
् विद्याधर लागा पगे	ते साथइ वनि जाइ	
जूझ करिउं वनजक्ष तिहां	आवी लागु पाय	२८०
कुसुमबाण <sup>2</sup> तेणइ सुरि दीयुं	चालिउ वनिहि तुरंति	
सरल तरल पेखइ घणा	तालतमालह भंति	२८१
सिला फटिकनी दीपती	**** , **** ,	
जपइ जाप ते अतिषणा	रूडा इणि संसारि	२८२
विद्याधर ते पूछीया	नारी छइ ए कवण	
रति नामा ए सुंद[री]	रूव परद्मण	२८३
ए कन्या परणु कुमर	मइ ए तुम्हनइ दीध	
तव मनि हरस्व ह्रउ घणुं	कुमर वीवाह ज कीध	२८४
पतलुं लेईनइ गयु	भाइ पंचसइ <sup>3</sup> पासि	
कुमर सरूप देखी करी	वयण कहइ उल्हासि	२८५
1. प्रद्यमनइ 2. कुसमबाण	- 3. पंचमइ	

जिहा जिहा आपणि मोकलिउ		
एहनइ तिहां सह़इ मिल्या	नारिप्रमुख लाभ ताम	२८६
प्रद्यमनकुमारतणुं बल	देखिउ भाई जाम	
सवि कुमर आवी करी	तेहनइ करइ प्रणाम	२८७
	वस्तु2	
पुन्य बलवंत बलवंत	अछइ संसारि	
पुन्य सेवइ सुर सयल	पुन्य पुहवि अरिहंत भाखइ	
पुन्यइ अणचित्तिउं फलइ	मरणभय ते पुण्य राखइ	
रिद्धिवृद्धि पुन्यइ मिलई	पुन्यइ राजभंडार	
पुन्यइ सवि आवी मिलइ	जिम प्रदिमनकुमार	२८८
( प्रसुम्ननी विद्याप्राप्ति )		
	चुपई	
विद्या सोलइ लेई सार	चमर-छत्र सिरि मुगट अपार	
नागसेज ते रयणे जडी	अगनिपटउ <sup>3</sup> वीणा पावडी	२८९
विजयसंखनु साद अपार	चंद्रसिंघासण सेखरहारि	
हाथिइ काममुद्रडी धरी	पुष्फवास करि कडिहि छरी	२९०
कुसुमबाण 4 ते हाथइ लेई	कुंडलयुगल <sup>5</sup> कांनि प <b>हिरे</b> इ	
कंकणयुगल पुष्फमाल धरी	राजकुमरि बिइ परणी करी	२९१
प्रदिमनकुमर लेई आवीयु	राइनइ मनि ते अति भावीयु	
घणी भगति करि लागु पाय	राजा मिलवा ऊभु थाय	२९२
(कनकमालानी प्रद्युम्न पर आसक्तित	)	
मिली कुमर घरिमाहि गयु	कनकमालनइ आणंद थयु	
विनउ करीनइ प्रणमइ पाय	पुत्र देखी रांणी परवसि थाइ	२९३
कामातुर ते थयुं शरीर	धाई साहिउ अंचिल वीर	
कांमवचन स्त्री कहइ तिहां घणा	कुमरइ नवि मांन्यां तेहतणा	२९४
<ol> <li>तिहिं 2. वस्त 3.</li> </ol>	अगनिपडउ 4. कुसम 5,	कुडल

#### (आसक्तिनुं कारण)

छेहडउ छोडावि वनिइं आवीयु रिखि दीठउ बयठउ भावीयु पाय पणमी बइठउ जिसिइं मुनिविर कुमर बोलाविउ तिसिइ २९५ कनकमाल माता मुझतणी मुझनइ देखी कामिइ हणी छेहडउ छोडावी आवीउ इहां आधी वात न जाणं तिहा २९६ यत:

# किं न पश्यति जात्यंधो कामांधो नैव पश्यति । न पश्यति मदोन्मत्तो अर्थी दोषो न पश्यति ॥२९

#### (प्रद्युम्ननो जन्म-वृत्तान्त)

तव मुनिवरनां वयणह सुणी
भरतखेत्रमांहि सोरठदेस
कृष्णराय तिहां साहस धीर
तेहनी घरणि अछइ रुखमिणी
तेह समी निव पूजइ कोइ
धूमकेतु वयरइ तूं छीयु
एणइ जिमसंविर पालिउ आणि
पूरवभिव तुम्ह हुतु नेह
इणि भिव तेहथी ऊपनु राग
जु ए तुझसिउं प्रेमरसलीन
(कनकमाला पासेथी विद्याप्राप्ति)

कुमर सुणीनइ वली घरि गयु त्रिणि विद्या जु मुझनइ देहि वात कुंमरनी काने सुणी जिमसंवरनी न करी काणि कनकमाल कहइ पूरु रली कुमर कहइ माता मम कहूं

2. वद्या

कहुं वात तुझ मातातणी
नयर द्वारामित सोहइ नसेस २९७
तह समविं को नहीं जग वीर
जिहि जस कीरती वाधी घणी २९८
प्रित्मनकुमर माय तुज्ञ होइ
मोटी सिल हेठि चांपीय २९९
ते प्रद्यमनकुमर तूं जाणि
भोग भोगव्या अतिहि सनेह ३००
तुझनइ कहुं ते देखी लाग
छलकरि लिइ जई विद्या तीन ३०१

कनकमाल पासि ऊभु थयु जुगतुं ताहरु वयण सणेहि ३०२ प्रेमलबिघ अकलाणी घणी त्रिण्हइ विद्या आपी आंणि ३०३ कुमरतणइ पगि लागी वली जुगताजुगतिइ आपणी रहु ३०४

1. জাণ

हसि करि हाथ साहीनइ मिला	सामी हिव मुझ आस्या फली	
भोग भोगवु अतिह गहगही		३०५
( भ्रष्टाचारनुं आळ)	<b>~</b> /	•
चालिउ कुमर वचन सांभली	कनकमालानइ आशा टली	
रोइ द्रसकइ फाटइ हीयु	मूंहि इसउ कूकूउ कीयु	308
कनकमाल ते विस्मृं धरइ	कूटइ सिरनइ कूकू करइ	
उर-थणहर <sup>1</sup> मुह फाडइ तेय	केस छोडि मोकला मेल्हेय	२०७
	द्हा	
राती तु रंगिइ रमइ	विरती हरइ पराण ।	
स्त्री रूठी तं करइ	जिम ते रा ॥३०	
	चुपई	
स्त्री-पुकार जव कुमरे सुणी	· ·	
राणी कहइ पूत थापिउ राय	मुझनइ तेय विगोइयु आय	३०८
( संवरराय अने प्रद्युम्न वच्चे युद्ध )	<b>)</b>	
[स्रु]णी वयण राउ कोपइ चडिउ	जिम घी अधिक अगनिमांहि पडिउ	
कुमर पां[च]सइ लेई हकारि	वेगि पहुता <sup>2</sup> वनहमझारि	३०९
मिली कुमर सवि एकठा थया	पजूनकुमरनइ तेडवा गया	
तुम्हे आलोकण विद्या कहु	कुमर सुणीनइ नवि सासहिउ	३१०
तव रीसांणु साहस घीर	नागपासि बांध्या वडवीर	
च्यारिसइ नवाणु घाल्या वावि	उपरि वाली सिला सुभावि	३११
तु एक कुमार	रायनइ जई जणावु सार	
जिमसंवररायइ बइठउ जिहां	आवी कुमर पुकारिउ तिहां	३१२
स्यल कुमर वा[वी घाली]	उपरि दीधी सिल ते पालि	
सुणी वयण कोपिउ मनि राय	आज कुमर भांजुं भडवाय	३१३
रह्वर साजु गयवर गुडइ		
पायक सवि हीयरइ करी	चतुरंगसेन घणी तिहां करी	3 8 8
1. थणहव 2. पुहुता		k *

## प्रयुग्नकुमार-चुपई

*** *** ***		•
1	आविउ साम्हउ आणंद धरी	३१५
पायकसिउं पायक रणि भडइ	राउतसिउं राउत रणि जडइ	*
रहवरसिउं रहवर संग्राम	त्रूटइ कूटइ मुंड रुलइ ताम	३१६
(सैवररायनी कनकमाला पासे त्रण	विद्यानी मागणी)	
हारिउ तिहां जिमसंवरराय	चतुरंगसेन दिसोदिसि जाइ	
क्चिंाधरराय विरुखु थयु	रह वाली नगरमांहि गयुं	३१७
ऊतावलु आविउ स्त्री पासि	मागी विद्या मनह उल्हासि	
निसुणि वयण अकुलाणी बाल	जाणे <sup>2</sup> ते वज्रहणी ततकाल	३१८
स्वांमी ते विद्या लेई गयुं	इणि वचिन राय विलखु थयु	
सयर <sup>3</sup> विॡ्रिरेड जव रांइ दीठ	स्त्रीनइ करि निख लोही पइंठ	३१९
(स्त्रीचरित्र )		
	वस्तु	
एम नरवय नरवय	सुण्यां जव वयण	
विद्याधर कारण करइ	स्त्रीचरित्र देखीय कंपिउ	
हुं <sup>4</sup> राय इणि मोलविउ	मूंहसिउ ते य वलीय जंपिउं	
प्रेमलबंध कारण करी	आपी विद्या तीन <sup>5</sup>	
हबइ हुं सिउं उपाय करुं	विद्या लेई गयु छीन	३२०
	चुपई	
देखी चरित्र बोलिउ ते राय	हवइ आविउ मुझ मरणह ठाय	
स्त्रीतणु जे वेसासह करइ	तेय मांणस अखूटइ मरइ	३२१
स्त्रीचरित्र चिंतइ ते राय	तेणि दुखि अति विलखु थाइ	
जूटुं <sup>6</sup> बोलइ जुटुं लवइ	निज पी मेलिह अवर भोगवइ	३२२
स्त्रीनइ साहस विमणु होइ	स्त्रीचरित्र नवि जाणइ कोइ	
स्त्रीनी बुद्धि नीची नितु रहइ	उत्तम छोडि नीच संग्रहइ	३२३
1. प्रतमां पाठ खूटे छे. 2. 4. हं 5. तीत ६. जूं	जेणे 3. सांसर हूं	

#### गाथा

## अन्नं रमइ निरक्खइ अन्नं अन्नं चिंतेइ भासओ अन्नं । अन्नस्स देइ दोसं कवडकुडी कामिणी वियडा ॥३१

चुपई

पह्वी असतीतणु सभाउ स्त्री-विस्वास बिंबि कीयु घणु वली जे राउ यशोधर कहिउ विस-लाड्या देइ मारिउ राउ विल त्रीजउ निस्मण उत्तम्ह जाण हापुसेठ वसइ तिणि कालि सूतु सेठ तव वांणि बांधीयुं छांडी हापासेठनी कांणि परणिउ छांडि नाह सुपीयार स्त्रीसाहस कोइ अंत न लहइ अभयाराणी करीय विनाण रावण-राम जु बांधी । राडि सीतहरण लंका परजली घणी अक्षोहणि दल सांहारि जिमसंवर कहइ 3 दोष पूरवलखित न मेटइ कोइ असुभकर्म जब आवइ वही दोस न कनकमाल तुझत्ण

जोउ जिम ऊजेणी राउ	
स्त्रीनइ सुंपिउ राज आपणउ	३२४
अमयमहीदेवि जे सुख लहिउ	
कोई कूबडउ रमिउ करि भाउ	३२५
ह़्यू नयरि पाटणि पयठांण	
त्रिणि स्त्री तेहनी सुह लालि	३२६
प्रीय बांधीनइ ते स्यूं कीयु	
धूरत एक घरि घालिउ आणि	३२७
धूरत आणि कीयु भरतार	-
स्त्रीचरित्र कवि केता कहइ	३२८
सुदंसण लगि गया पराण	
विम्रह सूपर्णेखा <sup>2</sup> लगाडि	३२९
जोउ परियाण रावणनुं वली	* 3
कृष्णइ आणी द्रपदी नारि	३३० ः
तुझ नही कनकमाल सि(१) रोष	
प्रदिमन विद्या लेई गयु सोइ	<b>३३१</b>
सुजन हुइ ते वयरी सही	
ए लहिणु लाभइ आपणु	332

गाहा

## वर्ज्जंति<sup>4</sup> गुणा विचलंति वल्लहा सज्जना इ विहडंति । विवसाए नत्थि<sup>5</sup> सिद्धि पुरिसस्स परंग्रहा दीहा ॥३२

1. बाघी 2. सूर्पमखा

3. कहंइ

**4.** ब्रजंति

5. निस्थि

# (यमसंवर तथा प्रद्युम्न वच्चे पुन: युद्ध)

चुपई **सय**र

जिमसंवरराय कोप करइ	सयल दल लेई संचरइ	
तव परिदवण रीसाणु $^{ m 1}$ जाम	नागपास लेई मुकिउ ताम	३३३
ते दल नागपासि बांधि महिउ	राउ एकछ ऊभु रहिउ	
राउ प्रति आवी रिखि कहइ	पुत्र ऊपरि वयर सिउं वहइ	३३४
वलतु राजा कहइ रखि सुणउ	स्त्रीथकी ए कलेसह घणउ	
ते सांभली कुमर पासि गयु	नारद देखी ऊभु थयु	३३५
रिखि बोल्ड सुणु परदवण	बापह बेटा विम्रह कवण	
जेणि प्रतिपाली कीयु तूं राय	तेहनु किम भांजीइ भडवाय	३३६
नारद वात कहइ समझाइ	बिहुं सरखह थाइ	
एतलु मुझ पछतावु थयु	चतुरंगसेन संहरी गयु	३३७
सुणी कुमरि मनि मेल्हिउ कोह	नागपास	
कुमरमनि हरखिउ राय	घणउ कुमरनइ करिउ पसाय	३३८
रिख कहइ जणिण तुम्हतणी	करइ उसरि तुम्हांरी घणी	
वचन अम्हांरु जु मनि धरु	घरह भणी सांमहणी करु	३३९
(प्रधुम्न द्वारा नारदनो उपहास)		
नारद वात कही तुम्हे भली	मुझनइ केवलि कही सो मिली	-
हरस्वी वात कहइ परदवण	मुझनइ वेगि पहुचाडइ कवण	३४०
नारद एक विमान करि धरइ	कुमर भांजि हासी ते करइ	į +
वली वि[मान] जोडि	क्षणइ कुमर ते नांखइ तोडि	३४१
विलखवदन थयु नारद जाम	करइ विमान कुमर हिस तांम	
विद्याबलि तिहि करिउ विमाणु	जिहि उद्योतिहि लोपिउ भाणु	३४२
(प्रद्युम्ननुं द्वारिका प्रति प्रयाण)		
ध्वजा घंट <sup>2</sup> घूघरी संजुत्त	रिखिसिउं चडिउ नारायणपुत	
जिमसंवरराय सम दिइ जाइ	घणी भगति करि लागु पाय	३४३
1. रासण 2. घंटं	·	

माहरी माय कनकमारुतणी	तुम्हे भगति करजो घणी	
इम कही चालिउ पजूनकुमार	गिरि <sup>1</sup> परबत मेल्हा अपार	३४४
(भीलवेशी प्रद्युम्न द्वारा भानुनी जा	ननी पजवणी)	
वन उपरि विल पहुतु जांम	उद्धिमाल <sup>2</sup> तिहा दीठी तांम	
घणी जानजानणीइ मिली	भानु-विवाहण जाइ वली	३४५
ए कन्या पहिल्हं तुझ कही	नारदि वात जणावी सही	
तुझनइ हरी धूमकेत गयु	तव ए भाननइ मागणु थयु	३४६
रिखि कहइ तुझ नही ए खोडि	हुइ सिवत <sup>3</sup> तु लेइ विछोडि	
नारदवयण कुमर मनि घरइ	आपण वेस भीलनु करइ	३४७
घणइ कांधि सर लेई हाथि	उतरि मिलिउ तेहनइ साथि	
पवनवेगि ते आगिल थयु	देइ आखानइ ऊमु थयु <sup>4</sup>	३,४८
ह्रं दांणी नारायणतणु	दिउ दाण मुझ लागइ घणु	
वडी वस्तु आपु मुझ योगि	जिसइ जावा दिउं सघछुं लोक	३४९
मुहुछ भणइ निसुणि मुझ वयण	वडी वस्तुमांहि मांगइ कवण	
अम्हे आपु तुं सो तुं लेइ	अम्हनइ आगिल जावा देइ	३५०
भील रीसाणु दिइं तव आण	इणि परि किम तुम्ह लाभइ जाण	
भली कन्या जु आपण आहि	ते मुझनइ आपी तुं जाहि	३५१
हरिनंदन परणइ ते जोइ	अरे भील किम मांगइ सोइ	
मील भणइ कुमरी दिउं सार	हूं नारायणतणउ कुमार	३५२
महलुउ कहइ म कहि तूं मूढ	जूठाबोल्ल मोटउ कूढ	
त्रिणि खंडनु क्र <sup>ृ</sup> ण नरेस	तेहनु पुत्र न हूइ भीलवेस	३५३
बाट छांडीनइ ऊवट जाइ	केडइ भील कोडि बि घाइ	
अरे मूढ गमार कांइ थाइ	आण मांजीनई किहां तूं जाइ	३५४
(प्रगुम्नकुमार द्वारा उद्धिमालानुं ह	रण)	
कुमरि ऊदाली लीघी पराणि	चाली वेगिइं चडिउ विमाण	
भील देखी कुमरी ते डरइ	शोक-संताप <sup>5</sup> घणउ दुख <b>धरइ</b>	३५५
1. गिर 2. उदिधमाल	3. साकत 4. धुयु 5. स्रो	ताप

## प्रद्युम्नकुमार-चुपई

पहिछं प्रद्युमनकुमारनइ वरी नारद निसुणि माहरी वात	भांनु-वीवाहण पछइ संचरी	-2 to C
	हवइ भील करइ मुझ घात	<i>२.</i> ७ द
तेह भणी परमेसर-सरण	लिउं सन्यास कइ निश्चिइं मरण	
तु नारद मनि हूउ संदेह <sup>1</sup>	विरूयुं वचन इणि बोलिउं एह	३५७
तव रिखि कुमर प्रतिइं कहइ घणूं	प्रद्युमन <sup>2</sup> करु रूप आपणूं	
रुक्षण बत्रीस सोवनमय अंगु	रूप अनोपम जिसु अनंगु	३५८
<b>उद</b> िधमालि देखउं ते रूप	जाणे बयठउ [इ]द्रहमूप	
उद्धिमालनइ रखि समझाइ	चिलउं विमान सुभाविइ जाइ	३५९
(प्रचुम्ननुं द्वारिकापुरी पासे आगमन	τ)	
आविउं विमान न लागी वार	नयर द्वारिकांतणइ पयसार	
देखि नयर बोलय परदवण	दीपइ पदारथ मोती-रयण	३६०
धण-कण-कंचण दीसइ भरी	नारद वसइ कवण ए पुरी	
सिरि सोवन-कलस झलकंति	भरी नीर नइ नारी जंति	३६१
(नारदऋषि द्वारा द्वारिकावर्णन)		
	वस्तु	
भणइ नारद नारद	निसुणि परदवण	
भणइ नारद नारद अ कहीइ द्वारिकापुरी		
<u>_</u> :	निसुणि परदवण	ŗ
अ कहीइ द्वारिकापुरी	निसुणि परदवण वसइ पासमांहि सायर	r
ञ कहीइ द्वारिकापुरी जनम तुम्ह ह्यु इहा	निसुणि परदवण वसइ पासमांहि सायर निरमल फटिक-मणि-जडिउ सरोवः	, ३६२
ञ कहीइ द्वारिकापुरी जनम तुम्ह ह्र्यु इहा कूया वावि विल वन पवर	निसुणि परदवण वसइ पासमांहि सायर निरमल फटिक-मणि-जडिउ सरोवः घणा घवलहरे आवास	
ञ कहीइ द्वारिकापुरी जनम तुम्ह ह्र्यु इहा कूया वावि विल वन पवर	निसुणि परदवण वसइ पासमांहि सायर निरमल फटिक-मणि-जडिउ सरोवर घणा धवलहरे आवास पोलि गढ चिहुपासि	
अ कहीइ द्वारिकापुरी जनम तुम्ह ह्यु इहा कूया वावि विल वन पवर बहु पयार जिणवरभवण	निसुणि परदवण वसइ पासमांहि सायर निरमल फटिक-मणि-जडिउ सरोवर घणा धवलहरे आवास पोलि गढ चिहुपासि चुपई केकेहनां ए भवनह एय	
अ कहीइ द्वारिकापुरी जनम तुम्ह हूयु इहा कूया बावि विल वन पवर बहु पयार जिणवरभवण कुमर भणइ नारद निसुणेइ वलतू रिस कहइ सुणउ कुमार	निसुणि परदवण वसइ पासमांहि सायर निरमल फटिक-मणि-जडिउ सरोवर घणा धवलहरे आवास पोलि गढ चिहुपासि चुपई केकेहनां ए भवनह एय	३६२
अ कहीइ द्वारिकापुरी जनम तुम्ह हूयु इहा कूया बावि विल वन पवर बहु पयार जिणवरभवण कुमर भणइ नारद निसुणेइ वलतू रिस कहइ सुणउ कुमार	निसुणि परदवण वसइ पासमांहि सायर निरमल फटिक-मणि-जडिउ सरोवर घणा धवलहरे आवास पोलि गढ चिहुपासि चुपई केकेहनां ए भवनह एय यादवना घर ए अतिसार	३६२

सिंहध्वजाइ बलिभद्र जोइ जिहिध्वज विद्याधर अहिनाण	मीढाध्नजि घर वसदेव होइ ब्राह्मण वेद पढइ पुराण	३६५
जिहां कलकलाट सुणीइ घणु	ते आवास सतिभामात <u>ण</u>	
कनककल्स सोहइ जिहि बारि	ध्वज दीसइ गयणंगणि फार	३६६
मणिमयगज दीसइ चउपासि	ते तुम्ह मातातणु आवास	
सुणी वचन हरिवउ परदवण	तेह चरित्र नवि जाणइ कवण	३६७
(प्रयुक्तनो द्वारिका-प्रवेश)		
उतिर विमाननइ ऊमु थयु	चाली कुमर नगरमांहि गयु	¢.
हरिनंदन मोटउ एक	बलि करइ कला नवनवी	३६८
चाउरंग दल सेन संजुत्त	भानुकुमर दीठउ आवंति	•
ते देखी पूछइ कुमार	एह कलयल सि	३६९
निसुणि वयण तव कहिउं विचार	एह हरिनंदन भानुकुमार	
एहथी नयरि घणु उछाह	ए ते कुमर जिहतणउ विवाह	३७०
(मायामयी अभ्व अने प्रयुम्ने स्टीघेर	हो वृद्ध ब्राह्मणनो वेदा):	· ·
तव पजून करइ उपाइ	हवइ एहनु भांजुं भडवाय	
बूढउ वेस विपनु करिउ	चंचल तुरीय वैक्रय करिउ	३७१
स्वेतवर्ण तुरीय करइ हीस	च्यारइ पाय पखालइ दीस	
च्यारि च्यारि अंगुल जिहि कांन	राग वाग पघवाहइ सांन	३७२
एह्वु अश्व पा[खरी]	साही वाग आगिल गयु घरी	
मांनुकुंमरि दीठउ ए एहवु	ब्राह्मण गरढउ घोड जहु(?)	३७३
जईनइ बाभण पूछिउ तिहा	[ए] घोड लेई जाइ किहां	
बांभण भणइ ठांम आपणउ	तेजी समुद्वालिकातणउ	३७४
भाइ <sup>1</sup> सुणिउ भांनुकुमरनुं <sup>2</sup> नाम	तेह भणी आणिउ तुरंगम ताम	
सुणि हो विप्र हूं भानकुमार	अश्वरयण आपु मुझ सार	३७५
निसुणि विप्र तूं माहरु वयण	ल्डिं सोवननइ आपि अश्वरयण	
विप्र कहइ दुडावी जोइ	सुणिउ कुमर हर्षभिर सोइ	३७६
1. माइ 2. भांनकुमरनु		

#### (भानुकुमारनो उपहास)

कोपारूढ तुरंगिम चिडिउ खेलावतां ऊपरिथी पिडिउ
पडतां दांत पड्या जेतलइ लोक हांस<sup>1</sup> करइ तेतलइ ३७७
ए नारायणतणउ कुमार ए समविड कोइ नही असवार
विप्र भणइ कांइ हसु एतला ते<sup>2</sup> तरुणाथी<sup>3</sup> बूढा भला ३७८
दूरिहूंति करि आविउ आस मांनकुमिर ते कीयु निरास
कुमर भणइ विप्र तूं वडु एणइ घोडइ किम तुम्ह चडउ ३७९

#### (प्रद्यम्ननुं अश्वारोहण)

हूं गरहउ जोईइ टेकणउ देखाडंड बल जिम आपणउ
जिण दसवीस चडावण जाइ तिम तिम बांभण भारे थाइ ३८०
तुरीय चडावण आविउ भान तव रिखि विप्रनइ कीधी सान
जण दसवीस करिउ भडिवाय चडित भांनु गिल दीधु पाय ३८१
चडी विप्र असवारी करइ अंतरीक ते घोडउ फिरइ
देखी सभा अचंभु थयु चमकार करि ऊंचु गयु ३८२

#### (प्रद्युम्न द्वारा वे मायामयी अश्वनुं निर्माण)

बिंइ घोडी नीपजावइ सोइ वली सो पुरुष विद्याबले होइ घोडा लेईनइ पहुतु तिहा वन-उद्यान राउछ जिहा 3 ८ ३ तुरंगम लेई वनमांहि जइ देखि रखवाला ऊभा थाइ एणइ वनि चारि न चारइ कोइ कापइ चारि विगूचइ सोइ 3 6 8 रखवालानी कीधी मनोहारि काम मूंद्रडी दीइ ऊतारि घोडा बिहुंनइ चराविउ बहू रखवाला घणु हरखा सह ३८५ फिरिफिरि घोडा वनमाहि चरइ तलइनी माटी ऊपरि करइ देखी रखवाला कूटइ हीयुं बिहु घोडे वन चउपट कीयु ३८६ भाई लिइ ताहरी मुद्रडी खाधू वन अम्ह आरति पडी सतिभामानी वाडी जिहां आघउ वीर पहुंत तिहा 360

हांसं
 त
 त
 त
 त
 त
 त
 त
 त

(सत्यभामानी वाडीमां प्रवेश)		
घणा तरूवर <sup>1</sup> देखइ कुमर	फूलिहि परिमल मोह्या भ्रमर	
जाइ जूही पाडल अपार	विउलसिरीनइ वेलि विचार	३८८
कूजउ मरूउ नइ कणवीर	रायचांपु केवडउ गंभीर	
गुलाब अगर तगर मंदार	दमणउ वाळु सुगंघ अपार	३८९
अंबज नीरि सदा फलतणा	केलां द्राखइ बीजुरां घणां	
चारुळी नारंगि <sup>2</sup> ळींबूई <sup>3</sup>	खजूरी खरणि दाडिम जूइ	३९०
नालेरी फोफल घणी फली	बोरि कुठ अंबिली अंमली	
वाडी <b>दे</b> खी अचंभु <sup>4</sup> थयु	बिइ वानर नीपाई गयु	३९१
(मायामयी वानरो द्वारा उद्यानभंग	π)	
वानर तेह वाडीमाहि जाइ	तिणि सवि वाडी घाली खाइ	137 
सघलां फल-फूल सहरी	चउड-चपट वाडी सवि करी	३९२
लंका जिम की घी हनुमंति	तिम वाडी कीघी बलवंति	
भानकुमर बइठउ छइ जिहां	माली आवि पुकारिउ तिहां	३९३
स्वांमी तुम्हे म लाउ वार	माय-वाडीनी करु हिव सार	-
वानर बिइ वाडीमांहि आइ	तिणि सवि वाडी घाली खाइ	३९४
(मायामयी मच्छर आदिथी भानुवु	मारनी रंजाड)	
कुम कुम उतावल धायुं तिहां	वानर वाडि तोडइ जिहां	
प्रदिमनकु[म]र ते हासू करइ	मायामइ मत्सर तिहा करइ	३९५
तिणि गमि भान संपतु जाइ	माछर खाधइ पाछु पुरुइ	
भानु भाजनइ मा कन्हि गयु	लगिन एय आलीगार थयु	३९६
ततिखणि बहु वरकांमिणि मिली	भांनुनइ तेल चडावइ वली	
तेल चडावी करइ सिणगार	अहवि गावइ मंगल च्यार	३९७
रथ जोतर्या तुरीय तोखार	ऊपरि चडि बइठउ कुमार	
तव प्रदिमन करइ तेतल्ड	चडी तुरंतु ज्योतिरथु चलइ	३९८
बेहू रथ एकठा भिडाइ	मानु पाडी घोडा घरि जाइ	
पडिउ मांनु तव विरुखी थई	गातां आवी रोता गई	३९९
1. तुरवर 2. नारिग	- 3. लीबूइ 4. अंचंमु	

# (सत्यभामानी वावडीना जळनुं शोषण)

भांनुकुमर ऊभु न थवइ	उपाडीनइ घरि लेई जाइ
विल कुमर ते बांभण थई	करि घोवती कमंडल लेई ४००
लाठी ठेकतु चलिउ सुभावि	क्षण एक मांहि पह्नु आवि
उभु थयु आवीनइ तिहां	सतिभामानी वावडी <sup>।</sup> जिहां ४०१
मृ्खिउ बांभण जीमण करइ	पाणी पीइ कमंडल भरइ
सुणि <sup>?</sup> हो विप्र वात मुझतणी	एह वापी सितभामातणी ४०२
इहां पुरुष न पइसइ जाण	तूं किम आविउ विप्र अजाण
तु बाभण कोपिउ ततकाल	तस सिर मूंडइ साही वाल ४०३
कांन नाक केन्हां लीयां चडी(?)	ते ली पयठउ विप्र वावडी
वली बुद्धि उपाई घणी	समरी विद्या जलशोषणी ४०४
भरी कमंडल नीकलिंड सोय	पछइ <sup>3</sup> वावडी सूकी जोइ
सूकी देखि अचंभी <sup>4</sup> नारी	गयु बांभण चहुटामझारि ४०५
आखडी पडीनइ ऊमु रहिउ	फ़्टि कमंडल नदीजल वहिउ
बूडण लागी पाणीहारि	कहइ वाणीया ताणइ वारि ४०६
नयरलोक सवि कुतिग मिलिउ	एतल्ल करी तिहांथी चलिउ
वली आविउ ते नयरमझारि	ऊभु रहिउ वसदेव घरबारि ४०७
(मायामयी मेंढा वडे वसुदेवनो उप	ाहास )
	दूहा
वली एक मीढउ विकवी	आविउ वसदेव पासि
कहइ मुझ मीढउ जोइ तृ	आणिउ अति उल्हासि ४०८
वसदेव तव इम कहिउं	छोडी मेल्हाउ विप्र एह 💍 👙
जोइ <sup>5</sup> बल मीढातणुं	लक्षण किहस्युं तेह 💮 👙 ४०९
	चुपई
तव तिणि मीढउ मेल्हिउ छोडि	_
	लोक सह तिहां जोवा जुडिउ ४१०
1. वाडी 2. सोणि 3.	प्छइ 4. अंचभी 5. जोयु

# (ब्राह्मणवेदो प्रद्यम्न सत्यभामाने महेले)

विल सतिभामानइ घरि जाइ	
द्वादश तिलक ते सदाइ करइ	४११
पटरांणी घरि गयु तुरंति	
पोलीए जई जणावी सार	४१२
सतिभामा वरज्या <sup>1</sup> आपणा	
ते बांभण मांहि तेडाइ	४१३
ठीगतु ठीगतु बांभण गयु	
राणीनइ आसीसह देइ	8 \$ 8
मागि विप्र जिहि ऊपरि भाउ	
बोल तम्हारु साचु हवइ	४१५
भूखिउ बांभण दिउ आहार	
तूं सिउं मागइ ए आहार	४१६
बीजा विपनइ कहइ जा परु	
मोकली मूकी विद्या झूझणी	४१७
सिर फूटइ कू करि लडइ	
ए भरडानइ आमान अल्यावि	४१८
साथ द्रायउनइ भूखिउ कुण	
मुझनइ मूठी एक दिउ आहार	४१९
वढवाडीयानी वात परिहरु	
बइसण आणी आपु नारि	४२०
आणी फलहलि पीसी थालि	
सालणां घणां परीस्या आणि	४२१
सर्व मेली कीधु एक कवल	
आपण राणी बइठी आइ	४२२
	द्वादश तिलक ते सदाइ करइ पटरांणी घरि गयु तुरंति पोलीए जई जणावी सार सतिमामा वरज्या! आपणा ते बांभण मांहि तेडाइ ठीगतु ठीगतु बांभण गयु राणीनइ आसीसह देइ मागि विप्र जिहि ऊपरि माउ बोल तम्हारु साचु हवइ मूखिउ बांभण दिउ आहार तू सिउं मागइ ए आहार वीजा विपनइ कहइ जा परु मोकली मूकी विद्या झूझणी सिर फूटइ कू करि लडइ ए भरडानइ आमान अल्यावि साथ द्रायउनइ मूखिउ कुण मुझनइ मूठी एक दिउ आहार वढवाडीयानी वात परिहरु बइसण आणी आपु नारि आणी फलहिल प्रीसी थालि सालणां घणां परीस्या आणि सर्व मेली कीधु एक कवल

<sup>1.</sup> वरर्जया

जेतल्ल थालइ ते संहरइ <sup>1</sup>	वडइ भागि भांणूं ऊगरइ	
बांभण कहइ सांभिल हो बाल	अधिक पेटमाहि ऊपनी झाल	,४२३
निद्युतरिउ लोक सयल परिहरु	मुझ बांभणनइ पूरु करु	
लाडू प्रमुख सवि आगलि धरिउ	तउ सयल विप्रइ संहरिउ	४२४
तु राणी मन विरुखी होइ	इणि खाधी सघली रसोइ	
बांभण कहइ हूं मूखिउ हजी	भात मेल्हि तूं कांइ जइ तिजी	४२५
राणी चित्ति ऊपनी रीसि	कहि आणीनइ भाण प्रीसि	
भूखिउ बांभण तेणइ समइ	थालि आगलि पाछुं वमइ	४२६
सघलु मांडवु उबकी भरिउ	बांभण एहवु कुतिग करिउ,	
मांनमंग राणी तू करी	कुमर गयु खोडु रूप धरी	४२७
(विकृत रूपे रुक्मिणीने महेले)		
नमिउ नमिउि चाल्ड बेवडउ	लाठी लेई हीडइ बापडउ	
वडा दांत नइ विरूई देह	तिहांथी आवइ मातागेह	४२८
खणि खणि रूपणि वझडइ आवासि	खिणि खिणि ते जोइ बिहुं पासि	
मूंहनइ रिखि जे कह्यां अहिनाण	ते ह्या आज मिलड् सुत जाण	४२९
रूपणिनइ मनि विसंभु थयु	एतल्इ ब्रम्हचार तिहा गयु	
नमस्कार तव रूपणि करइ	धर्मवृद्धि खूंधु उचरइ	४३०
करइ आदर नइ विनु करइ	कनयसिधासण बयसण देइ	
समाधान पूछइ समझाइ	भूखिउ भूखिउ कही विलविलाइ	४३१
(विद्याप्रभावथी रुक्सिणीनी रंजाड)	)	
सस्वी बोलावी जणावी सार	खीर रांधु म लाउ <sup>2</sup> वार	
जिमण करवा लागी घणी	समरी कुमरि अगनिथंभणी	४३२
अन्न न सीझइ चूल्हउ घूधूइ	वली वली भूखइ कूकूइ	
हूं सतिभामानइ घरि गयु	अन्न न पामिउ भूखिउ रिहिउ	४३३
जे कीधु ते लीयु ऊदालि	मुझनइ भूख लागी ततकालि	
रूपणिनइ मिन ऊपनी कांणि	तु लाडू ते आपइ आंणि	४३४
1. सहरह 2. लड		

लाडू आधु नारायण खाइ रूपणि मनि बीहती कहइ तु रांणी मनि विसमु कहइ जु कहूं तु कहिणु न जाइ तु रूपणि मनि थयु संदेह विद्याबल ए कन्हइ घणु तव रू[प]णी<sup>2</sup> पूछइ तस नांम किहांहूंती तुम्ह हूउ आवणु जनमभूमि हं पूछउ तुझ लीयु व्रत बालक शा भणी एणी वातइ रीसाणु सोइ नांम ठांम गोत्र पूछइ तिस्यूं अम्हे परदेसि दिशांतरि फरं सिउ तूठी तुं मुझनइ देसि खोडउ दीठउ रीसाण जाम वली मनावइ बे कर जाेडि तव कुमर बोलइ तिणि ठाय साचुं वचन कहइ तूं मुझ तुं जंपइ मनि करीय उछाह जिम परदवण पुत्र घरि थयु जिमसंवर-घरि वधिउ कुमार बीजा वचन मुझ कहीयां जेह हजीय पुत्र न आविउ सीय सतिभामा-घरि घणउ ऊछाह5 हारी होड न सीधूं काज माता पासि कथांतर सुणिउ 1. ৰাঘ্ৰত 2. 枣町

दिवस च्यार लगइ भूखि न थाइ	
कांई कांई हूं जाणुं छुं हीइ	. ४३५
एहवु पुत्र रहइ कुण घरइ	
इणि रूपइ नारायण न पीतीयाइ (?)	. ४३६
जिमसंवर-घरि वाधउ <sup>।</sup> एह	
धरि प्रभाव सही विद्यातणु	४३७
सामी कहु आपणूं <sup>3</sup> ठाम	
दीघी दीख कहु गुर कवण	४३८
माता-पिता कहइ तू मुझ	
वात पूछुं हरखइ तुझतणी	४३९
गुरु बाहरी दीख किम होइ	
सही तुम्हे व्याह करेसिउ किसुं	880
भिक्षात्रतिंइ भोजन करुं	
रूठी तुं सिउ मुझ कन्हइ लेसि	883
मनि विल्रखाणो रूपणि ताम	
हूं भूली तुम्हे म धरु कोप	8 <b>8 २</b>
मनमांहि तूं कांइ झूरइ माइ	
जिम हुं <sup>4</sup> ऊत्तर आपुं तुझ	४४३
जिम रूपणिनउ हूयु वीवाह	
धूमकेत जिम हरी लेई गयु	888
मुझनइ कहिउं नारदरिखि सार	
सवि संहिनाण पूरीयां तेह	884
तिणि कारणि मनि विलखी होय	
भानुकुमरनु आनिउ वीवाह	४४६
तिणि कारणि सिर मूंडइ आज	
हाथ कूटीनइ माथू धुणिउं	४४७
·	, , J
आंपणू 4. हं 5. ऊछह	

3.

आज न रूपणि मनि विलखाइ	हु जाणउं <sup>1</sup> पुत्र मिलइ तूं आइ	
प्रदिमनकुमर करी बुधि घणी	समरी विद्या बहुरूपिणी	885
(सत्यभामानी दासीओनुं रुक्मिणी	ना केशमुंडन माटे आगमन)	
निज माता उझलमांहि घरइ	रूपणिरूप अवर <sup>2</sup> एक करइ	
एतलइ बहु वरकांमिणी मिली	गावत गावत आवइ रली	886
अछइ रूप रूपणिनूं जिहां	ते वरनारि पहुती तिहां	
पाय पडीनइ वीनवइ तासि	सतिभामा मोकल्यी तुम्ह पासि	840
	सिरना केम ऊतारि दिउ भार	
निसुणि व[य]ण सुंदरि इम कहइ	बोल तुम्हारु <sup>3</sup> साचु वहइ ४५१	
इम किम ढलइ भाख आपणी	मूंडउ सीस कहइ रुखमिणी	४५२
छुरु काढीनइ हाथइ लीय	2- 1- 1-	
सुणउ चरित्र प्रदिमनतणूं	नावी सिर मूंडिउ आपणउ	४५३
हाथ आंगुली धरी उतारि	वलो मूंडी नावीनी नारि	
नाक कांन तिणि कीधी खोडि	गाती हूंती नारी जोडी (?)	848
रोती नीकली नयरमझारि	कवण पुरुषि ए विगोई नारि	
हूउ अचंभु वडु वजोग	हास् करइ नगरनु लोग	४५५
रोवत रोवत राउछि गई	सतिभामा कन्हइं ऊमी थई	
विरूप देखी पयंपइ <sup>5</sup> सोइ	तुम्हे कुणि मोकली विगोइ	४५६
तव ते बोलइ विलखी ह़ई	रूपणि घरि अम्हे पहुती जूई	
नाक कांन जव जोइ सोइ	नाविणि संघली ऊठी रोइ	840
सुणी चरित्र चर <sup>6</sup> आविउ तिहां	रूपणि राउ बहुठा जिहां	
विटंबी नारि सिर मूंड्यां घणां	नाक कांन काप्यां <sup>7</sup> अम्हें सुण्यां	४५८
तिसुणि वयण वली रूपणि कहइ	नवि हूं जाणुं है है हसइ <sup>8</sup>	
		४५९
1. जाणंड 2. आवर		
4. कडीनो प्र्वार्घ शरतचूकथी लहिर 5. प्रसार 6 वर 7		
<b>5.</b> पहपइ 6. वर 7.	कांप्यां 8. सहइ	

#### ( हिक्मणी साथे प्रद्युम्ननुं मिलन)

रूपणि उलखीयु कुमार रूप मनोहर लक्षण सार सोल वरसे पुत्र मुझ मिलिउ माहरु दु[ख] सयल हिव टलिउ ्व<del>स्</del>तुछंद जिसइ रूपणि रूपणि दीठउ परदवण वदन चूंबि आर्लिगीयु हसी वयण उठि कंठि लागीयु ह्वइ माहरु जनम सफल पुत्र आवइं आरित भागीय दस मास मइ उरि घरिउ सही ए दुख महंत बालपणइ नवि दिठ मइ ए पछतावु पुत्त ४६१ चुपई मातातणा वयण निसुय पंच वरसनु बाल गुणेयु क्षणेक मांहि वृद्धि सो करइ वली ते कुमर करी संहरइ ४६२ े खिणि आलइ खिणि लाडइ-चडइ खिणि खिणि छेहडइ वलगइ पडई खिणि खिणि जे मिन मांगइ तेइ घणउ मोह ऊपाय जेइ ४६३ एतल चरित्र तिहां तिणि कीय वली आणइ रूपइ थीयु (?) माता वचन सुणउ एक मुझ कुतिग एक दिखाडुं तुझ<sup>1</sup> ४६४

<sup>1.</sup> अते : इति प्रदिमनकुमार-चरित्रे विद्या-ग्रहण, रखमिणी माता मिलनो नाम तीय स्वर्भ :

# चतुर्थ सर्ग प्रद्युम्नविवाह

(सत्यभामा द्वारा बल्लिभद्र पासे दृतप्रेषण )		
एतल्रइ अवर कथांतर हूउ सतिभामाइ दूत मोकलिउ जूउ		
तुम्हे बलिभद्र हूया लागणा एहवा काम रुखमिणीतणा	४६५	
दूत जाईनइ पहुतु तिहां बिलभद्रकुमर बइठउ छइ जिहां		
युगति विगति तिणि वीनवी घणी एहवां कांम कीया रूखमिणि	४६६	
(बलिभद्र द्वारा वृद्ध रुक्मिणी पासे दूतप्रेषण)		
हरुधर कुपिउ दूत मोकरुइ रूपणि घरि गयु तेतरुइ		
ऊभउ रहिउ जई सीहदूयारि मांहि जई जणावी सार	४६७	
(प्रद्युम्न द्वारा ब्राह्मणरूपे दूतनो अवरोध)		
कुमर बुद्धि मनमांहि धरइ गरढउ वेस विशनु करइ		
मोटउ पेट नइ विपरीत देह बारइ आडउ पडि रहिउ तेह	४६८	
तव ते दृत बोलइ तिहि ठाइ ऊठि विप्र अम्हे माहि जाइ		
तु ते बांभण बोलइ <sup>।</sup> ईम उठी न सकूं लगारइ कीम	४६९	
सुणी वयण उठिउ रीसाइ साही नांखिउ एकइ ठाइ		
जाणिउं रखे ए बाभण मरइ ब्राम्हण-हत्याथी ते डरइ	४७०	
इसिउं जाणीनइ पाछा गया   बलिभद्र <sup>2</sup> आगइ आवी रह्या		
बांभण एक बारणइ पडिउ जाणे दिवस वीसनउ मडिउ	४७१	
ते छतां अम्हे न लहुं पयसार रुंधि पडिउ ते पोलि-दुवार		
पग <sup>3</sup> साहीनइ नांखिउ <sup>4</sup> जिसिइ मरवा ऊठिउ बांभण तिसिइं	४७ <b>२</b>	
(बल्सिट्रनुं आगमन)		
सुणी वयण बलिभद्र परजलिउ कोपारूढ होइनइ पुलिउ		
जण दसवीस एकठा थया <sup>5</sup> पवनवेगि रूपणि-घरि गया		
1. बोल्ड 2. ललिभद्र 3. पगा 4. नांखिंउ 5.	थाया	

ऊभा थया जई सीहदुयारि	दीठउ बांभण पडिउ दुयारी	
हलधर तव त्राम्हणनइ कहइ	मूंकी बारणूं पाछउ रहइ	४७४
तिहां बांभण हलधरसिउ कहिउ	सतिभामा घरि भोजन लहिउ	
सरस आहार उदर अति भरिउ	उठी न सकू पेट आफरिउ	8 <b>७ ५</b>
तव बलिभद्र कहि सि वात	ए कारटियानु सरइ खात	•
बांभण खरु लालची होइ	घणउ खाइ जाणइ सह कोइ	. ४७६
तिहां रीसाइ विप्र इम कहिउ	अहो खरुं निरदइ तुझ हीयुं	
अवर करइ बांभणनी सेव	विप दुखनु बोलइ केव	800
तव ऊठिउ बलिभद्र रीसाइ	साही पगनइ बाहरि जाइ	
कांइ विप्रनइ दिउ तुम्हि गालि	बांहि धरीनइ ए निकालि	४७८
पूछइ कुमर रुखमिणी पासि	कुण ए आविउ छइ आवासि	
छपनकोडि मुखमंडणसार	ए कहीइ बलिभद्रकुमार	४७९
सिघलु ज्झ ए जाणइ घणउ	ए छइ पीतरीउ तुम्हतणउ	
साही पगनइ बाहरि गयु	विप्र पाउ पडीनइ रहिउ	850
देखि अचंभु <sup>1</sup> बलिभद्र कहइ	गुप्तवीर ए को कुण रहइ	
नांखी पाउ भुंइ ऊर्भु थयु	ततिखणी सिंघरूप विक्रयु	४८१
(प्रयुम्ननुं सिंहरूपे बलिभद्र साथे स	युद्ध )	
हलघरि आयुध <sup>2</sup> लीयुं संभालि	बिहु दिइ मांहोमांहि <sup>3</sup> गालि	
अखाडउ करि झूझइ भिडइ	बेहूं सबल मुल्ल जिम लडइ	४८२
उलालिउ हलधर पडिउ जई तिहां	छपंनकोडि नारायण जिहां	
देखि अचंभु सघछु लोग	भणइ कांन्ह ए हूउ विजोग	४८३
एतली वात इहूं ते रही	आधी कथा रुखमिणिनी सही	
पूछइ रूपिणि पुत्र तुम्हे सुणउ	किहां सीखिउ झूझ तइ घणु	8 < 8
मेघकूटपर्वेत <sup>4</sup> नइ ठाइ	जिमसंवर तिहां निवसइ <sup>5</sup> राइ	
सुणउ वयण माय रुखमिणी	ते कन्हइ विद्या सीखी घणी	४८५
1. अचुंभु 2. आयुंघ 3	. माहोमाहि 4. पेर्वत 5. नवस	इ

### प्रयुग्नकुमार-चुपई

	निसुणि वयण मा हुं कहं तुझ वली परदवण कहइ कर जोडि	नारद लेई आविउ मुझ उदिधमाल मइ लीई विछोडि	४८६
( प्र	द्युम्न साथे रुक्मिणी यादवोनी	सभागां)	
	हसी वयण रूपिणि तव कहइ तव कुमर कहइ समझाइ	बोल्ड एक हूं मागूं मा <b>इ</b>	४८७
	बांह साहीनइ सभामझारि भणइ माइ सुणि साहसधीर	ए यादवमांहि बलवंतवीर	४८८
	बलभद्र-कन्हइ घणुय परांण पांचइ पांडव पांचइ जणा		४८९
	छपनकोडि जादव बलब्रद एहवा खित्री वसइ बहूत	जेहनइ भय बीहइ त्रिखंड किम तू जीपसि ए[क]छ पूत	४९०
		वस्तुछंद	
	ताम कोपिउ कोपिउ रिण त्रोडउं भड अतुरुबरु हरावुं रिण पंडवह नारायण हरुधर जिणवि	भणइ परदवण मलउ मान यादव असेसह जीपिसि सर्व सुरा नरेसरह सयल करुं संहार	
	इक जिनवरसिउं नवि चलइ	_	४९१
	कोपारूढ पजूनह थयु सभा नारायण बइठउ जिहां	चु <sup>पई</sup> बाह साही माता लेई गयु रूपणिसिउं संपतउ तिहां	<b>४९</b> २
( रुक्मिणीने छोडाववा यादवोने आह्वान )			
		तुम्हमांहि बलवंत क्षत्री <b>कवण</b> जिहि बल होइ सो लिउ छोडा <b>इ</b> तइ कंस भांजिउ भडवाइ	४९३
	जरासिध तड हणिउ पचारि	मुझ कन्हइ रूपणि आवी ऊगारि	8 <b>९</b> 8

दस¹ दशार तुम्हे बूझउ जेउ झझतणउ ते जाणइ भेउ जादव मिलउ तुम्हे छपनकोडि बलिभद्र तं बलीयु बरवीर हल सोहइ तुम्ह कन्हइ हथीयार त अर्जुन2 खंडगवण-दहण तइ वयराटि<sup>5</sup> छुडी<sup>6</sup> गाइ भीम गदा करि सोहइ तुझ खीरि पांचनुं भोजन खाइ निस्रणि वयण सहदे जोइसी हरखिइ वात पूछइ परदवण निकुलकूंवर तू प[व]रख-सार हवइ तुंग्ह थयु मरणह ठाय तुम्हि नारायण हलधर ह्या सयरु वात जाणी तुम्हतणी प्रदिमनकुमर बोलिउ तिणि ठामि बोल एक हुं बोल भलु

बल करि रूपणि लिउ विछोडि ४९५ रण-संग्रामि तं साहस-धीर मुझ कन्हइ रूपिणि लिउ जगारि ४९६ <sup>3</sup>त्झ पुरषारथ जाणइ सह जण<sup>4</sup> मुझ पासइ रूपणि लिउ छोडाइ 880 परतप<sup>7</sup> आज दिखाडउ मुझ हवइ संप्रामि<sup>8</sup> वढइ कां नइ आइ 886 जोस जोइ किस्त होइसी बिहुंमांहि जीपइ हारइ कवण ४९९ तुम्ह कन्हइ कोंत सोहइ हथीयार मुझ पासि रूपणि छोडावु आय 400 छल करी कुंडनपूरि गया चोरी हरी आणी रुखमिणी9 408 कांइ न आवी तुम्हे कर संग्राम तुम्हि सवि क्षित्री हूं एकछ

वस्तु

निसुणि कोपिउ कोपिउ जाणे<sup>10</sup> विश्वानरि घृत ढलिउ सायर जिम ऊछिछिउ भीम गदा लेई आरुहिउ अर्जुन<sup>11</sup> लीयु कोडंड<sup>12</sup> निकुल कोपि करि कोंतु लीयु तु हारिउ ब्रह्मंड

ताम श्रीकृष्ण जाणे कि सिंघ वनमांहि गंजिउ सयन सर्वे यादव विसजिउ

2. अर्जन तूंझ 4. ज वण 5. वयाराटि 1. इंस

6. वच्चे '' गा '' वधारानो छे. 7. परतग 8. सम्रांमि 9. रुखमिण

५०३

10. लहियाथी आगळ वधारानो "जा" लखाइ गयो छे.

11. अर्जन

12. कोइंडं

#### ( युद्धनी तैयारी )

	चुपई	
साजण सजु थाउ वहिलाउ	थयु सनद्ध-बद्ध यादवराउ	
रहवर साजउ गयवर गुडउ	जईनइ सुहड आज रणि भिडु	408
आदेस थयु सुभट रणि चाल्या	गही टोप करइ केतला	
<b>केय करइ स</b> जइ करताल	केई चालइ बांधी चाल	पुठप
केई हाथइ लिइ हथीयार	केई घोडां आणइ सार	
केई माता गयवर गुडइ	केई सुहड साजइ रथि चडिइ	५०६
केई तुरीइ पाखर घालि	केई आयुद्ध लिइं संभालि	
केई टाटर झूझण लेइ	केई माथई टोपा देइ $^{ m I}$	५०७
केई पहिरइ आंगि सनाह	एहवा हई चालइ रणमांहि	
केई कुंत लीइ करि साझि	केई असिवर नीकलइ माझि	406
केई सेल समारइ फिरी	केई कडिहि बांधइ छुरी	
केई कडिइ कटारी बांधि	केई चाल्या तीरह सांधि	५०९
केईतणइ नवि वात समझाइ	केई सुहड ते साम्हा थाइ	
जिणि ए रूपणि हरी परांणि	सो नर नही तुम्हारइ माणि	५१०
सर्व क्षित्री हिव एकठा मिछ	घटाटोप करि सांग्हा चळ	•
उछी बुद्धि म करु पाय	हवय थयु मरणनु ठाय	५११
चाउरंग दव तव मिलिउ तुरंत	हय-गय-रथ-पायक-संजुत्त	
सिरि वरछत्र ते सोवनवांन	आकासि हूई चाल्यां विमांन	५१२
<b>एहवां सयन</b> चारुयां सपरांण	वाजा वाजइ ढोइ निसाण	
घोडां खुरी उछली अति खेह	जाणे गाजिउ भाद्रव-मेह	५१३
(सेनाना प्रस्थान समये अपशुकनो	)	

1. टइ

महीयारी दाहिणी पिंडहार दिखण दिसि बोल्ड फेफार ५१४

वामइ दिसा करंकइ काग वाट कापी जाइ कालु नाग

	<b>3</b>	•
वनमांहि दीसइ जीव असंख सारथि कहइ सुणउ तुम्हे राउ	ध्वजागमि बइसइ ते पंखि एणइ सुकनि नवि दीजइ पाउ	५१५
तउ केसव बोलइ तिणि ठाइ सारथिनइ समझावइ सोइ	शकुन सो गणइ विवाहण जाइ कर्मइ लिखिउ न टालइ कोइ	५१६
( प्रद्युम्न द्वारा सेनानिर्माण )		
माता रूपणि घालि विमाणि		५१७
प्रदिमनकुंमरइ मनि बुधि धरी जेहवउ तेहनु बल देखीयु	समरा विद्या सनाकरा तेहवउ आंपण सेना कीयुं	५१८
( युद्धवर्णन )		
बेहुं दल साम्हां मेलीइ कोई वारू <sup>1</sup> लिइ करवाल	सुभट साजि धनुष करि लीइ जाणे जीभ पसारी काल	५१९
मयगलसिउं मयगल रणि भिडइ राउत पायक वढइ पचारि	रहवरस्यूं रहवर आथडइ पड्या ते ऊठी कइ पुकारि	५२०
को हाकई कोइ हणइ	कोई मारि मारि तिहां भणइ	
कोई भिडइ समरंगणि गाजि कोई करइ धनुष <sup>2</sup> टंकार	कोई कायर नासइ माजि कोई असिवर करइ प्रहार	५२१
कोई कहइ तूं जई रण गाहि देखी समरंगणि बोलइ राउ	कोई हाक दीइ रणमांहि	५२२
सहदे निकुल कहीइ तुझ	अर्जन भीम तुम्हारुं ठाउ पवरख आज देखाडुं <sup>3</sup> मुझ	५२३
वली पचारि बोल्ड हरिदेव बलिभद्रकुमर ठाम <sup>4</sup> तुम्हतणउ	दसहि दसार सुणउ वसदेव देखाडउ बल आज आपणउ	५२४
कोपिउ भीमसेन लेई चडइ	हाथि गदा लेई रणि भिडइ	N.
गयवर-सिरि सो करइ प्रहार	भाजइ क्षित्री नहीं लगार	५२५

<sup>1.</sup> লিলিइ

<sup>2.</sup> घधनुष

<sup>3.</sup> देखांडु

<sup>4.</sup> ਠਾਸ਼

#### प्रयुम्नकुमार-चुपई

सहदे हाथि लीइ हथीयार हलधर झझ न पूजइ कोइ यादव भिडइ सुहड वर वीर दसदिशार नइ वसदेव भिडइ	हरु आयुध जे हाथइ होई जे संमामइ सुरा धीर	<b>५</b> २६ ५२७
(धराद्यायी बनेली यादवसेना)		
प्र <b>दिमनकुमर को</b> प मनि धरइ भुंइ सुहड सयल रणि पड्या	मायारूप झझ घणूं करइ देखइ अमर विमाणहि <sup>1</sup> चड्या	le D 🗸
पाटर पाखर हयवर पडे $^2$		376
ठामि ठामि जे मयगल मत्त	ते संग्रामि गया गयगत्त	५२९
सेना झूझि पडी रणि जांमि हाहाकारु करइ तव कांन्ह	विलखवदन हरि ह्यु ताम कोई वीर अछइ बलवांन	५३०
	वस्तु	
प्ड्या यादव यादव	देखि वरवीर	
प्ड्या पंडव अतुल बल	जेहनइ हाकि सुर-साथ कंपइ	
जिणि चालंति भुइं थरहरइ	सबल साथ सहु कोइ जंपइ	
ते सवि क्षत्री इणि जीया	ए अचरिज महंत <sup>4</sup>	
कालरूप ए अवतरिउ	यादवकुल-क्षयंत	५३१
	चुपई	
फिरि फिरि सेना देखइ राय	क्षित्रि पड्या न सुझइ ठाय	
मोती-रयणमाल जे जड़यां	दीसइ छत्र ते त्रूटां पड्यां	५३२
हयवर गयवर पड्या संजुत्त	ठामि ठामि मोटा मयमत्त	
ठामिइ लोही वहइ असराल	ठामि ठामि किलकिइ वेताल	५३३
रुधिर शोषीनइ करइ पोकार	जिमनइ जाइ जणावी सार	
व्यंतर <sup>5</sup> प्रेत चाछ सह कोइ	लिउ ग्रास जिम त्रपता होइ	५३४
1. निमाण 2. पड 3.	जो 4. महांत 5. ब्यातर	

#### (युद्धसन्ज थता श्रीकृष्ण)

दीठी सेन पडी भंइ जाम ततक्षणि हाथि लीइ करि चाउ ताउ कुमार मनि कोपइ चडिउ हालइ महीयिल सलकइ सेस जब रणि चालिउ रथ आपणउ वली जीमणुं! आंगज करइ रणि संप्रामि सेनु सवि हणी तु न ऊपजइ कोप सरीरि ततक्षण सारथि लागु कहण तुम हाकइ भाजइ अरि सामटा तव बोलइ केसव वरवी वरवी तइ मुझ सेन सयल संहरिउ पुन्यवंत तुं 4 क्षित्री कोइ जी(?) जीवीदान मइ दीधू तोइ (प्रचुम्न द्वारा श्रीकृष्णनी वीरतानो उपहास)

कोपारूढ कृष्ण तांम अरीयणदल मांजु भडवाय ५३५ जाणे परबत खडहडिउ तव संग्रामि चलिउ रायकेस ५३६ तव फरिकेड लोचन जीमणड सारिथ<sup>2</sup> निसुणि स्युं स्युं सुख करइ ५३७ वाली लेसु राणी रुखमिणी कारण<sup>3</sup> स्युं कहीइ रणिधीर ५३८ अचंभु कृष्ण एही कवण जिम केसरि गंधइ गजपटा ५३९ निसुणि वयण तृ क्षत्री धीर मुझ मांमिणि लेई सिउ करिउ 480 तुझ ऊपरि मुझ कोप न होइ पाछी रूपणि आपु मोइ ५४१

तु हसी बोलइ परदवण तुझ देखत मइ रूपणि हरी जे तूं रणमांहि जीतिउ विगोय लाज न हुइ तुम्ह हरिदेव मइ तं सुणि झूझ आगलु हवइ मइ दीठउ ताहरु तलु कांई नु हुइ तुम्हारइ कीइ सेन पडी तुम्हे हारिउ हीइ तु प्रदिमन हसी करि कहिउ ताहरुं मन मइ परिवउं आज छोडी आस तइ परिगहतणी

इसी वात कहइ रणि कवण तुझ देखत सवि सेना पडी 483 तेह सिउं हवइ साथ किम होइ मुझकिन्ह भामिनि मांगइ केव ५४३ 488 तइ सवि कटक पडिउ सांसहिउ तुझनइ पणि नही रूपणि काज 484 वली तइ छोडी ते रुखमिणी जउ ताहरइ मनि किसी नही आहि पभणइ कुमर जीव लेई जाहि ५४६

<sup>1.</sup> जामणुं 2. सारदि

<sup>3.</sup> कांरण

<sup>4.</sup> ਰੰ

#### प्रचुम्नकुमार-चुपई

#### ( कृष्ण-प्रद्युम्न-युद्ध )

मनि पछताणउ यादवराइ ए मूंहसिउं बोलिउ आकरु ऊपनु कोप थई चिचि कांणि अर्धचंद्र<sup>1</sup> तिहि साधिउ बाण सांधिउ धनुह दीठउ जाम कुसुम<sup>2</sup>बांण मेल्हिउ परदनण हरिनूं चापह त्रुटुं जिसिइ वली कुमरि सर दीनु छोडि कोपारूढ कृष्ण तव थयु मेल्हइ बांग कुमर तुडि चडिउ कृष्ण संभारइ धणहर तीन हसि हसि वात कहइ परदवण कहिपहि सीखिउ पवरिख घणु घणुह-बाण छीन्या तुम्हतणा तुझ पुरुषाक्रम दीठउ आज वली कुमार बोलइ ते इम विलखवदन नारायण थयु तिणि आरूढउ यादवराय अगनिबाण मेल्हिउ हरि जाम अगनिबांण 4 थायु प्रज्वलंति कुमरतणूं दल पाछूं जाइ दाझइ हयवर गयवर घणा कोपारूढ थयु परदवण पुष्फवात करि घणहर लीयु

मइ एहि सिउं बोलिउ सदभाइ हवइ मारुं जाइ जिम परु 480 धन्ष चडाविउ सारंगपाणि हवइ एहनुं देखू सपराण 486 कोपारूढ पजून हुउ ताम धणुहर भांजि गयु महमयण 488 बीजुं धनुष संभात्रिउ तिसिइ उडी<sup>3</sup> धनुष गयु गुण त्रोडि 440 त्रीजु धनुष चडावी लीय तेह्रं बांण त्रूटि धरि पडिउ खिणिमइ कुमर लेइ सवि छीन तूह समु नही क्षत्री कवण 442 मूहनइ सिउं कहिनइ गुर आपणु तेऊ राखि न सक्या आपणा इणि पराणि किम भोगवइ राज कंस जरासिध जीतु किम 448 मायारथ करीनइ गयु हाथइ धनुष चडावी जाइ ५५५ तेहनु ताप न सहाइ तांम चिहुंदिसि झाल घण तेज करंति ५५६ अगनिझालि ते आकुला थाइ न्हासइ कटक पजूनहतणा 440 तेहनी हाक सह[इ] ते कवण साथइ मेघबांण परठीयु 5 とてく

3. उंडि 4. अंगनिबांण

अद्धंचंद्र
 फ्रसम
 परिदेयु

मेघनाद घनघोर करंति	जल थल महीयिल नीर भरंति	
पाणी आगि उल्हाणी तांम	यादवसयन वही जाइ गाम	५५९
रहवर छत्र जे दीसइ भला	पाणी प्रवाही सयल वही वल्या	1
हयग[य] वांहणि वहइ विसेस	राय रांणा पाला पुलइ जेस	५६०
तव पचारि बोलइ गोपाल	कइ ए सुक-मंगलनी चाल	٠
नारायण मनि थयु संदेह	किहां हूतु ए वरसइ मेह	५६१
नारायण अचंभु करइ	मारुतबांण हाथिइ तव धरइ	
मेरुहंउ बांण वायनुं <sup>1</sup> जांम	नाठा मेघघटा सवि तांम	५६२
वाइं सयल सैन्य धडहडइ	ऊडी छत्र महीमंडिल प <b>डइ</b>	
चाउरंग दल ऊडिउ ते जाइ	हय गय रहवर माठू थाइ	५६३
तव पजून कोप मनि कीयु	परबतबांण हाथि करि छीयु	
मेल्हउं बाण रणि जाइ वहिउ	रंघि वायनइ $^2$ आडु रहिउ	५६४
कोपिउ द्वारिकांतणउ नरेस	<del>-</del>	• ( -
वज्र <sup>3</sup> प्रहार करइ तव सोइ	पजून पराक्रम दीठउ वसेस परबत फाटि खंडोखंडि होइ	५६५
देवनु <sup>4</sup> बांण कुमरि हाथि लीयु	नारायण सांम्हउ मूकीयु	ું કહ્યું ક
तव केसव मनि विसमु होइ	पहनुं चरित्र न जाणइ कोइ	५६६
	•	. , 4 4
मइ हणि जीतु कंस पचारि सर सर-असर साथि सा वटिस	जरासिधु मइ घालिउ मारि	10.00
मइ सुर-असुर साथि रण वहिउ	एह गिरूयु जे रणि अडि रहिउ	५ द ७
तव धनुष नाखी गोपालि वीज सरिखु झलकइ करवाल	चंद्रहास करि लीयु संभालि जाणे <sup>5</sup> जीभ पसारी काल	10.5
_		५६८
जब ते खड्ग हाथि करि लीयु	चंद्ररयण डावइ करि दीयु	
	त्रिणि खंड <sup>7</sup> अकुलाणां <sup>8</sup> ताम	पद्
•	जाणे <sup>9</sup> गिर-परबत टलटल्या	1. 1.1.1.1
	रूपणि मिन आलोचइ ताम	
	3. ब्रज्ज 4. देवतु 5. जेणे	
D. चલ્યા /, લક <b>ઠ</b> .	, अकुलाणं	વાયુ

#### प्रधुरनकुमार-चुपई

बिहुं पवाडे माहरुं मरण नारद निसुणि एक मुझ वात		५७१
(रणभूमिमां नारदनुं आगमन)		
जव बिहु सुहड भिडइ पचारि	वेगइ नारद जई निवारि	
रूपणि <sup>।</sup> वयण सो मनमांहि धरइ	विमानथी हरखिइ ऊतरइ	५७२
र्णि पजून-नारायण जिहां	नारद जाइ संपतु तिहां	
-	वाहइ कृष्ण कुमरनइ घाउ	५७३
नारदरिखि क्षण पहुतु जाइ	बांह साहीनइ हरि रहइ	
तव हसि नारद लागु <sup>2</sup> कहण		५७४
( श्रीकृष्ण अने प्रद्युम्ननो परस्पर प		
कहु तुझसिउ वात बहुत	एह परदवण तुम्हांरु पूत	
_	जिमसंवरि <sup>3</sup> घरि मोटउ थयु	५७५
एणइ जीतिउ सिंहरथ पचारि		•••
सोलह विद्या लाभह योग	<del>-</del>	५७६
पजूनकुमर गिरूयु वरवीर	• •	•
एह कुंमर पुरवाक्रम घणउ		५७७
एतलइ कुमर रखि पासइ जाइ		•
ए छइ भछ पिता तम्हतणउ		५७८
तु प्रदिमन चलिउ तिणि ठाइ		,
तव नारायण उल्हसिक हीयुं		५७९
धन्य रुखमणि जे उदरइ धरिउ	•	107
	^ `	10 / 0
	_	460
(नारद द्वारा नगरप्रवेशनो प्रस्ताव		
तु नारदरिखि बोल्ड ईम		
	नगरी <sup>8</sup> उछव करुं असेस	५८१
<ol> <li>रूपणि</li> <li>त्रंपु</li> <li>त्रंपु</li> <li>त्रंपु</li> <li>त्रंपु</li> </ol>	जिमसवरि 4. संग्रांमइ 5. 8. निगरी	रूंपणि
चन नगमन ११७६	- 7 1 1 1 1 1	

नारायण मनि विसमइ थयु यादव मुगट पङ्या संग्रामि	परिगह <sup>1</sup> सयल झूझिणि गयु सोभा किम हूइ जातां गामि	५८२
नारदि कहिउ सुणु परदवण क्षत्री सुहड उठइ गुणवंत	तू मोहिन संकेलइ मयण रणसंग्रामि जे बलवंत	५८३
छपनकोडि यादव बलचंद हय गय रहवर वलीऊं पांण	दसदिसार उठ्या प्रचंड ऊठ्या महीतिल पड्यां विमांणि	428
चुम्ननुं आगमन अने नगरजनोनो आनंदोत्सव)		

### ( সং

ч	घुम्ननु आगमन अन नगरजनान	। अनिदात्सव )	
		दूहा	
	कुमरप्रद्यमन देखि करि लेई उछंगइ चूंबीयु	आणंदिउ हरि राऊ वलिउ निसाणे घाउ	५८५
	सफल जनम आज मुझ ह्र्यु सेना सवि उठी करी	जि घरि आयु पुत्त आवी करइ सावत्त	५८६
		चुपई	
	सेना सिव ऊठी घर जाम पजन आवइ नयर मझारि	छपन कोडि घरि चाल्या ताम चडी आवासइ जोइ नारि	५८७
	क्रुष्ण-कुमर जव घरि आवीया गूडी ऊछली घरि घरि बारि	सयल लोकनइ मनि भावीया कांमिणि गावइ मंगल च्यारि	444
	घरिइ वधावां आवइ बह् विप्र ते च्यारि वेद ऊचरइ	नगरलोक तिहां जोइ सहू वरकांमिणि तिहां मंगल करइ	५८९
	पूर्णकलस सिरि लीइं समारि नयरइ उछव करइ सवि जण	आगलइ थई चाली वरनारि जव नयणइं दीठऊ परदवण	५९०
	सिंहासणि बइसारिउ सोइ दही द्रो सिरि अक्षत देइं	कुंकमतिलक करइ सहू कोइ मोती मांणिक थाल मरेय	५९१

<sup>1.</sup> परिग्रह

#### ( यमसंवरनं द्वारिका-आगमन)

कुमरह सिरि आरती उतारि एतलइ मेघकूटनुं धणी	देई आसीसि चाली वरनारि संवरराजा कीरति घणी	५९२
माणिक कंचणमाल संजुत्त पवनवेग विद्याधरराय	द्वारिकनयरी आय पहुत्त जेहनी सेन न सूझइ ठाय	५९३

#### (यमसंवर अने श्रीकृष्णनुं प्रथम मिलन)

रतिवामा जे कन्हइ कुमारि	ते आणी द्वारिकांमझारि
जिमसंवरि भेटिउ हरिराउ	कृष्ण कहइ तुम्हे कीउ पसाउ ५९४
त <b>इ बा</b> ल्ल पालिउ परदवण	तुझ सम सुज[न] नही को कवण
तव रूपणि बोलइ तिणि ठाय	कनलमालइ लागी पाय ५९५
किमइ न ऊरण थाउं तुझ	पुत्र भीख <sup>।</sup> तइ दीघी मुझ
घणउ आविनइ करिउ ऊछाह	कुमरपजून थापिउ वीवाह ५९६

#### (प्रश्चम्ननुं सिद्ध पुरुष रूपे सत्यभामा पासे गमन)

सितभामा ते वातह सुणी	वदिन हुई आमणदूमणी	
सुणतां द्रसकु पडीयु पेटि	विवाह पुत्रनउ न हूउ नेटि	५९७
सतिभामा कन्हइ आयु दूत	रूखमणितणुं जणाविउं सूत	
कुमर तिहां आविउ मति घरी	सिधपुरुषनुं रूपह करी	५९८

#### (कुबजादासीनुं रूपपरावर्तन)

कुबजादासी दीठी जिसइ कह रे ताहरुं कांइ विरूप	सिधपुरुष बोलावी तिसइ तुम्ह भेटिइ होसइ सरूप	५९९
दासीनइ तव गुटिका दीध सतिभामा कन्हइ आवी जिसिइ	रूप अनोपम तेहनूं कीध	€00
दासी पिंग लागी जेतलइ स्वांमिनि हूं ते कुबजादासि	रांणी बोलावइ तेतलइ सिद्धपुरुष वांदिउ जई पासि	६०१

<sup>1.</sup> भाख

तेणइ रूप अनोपम करिउ सतिभामा कहइ सुणि तुं दासि	[मा]हरुं काज <sup>।</sup> इणीपरि सरिउं सिद्धपुरुष आणु मुझ पासि	६०२
सिद्धपुरुष प्रति दासी भणइ सिद्धपुरुष तव आविउ हसी		६०३
सतिभामां जव लागी पाय तव हरखी सतिभामा नारि	सिद्धपुरुष कहइ मागु माय कहि स्वांमी सुकिसंकट वारि	६०४
(प्रद्युम्न द्वारा सत्यभामानी रूपविवृ	हृति )	
माहरुं रूप अनोपम करें सिद्ध कहइ सतिभामा सुणउ	जिम अधिक मुझ मानइ हरे मूंडउ मस्तक तुम्हे आपणउ	६०५
मुहुंडइ मसि लगाडउ घणी स्वांमी इम किम रूपह थाइ	मंत्र जपु तुम्हे मुझकन्हइ भणी भोली मंत्रिइ कुरूप सवि जाइ <sup>2</sup>	६०६
स्वांमी तुम्हे करू पसाउ तव ते सिद्धिइ सिर मुंडीयु	मूंडउ माथउ विहला थाउ मिसि लेई मुंडुं खरडीयुं	६०७
उँ गडबडाय स्वाहा ए मंत्र रही एकांति जपु ए जाप	सिद्धि साहिउ <sup>3</sup> ए मोटउ तंत्र रूप अपूरव थाइ आप <sup>4</sup>	६०८
सतिभामा उरामांहि जई एतछं करी सिद्ध ते गयु	मंत्र जपइ एकमनी थई रुखमणिनइ तव आणंद थयु	६०९
(प्रद्युम्ननां स्रग्ननी तैयारी)		
धरी लगन नइ जोसी गया	यादव सवि रली[याय]त थया	
मंडप मंडाव्या तेहरइं	ठांमि ठांमि ते तोरण करइ	६१०
पटुलां बांध्यां विस्तारि	कनककलस तिहां सोहइ बारि	
भोजन करीय	विधविध भात पकवानहतणी	६११
नुंहुंतरिवा आव्या सवि राइ		v . v
मंडलीक जे पुहवि असेस	आव्या घरि[न]रेस	६१२
1. काजाः 2. जांह 3.	सहिंउ 4. आणूप	

अंग बंग कर्लिगहतणा लाट मोट गाजण कास्मीर	द्वीपि समुद्रइ भूपह घणा चौड कांन्हड नइ मालव कीर	६१३
पूरव दक्षण [गू]जरदेस द्रवड चवड कन्हडह तिलंग	मेवात मारूयाडि मध्य वसेस सोरठदेस सोहइ अतिचंग	६१४
गोडदेस उत्तरनइ मलबार ए देस तणा जे मोटा राइ	एहवा सोल सहस उदार नहुंतरइ आया घणइ उछांइ	६१५
(विवाहोत्सव)		
संख-शबद मांगलिकह वाउ भेर तूर वाजइ असराल	राय वालिउ निसाणे घाउ मुहुंवडि वीणा आलवइ ताल	६१६
विप्र वेद च्यारइ उचरइ बहु कलयल नगरी ऊछलिउ	घरि घरि कांमिणि मंगल करइ पजन-वीबाह पुन्यइ फलिउ	६१७
रयणजडित छत्र सिरि वर धरइ कणयमुगट सिरि उदय करंति	कनकडंड चामर शिरि ढलइ जाणे स्र्रिकरण झलकंति	६१८
(सत्यभामानुं केशमुंडन)		,
वरघोडङ बोली रूखमिणी तेडवा गया कुमर ते घरइ	सांभरी वात सतिभामातणी सतिभामा दीठी इणिपरिइ	६१९
देखी कुमर हस्या हडहडी वयरी गयु विगोइ घणुं <sup>1</sup>	ए कुणि उपाय पाडी बापडी दुख कहूं केहनइ आपणूं	६२०
सतिभामा मिसि घोई करी सतिभामा तुम्हे बाई सुणउ	रूखमणितणइ घरिइ सांचरी पहिंछ बोल बोलिउ ते घणउ	६२१
हसमसि वात कहाइ घणी त्रिणिखंड <sup>2</sup> जब राजइ मुझ <sup>3</sup>	तं बोलि रांणी रुखमिणी तउ सिरि केस उतार तुझ	६२२
केस ऊतारण लागी जाम रुखमिणी मूंड मूंडइ ते वली		६२३
1. ঘणঃ 2. ভারঃ	3. ਸਵ	

सयल कुटुंब मिन हूय उछाहु	कुमर प्रदिमन[न]उ थयु वीवाहु	
यादव सवि रलीयायत थया	गाई वाई घरि लेई गया	६२४
थयु वीवाह गयु घरि लोग	करइ राज बहु विलसइ भोग	
देखी सतिभामा गहबरइ	सुकि साल बहु परि इम करइ	६२५
(भानुकुमारनो विवाह)		
तु सतिभामा मांडिउ ऊपाय	कहइ विजवेगा खेचर जाइ	
रयण संचइ पाटण कहवाइ	रयणचूड तिहां निवसइ राय	६२६
विजवेगु जई वीनवइ सेव	सतिभामा हुं मोकलिउ देव	
अम्हसिउं अति तुम्हे करु सनेह	भांनुकुमरनइ पुत्री देह	६२७
सयलराय विद्याधर मिली	द्वारिकांनगरी आवइ रली	
घणउ नगरमाहि करी ऊछाह	मांनुकुमरनु हूउ विवाह	६२८
मानिउ बोल कुटंबइ मिली	खेचरराय ठांमि पहुता वली	
संयवरा लेइ द्वारिकां <sup>।</sup> जाइ	<b>मं</b> डप मांड्घां <b>वस्त्र</b> आ <mark>छाइ</mark>	६२९
तोरण रोप्यां घरि घरि बारि	कनककल्स सोहइ सीहदूयारि	
सयल कुटंब	भानुकुमरनु हूउ वीवाह	६३०
तिहां ते राजा राजि करंति	विवहपरइ ते भोग भोगवंति	
राजरिद्धि विलसइ प्रचमण	ते समविड न दीसइ कवण <sup>2</sup>	६३१

<sup>1.</sup> द्वारिकांः 2. अंतेः प्रद्यम्नवीवाहनो नाम चतुर्थः स्वर्धः

# पंचम सर्ग

# सांब-प्रद्युम्न-पाणिग्रहण

#### (सीमंघरस्वामी कथित भवान्तर)

पूर्व विदेह पुस्तलावती <sup>1</sup> जिहां पुंडरगिणीनगरी जे तिहां सीमंधर <sup>2</sup> जिन तिहां छइ देव सुर नर अहनिसि सारइ सेव	६३२
त्रिगढइ बइठा करइ वखाण बारइ परषदा सुणइ सुजांण एकइ देवइ वांणी सुणी पूछी वात भवांतरतणी	६३३
पूर्व सहोदर स्वांमी किहां केहनइ घरि ऊपनु जिहां भरहिं सोरठवरदेस द्वारिकांनयरी <sup>3</sup> कृष्ण नरेस	६३४
बहु गुणवंतनइ सोभागिणी कृष्णतणी भार्या रुखमिणी तेहनइ उदरि आवी ऊपन प्रदिमनकुमर नांम संपन	६३५
तेहनइ रूपि न पहुचइ कोइ कृष्णराय घरि विलसइ सोइ सुणी वयणनइ प्रणमी पाय सुरवर ते देवलोकिइ जाइ	६३६
(सत्यभामानी श्रीकृष्ण पासे पुत्रप्रार्थना)	
कृष्ण गयु सत्यभामा घरिइं राणी दीठी शोकह भरइ तुम्हि कुणि दूहव्यां ए कारण भणु स्वांमी एक वयण मुझ सुणु	६३७
एक पुत्र छइ रुखमणितणु तेहनु पराक्रम सुणीय घणु ए सरिखु पुत्र दिउ हिव तुम्हे जिम रुळीयायत थाउ <sup>4</sup> अम्हे	६३८
(कृष्णने दिञ्यहारनी प्राप्ति)	
कृष्ण कहइ हूं आपुं सही पौषधशाला आविउ वही करी उपवास देव ध्याईयु हरिणेगमेष देव आईयु	६३९
1. पुषंलावतीः 2. सीमंघरि 3. नरयरीः 4. थांउं	

सुर प्रणमीनइ बोलइ इसिउं	स्वांमी तुम्ह जोईई छइ किसूं	
हरि जंपइ पज्नह जिसु	पुत्र एक मुझ आपु तिसु	६४०
पुव सहोदर जे मुझतणु	ते सनेह मुझ करतु घणु	
हवइ हूं देव हूयु अतिसार	रयणजिंडत तिणि आपि तु हार	६४१
य हार जे पहिरइ सोइ	तस घरि नंदन एहवु होइ	
इम कहीनइ सुर ठामइं गयु	पजून प्रतिइ हरि जाई कहिउ	६४२
प्जंन समझाइ	पुत्र एक हूं आपु माइ	
घणइ पुत्रि मुझ नथी काज	तुझ एक पुत्रइ पाम्या राज	६४३
(प्रयुम्ननी युक्तिथी सत्यभामारूपे	जांबबतीनी कृष्ण पासेथी हारप्रापि	प्ते )
वली <sup>।</sup> कुमरनइ कह मिणी	जंबवती छइ बहिनि मुझतणी	
निसुणि पुत्र तूं तेहनइ दिउ हार	जिम तुझ सरिखु होइ कुमार	६४४
तव प्रदिमन विचारि	जंबवती <sup>2</sup> तेडीं नारि	
काममुद्रडी पहिरु माय	सतिभामानइ रूपइ थाइ	६४५
सोल शंगारह पहिरी करी	कु जाइ ते खरी	
जिहां बइठा श्रीकृष्ण मुरारि	तिहां गई जांबवती नारि	६४६
देखी रूपनइ हरि हरस्वीयु	जंबुवती तु मु रखीयु	
सतिभामा <sup>3</sup> जाणी ते भार	वक्षस्थिल ते घालिउ हार	६४७
( कृष्ण पासे सत्यभामानुं आगमन )		
घाली हार आर्तिगन करिउ	तेहनइ उदरि देव अवतरिउ	•
जंबवती गई घरि जिसिइ	सतिभामा आवी ते तिसइ	६४८
कृष्णइ मनिइं विमासइ इसिउं	कामइ तृपती न हुई ए किसुं	
स्त्रीनइ तृपति न हुइ किमइ	बोलावी सतिभामा तिमइ	६४९
कहइ रांणी सिउं आवी वली	हजी न पहुती तुझ मन रली <sup>4</sup>	
स्वामी पहिछुं आवी नही	एह वात मुझनइ सिउं कही	६५०
1. বর্তী 2. জ্বনীঃ 3.	. सेतिभामा 4. रुली	

Jain Education International

#### प्रद्युम्नकुमार-चुपई

हार अहिनाणइ जाणिसु तेह		६५१
(सत्यभामा तथा जांबुवतीने त्यां	पुत्रजन्म )	
तेणइ समइ सोहम सुरदेव	सुर घणा करइ तस सेव	
आऊखूं नइ भव पूरु करिउ	ते सतिभामा उरि अवतरिउ	६५२
बिहुं रांणी घरि पुत्र जनमीया	घणा महोछव कृष्णइ कीया	14
	स्वरूपइ जिसा अमर अवतर्या	६५३
जांबवती पुत्र शांबकुमार	सतिभामानइ सुभान सुत सार	
	क्रुष्ण अंकि म्हेल्हइ ते धावि	६५४
बेहं कुमर खरा सुपीयार	एकइ दिनि स्ठीधु अवतार	
बेहूं वृद्धि ह्या सिस भाइ	बेहूं भणइ गुणिइ एक ठाइ	६५५
(सांबकुमार अने सुभानुकुमारनी	चूतक्रीडा )	
एक दिवसि बिइ जइ रमइ	कोडि सुवन्न दीयु ते गमइ	
सांबकुमरि जीतिउ तिणि ठाय	हारिउ सुभानकुमर घरि जाइ	६५६
सतिभामा <sup>2</sup> कहइ सुणउ कुमार	कूकडा खेलावउ ते सार	ž.
जेहनइ हारइ ते विल दीइ	दोइ दोइ कोडि जीपइ ते लीइ	६५७
तु कूकडा मूंक्या मोकला	ऊपराऊपरि वढइ आकला	
कुमर सुभानतणु गयु मोडि		६५८
घणउ खेलइ तिइं पाछइ कीयु	संबकुमरि जीती धन लीयु	
कुमर सुभाननइ आवी हारि		६५९
(सुभानुकुमारना विवाह)		
ं वली वात विमासी तिहा	दत मेर्विहास विद्याधर जिहा	
	सुभाननइ पुत्री दिउ तुम्हे आय	683
•		77.
विद्याधर मनि ह्र्उ उछाह		0.0.0
कुमर सुभान विवाहिउ जाम	तव रूपणि मनि चितइ तांम	६६४
1, शाबकुमरः 2. सितिभाम	- : 3. थीइ	

दूत मोकलिउ घणइ उल्हासि	आविउ रूपचंद्रनइ पासि	
· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		c c D
स्वांमी वात सुणउ मुझतणी	हूं तुम्ह कन्हइ मेल्हिउ रुखमिणी	994
संबकुमार कुमर परद्वण	तेह पवरख जाणइ सव कुण	
जिम अम्ह तुम्हसिउं वाधइ नेह	बिहु कुमरनइ बेटी देह	६६३
सुणी वात रुखमीराय कहइ	रुखमणि हजी कांई नवि लहइ	
यादववंसि पुत्र जे होइ	तेहनइ बेटि <sup>1</sup> दिइ ते कोइ	६६४
कही वात दूत [स]मझाइ	तूं कहिजे रुखमणिनइ जाइ	
आगइ तइ पवाडु कीयु	बात कहतां ते दूखइ हीयु	६६५
तइ सिसिपाल मराविउ सही	तुझथी माहरी नाम अति गई	
हजी वयण कहइ तू एह	बेटी किम दिउ सिउं सनेह	६६६
सुणी वयण विलखाणु दूत	द्वारिकनयरी आय पहूत	
वात कही रुखमणिनइ सहू	रुखमीराय न दिइ ते वहू	६६७
भाई रुखमणि प्रति एहवुं कहिउं	अम्हतुम्हमांहि किसुं सुख रहिउं	÷
पहिल्लं काम तइ मुं $\dot{s}^2$ कीयुं	तुम्हनइ छोडि डूंबनइ दीयु	६६८
मानभंग थयेली रुक्मिणीने प्रद्युम्न	हारा सान्त्वन )	
निसुणि वात विऋवाणी वयणि	दुखभरि अश्रपातिइ <sup>3</sup> नयणि	
मानभंग एणइ माहरु कीयु	ते कहतां मुझ दूखइ हीयु	६६९
अश्रुपाति <sup>1</sup> दीठी रुखमिणी	पूछी वात माइ आपणी	
कवण काजि मा तुम्हे दुख धरु	तेय वयण वेगइ ऊचरु	003
रूपचंदनी <sup>5</sup> वात सवि कही	ते वयण मुझ सालइ सही	
मइ जाणिउं मुझ भाई अछइ	वात किम करी ते पछइ	६७१
निसुणि वयण परदवण रीसाइ	हीन वचन तेणइ बोल्ठिउं माइ	
रूपचंदनइ जीपूं पचारि	छ इ परण्ं नारि	६७२
सांब-प्रद्युम्ननुं कुंडिनपुर तरफ प्र	स्थान : चांडाळवेदो वीणावादन)	
पजूनइ चींतवी ते बुद्धि घणी	समरी विद्या बहुरूपिणी	
सांब-पजनकुमर गहगद्या	पवनवेगि कुंडन या	६७३
1. बोटिः 2. मुहं 3. अ	ांश्रुपातिइः 4. ૐશ્રેपातिः 5. रू	पचंदन्नी

(

#### प्रधुम्नकुमार-चुपई

डूंबरूप बेहू जण थई पजन आलवणी करइ अपार	चहुटामांहि आव्या ते वही सांबकुमर बीजी करइ सार	६७४
लोक मोह्या चहुटा मझारि बहु परिवारसिउं दीठउ राउ	विल पहुता ते सीहदुयारि पजून तिहां जाई करइ व्रम्हाउ (१)	६७५
… कवित नाद छंद घणा अवर गीत सवे परिहरइ	प्रदिमन गाइ ते आपणा <sup>ः</sup> यादवनी बहु कीरति करइ	६७६
यादवतणउ नांम यु घणां गीतनी जाणु सार	सुणतां रूपचंद कोपीयु किहां हूता आव्या वेकार	६७७

#### ( रूपचंदने प्रधुमने आपेलो पोतानो परिचय)

नयर द्वारामति कहीइ ठाउ	तिहां छइ नारायण यदुराउ	
पटरांणी रांगी रुखभिणी	वारू सहोदरि जे तुम्हतणी	६७८
तुम्ह प्रति रूपणि मोकलिउ दूत	वलतु ते द्वारिका पहूत	
तुम्हे कहिउ ते कहिउं आय	तिणि सहेटि अम्हे आव्या राय	६७९
बोल बोलिउ ते कर प्रमाण	सुपरि सभाष न हुइ अप्रमाण	
बोल पालि म धरिस संदेह	बेहूं पुत्री अम्हनइ देह	६८०

यतः असारे खलु संसारे वाचा सारं हि देहिनाम् । वाचा विचालिता येन सुकृतं तेन हास्तिम् ॥² ३३

( रूपचंद साथे अथडामण )

वस्तु

सुणिय कोपिउ कोपिउ रूपचंदराउ जाणे विस्वानर घृत ढिलउं धुणिव सीस सवि अंग कंपिउ प्राण जीव बोलत गयउ एह बोलतइ कवण जंपिउं

<sup>1.</sup> आंपणा

<sup>2.</sup> असारतस्य संसारस्य वाचा सारस्य देहिनां। वाचा विचलिता जेन सुक्रतं तेन हारितं॥

एहनइ लेई बाहिरइ	सूली रोपु जाइ	
बांह साही वनमांहि धरु	म ते जाइ पलाइ	६८१
	चुपई	
<b>ग्रीव ग्र</b> ही तव करइ पुकार	डूंबडूंब <sup>।</sup> अम्हे रह्या अपार	
हाथ आलवणि सींगा <sup>2</sup> लीयां	हाट चुहुटां सवि भरि गयां	६८२
ततिखणि पुरुवर थई पुकार	रूपचंदराइ जणावी <sup>3</sup> सार	
रहवर गयवर हय पल्हणाइ	क्षण एक मांहि पहुता आय	६८३
संबकुमर परदवणह जिहां	रूपचंदराय आविउं तिहां	
एक तका(?) सवि एकइ साथ	सींगां लेई आलवणि हाथ	६८४
देखि डूंब मनि चिंतइ राउ	नीचजातिनइ किम करुं घाउ	
धनुष चडावि बाणि जव हण्या	ते पांहि अवर मिल्यां चु गणा	६८५
कोपारूढ पजून तव थयु	धनुष चडावी ऊभु रहिउ	
अगनिबांण जउ मूंकिउं जिसइ	झूझत क्षत्री नाठा तिसइ	६८६
( रूपचंद अने तेनी कन्याने लई प्र	युम्ननुं द्वारिकागमन )	
भागी सेन गयु भडवाउ	बांधिउ मांमु गलइ देई पाउ	
लेई कन्यानइ रूपचंदराय	द्वारिकांनयरी पहूता आय	६८७
रूपराय लेई पहुतु तिहा	नारायण बइठउ छइ जिहां	
रूपचंद हरि दीठउ नयणि	अरे राक सिउं बोलिउ वयणि (?)	६८८
(श्रीकृष्ण द्वारा रूपचंदनी मुक्ति)		
तव हसि $^4$ कृष्ण वात $^5$ इम कही	ए भाणेज तुम्हारु सही	
ए विद्याबल $^6$ पवरख घणु	जिणि जीतु पिता आपणु	६८९
तव हसि माघव कीयु पसाउ		
रूपचंद पजृनकुमार	इसि आन्या रूपणि घरि बारि	६९०
1. डूंबड्डा 2. सीगाः 6. विद्यवलः	3. जाणावीः 4. हंसिः 5.	वीतः

#### (रूपचंद अने रुक्मिणीनुं मिलन)

मेटी जाइ <sup>।</sup> बहिनि आपणी	घणु मोह धरिउ रुखमिणी	
घणइ आदिर तिहां मोजन करिउं	सत्तरभक्ष भोजन परवरिउं <sup>2</sup>	६९१
भाइ बहिनि भाणेजा मली	एक एक पांहिइं गुणनिली <sup>3</sup>	
निसुणि वयणनइ ह्यु उछाह	दीधी कन्या करइ वीवाह	६९२

#### (प्रशुम्न तथा सांबकुमरनो विवाह)

<b>मंडम मां</b> ड्यां धणइ मंडांणि	ठामि ठामि ते तोरण जांणि	
छपन कोडि यादव मनुरुली	बिहु कुमर परणाव्या <sup>4</sup> वली	६९३
संखः भेर तिवलना नाद	सोहइ रणतूर नफेरी साद	
ढोल द्रमांमां नइ दडवडी	मादल वाइ मंडिंग चडी	६९४
बेहूं कुमर हथलेवा थया	पांणिमहण करी घरि गया	
नयरी घरि घरि हूउ उछाह	सतिभामा पेटि पडीयुं दाह	६९५
संब पजून परण्या पंचासि	कन्या सघली रूपनिवास	
रुखमणि सवि वहूयर परवरी	करइ घर्म नित आनंद <sup>5</sup> घरी <sup>6</sup>	६९६

<sup>1.</sup> जांइ 2. परविरंउ 3. गुणनिलाः 4. परण्याच्याः

<sup>5.</sup> आनदः 6. अंते : सांब-प्रद्युमन पाणिग्रहण नाम्नो पंचम स्वर्ग्र

# षष्ठम सर्ग

# नेमिकुमार-दीक्षा-केवलज्ञान, प्रद्युम्न-दीक्षा-ज्ञान-निर्वाण

#### (रूपचंदराजानुं ऋष्ण द्वारा बहुमान)

(रूपचदराजानु कृष्ण द्वारा बहुमान	τ)	
Ť	खइ दूहा	
रूपचंदराजानइ <sup>1</sup>	कृष्णइ दीधूं मान	
हाथी घोडा आपि करि	साथइ दीयु प्रघांन	६९७
<b>कु</b> डनपुरि <sup>2</sup> नगरइ जइ	पाल <b>इ</b> 3 आपणुं राज	
मनवंछित सुख भोगवइ	सारइ घरमह काज	६९८
(प्रयुम्न द्वारा जिन-चैत्यालयोनी व	दना)	
इरछंतर ते कुमर दोइ	समकित <sup>4</sup> पामिउ सार	
तीरथि जइ यात्रा करइ	अष्टापदिइं उदार	६९९
चउबार शासाद तिहां	सोवनमयी ऊत्तंग	
प्रतिमा चुवीस जिनतणी	पूजइ नव नव अंगि	900
सत्तरमेद पूजा करी	चाल्या अति उल्हासि	
अनेक तीरथ वंदि करि	आव्या द्वारिका पासि	७०१
( नेमि-वृत्तांत )		
	चुपई	
एतल्ड अवर <sup>5</sup> कथांतर सुणइ	त्रिभुवनपति श्रीयादवतणउ	
परणवा आविउं तोरणबारि	नेमकुमरि तिहां सुणी पोकारि	७०२
जीव घणा बांध्या बहू बंधि	कहि रे सारथि किसइ संबंधि <sup>6</sup>	
स्वांमी तुम्हारा गुरव काजि	जीव आंणी घाल्या ए राजि	७०३
जीव वधी करिस्यु आहार	धिग धिग ए संसार असार	
धिग धिग ए वीवाह सिरइ	कर्मबंध छूटसि किण परइ	४०७
1. राजाननइ       2. कुंमडनपुरि         5. अवर       6. संबधि	3 पालाइ 4. समिकत	

इम चीतवीनइ जीव छो[डिया]
जीव छूटा ते दिइं आसीस
जीव में रहावी पाछु विलेख
स्वांमी मुझभणी करु पसाउ
धिंग धिंग ए राजीमती नारि
धिंग धिंग ए मुझ जीवितपणुं
वीवाहइ मुझ नथी काज
घरि आवीनइ [दा]नह दीयुं
वांदी कुमर द्वारिकां आइ
सत्तरभक्ष मोजन ते सार
सनसतपणा (१) धवलहर आवास
अगर चंदन बहु परिमल वास

बंधनि बांध्या ते त्रोडिया भलइ सार कीधी जगदीस 904 यादव सवि आवी टलवलिउ राजीमती परणीनइ जाउ 300 धिग धिग ए परणवं संसारि धिग धिग ए वीवाह जीमण 000 अम्हे लेसिउं सजिमन्। राज नेमिजिनेश्वरि संजिम लीय 500 भोगविलास घणा विलसाइ अमृत भोजन करइ आहार 900 दिन दिन करइ ते भोगविलास सरस तंबोल कुसुमगंध<sup>2</sup> जास ७१०

#### (नेमिनाथनी केवळझान-प्राप्ति)

सुख भोगवतां कालह गयु
समोसरण तव रचिउं सुरिदि
आवइ वेमांनिक दस चंद
आवइ वीस भुवनपतितणा
आवइ गोरी नइ गोविंद
आवइ छपन कोडि युद मिली
आवी अम महिषी वांदिवा
आवी सिव गोपीनी नारि
त्रिणि पदक्षण देई सार
तिहां गोविंद कुरइ गुण थुति
जय कंदर्ष क्षयंकर देव
अस कमठ दुष्ट क्षिउकरण

एणइ अवसरि नेमि केवल थय विचि बइठा श्री नेमजिणंद ७११ आवइ सुरिज नइ विलि चंद आवइ बत्रीस विंतरपति घणा ७१२ आवइ कुमर चड्या गयंद आवइ बलिभद्र वहिलु वहिलु वली ७१३ परिवार सहित आवी तब सिवा सरव मिल्या ते पोलि दूयारि ७१४ जई वांद्या श्रीनेमकुमार भलइ दीठी मइ एवडी जुति ७१५ जय असुरासुर की घा सेव जय मुझ जनिम जनिम तू सरण ७१६

<sup>1.</sup> सजिमंतुः 2. कुसमः

तुम्ह दर्शनि हूं दुतर तरिउ करी स्तुति नइ हरखिउ राय	तुम्ह दर्शनि संसार निव फिरिउ नरकोडिमांहि बइठउ जाइ	७१७
		•
जिनवरवांणी मुहि नीसरइ	सुर नर जीव सयल मिन घरइ	36.4
कृष्ण कहइ ए द्वारापुरी	स्वर्ग <sup>1</sup> समान अहीइं अवतरी	७१८
गढमांहि छपन कोडि गहइगहइ	बहुत्तरि कोडि बाहरि ते रहह	
छप्नन्न कोडि यादव तेहतणा	बीजा लोक वसइ तिहां घणा	७१९
(द्वारिकानगरीनुं भविष्य)		
पूछी वात नारायण रहइ	मननु सांसु श्रीजिन कहइ	
द्वारिकनयरी निश्चल होइ	अम्हनइ तुम्हे कहु विल सोइ	७२०
श्रीजिन कहइ कृष्ण तुम्हे सुणउ	नयरी हुसिइ उपद्रव घणु	
क्षय करसिइ द्वीपायन वली	मदिरापांनथी कहइ केवली	७२१
यादव सयल जलेसिइ इहां	हरि-हलधर उगरिसिइ तिहां	- a
	हरिनूं मरण हुसिइं इणपरि	७२२
जराकुमरनइ बांणइ करी		• ( (
सुणी वात श्रीजिनवर पासि	सयल द्वारिकां हुई विणास	÷,
द्वीपायन तापस थई गयु	जराकुमर वनवासी थयु	७२३
नेम-जिनेस्वर वांदी करी	नारायण नयरइ संचरी	
मदिरा करतां वारिउ सह	मदिराभाठी फोडी बहू	७२४
( यादवकुमारो द्वारा द्वैपायनमुनिन्	iु अपमान )	
एकदा कुमर खेलवा गया <sup>2</sup>	मध्यान्हइ ते तिरस्या थया	2
नीर जोइवा जाइ जिसिइ	मधु हेठि नीर दी[ठ]उं तिसिइ	७२५
मांहि महूडां पडीयां बहू	आवी नीर आरोगिउं सहूं	
मदिरापानि कुमर ऊछल्या	द्वीपायननइ जाई मिल्या	७२६
झुंटा साद्यां द्वीपायनतणां	घूटि मूंठि नइ गडदा घणा	
	ध्यांनि छंडाविउ ते आपणइ <sup>3</sup>	७३७
मारइ कुमर निसंकहपणइ		
1. स्वर्घ 2. गय्या	3. आंपणइ	
10		

	तापस घणूं संतापिउ जिसिइ	भस्मशाप <sup>1</sup> दीधु ते तिसिइं	. **
	कुमरे शाप <sup>2</sup> -वात सांभली	मदिमाता तव टलीया वली	७२८
	विलखवदिन नगरीमाहि गया	हरि आगिल जई ऊभा रह्या	
	कहइ द्वीपायनि दीधु शाप <sup>3</sup>	स्वामी अम्हनइ लागुं पाप	७२९
	तव हरि-हलधर जाइ सह़	पाय लागी खमावइ बहू	
	हरि-हलधरनइ मेल्ह्या बेय	ऊगरइ जे विल संजिम लेय	७३०
	इम निसुणी नयरइ आवीया	बार वरस आंबिल तप कीया	
	द्वीपायन <sup>4</sup> ह्यु अग्निकुमार	आवइ करिवा नयर संघार	७३१
	तप देखी देव पाछा वलइ	तपबलि नयर किमइ नवि बलइ	
	नेमनाथ तिहां आव्या वली	लोक घणा चारित्र लिइ रली	७३२
( ने	मजिनेभ्वर पासे दीक्षा लेवा प्र	<b>युम्ननो प्रस्ताव</b> )	
•	जालि मयालि उवयालि कुमार	पुरिससेण वीरसेणह सार	
	भांनु सुभानु सांबह वली	संजिम लीयां मननी रली	७३३
	पटराणी आठइ हरितणी	यादवतणी अनेकह जणी	
	नेमतणी जिणि वाणी सुणी	संजिम लेवा आवइ घणी	७३४
	दसदिशार नइ राजन घणा	लोक घणा ते नयरहतणा	
	दीक्षा लेवा सह सांमहिउ	पजूनकुंमरि जईनइ कहिउं	७३५
	विरुखवदनि हरि बोलइ वयण	हा मुहि पूत पूत परदवण	•
	कुण बुद्धि ऊपनी तुझ आज	द्वारिकानुं तूं भोगवि राज	७३६
	राजधुरिधर जेठउ पूत	तुझ विद्याबल छइ बहूत	` ` `
	तुझ पवरस जाणइ सह कोइ	~ .	७३७
	कालसंवर जाणइ [तु]झ हीयु	हूं रणमांहि तइ विलखु कीयु	उर्उ
		तइ रणि सुहड कीया रैवणी	103/
-			उर्द
( कृ	ष्णने प्रद्युम्न द्वारा वैराग्योपदेश		
	नारायणनां वयण सुणेय	• •	
	केहनां राजभोग घरबार	सुपनांतर जेहवु संसार	७३९
	1. स्रीपः 2. शार्पः 3.	. शार्षः 4. द्वीपयन 5. पज्	नन

#### यतः —

इस कायाका कुण भ सा सर्व तिजइ जीव चलइ एकला केहनां धन पवरख बल घणां घडीमांहि जाइ विहडाइ

जग जाइ सुपनंतर जइसा वीछड्या पीछइ मिलन दुहेला 1 080 केहना बाप कुटुंब केहतणां आविइं मरणि न सइ रहवाइ ७४१

#### (रुक्मिणीनो विलाप)

पुत्रवयण सुणि हरि विलखाइ करण कर्पांत<sup>2</sup> करइ ते घणू तइ संयम लेवा मन कीयुं<sup>3</sup> किणपरि तुं भिक्षा मांगेस वली ते रूपणि लागी कहण मायतणा वयण निसुणेय

विल रूपणि [कं]पती आइ किमहि पूत्र रहइ आपणउ ७४२ हिव किस देखि हरखइ मुझ हीयं दुख घणूं ऊपाडन केस ७४३ म लेसि संजिम पूत परदवण कुमर प्रदिमन ऊत्तर देय 088

#### (रुक्मिणीने प्रधुम्न द्वारा वैराग्योपदेश)

लावन्य रूप शरीरह सार म करि शरीर दुख बहूत पूर्वजन्मनउ संबंध जांणि

जिम रूठइ तु हूइ सह छार केहनी माइ नइ केहना पूत 984 अरहटमाल जिम ए संसार स्वर्ग4 पाताल पुहवि अवतार मिलइ जीवइ ठाणोठांणि 980

#### (प्रचुम्न मारा दीक्षाग्रहण अने तपश्चर्या)

इम समझावी रुखमणि माय नारायणनु हुयु आदेस पुत्रि माइ महावत उचर्या बावीसइ परीसह सहइ चउथ छठ अठम तप करइ मासखमण करइ ते घणां बारह भिखू-पडिमा वही रयण चीतवइ अणसण करं

नेमजिन पासि पहूता आय पंचमुठि ऊतार्या केस 080 दस भेदे संजिम आदया पजूनऋषि मदन घणं दहइ 986 श्रीजिन-आन्या हीयडइ धरइ इम करतां करम खपइ आपणां 980 खीणी देह हुई तव सही नेमजिन वांदी पूछुं खरुं 040

1. मिलएहेला 2. कल्पाप 3. कीयां 4. स्वर्धः

प्रभात समइ पजून अणगार	जई वांद्या श्रीनेमकुमार	
जिनवरि पजून बोलाविउ तांम	आन्या तुम्हे संलेहण कांम	७५१
सत्य सत्य वाणी जिनराज	तुम्ह आदेसइ सारुं काज	
करु वछ संलेहण खरी	सेत्रुंजगिरि सिहरि संचरि	७५२
हरखइ वंद्या नेमजिणंद	विल वंद्या गणहर मुनिवृं[द]	
खमी खमावीनइ चालीया	सिद्धिखेत्र सेत्रुंजि आवीया	७५३
(केवळज्ञाननी प्राप्ति)		
शिला पूंजि सांथारु करइ	अणसण सुक्लघांन ते घरइ	
घातिककर्म सघलां क्षय करी	अंतसमय केवलसिद्धि वरी	७५४
केवलमहोछव देवे करिउ	धन्य ए यादवकुलि अवतरिउ <sup>1</sup>	
धन्य ए नेमजिनेश्वर-सीस	इंद्र सयल जस करङ जगीस	७५५
( प्रथकारनो परिचय )		
विधिपक्षगछि धर्ममृत्तिसूरि	विजयवंत <sup>2</sup> ते गुण भरपूरि	
कमलशेखर रहीया चउमासि	मांडलि नयरइ घणइ उल्हासि	७'५६
(रचनामिति)		
संवत सोल छवीसइ करी	दूहा चुपई हीयडइ धरी	
काति सुदि नइ दिन त्रयोदसी	कीधी चुपई मन उल्हसी	७५७
(ग्रैथकारनी शुभकामना)		
वणारीस वेलराजतणा	सीस दोइ तेहनां गुंण घणा	
श्री पुण्यलंबिध उवझायां ईस	बीजा लामशेखर वणारीस	७५८
तास सीसि रची चुपई	सुणियो भवीयां इक मंन थई	
चरित्र प्रदिमनकुमारहतणू	भणता सुणतां सुख घणूं $^{3}$	७५९
	*	

<sup>1.</sup> अवतारिडः 2. विजवंत

<sup>3.</sup> अंते : इति प्रद्युम्नचिरित्रे रिचे । नेमकुमार दीक्षा केवलन्यान । प्रद्युम्नकुमार दीक्षान्यान निर्वाणनाम्नो षष्टम स्वर्धः समाप्त ।। इति प्रद्युम्नकुमार चुपई समाप्त । स्वर्णगिरि मधे । कूं. लालजीलिखित्तं : ।

# परिशिष्ट १

# वा० कमलशेखर-कृत '' नवतत्त्व चोपाई ''

सरसति सांमणि समरुं माय
कहूं नवतत्त्व संखेपि विचार
चऊदमेद जीवह वखाणि
पुण्यतणा छइ बइतालीस
मेद बइतालीस आश्रवतणा
बार भेद निज्जरना जांणि
मोक्षतणा नव भेदह भणु
सूखिम बादर एकेंदीया
असेनीया सातमा सुणु
आहार शरीर इंद्री विचित्त
च्यारि पजत्ति सघला एकेंदि
पंच पजत्ति असंनी जांणि
अधूरी करइ ते अपर्यापतु
चऊदमेद ए जीवहतणा
इंद्री पांच बल त्रणि होइ
एकेंद्री सयल नइं च्यारि
असनि पंचंदी नइ नव जांण
एक आदि चऊदह लगि जांणि
चऊदमेद अजीवह जेह
धर्मे अधर्म अनइं आकाश
पकेकाना त्रणि त्रणि भेद
धर्म ते जे चालिउ जाइ

पास जिगेसर पणमुं पाय	
जिणि जाणि हुइ समिकत सार	· 8
अजीवतणा वली चऊदह जाणि	
ब्यासी पाप तणा सजगीस	२
संवरना सतावन घणा	٠
बंधतणा चउ मेद वखांणि	3
जीवतणा हिव भेदह सुणु	•
बि ति चुरिंदी नइं संनीया	8
अपजता पजता गुणु	
ऊसास वचन मन छ पजित	4
पंच गणिजइ बि ति चुरिंदि	
संन्नि पंचंदीनइ छइ आणि	ξ
पूरी करइ ते पर्यापतु	
चेतनना लखिण छइ घणा	૭
सास ऊसास आऊखुं जोइ	
विगलंदी छ सत अठ सारि	4
सयनीया नइ दस छइ प्रांण	
मेद जीवना हीयडइ आणि	९
एकमनां सांभलयो तेह	
खंध देसप्रदेस विमासि	१०
ए नव हुआ म करि मनि खेद	
अधर्म एकइ ठामि रहाइ	११

जिहां जिहां जातां माग ज थाइ	आकाशास्तिकाय ते कहिवराइ	
समइ आदि सागरोपम जाणि	दसमु प्रवर्चन काल वखाणि	१२
पुद्गलास्ति हिवइ कहीइ तेय	पूरण-गलण-सभाव छइ जेय	
च्यार मेद पुद्गलना ह्या	खंध देस प्रदेस परिमाणुआ	१३
संघ ते आखु कहिवाइ	ऊणेरु ते देसह थाइ	
तेह थकी अति थोडु होइ	प्रदेस मेद तेह तूं जोइ	<b>\$</b> 8
एक खंडथी बि नवि थाइ	चउथु भेद परमाणुं $^{1}$ कहवाइ	
पुद्गलास्ति वलि कहीइ जेय	च्यारसइं ब्यासी भेदह तेय	१५
अजीवतणा चऊद भेद हुआ	पुण्यतित्व बयतासीस जूया	
साता सुख कहीइ जेतळुं	देव-मनुष्य-तिरि-आऊखुं भलुं	१६
सुरनरगति आनुपूर्वी भली	अदारिक वैकय गुणनिली	
देव नारकी वैक्रय होइ	बीजा जीव अदारिक जोइ	१७
आहारक शरीर चऊदपूरवी करइ	तेजस कार्मण सवि जीव धरइ	
पंचशरीर कह्यां ए अंगि	प्रथम त्रिहुंना <sup>2</sup> अंगोपांग	१८
पंचेंद्रीपणुं लहइ जे सार	वरण सेत रच पीत ऊदार	
गंध अपूरव हुइ जेय	मधुर खट्ट कषाय रस तेय	१९
हॡद सुंहालु चीगटु	ऊहनु फरिस रूडु सामटु	
वज्र रिखभ नाराच संघयण	समचतुश्र संठाणह जेण	२०
बज्र कहि जइ खीली होइ	रिखभ अरथ पाटु ते जोइ	
नाराच बिहुं पासे आंकुडा	समचुरंस संठाणह वडा	२ १
त्रस बादर थिर प्रत्येक नाम	पर्याप्ति आदेय ज ताम	
सुभग नाम सुभ रूडुं तेह	सुसर नाम जस हुइ जेह	२२
तीर्थं कर निर्माणह नाम	अगुरुलघु आतप अभिराम	
उद्योत पराघात सुभ सास	सुभगति गोत्र उच्चेरह तास	२३
पुण्यतणा बयतालीस ह्या	पापतणा ब्यासी जूजया	
मतिन्यान बीजुं श्रुतन्यान	अवधिन्यान मनपर्यवन्यान	२४
<b>1. परिमां</b> ण 2. तिहुंना		
== · · · · · · · · · · · · · · · · · ·		

केवलन्यान पंचमुं होइ	ए पांचइनां आवरण जोइ	
चरुय अचरुय अवधि दर्शन	केवल दर्शननां आवर्ण	२५
निद्रा सुखइं जागइ ते जाणि	निद्रा निद्रा प्रचला मांणि	
प्रचला प्रचला थीणधीय	मिछित असाता वेदनी <b>कहीय</b>	२ ६
क्रोघ मांन माया नइं लोभ	अनंतानबंधि अपचखाणी थोभ	
पचखाण संज्वलणा च्यारि	च्यारि चउक सोलह ए सारि	२७
वेद पुरुष स्त्री नपुंसका	हासुं रति अरति शोइका	
भय दुगंछा नारकी आय	तिर निरय गति आनुपूरवी थाय	२८
एकेंदी बेंदी होइ	तेंदी चुरेंदी जोइ	
च्यारिजाति ए पापह तणी	थावर सूखिम अपजत सुणी	२ ९
	दोहा	
साधारण अथिर असुभ	दोभाग दुस्वर जाणि	*
अनादेय अजसपणुं	विरूई कुगति वसाणि	३०
उपघात <sup>1</sup> असुभवरण <sup>2</sup>	किन्ह नील दुगंध	
अशुभरस विण फरिसचउ	रिखभनाराचह खंध	३१
-	चुपई	
नारच अरधनाराचह होइ	कीलक छेवटुं संघयण जोय	
निमोध सादि संठाणह भणु	वामण कुबजक हुंडकपणुं	३२
नीच गोत्र वीर्याअंतराय	दान लाभ भोग उपभोग <sup>3</sup> थाइ	
मेद पापना ब्यासी हुआ	कहूं आश्रव बइतालीस जूया	३ ३
इंद्री पांच कषाय च्यार	अव्रति पांच त्रणि योग विचारी	,
पंचवीस कीया मइ सूत्रि सुणी	काई अहिगरण परद्वेषणी	३४
परतावणी प्राणघातकी	आरंभी अपचलाण माइकी	
परिगह मिछिचदिठ पुठकी	कर्मबंध कीजइ पडुचकी	३५
सामंत आणवण वेयारणी	नीसथी यंत्रइं नांखणी	
साहथी4 समदाई कीया	सावद्य करावइ ते प्रयोगीया	३६
1. आपघात 2. असुभ	3. अपभोग 4. सहथी	

### नवतस्य चोपाई

60

अविध वस्तला जइ मेल्हीइ	गमनागम नजिक कीजीइ	-
अनाभोग कीया ते कही	अनवकांक्षिणी जाणु सही	३७
प्रेमकीया द्वेषकी होइ	इरीवही <sup>1</sup> पंचवीसमी जोइ	
ए आश्रवना बइतालीस	संवरि सतावन्न कहीसि	३८
सामाइक छेदोपठाइ	परिहारविशुद्ध सूखिमसंपराय	:
यथाख्यात पांचमुं वली	चारित्र पांच कह्यां केवली	३९
सीत उष्ण तृषानइ <sup>2</sup> खुधा	डांस अचेल अरित ए द्विधि	
अस्त्रीचरीया सिज्ज निसेय	याचन्या मल वध कहेय	80
आक्रोस रोग सकार त्रिणफास	अलाभ प्रज्ञा दुइ जास	
अन्यान समिकत हुइ जेह	ऊपना खमइ परीसह तेह	४१
जितीधर्म दस मेदे कहुं	संयम सत्य क्षिमा गुण लहु	
विणय अजव मदव तप सोय	अकिंचणपणुं ब्रह्मव्रत <sup>3</sup> होय	४२
भावण बार कहुं संखेव	अध्रुव असरण एकत हेव	
विरगत भव असूच्य सही	आश्रव लोकह संवर कही	४३
निजरण धर्म बोधि भावण बार	पंचसमिति <sup>4</sup> कहीइ उदार	
इर्या भाषा एषणा सही	आदान पारिठावणी कही	88
त्रिणि गुपति मन वचनह काय	संवरि सतावन ए थाइ	
कमलशेखर कहइ संवर करु	निज्जर बारे मेदे खरु	४५
अणसण तप नइ ऊणोदरी	व्रति संखेप निवी ते धरी	
रसत्याग ते आंबिल होइ	कायकिलेस संलीनह जोय	४६
संलीनइ इंद्री संवरु	छ मेदे बाहिय तप धरु	
<b>प्राय</b> छित्त दस मेदि आलोइ	विनय वेयावच दस मेद जोय	४७
सिज्जाय पांच प्रकारे कही	ध्यान ध्याईइ अति गहगही	
काउसग कीजइ एक ठामि	अभ्यंतर तप ए कह्या सामि	8.5
बार मेद निज्जरना हुआ	कहूं चु भेद बंधना जुआ	
न्यानावरणी पंच प्रकार	दरसनावरणी नवभेद सार	8 <b>९</b>
1. अरीवही 2. त्रिषा	3. ब्रह्मव्रत 4. पंचसमृति	

वेदनी बिहु अठवीस मोहकर्म नामकर्म तेडोत्तर जाणि
अंतरायना पांचइ मेय अठावनसु संघली थाइ
एकसुसतर तियंच बंध एकोतर सउ नारिक तणी
सत्तरी कोडाकोडि मोहिनी च्यार कर्मनी त्रीस कोडाकोडी
आऊखुं आठह कर्मह तणुं अनभाग तेहज रस जांणि
च्यारि मेद बंध तणा भण्या सतपद परुवण पहिलु तेय
खेत्र त्रीजु फरसना चउ जांणि अंतर छठउ भाग सातमु अल्पबहुत्व नवमुं होइ
सतपद परुवण कहीइ जेय
केवल दर्शन दो उपयोग <sup>3</sup> द्रव्य सिद्ध अनंता कहा
अधिक फरसना सिद्धहतणी अंतर सिद्ध सिद्धनई नही
निगोद एकना जीवह घणा भाव क्षायक पारणामिक होइ
तेह थकी स्त्री सिद्ध संख्यात

आयकर्म चिहु भेदे शर्म	
गोत्रकर्म बिहु मेदे मांणि	५०
आठकर्मनी प्रकृति <sup>।</sup> एय	
नरनइ एकसुवीस बधाइ	५१
बिडोत्तरसउ देवह बंध2	
पकृति बंध ए चिहुंनी भणी	५२
नामगोत्र थिति वीस एहनी	
आऊखु तेत्रीस सागर जोडि	५३
थितिबंध ते सूत्रइं भणिउं	
प्रदेसदलना संचय आंणि	48
मोक्षतणा नवमेदह सुण्या	
द्रव्य प्रमांग बीजु निसुणेय	५५
काल पांचमु हीअडइ आंणि	
भावसिद्ध कहीइ आठमुं	५ ६
मोक्षतणा नव भेदह जोइ	
पंचेंद्रीनइ मोक्ष कहेय	५७
केवलन्यान क्षायक चारित्त	
सेषपदइ नहु मोक्ष योग	46
लोकभागि असंख्यइं रह्या	
सिद्ध आय अनंता घणी	५९
नवि आबाधा सुखीया सही	
तेहनइ अनंतभागि सिद्धितणा	६०
नपुंसक सिद्ध थोडा जोइ	
अठोतर सुपुरुष विख्यात	६१

<sup>1.</sup> प्रत्ति 2. खंध 3. अपयोग

11

एक समइ एतला सिद्ध थाइ	भाव अनंतर थोडा थाइ	
परंपरा अनंत गुण सिद्ध	तेहज अल्पबहुत्व प्रसिद्ध	६२
नवभेद ए मोक्षतणा	जाणंता हुइ <sup>।</sup> गुण घणा	
भावि करी सदिह नवतत्त्व	आपण मांनइ हुइ समिकत्व	६३
अंतरमहूरत समकित धरइ	ते नर अरधुं पुद्गल करइ	
वाचक कमलशेखर इम कहइ	गणिइ भविइ(?) सिद्ध पदवी लहइ	६४
विधिपक्षि गछि ए उदयु भाण	श्री धर्मम् तिस्रिर सुजाण	
तास पसाइं लहीया भेय	बिसइ छिहुत्तरी हूआ तेअ	६५
संवत सोल नवोत्तर वरसि	स्रति आस् त्रितीया दिवसि	
रची चुपई सोहामणी	भणतां गणतां हुइ बुद्धि घणी $^2$	६६

<sup>1.</sup> हइ 2. अंते : इतिश्री नवतत्त्व चउपई संपूर्ण । पं. रिवचंद्र लिखत्तं साधवी गंगाई पठनार्थ । लेखक पाठकयो सुमं भुवः ।

#### परिजिष्ट-२

## वा० कमलशेखर-कृत '' सामायिके बत्रीश दोषनो भास ''

[ वा. कमल्डोखरनी उपर्युक्त कृतिनी, एक प्रत भारतीय विद्या भवन, चोपाटी रोड, मुंबई-७ ना हस्तप्रतना भंडारमांथी. अने बीजी प्रत श्री अनंतनाथजी दहेरासर, भातवजार, मुंबई-९ ना हस्तप्रतना मंडारमांथी, अम कुले बे प्रतो मने मळी छे. त्यां तेमनी अनुक्रमे क्रमांक न २५२ / ३१-३२ अने नं. २४०४ छे. प्रथम भारतीय विद्या भवनवाळी प्रत संपूर्ण छे, ज्यारे बीजी अनंतनाथजीना दहेरासरवाळी प्रतनां वे पानां मळतां नथी, अने त्रीजा पाना पर उपर्युक्त कृति तेनी ६ ही कडीथी शरू थाय छे. आम बीजी प्रतमां प्रथमनी पांच कडीओ मळती नथी. नीचे जे कृति ग्रन्थस्थ करी छे, ते भारतीय विद्या भवनवाळी हस्तप्रतना आधारे करेली छे अने बीजी प्रतमांथी मळता महस्वना पाठांतरो नीचे फूटनोटमां नोंध्या छे. जोडणी मूळ हस्तप्रतनी ज राखी छे. ]

#### (वीर जिणंद समोत्तर्याजी - अ ढाल)

समरिस भरि समता करउ जी, छंडी सयल आरंभ, उभयकाल तुम्हे आदरउ जी, मूकी मन नउ दंभ रे जीवडा बत्रीस दोष निवारि, करिने सामायक सार रे - जीव० जिम पामउ भव पार रे जी. ।२। आंचली ॥ पहिलंड दोष ए पालठी जी, तिजीइ च्यारि प्रकारि, पग हेठा पग ऊपरिंह जी, वस्त्र हाथ परि थाइ रे ।३। जीव० बीजउ दोष आसण तणउ रे, आघउ पाछउ थाइ, दृष्टि चपल श्रीजं सुणं जी, एकइ ठामि न रहाइ रे **।४। जीव**० दोष चउथइ काई करइ जी, सावच घर व्यापार. पंचम थांभादिक तणउ जी. ऊठीगण लिइ सार रे १५। जीव० अंग उवंग संकोचनइ जी, राखइ छठउ! प्रमादि. सयरइं आलस मोडता जी, सत्तम दोषह छांडि रे १६। जीव० आठमइ<sup>2</sup> पग हाथ आंगुली जी करडक करइ असार, नवमइ सयर<sup>3</sup>तणी मली जी. जतारइ निरधार रे 19। जीव० दसम दोष खाजि व खणइ जी. वंछइ वीसामण अग्यारि 5 निदा<sup>6</sup> प्रमादह जे करइ जी, दोष कायाना बार रे ।८। जीव०

6. नीद

पढम दोष वयणह तणउ जी, बीजउ<sup>1</sup> सहसा कारि सुणउजी, राग नाद आलति करइ जी, आपछंदइ चउथइ चवइ जी. सूत्र संखेपइ ऊचरइ जी, छठइ दोषिइ कलह करइ जी, सातमइ विकथा करइ जी. आठमइ<sup>4</sup> हासूं अति हसइ जी, नवमइ सीध्र ऊतावलं जी.5 दसमइ<sup>6</sup> देश हिव<sup>7</sup> सांभलऊजी, दोष वचनना दस ह्या जी, मन अविवेक पहिलइ ह्रया जी. जस कीरति वंछइ बीजइ जी, धन्नलाभ हुइ त्रीजइ जी. चउथउ दोषह मनतणउ जी. दोष पांचमइ 10 बीहतउ जी. छठइ दोषइ मनि धरइ जी. सत्तम संसय अणसरइ जी. अठमदोष 12 ते जाणीइ जी. नवमं इणिपरि भावीइ जी. दसमउ दोषह मनतणउ जी. बार दस दस इम गिणउ जी. कमलशेखर वाचक कहइ जी. दोष बत्रीसइ परिहरइ जी.

बोलइ कुवचन बोल. अणविमासिउं बोलंड रे । १। जीव० त्रीजउ लोडण दोष. इम करइ वयण पोष रे ।१०। जीव० पंचम दोष अपार, मांडइ राडि<sup>3</sup> असार रे ।११। जीव० राजादिक सुविचार. दांत काढइ घण भारि रे ।१२। जीव० सूत्र पतावी जांइ. कहइ ते आवि<sup>8</sup> जाइ रे ।१३। जीव० मनना दस कहुं हेव, सामाइक सखेव रे ।१४। जीव० चितइ मनह मझारि. इम मन9 दोष सभारि रे 1241 जीव० गरव आणइ अपार. सामाइक करइ छार रे ।१६। जीव० नव नीयाणा वात, निव जाणइ धर्म वात रे।। ।१७। जीव० रोसइं सामाइक थाइ, विनय रहित कराइ रे ।१८। जीव० भगति सहित नवि होइ काय वयण मन जोइ रे ।१९। जीव० समता करउ रे सुजाण. ते पामइ सिवठाण 13 रे14 1२०। जीव०

म्ळ प्रतमां " त्रीजड " छे.
 चुथु
 राडिमांडि
 अठिम

<sup>5.</sup> जी ने बदले "रे" 6 मूळ प्रतमां "दोसमइ" छे. 7. हिवइ 8. आवज

<sup>9.</sup> मिन 10. पंचिम 11. न जाणइ धर्मह वात रे 12. अठिम दोषि 13. ठाम 14. अंते : इति श्री सामायिके बत्रीस दोष भास संपूर्णः ॥

### "प्रयुम्नकुमार-चुपई" अन्तर्गत महत्त्वना शब्दोनी सूची अने नोंध

वा. कमलशेखर-कृत ''प्रद्युम्नकुमार चुपई'' मांथी केटलाक असामान्य अने कूट लामता शब्दोनी तेना अर्थ साथे अहीं यादी आपी छे. पहेलां महत्त्वनो शब्द, त्यारबाद जे कड़ोमां ते प्रथम बार प्राप्त थतो होय तेनो संख्यांक, त्यारबाद तेनो अर्थ अने पछी ते शब्दनी, जरूर होय त्यां, व्युत्पत्ति के तेनो अवान्तर कम दर्शाव्यो छे, थोडाक शब्दोना अर्थ स्पष्ट नथी त्यां तेनी बाजुमां प्रश्नार्थ मूकेलो छे. कोईक ठेकाणे शब्दनो चोक्कस अर्थ प्राप्त न थतां तेना संदर्भने अनुलक्षीने अर्थ आपवानो प्रयास करेलो छे. कृतिमां ठेर ठेर वपरायेला एकना एक शब्दने, जो तेना अर्थमां फेर न पडतो होय तो, जे कडीमां ते प्रथम वार प्राप्त थतो होय तेनो ज मात्र संख्यांक आपीने, मूकवानुं स्वीकार्युं छे. जो एनो जुदो अर्थ थतो होय तो तेनो कडीकम दर्शावी तेनो जुदो अर्थ आप्यो छे.

कोई शब्दनी सविस्तर नोंध माटे कोई पुस्तकनो के लेखनो उल्लेख कर्यो होय ता मात्र कर्तों के संपादकतु नाम नीचे पादटीपमां आपेछं छे, ज्यारे ते पुस्तक विषेनी इतर माहिती संदर्भ-ग्रन्थोनी स्विमां आपेली छे.

> संक्षेपोनी समज नीचे प्रमाणे छेः नराती प्रा. - प्राकृत

अ. गु. - अर्वाचीन गुजराती

হা দু. - দু**ছা**ক

अप. - अपभंश अर. अरबी

फा. - फारसी

इ. - इत्यादि

भ. गो. मं - भगवद् गोमंडल - शब्दकोश

जू गु. - जूनी गुजराती

सं. - संस्कृत

अखूटइ - ३२१ आयुष्य के जीवनकाळ खूटचा वगरनुं मृत्यु

(जुओ "अनुशीलनो " पृ. ९६ - ९७)

अचरिज - ५३१ अचरज, आश्चर्य [सं. आश्चर्य - प्रा. अच्छरिय ]

अचंभु - २५८ घणुं अःश्चर्यंजनक [सं अत्यद्भुत = प्रा. अच्चब्भुय]

अणसण - २१२ आहारत्याग, उपवास [सं. अनशन]

अधाराण - ४२० अधीतन, उभडक बेसवुं

अपछर - ४९ अप्सरा

अब्यावि - ४१८ अलाववुं, अलावी

असराल - ५३३ - पुष्कळ, अत्यंत, मोद्धं

(जुओ " अनुशीलनो'' पृ. ९८; "प्राचीन फागु - संग्रह भाग पृ. २४२)

अहवि - ३९७ सोभाग्यवती स्त्रो, अविधवा [सं अविधवा = प्रा. अविहवा, अविहव]

अहिनाणि - ४५ एंघाणी, निशानी [सं. अभिज्ञान्=प्रा. अहिण्णाण]

अंतेंडर - ३६ राणीवास (सं. अंतःपुर = प्रा. अंतेंडर)

१. 'अनुशीलनो" – कर्ता डॉ. हरिवल्लभ भायाणी.

२. ''प्राचीन फागु-संप्रह'' संपा. डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा तथा सोमाभाई धू. पारेल, आवृत्ति बीजी,

अंदोह - ६६ विमासण आकारण - ४१४ नोतरं, तेडुं, कहेण, संदेशो आखडी - ४०६ टोकर खाईने पडवुं. सं. आस्खलित आखा - ३४८ (१) आखा पाणी - ४१४ चोखा अने पाणी (सं. अक्षत = प्रा. अक्लय) आधु — २७५ आगळ (जू. गु. अग्गह्उ) आछाई - ६२९ आच्छादन करीने (सं. आच्छादित) आफरिंउ - ४७५ आफरो चडवो आमणदूमणी - ५९७ दुःखी, सचिंत (सं. दुर्मनस् = प्रा. दुम्मस्) आमान - ४१८ आमानन, "ब्राह्मणने अपातुं काचुं अनाज, सीधुं" आरुद्दिर - ५०३ आरोहण कर्युं, चड्यो आलव - ६१६ आलाप करवो, गाडु

[सं. आलप् = प्रा. आलव्]

आह्रवणी - ६७४ बीणा (सं. आह्रापिनी = अप. आह्रवणी) आह्रीगारु - ३९६ अटकचाळुं, तोफानी

आहीमाही - २२० लीलुंछम, फळदुप. [अ. गु. आलाहीही]

आलूं – १७४ हीखं, भीनुं, (सं. आई = प्रा. अल्ह)

आहि – ३५१ बळ, हिंमत,

(जुओ "कान्हडदेप्रबंघ"" - खंड २जो. कडी १५२

''साहस प्रभावि एतली आहि, राणी पइठी जमहर माही")

उगाल - ८६ पाननो चाबेलो कूचो

उछांई - ६१५ उस्साहथी(१)

उसल - ४४९ ओसल, पहदो, बुरखो

उतलीबल — २६३ ''अतलीबल'', ''अतुस्य बळत्राळो'' [सं. अतुलित + बल] (जुओ: सिंहासनबत्रीशीं वार्ता १९मी, कडी ९५ ''ढांढा अतलीबल घरमां आठ'' तथा कडी ७१६: ''अतुलीबल हुं आप''.)

उबकी - ४२७ ऊलटीथी

उमाहकुं – ९४ आतुर, उत्सुक (सं. उन्माथ = प्रा. उम्माह) (जुओ ''पउमचरिउ'' <sup>3</sup>নী शब्दसूचि पृ. ९.)

उरा – ६०९ ओरडा, कोठडी (सं. अपनरक = प्रा. आभरय, उअरय)

उल्हव - ५५९ बुझाबवुं (अ. गु. आल्हववुं) (देवय: उल्हव्)

उवडझाय - ७५८ उपाष्याय, जैन साधुनी एक पदवी (सं. उपाष्याय = प्रा. उवज्ज्ञाय)

१. ''कान्हडदेप्रबंघ - कर्ता कवि पद्मनाभ, संपा. के. बी. व्यास.

२. ''सिंहासन-बत्रीशी' कर्ता शामळ भट्ट, संपा. डो. हरिवल्लभ भायाणी.

३. ''पुडम-चरिड'' कर्ता स्वयंभूदेव, संपा. डो. हरिवल्लभ भायाणी,

उसरि - २३९ पाछा हठीने (जू. गु. मां उसरदुं=पाछा हठतुं) (जुओ: ''विमलप्रबंघ'' खंड १लो, कडी ७९, ''एक भणइ वरि मार्च, मर्च, पणि हूं पाछड निष उसर्च'' (सं. उत् + सृ = प्रा. ऊसर) (सं. अप + सृ = प्रा. ओसर)

उदाल - ३५५ बळात्कारे पडावी लेवुं - (सं. उद्दालित - प्रा. उद्दालिअ)

कपायु - ४६३ उत्पन्न कर्युं (सं. उत्पादित = प्रा. उप्पाइय)

ऊरण - ५९६ ऋणमुक्त (सं. उद् + ऋण)

जनट - ३५४ आडो रस्तो [ सं. उद्वर्त्मन् = पालि अने प्रा. उन्त्रह ] ''उबट'' शब्दमां सं. वर्त्मन् अन्तर्गत छे ए कालक्रमे भुलाई गयुं, परिणामे ''उवटवाटि'' (कान्हहदेपनंष, खंड १, कडी ४६) जेवा प्रयोग पण मळे छे.

कमठ — ७१६ काम क्रोध, मोह, मान, माया, लोभ ई. आठ कर्मनो समूह (सं. कर्म + अष्ट)

करंकइ - ५१४ ककळवुं (कागडानुं) (१)

कलयल – ६१७ कोलाहल

कंदल — १५९ वादविवाद, युद्ध, लडाई

काती — ৩५ ७ हिन्दुओना वर्षना प्रथम महिनो — कार्त्तिक (सं. कार्त्तिक – प्रा. क्रश्तिय – जू गु. काती)

कारिटयो ४७६ मरनारना अगियारमाने दिवसे करवामां आवती क्रिया करावनार ब्राह्मण [सं. ''करट'', देश्य करह]

कांणि - १२० शरम (देश्य)

किलकइ - ५३३ किलकारी करवी (वेताळ इ. नो अवाष)

कीर - ६१३ देशविशेष

कुतिग — १५९ कुत्हल — नवाई (सं. कौतुक)

कू कू इ - ४३३ कू कू एम अवाज करवो - कू (४१८) कू कू (३०७) कू कू उ (३०६) (सं. कुक्कवाद)

केता - ३२८ केटला

कोसीस - १० कोट उपरनो कांगरो (सं. कपिशीर्षक)

कोह - ३३८ कोघ

खडहडिउ – ५३६ खखडी पड्यो, त्टी पड्यो

खंघार - १७ सैन्यनो पडाव, छावणी, शिबिर (सं. स्कन्धावार)

खेह - ६५ धूळ, रज

गमइ - ६५६ गुमावी, हारी, (१)

गयगत्त - ५२९ गजगात्र (१)

गरदंड - ३७३ घरडा, बृद्ध

गहबरइ - ६२५ गभरावा लागी

गंजिड - ५०३ गज्यों

```
गाइ - ५२२ अवगाहन करवुं
गिरि पडिड - ४१० पडी गयो (सरखावो हिन्दी- गिरना=पडवुं)
गिरुय - ५६७ गरवो
गुड - ३१४ हाथीने कवच इत्यादिथी सज्ज करवो ''गडउ'' - ६३, गुडई - ३१४
गुरव - ७०३ गौरव (सं. गौरव - प्रा. गउरव)
गृडो - ८१ नानो घजा (जुओ: "प्राचीन फागु-संग्रह" पृ. २५३)
 घरणी - १३७ पत्नी (सं. गृहिणी)
 चउडचपट - ३९२ सफाचट करी नांखुबुं
चउपट - ३८६ चोगान (गुज ''चोपट्टं, चोफट्टं)(सं. चतुःपट्ट - प्रा. चउपट्ट)
चरड - १४ चोर, खूंटारो, (सं. चर + स्वार्थिक "ट" - प्रा. चरड)
चहुंटा - १२ बजार, चौटुं (सं. चतुर् + हट्ट - प्रा. चउहट्ट)
 चाउ - ५३५ चाप, धनुष्य
 चिचि - ५४८ (१)
चीरी - ५४ चिडो ("Lexicographical Studies in Jain Sanskrit"," -मा
      "चीरिका" शब्दनो अर्थ "कापडनो नानकडो टूकडो" एम आप्यो छे अनै "चिडडक"
     तथा "चिठडिका" ना अर्थ "टूंकी नोंघ अथवा संदेशो" एम छे. जुओ: पृ. १३५)
चुसाल — ११ चोक (सं. चतु:शाला – प्रा. चउसाल)
चुं - ६८५ चार
चूल्हउ – ४३३ चूलो (सं. चुल्ल)
छार – ७४५ राख (सं. क्षार)
छाहिउ — ६५ छवायेलो (सं. छादित)
छेहडउ - २९५ छेडो, वस्त्रनो छेवटनो भाग (सं. छेद - प्रा. छेअ - अप. छेह + स्वा-
     र्थिक प्रत्यय 'ड')
जगीस - ७५३ इच्छा जुओ ("प्राचीन फागु-संग्रह" पृ. २५६)
जंपइ – ४४४ बोले छे (सं. जल्पति – अप जंपई)
जानणीइ - ३४५ जांदरणी, जानरणी
जीप - जीतवुं, फत्तेह मेळववी जीपइ-४९९, जीपिस ४९०, जीपिस - २२५, जीपुं -
     ६७२, (सं. जि – प्रा. जिप्प)
जीवीदान - ५४१ जीवितदान
ज - ३२९ जोडे
जुइ-६५६ जुगार जूइ (सं. चूत - प्रा. जुअ)
जूजूई-११४ जुदां जुदां
शटी-७२७ नाना ऊंचा केश, शांटि-२४०: झूंटा-७२७ (देश्य)
```

<sup>&</sup>quot;Lexicographical Studies in Jain Sanskrit"
Ed. Dr. B. J. Sandesara and J. P. Phaker. (1962)

```
टाटर-५०७ बोची दंकाय एवं बख्तर (भ.गो.मं. १ पृ. ३७५०)
ठाउ-५२३ स्थान, ठाम, (सं. स्थाम, पालि थाम-पा. टाम-अप. ठाउ-जू.गु. ठाउ-ठाय)
ठेक्डुं-४१४ लाठींनो आधार लेवो. ठेक्तुं-४०१, ठीगतु-४१४
हुंब-६६८ (देश्य) डोम, चांडाल, डूंब
तोखार-३९८ घोडो [ प्रा. तुक्खार, तोक्खार ] (जुओ 'शब्दकथा' <sup>२</sup>षृ. २१)
तिवल-६९४ ढोलक (अर. तब्ल-तब्लह. अर्वा. गु. ''तबलुं'')
तुडि-५५१ स्पर्घा, चडसाचडसी (सं.तुलित, प्रा.तुडिअ) (जुओ ''अनुशीलनो'' पृ ११०-१२)
तुरीय-६१ घोडो (सं. तुरग)
तुलडी ४२१ दोणी ( गुन्न. तोलडी. )
दमामा-६९४ एक रणवाद्य, नोबत (फा. दमामह्)
दुह्व्या-१५२ दुःख आप्युं
द्तर-७१७ तरवाने असमर्थ (सं. दुस्तर-प्रा.दुत्तर-जू. गु.दूतर)
धणवइ-९ कुबेर (सं. धनपति )
घवलहर-८ घोळेलो महेल (सं. घवलगृह)
घ्राय-४१९ घरायुं, तृप्त थयुं
भूभूइ-४३३ [ धुमाडाथी ] धुंघवाय
धृंबड-२३७ मोटा मल्ल (देश्य)
नहुंतरी -१८२ निमंत्रण आपी; निहुंतरिउ-४२३, नुं हुंतरिवा-६१२
नाह--४१ नाथ, स्वामी
नीठ-७५ नक्की
नेटि-५९७ नक्की
पइंपइ-४५६ बोली ( सं. प्र+जल्पति-अप. प्रयंपइ )
पखइ-६२३ विना
पघवाह-३७२ पांगोठुं, पेंगडो
पचारि-२९२ हेरान करी, महेणुं मारी (अप. पच्चारि)
पजून-२ प्रद्यम्न (सं. प्रद्युम्न-अप. पञ्जुण्ण-जू. गु. पजून )
पिंडहार-५४८ दरवान, द्वारपाल. (सं. प्रतिहार=प्रा. पिंडहार)
पयठाण-३२६ नगर विंशेष, (सं. प्रतिष्ठान-प्रा. पइट्ठाण)
परतग-४९८ परचो
परं-१०४ दूर, अलग
पवरख-५५३ पौरुष, पवरिख-५५३
पवाडु-६६५ पराक्रम. पवाडे-५७१
पहि-५५३ पासे
पाउला--१९ नर्तको
```

१. ''भगवद्गोमंडळ शब्दकोश'', कर्ता-भगवतसिंहजी.

२. ''शब्दकथा'', कर्ता डो. हरिवल्लभ भायाणी.

```
पाखर-३१४ घोडानुं जीन
पाखर्या-६१ घोडाने जीन पाथरी सज्ज कर्या
पाटर-५२९ (१)
पायक-२२६ पाळा, पंगे चालनारा, पायदळ, ( सं. पादातिक-प्रा. पाइक )
पांहि-६८५ पासे, पांहिई-६९२ (सं. पक्षस्मिन्-अप. पक्खहिं, पक्खह, पाखह, पाहह)
पीय-२२८ पिताने, (सं. पितृ-प्रा. पिई)
पुरुषाक्रम-५५४ पुरुषार्थ अने पराक्रम. पुरुषाक्रमे-५७७
पुल-जवुं, पळवुं. पलाइ-६८१, पुलइ-३९६, पुलिउ-४७३
पुह्रवि-२८८ पृथ्वी
                             पुज्जइ ) ''ज''नो ''ग'' थवाथी जू. गु, मां ''पूगइ''
पूजइ-१७ पहोंचे (सं. पूर्यते-प्रा.
     पण थाय छे. पूगी-६२३
फलहिल-४२१ भोजननी वानी लेखे भोजन साथे पीरसातां फळो, सूको मेवो, (जुओ: "परब"
१९६५:२मां पृ. १११ थी ११६ डॉ. हरिवस्लम मायाणीनो "फलहिल के फलहुलि" उपरनो छेख.
फूद-३५३ (१)
फेटि-६९ (!)
फेफार-५१४ शियाळ (१)
ब्रुडण-४०६ झ्बवा
भडवाउ-१६ पराक्रमनो गर्व ( सं. भटवाद )
भरडो - ब्राह्मण. भरडानई ४१८, जैनो तिरस्कारमां ब्राह्मणने ''भरडो" कहे छे. (सं. भरटक )
भरहभावि-१९ भरतनाद्यना भाव अनुसार
भाठी-७२४ तवो (सं. भ्राष्ट्र)
मेउ-४९५ रहस्य (सं. भेद-प्रा. भेअ)
मडिउ-४७१ महदुं
मयगल-६१ हाथी (सं. मदकल-प्रा. मयगल-गुज. मेगळ)
मल-४९१ मर्दन करबुं (प्रा. मलू)
महमयण ५४९ कृष्ण (सं. मधुमथन-प्रा. महुमहण )
मह्खुउ - ३५३ मोवडी, मुहुलु - ३५०
मह्यर - ७९
                 वांसळी
मादल - ६९४ एक वाद्य, मुरंज, मृदंग (सं. मर्दंल = प्रा. महल)
  (सर. गु. मां "मादळियुं" - मादळना आकारने घरेणुं)
माठू - ५६३ ओछा
माम - ६६६ गौरव, (जुओ: ''नल-दवदंती रास '' पृ. १६०)
मियमत्त - २३७ मयमत्त ने बदले, मदमत्त
मुद्दंडइं -६०६- मुखे. (सं. मुख = प्रा. मुह + स्वार्थिक "ड")
मुंह्विडि - ६१६ मोखरे
```

१. नत्र - द्वदंतो रास'', कर्ता-महिराज, संगाः डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा.

```
रती - ४३ आनंद
रहीयामणुं - १ रिळयामणु - (रहि + आवणड)
रहीयायत - ६३८ आनंदित - (रहि+आयत)
राउत - ६४ राजा (सं राजपुत्र = प्रा. रायउत्त, सर गुज. रायत)
राउलि - ४५६ अंत:पुरमां (सं. राजकुलि)
राउछ ३८३ राजानुं (सं. राजकुल)
रूपणि - ५९ हिन्मणी (सं. हिन्मणी = प्रा. हिप्पणी-जू. गु. हिप्पणी-रूपणि)
रेवणी - १११ हेरान करवं
लहिण - ३३२ लहेणु
लहूयडउ - २३१ नानो, लघुवयस्क (स. लघुक-प्रा. लहुअ + स्वार्थिक''ङ'')
लाड - ३९४ लगाडवुं (प्रा. लायू )
लागणा - ४६५ (१)
ल्की - ९९ खुपाईने (पा छक्क)
लोइ - १४ लोक (सं. लोक-प्रा लोय)
वछ - ७५२ वरस
वश्रडई - ४२९ (१)
वणारीस - ७५८ वाचनाचार्य
वह्रयर - ६९६ वहू (सं. वध्क)
वंनरवाल – ११ आसोपालव आदिना लीलां तोरण (सं. वन्दनमाला = प्रा. वंदणमाला.
  पछीथी वंदुरवाल, वंदरवाल, वांदरमाल, वनरवाल जेवां रुपो जू. गु. मां मळे छे.)
बाग - ३७२ लगाम, [सं. वल्गा - प्रा. वग्गा, जू. गु. वाग)
वाण - काथी, दोरड्डं, वाणि - ३२७
विउलिसरी -३८८ बोरसली, (सं. बकुलश्री - प्रा. वडलिसरी)
विगृच - व्याकुळ. विगूचइ - ३८४ (प्रा. विगुत्त, गुज. - वगूत, विगूच वगेरे.)
विगोइ - ४५५ तिरस्कार करवो , फजेतो करवो, व्याकुळ करवुं.
  विगोइ ६२०, विगोईयु — ३०८ (जुओ ''अनुशीलनो'' पृ. १२२ थो १२६)
विछोही - १४९ विरहित करी (प्रा. विच्छोह)
विटंबी - ४५८ विडंबी, हेरान करी
विणठउं - २०१ बगड्युं (सं. विनष्ट - प्रा. विणट्ठ-तेना उपरथी
   गुज. मां ''विणठुं'') (जुओं ''अनुशीलनो'' पृष्ट १६१)
विरूपुं - ३५७ वरवुं , भूं डुं (प्रा. विरूअ)
विलखाणी – २८ लज्जा पामी, छोभीली पडी गई (सं. विलक्ष – प्रा. विलक्ख)
विलविल - विलाप करवो, विलविलाई - ४११ (अ. गु. वलवलबुं - रवानुकारी)
विॡर - ऊतरडी नाखवुं, विॡरिउ - ३१९ (प्रा. विॡर - गुज. वॡरबुं)
विवहपरइ - ६३१ जिविध प्रकारे
```

बिहड – वियुक्त करवुं अलग करवुं, विहडाईं – ७४१ (सं. विघट् – प्रा. बिहङ्क) वीछडया – ७४० विभक्त थयां, जुदा पङ्गयां,

बुल्या - २२३ पसार थयां (पा. बोल्र्)

बूठइ — १९२ वरसवा लाग्यो (सं. वृष्ट — प्रा. बुट्ट)

वेकार — ६७७ संगीतकार, बइकार — वहकार — वेकार. (जुओ: "बुद्धिप्रकाश" ओक्टोबर १९६२ मां डॉ. भोगीलाल सांडेसरानो "बईकार संगीतकार" ए नामनो लेख. ए. २९२-२९४.) सङ्घ्य — २६ संधो (सं. सीमन्तक — अप. सङ्घ्य)

सगणी - २३३ आयुषविशेष (१)

सनसतपणा - ७१० (?)

समिद्ध - ३ समृद्ध

सयर - २०१ शरीर (सं. शरी र- जू. गु. सईर) (जुओः 'षष्टि शतक प्रकरण'' पृ. १९२) सयरि - २६ शरीरे

सिंहा - ७० ''सिंहिन्नड''ने स्थाने. ''सार्ख्यु'' (सं. शब्य)

सवि - १ सर्वे, (सं. सर्वे)

स**हे**टि — ६७९ (१)

संपतं - ४९२ "संपत्तं ने बदले. "आवी पहोंच्यो" (सं. सं + प्राप्त - प्रा. संपत्त)

सालणां — ४२१ कचूंबर, अथाणां तथा वडी-सेव इ० सूकवणी जेवां खाद्य पदार्थो, (जुओः ''परब'' १९६५-२ मांनो ''फलहिल के फलहुलि'' ए नामनो डॉ. हरिवल्लम भाया- णीनो लेख. पृ. ११५ तथा ''वर्णक समुच्चय'' भाग १ लो, पृ. १९३ तथा भाग २ जो पृ. १८)

सायत्त - ५८६ स्वागत (?)

साहिउ - ६०८ साध्युं

सांथार — ७५४ संथारो. जैन पारिभाषिक शब्द. ''मरण नजीक आवतां ममता तजी मरण-पथारी उपर सुबुं ते'' (सं संस्तार – प्रा. संथार. सरखावो÷संथारियुं = जैन मुनिओ रात्रे सुवा माटे जे ऊननुं कपडुं पाथरे छे ते. जुओ: भ. गो. मं. पृ. ८६२६.)

सांमहणी - ३३९ तैयारी

सांमहिन - ७३३ सामैयुं

सांसहिउ - ५४५ सहन क्युं (सं. सं + सह - प्रा. संसहू)

सिघलु – ४८० सघळुं, बधुं

सीगिणि - २३३ ''सींगिणि" ने बदले. ''धनुष्य''. सींगा - ६८२, (सं. शृं क्रिनी)

सीझइ - ४३३ सीझे (सं. सिध्यति - प्रा. सिज्झइ)

सुकि - ८३ शोक्य, सपत्नी (सं. सपत्नी - प्रा. सवत्ती, सवक्की)

मुचंग - ७ खूब सुंदर, चंग = सुंदर (देश्य)

१. "षष्टिशतक प्रकरण" कर्ता नेमिचन्द्र भंडारी, संपादक डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा.

२. "वर्णक समुच्चय" भाग – १ तथा २ संपादक : डॉ. भोगीलाल जे. सांडेसरा

```
सुद्धलालि — ३२६ सुखर्थी लालनपालन करेली, लाडमां राखेली (सं. सुख + लालित.)
सूअ — — पोपट, स्या — ७९ (सं. शुक्त प्रा. सुअ )
सूद्ध्वि — ८१ सौभाग्यवती — एटले सघवा स्त्री (सं. सुभग — प्रा. सुद्ध्व )
सेल — २३३ भालो (प्रा. सेल्ल )
हकारित — १११ हांक मारीने बोलान्यो (प्रा. हक्कार )
हथलेवउ — ८० हस्तमेलाप, हथलेवा — ६९५
हवडां - ५७१ हमणां, हवे (श्री. टी. एन. दवे "हिव+डां" उपरथी आ शब्द न्युत्पन्न करे ले. ) आ उपरांत जुओः "नलदवर्दतिरास" पृ. १७३
हसमसि — ६२२ हसीहसीने
हीयरह — ३१४ (१)
हीयोलोकणी — २५४ अन्यना मननी वात जणावनारी विद्या
हीस — ३७२ घोडानी हणहणाटी (सं. हेपारव — अप. हीस, हींस )
हुती — ३७९ (पासे ) थी, पंचमीनो अनुग, (जुओ: "सिद्धहेम अपभ्रंश न्याकरण" पृ. २४०)
```

१. 'A Study of the Gujarati Language', टी. एन. दवे-ए. १९६.

२, "अपभ्रंश व्याकरण", कर्ता-हेमचन्द्राचार्य, संपादकः डॉ. हरिवल्लम् भायाणी.

# Latest Price list of L. D. Series in force from 1st Nov. 1977 (This cancels all the previous price-lists of L. D. Series)

S. J	No. Name of Publication	Price Rs.
2.	Catalogue of Sanskrit and Prākrit Manuscripts: Munirāja Shri Punyavijayaji's Collection Pt. I Compiler: Munirājā Shri Punyavijayaji, Editor: Pt. Ambalal P. Shah, (1963)	50/-
	Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts, Munirāja Shri Punyavijayaji's Collection, Pt. II. Compiler: Munirāja Shri Punyavijayaji, Editor: Pt. A. P. Shah. (1965)	40/
	Kavi Lāvaņyasamaya's Nemirangaratnākarachanda. Editor: Dr. S. Jesalpura. (1965)	10/-
9.	The Nātyadarpaṇa of Rāmchandra and Guṇachandra: A Critical Study: By Dr. K. H. Trivedi. (1966)	50/-
11.	Akalanka's Criticism of Dharmakirti's Philosophy: A study by Dr. Nagin J. Shah. (1966)	50/-
12.	Jinamāṇikyagaṇi's Ratnākarāvatārikādyaślokaṣatārthi, Editor: Pt. Bechardas J. Doshi. (1967)	10/
	Catalogue of Sanskrit and Prākrit Manuscripts: Munirāja Shri Punyavijayaji's Collection. Pt. III. Compiler: Mnnirāja Shri Punyavijayaji, Editor: Pt. A. P. Shah. (1968)	30/-
16.	Ratnaprabhasūri's Ratnākarāvatārikā, Pt. II. Editor: Pt. Dalsukh Malvania. (1968)	10/-
17.	Kalpalatāviveka (by an anonymous writer). Editor: Dr. Murari Lal Nagar and Pt. Harishankar Shastry. (1968)	32/-
	The Yogabindu of Ācārya Haribhadrasūri with an English Translation, Notes and Introduction by Dr. K. K. Dixit. (1968)	20/-
20.	Catlogue of Sanskrit and Prākrit Manuscripts: Shri Āc. Devasūri's Collection and Āc. Kṣāntisūri's Collection: Part IV. Compiler: Munirāja Shri Punyavijayaji, Editor: Pt. A. P. Shah. (1968)	40/-
22.	The Śāstravārtāsamuccaya of Ācārya Haribhadrasūri with Hindi Translation, Notes and Introduction by Dr. K. K. Dixit (1969)	30/-
23.	Pallipāla Dhanapāla's Tilakmanjarīsāra, Editor: Prof. N.M. Kansara. (1969)	20/-

Nos. 1, 3, 4, 6, 7, 10, 13, 14, 18, 21, 43 are out of print.

24.	Ratnaprabhasūri's Ratnākarāvatārikā Pt. III, Editor: Pt. Dalsukh Malvania. (1969)	8/-
25.		50/-
26.		50/-
27.	Haribhadra's Yogadrstisamuccaya with English translation, Notes, Introduction by Dr. K. K. Dixit. (1970)	10/-
28.	Dictionary of Prakrit Proper Names, Part I by Dr. M. L. Mehta and Dr. K. R. Chandra, (1970)	32/-
29.	Pramāṇavārtikabhāsya Kārikārdhapādasūci. Compiled by Pt. Rupendrakumar. (1970)	10/-
30.	Prakrit Jaina Kathā Sahitya by Dr. J. C. Jaina (1971)	20/-
	Jaina Ontology, By Dr. K. K. Dixit (1971)	<i>5</i> 0/-
	The Philosophy of Sri Svāminārāyaṇa by Dr. J. A. Yajnik. (1972)	50/-
	Ac. Haribhadra's Nemināhacariu Pt. II: Edittors: Shri	50/-
34.	M. C. Modi and Dr. H. C. Bhayani.  Up. Harşavardhana's A'dhyātmabindu: Editors: Muni Shri	20/-
	Mitranandavijayaji and Dr. Nagin J. Shah. (1972)	•
35.	Cakradhara's Nyāyamañjarigranthibhanga : Editor Dr. Nagin J. Shah. (1972)	50/-
36.	Catelogue of Mss. Jesalmer collection: Compiler: Munirāja Shri Punyavijayaji. (1972)	<b>5</b> 0/-
37.	Dictionary of Prakrit Proper Names Pt. II. by Dr. M. L. Mehta and Dr. K. R. Chandra. (1972)	35/-
38.	Karma and Rebirth by Dr. T. G. Kalghatagi. (1972)	10/-
	Jinabhadrasūri's Madanarekhā Ākhyāyika: Editor Pt. Bechardasji Doshi. (1973)	40/-
40.	Prācina Gūrjara Kāvya Sañcaya, edited by Dr. H. C. Bhayani and Agarchand Nahata, (1975)	16/-
41.	Jaina Philosophical Tracts: Editor Dr. Nagin J. Shah. (1974)	20/-
42.	Saņatukumāracariya; Editors Prof. H. C. Bhayani and	8/-
	Prof. M. C. Modi. (1974)	
44.	Pt. Sukhalalji's Commentary on the Tattvārthasūtra, Translated into English by Dr. K. K. Dixit.	50/-
45.	Isibhāsiyāim Ed. by Dr. Walther Schubring. (1974)	20/-
	Haimanāmamālāsiloncha, by Mahopādhyāya Vinayasagara. (1974)	20/-
	A Modern Understanding of Advait Vedanta by Dr. Kalidas Bhattacharya pp. 4+68). (1975)	10/-
10		10.
48.	translated by Dr. Nagin I Shah np. 4-144	16/-

49.	Atonements in the Ancient Ritual of the Jaina Monks by Dr. Colette Caillat, pp. 8+210. (1975)	50/-
<b>5</b> 0.	and the second s	10/-
51.	More Documents of Jain Paintings and Gujarati Paintings of sixteenth and later centuries by Dr. U. P. Shah. (1976)	76/
52.	Jineśvarasūris' Gāhārayaṇakosa, Edited by Pt. A. M. Bhojak and Dr. Nagin J. Shah. (1976)	20/-
53.	Jayavantasūri's Rsidattārāsa (Old Gujarati Kāvya) Edited by Dr. Nipuna Dalal. (1975)	16/-
54.	Indrahamsa's Bhuvanabhānukevalicariya Ed. by Munishree Ramanikvijayaji. (1976)	16/-
55	Sallekhanā Is Not Suicide by Justice T. K. Tukol. (1976)	16/-
<b>5</b> 6.	I am a little mendama Ddied by Dr. D. W. Moti I al	45/
57.	Fundamentals of Ancient Indian Music and Dance by S. C. Banerjee. (1977)	25/-
<b>5</b> 8.	The De Calchield Conchert (1977)	30/-
<b>59</b> .	Vasudevahindi – An Authentic Jaina Version of the Brhatkathā by Dr. J. C. Jain. (1977)	150/-
<b>6</b> 0.	Bauddha Dharma Darsanani Pāyāni Vibhāvanā (Gujarati translation of Vidhusekhara Bhattacharya's Basic Conception of Buddhism) Trans. by Dr. Nagin J. Shah (1977)	s. 8/~
61.	Dr. R. M. Shah. (1977)	40/-
62.	Kāvya) Edited with English Introduction by Dr. P. S. Jaini (To be released in April 1978)	. 50/-
63.	Ratnasūri-śisya's Ratnacūdarāsa Ed. by Dr. H. C. Bhayani (1978	3)
64.		. 28/–
65.	Jayavantasūri's Śrngāramanjarī Ed. by Dr. Kanubhai V. Sheth (1978)	
	Śramana Tradition – Its History and Contribution to Indian Culture by Dr. G. C. Pande (1978)	20/-
67.	Nyāyamnjarı (Āhnika II) with Gujarati translation, Edited and translated by Dr. Nagin J. Shah. (1978)	
68.	Vā. Kamalasekhara's Pradumnakumāra Copaī Ed. by Dr. M. B. Shah. (1978)	
	Aspects of Jaina Art and Architecture: Editors Dr. U. P. Shah and Prof. M. A. Dhaky. (1976) [Sole Distributor] Sambodhi Vol. I-V Rs. 200/-	150/-
	(Ps. 40/- per volume)	